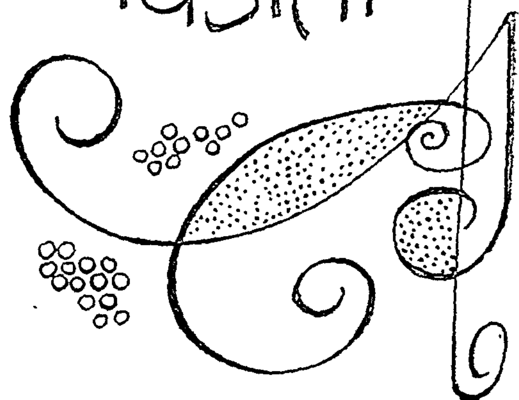
साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता





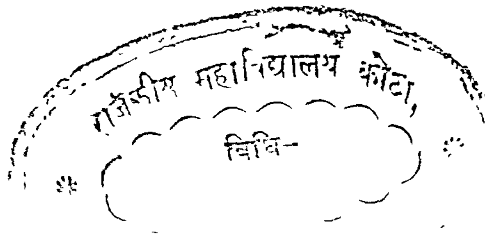
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

दिल्ली-६ पटना-६

साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता

55090

मुरारी सिन्हा



भूमिका

डॉक्टर श्री मुरारी सिन्हा लखनऊ विश्वविद्यालय मे अंग्रेजी भाषा और साहित्य-विभाग में गत पचीस वर्षो से अध्यापन का कार्य कर रहे है और इस समय वह विभाग में रीडर है। वह बनारस के रहने वाले है और उनकी शिक्षा काशी विश्वविद्यालय में हुई है। स्वभावतः आधार मूल-रूप से उनके सस्कार हिन्दी के है और वह हिन्दी मे कहानियाँ और आलोचनाएँ लिखते रहे है। वह जानते हैं कि हमारी जड़ें हमारी भाषा और हमारी सस्कृति मे ही है तथा अपनी भाषा की समृद्धि और अपनी सस्कृति के परिष्कार करने का वह यथासाध्य प्रयत्न करते रहे हैं।

गहन अध्ययन और चिन्तन—एक प्राध्यापक का क्षेत्र यही समझा जाता है और डॉक्टर श्री मुरारी सिन्हा प्राध्यापक होते हुए भी हमेशा श्रेष्ठ विश्व-साहित्य के विद्यार्थी रहे है। हिन्दी साहित्य के प्रति उनकी अभिरुचि और उसे समृद्ध बनाने एव उसमें कतिपय अभावो की पूर्ति करने में योगदान के फलस्वरूप उनकी यह प्रथम पुस्तक आ रही है।

नोबेल पुरस्कार विश्व मे रचनात्मक एव कल्याणकारी सृजन पर सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पुरस्कार माना जाता है। इस पुरस्कार को प्राप्त करने के लिए वर्ण, जाति, देश अथवा राजनीति आदि का कोई प्रतिबन्ध नही है। यह पुरस्कार मानवतावाद के सिद्धान्त पर दिया जाता है। मानव के ज्ञान-विज्ञान की प्रगति एवं उसके कल्याण और निर्माण की दिशा मे उन्मुख करने के प्रोत्साहन के रूप मे इस पुरस्कार के दाता श्री एल्फ्रेड नोबेल ने इस पुरस्कार की परिकल्पना की थी और अपनी अपार अर्जित सम्पत्ति उन्होंने इस पुरस्कार के लिए दान कर दी थी। एल्फ्रेड नोबेल का नाम दुनिया के शीर्षस्थ आविष्कारकों में आता है। ये वैज्ञानिक आविष्कार जो दुनिया के कल्याण और निर्माण के लिए हो रहे है, इनका उपयोग विनाश के लिए भी किया जा सकता है और किया जाता रहा है। एल्फ्रेड नोबेल ने यह अनुभव किया और इसलिए मानवता के आदर्शो की रक्षार्थ एक ऐसे आन्दोलन के रूप मे जो दुनिया को इस



निवेदन

नोबेल पुरस्कार का महत्व विश्व-विदित है। जिस देश के भी नागरिक को यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है वह अपने को अत्यन्त भाग्यशाली समझता है।

मैंने जब एम० ए० में अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन आरम्भ किया तभी से नोबेल पुरस्कार के विषय में अधिक-से-अधिक जानने और उसके सम्बन्ध में कुछ लिखने की इच्छा मेरे मन में थी। उस समय किप्लिंग, यीट्स, बर्नार्ड शॉ और गाल्सवर्दी के विषय में यह पढ़ता था कि ये लोग नोबेल पुरस्कार विजेता हैं। सन् १९३५ की वसंतपंचमी को रवीन्द्र नाथ टैगोर ने काशी विश्वविद्यालय में दीक्षान्त भाषण दिया था। उस वर्ष मुझे बी० ए० की उपाधि मिली थी। उनके विषय में भी यह सुना कि इनको भी साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। पाँच वर्ष पहले, सन् १९३० में, डा० चन्द्रशेखर वेंकट रमन को पदार्थ-विज्ञान (Physics) के लिए यह पुरस्कार प्रदान किया गया था।

कुछ वर्ष पहले मेरे मन में संसार के इस शताब्दी के सर्वश्रेष्ठ लेखकों की रचनाएं और जीवनियाँ पढ़ने की इच्छा हुई थी। घटना-चक्र ने यह सुझाव दिया कि संसार के इस शताब्दी के सर्वश्रेष्ठ लेखकों की सूची नोबेल पुरस्कार विजेताओं की ही सूची मान ली जाय तो एक प्रकार से ठीक होगा। तब ऐन रसेल मार्बल (Anne Russel Marble) की पुस्तक 'नोबेल प्राइज विनर्स इन लिटरेचर' (Noble Prize Winners In Literature) पढ़ने का अवसर मिला। इस पुस्तक द्वारा यह भी विचार मन में उठा कि इस विषय पर जो भी अध्ययन किया जाय उसे पुस्तक के रूप में अपने देश की राष्ट्र-भाषा में प्रस्तुत किया जाय। मैंने इस विषय पर नोबेल फाउण्डेशन (Nobel Foundation) को पत्र लिखे और उन्होंने अत्यन्त उदारता से मुझे सामग्री भेज दी।

सन् १९६० ई० में मुझे इंग्लैंड जाने का अवसर मिला। वहाँ से मैंने स्वीडिश अकादमी को पत्र लिखा, और इस पत्राचार द्वारा मुझे स्टाकहाम जाकर स्वीडिश अकादमी नोबेल फाउण्डेशन और नोबेल लाइब्रेरी के अध्यक्षों

प्राक्कथन

ससार में महानता प्राप्त करने के अनेक साधन है, और भिन्न-भिन्न लोगो ने भिन्न-भिन्न साधनों को अपनाया भी है। कुछ लोग दूसरे देशों को जीतकर और उन पर अधिकार जमा कर अमरता प्राप्त करते है, जैसे सिकन्दर, नेपोलियन, हिटलर; तो कुछ लोग अपनी मेहनत से अमर कृतियाँ रचते है, जैसे व्यास और तुलसी और कुछ लोग स्वय जीवन-भर मेहनत करते है, दुखी रहते है और दूसरों के दुख को समझ कर उनकी सहायता करके यशस्वी हो जाते हैं—जैसे एल्फ्रेड नोवेल।

एल्फ्रेड नोवेल के जीवन-इतिहास के प्रत्येक पृष्ठ पर दुखों की काली छाया पड़ी हुई है, इसलिए उनके दुखमय जीवन की एक झाँकी देखे बिना उनकी थाह पा सकना असम्भव नही तो दुष्कर अवश्य है। इसलिए उनकी जीवन-गाथा पर एक दृष्टि डाल लेना यहाँ समीचीन ही होगा।

स्वीडन-निवासी एल्फ्रेड नोवेल के पूर्वज किसान थे। वे अपने को नोवेल नही, नोवेलियस (Nobelius) कहते थे। उनमे से किसी एक ने सत्रहवी शताब्दी में विश्वविद्यालय मे शिक्षा पाई थी, और उस समय की प्रथा के अनुसार वे अपने को नोवेलियस कहने लगे थे। चूँकि वे नोव्वेलव (Nobbelov) की पैरिश में पैदा हुए थे इसलिए उन्होंने यह नाम अपना लिया था। उनका पूरा नाम था पेट्रस ओलावी नोवेलियस (Petrus Olavi Nobelius)। उन्होंने स्वीडन के अति प्राचीन तथा सम्मानित अप्पसाला विश्वविद्यालय (Uppsala University) मे शिक्षा पाई थी। उनको सगीत से विशेप प्रेम था, और उन्होंने अप्पसाला में सगीत को समृद्धि व विस्तार के लिए बहुत कुछ किया भी था। जब वह अपनी शिक्षा पूरी कर चुके और अप्पलैण्ड के सूवे मे जज हो गये, तो उन्होंने अपने प्रोफेसर ओलाफ रुडवैक की पुत्री वेन्डेला रुडवैक से शादी कर ली। यही लोग एल्फ्रेड के पूर्वज थे। इनकी सतानो मे एक फौज में चला गया था, और उसने अपना नाम बदल कर नोवेल कर लिया, और फिर यही खानदानी नाम हो गया।



एल्फ्रेड नोबेल

व्यापारी-सम्बन्ध अधिक समय तक इमानुएल को लाभ नहीं पहुँचा सके, क्योंकि लड़ाई खत्म होने पर रूस ने अपने वादों से इनकार कर दिया और वह सन् १८५९ ई० में एक बार फिर दिवालिया हो गए। इसके बाद वह अपने देश वापस चले आए और यहीं पर सन् १८७२ ई० में उनका देहान्त हो गया।

एल्फ्रेड बर्नहार्ड नोबेल का जन्म २१ अक्तूबर, १८३३ को स्टाकहाम में हुआ था। नियमित शिक्षा के नाम पर यह जैकब्ज़ पैरिश के एक मामूली से स्कूल की पहली कक्षा में सिर्फ एक वर्ष पढे थे। इसके बाद इनके पिता ने इन्हें तथा इनकी माँ और भाइयों को सेन्ट पीटर्सबर्ग (रूस) बुला लिया। वहाँ पर तीनों भाइयों ने एक प्राइवेट ट्यूटर से कुछ शिक्षा पाई लेकिन जब एल्फ्रेड सोलह वर्ष के थे तो यह शिक्षा भी समाप्त हो गई। इसके बाद फिर कभी इन्हें किसी विश्वविद्यालय आदि में अध्ययन का अवसर नहीं मिल पाया। लेकिन फिर भी यह अशिक्षित नहीं कहे जा सकते थे, साथ ही साथ जर्मन, इंगलिश और फ्रांसीसी भाषाओं का भी इन्हें अच्छा ज्ञान था। यह साहित्य-प्रेमी भी थे, और अंग्रेजी साहित्य से इनको सबसे अधिक लगाव था। इनके पत्रों में इनके प्रतिभाशाली तथा मेधावी होने का सबूत मिलता है।

एक बार जब इनके पिता की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी थी तो इन्हें शिक्षा-पूर्ति के विचार से रूस से बाहर भेजा गया। यह दो साल तक कई देशों में घूमते रहे और अमरीका भी गये, परन्तु अधिकतर यह पेरिस में ही रहे और वहाँ की रसायन-शास्त्र की प्रयोगशालाओं में ही काम करते और सीखते रहे। पेरिस से लौटने पर यह अपने पिता के साथ उनकी दुकान में काम करने लगे और इस काम का सिलसिला सन् १८५९ ई० में, जब इमानुएल का दिवाला निकल गया, तभी बन्द हुआ।

सन् १८४७ ई० में इटली के एक वैज्ञानिक ऐस्कैनियो सोब्रेरो ने एक पदार्थ नाइट्रोग्लीसरीन का पता लगाया था और सेण्ट पीटर्सबर्ग के प्रोफेसर जिनिन ने एल्फ्रेड का ध्यान इस ओर आकर्षित किया था। एल्फ्रेड ने भी इस पदार्थ पर प्रयोग करने शुरू कर दिये और इन्होंने अपना पहला विस्फोट मई-जून, १८६२ में किया। अक्तूबर सन् १८६३ ई० में इन्होंने अपने एक आविष्कार नोबेल लाइटर (Nobel Lighter) के लिए अपने देश स्वीडन में पेटेन्ट प्राप्त कर लिया। इस समय इनके पिता ने, जो स्वीडन में थे, इनको अपने पास बुला लिया, क्योंकि उनका विचार था कि उन्होंने कोई बहुत बड़ा आविष्कार कर लिया है। परन्तु एल्फ्रेड ने उस आविष्कार को बिल्कुल बेकार साबित कर दिया और फिर पिता-पुत्र ने हेलेनबर्ग में वह प्रयोगशाला स्थापित की, जिसका ज़िक्र

हम पहले कर चुके है।

इमानुएल को तो इस विस्फोट ने एकदम तोड़ ही दिया था, परन्तु एल्फ्रेड अपना काम करते रहे और नाइट्रोग्लीसरीन को बनाकर बेचने के लिए स्वीडन मे, और फिर नार्वे मे कम्पनिया खोलते रहे, और अपनी बनाई हुई नाइट्रोग्लीसरीन के बेचने का व्यवसाय बढ़ाते रहे। इस सिलसिले में यह फ्रान्स, इंगलैण्ड और अमरीका गये। साथ ही यह अपने वैज्ञानिक प्रयोग भी करते रहे, और फिर एक नया और अच्छा विस्फोटक पदार्थ तैयार कर लिया। इसका नाम इन्होंने डाइनेमाइट रखा, और सन् १८६७ ई० में इसका भी पेटेन्ट ले लिया। इसके बाद यह बराबर आविष्कार करते रहे और उन्नति करते गए।

एल्फ्रेड नोबेल ने जीवन मे अत्यधिक धनोपार्जन किया और कई प्रकार से लोगो की सहायता भी की। परन्तु यह एक अजीब बात है कि यह स्वय कभी भी सुखी नही रह पाये। यह स्वभाव से बहुत ही उदार, भावुक और दयालु थे। धनी होने के नाते, इनका सम्पर्क ऐसे लोगो से होता रहता था, या ऐसे लोग इनसे सम्पर्क स्थापित करते रहते थे जिनकी दृष्टि इनके धन पर ही रहती थी। इसलिए ये ऐसे लोगो से चिढने भी लगे थे।

सन् १८७० मे, जब एल्फ्रेड नोबेल ३७ वर्ष के थे, और यूरोप में उनका नाम चमक रहा था और वह वहा के धनी व्यक्तियो मे गिने जाते थे, तब किसी ने उनसे उनके जीवन के सम्बन्ध मे पूछा था जिसके उत्तर में उन्होंने लिखा था —

"एल्फ्रेड नोबेल एक दुखी दयनीय और अर्धमृत व्यक्ति है। डॉक्टर को उसका गला उसी समय घोट देना चाहिए था जब वह रोता हुआ इस धरती पर आया था।

विशेष गुण—अपने नाखूनो को साफ रखना और किसी पर कभी भार न होना।

विशेष अवगुण—उसका अपना परिवार नही है, स्वभाव से चिड़चिड़ा है, और हाजमा खराब है।

एक मात्र इच्छा—जिन्दा ही न दफना दिया जाय।

सबसे बड़ा पाप—वह धन-दौलत या ऐश्वर्य की पूजा नही करता।

जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ—कोई भी नही।

पाच वर्ष बाद इन्होंने अपने एक मित्र को लिखा था—

"आपने अपने अनेक मित्रो का जिक्र किया है, कहा है ? व्यामोह के

कीचड़ से सने हुए धरती के पेंदे पर है या बचाई हुई पैनियों की खनखनाहट सुनने में व्यस्त है ? मेरा विश्वास कीजिये : अनेक मित्र केवल कुत्तों में ही मिलते है, जिनको दूसरो का मास खिलाया जाता है, या कीड़ों में जिनको कि आदमी अपना मांस खिलाता है। कृतघ्न पेट और कृतघ्न हृदय जुड़वाँ भाई हैं।"

एल्फ्रेड नोवेल एकान्तप्रिय थे। यह स्वभाव से दुखी स्वप्नद्रष्टा स्वभाव के थे। एक बार इन्होंने लिखा था कि "मै पेड़-पौधों के साथ रहना चाहता हूँ जोकि मेरी हालत समझते हैं और जब भी मै बड़े शहरों और रेगिस्तान से भाग सकता हूँ, भाग जाता हूँ। यह सामाजिक और सांसारिक स्तर पर कभी सफल नही हो पाये। इन्होने एक बार कटु-वाक्यों में कहा था :—

"मेरे विभूषित या सम्मानित किए जाने का कोई विशेष या कोई विस्फोटक आधार नहीं है। अपने 'स्वीडिश नार्थ स्टार' के लिए मै अपने रसोइये का ऋणी हूँ। जिसकी कला एक अत्यन्त आभिजात्य उदर को पसन्द आई थी। मेरा फ्रेन्च आर्डर मुझे इसलिए मिला था कि मेरा केबिनेट के एक सदस्य से घनिष्ठ सम्बन्ध था। 'ब्राजीलियन आर्डर ऑफ द रोज' इस-लिए मिला था कि इत्तफाक से मेरा परिचय सम्राट डान पेड्रो से हो गया था। और अन्त में, जहाँ तक सुविख्यात 'आर्डर ऑफ बेलिवार' का सम्बन्ध है, वह मुझे इसलिए मिला था कि मैक्स फिलिप ने 'निनिशे' देखा था, और वह यह बताना चाहता था कि जिस प्रकार नाटक मे सम्मान और उपाधियाँ बाँटी जाती है, वह वास्तविक जीवन मे भी इसी प्रकार लोगों को सम्मान और उपाधियाँ बाँट सकता है।

नोबेल का जीवन सर्वथा एकाकी जीवन था। यह कभी गृहस्थ नही हो पाये। यहाँ तक कि यह कभी अपना घर भी नही बसा पाये। पहले यह स्वीडन में और फिर रूस मे रहे। फिर इन्होंने हेम्बर्ग (जर्मनी) मे, क्रूमेल मे रहना शुरू कर दिया। परन्तु यहाँ प्रयोगशाला ही इनका निवास स्थान था। उनका अधिकाश जीवन तो रेल, जहाज और होटलों मे ही कटा। सन् १८७५ ई० इन्होंने अवेन्यू मलकान (पेरिस) मे और उसके बाद सेव्रा में घर बनाया। पन्द्रह वर्ष बाद यह इटली चले गये और सैन रेमो में रहने लगे। उनके पत्रों से यह प्रतीत होता है कि वह अपने जीवन के अन्तिम दिन अपने देश स्वीडन मे ही काटना चाहते थे, परन्तु १० दिसम्बर, १८९६ को इनका देहान्त सैन रेमो में ही हो गया। मृत्यु के समय इनकी आयु ६३ वर्ष, १ महीना और १९ दिन की थी।

यह तो सच है कि एल्फ्रेड नोबेल ने शादी नही की थी, परन्तु यह

स्त्री-प्रेम से सर्वथा अनभिज्ञ थे, यह भी कहना ठीक न होगा। उनके जीवन में प्रेम आया अवश्य, परन्तु दुख ही देने के लिए। इनके तीन प्रेम सम्बन्ध असफल हुए थे—ऐसा माना जाता है।

इनका प्रथम प्रेम-सम्बन्ध उस समय हुआ था जब इनकी आयु केवल १८ वर्ष की थी। अपनी पहली अमरीका यात्रा के बाद रूस लौटते समय पेरिस मे इनकी भेट एक लडकी से हो गई। इन्होने न तो किसी को उसका नाम बताया और न ही उसके रूप-रंग की ही कोई चर्चा की, परन्तु इसका सकेत अवश्य किया है कि उनका रोमान्स अल्प तथा दुखद था। इस अनुभव का इनके ऊपर बडा गहरा प्रभाव पडा था, और इसके कारण यह जीवन भर दुखी रहे थे। वह लडकी थोडी ही उम्र मे चल बसी थी। इसके बाद इन्होने एक लम्बी कविता लिखी, जिसमे इन्होंने कहा था कि 'हम दोनों ने अपने पवित्र प्रेम पर पवित्र चुम्बन की मुहर लगा दी थी।'[1]

इनके जीवन मे आने वाली दूसरी स्त्री का नाम था बर्था वान सट्नर। बर्था का इनके जीवन पर गहरा असर पड़ा था और यह असर मृत्यु तक इन पर बना रहा।

लगभग ४४ वर्ष की अवस्था मे, बर्था वान सटनर के वियोग से दुखी होकर, एल्फ्रेड नोबेल बैडेन-बेई-वाइन नामक एक फैशनेबल जगह गये और वहाँ पर सोफी हेस नामक एक बीस-वर्षीय लड़की से बातचीत शुरू की। सोफी मध्यम वर्ग के एक व्यापारी की लडकी थी और फूलों की एक दुकान में काम करती थी। उसके बाप वियना के रहने वाले थे, और उसकी तीन बहनें भी थी। वह एल्फ्रेड नोबेल को अच्छी लगी। उनका रिश्ता पहले तो बड़ा निर्मल और पवित्र रहा, परन्तु बाद मे जब सोफी इनसे शादी करने के चक्कर में पड़ गई और इनको नाच नचाने लगी, तो इनको बहुत दु:ख हुआ। एल्फ्रेड नोबेल ने उसके ऊपर बहुत धन व्यय किया। परन्तु बाद में वह उससे बहुत चिढ़ गये। सन् १८९० ई० के लगभग यह हगरी के एक फौजी अधिकारी से प्रेम करने लगी और सन् १८९१ मे उन्हे एक बच्चा भी हुआ। कुछ दिनों बाद वह फौजी अफसर डैन्यूब मे डूबकर मर गया। फिर भी एल्फ्रेड नोबेल उसको आर्थिक सहायता देते रहे। एल्फ्रेड नोबेल के मरने के बाद भी वह उनके छोड़े हुए धन मे हिस्सा चाहती थी। एल्फ्रेड नोबेल द्वारा उसको लिखे गए पत्रों में से २१६, और सोफी द्वारा इनको लिखे गए पत्रों मे से ४० पत्र आज भी नोबेल फाउण्डेशन मे सुरक्षित है।

१. देखिये परिशिष्ट—८।



बर्था फान सट्नर

बर्था किन्स्की के पेरिस आने के दस-बारह दिन बाद एल्फ्रेड नोबेल को किसी कार्यवश स्वीडन जाना पड़ा। जब वह पेरिस में नहीं थे तो बर्था किन्स्की को आर्थर वान सट्नर का तार मिला, जिसका उद्देश्य था "तुम्हारे बिना जीना असम्भव है" इस पर वह वियना चली गई और एक महीने बाद आर्थर और बर्था किन्स्की की शादी हो गई।

शादी के बाद दोनों काकेशस चले गये, जहाँ पर बर्था किन्स्की के कुछ मित्र लोग थे। बर्था किन्स्की की शादी के बाद ही एल्फ्रेड नोबेल को यह समाचार मिला और उनको बहुत दुख हुआ। ग्रीष्म ऋतु मे वह वियना इस विचार से गये कि उनकी भेंट बर्था किन्स्की से हो जाएगी। परन्तु इसमें भी इन्हें निराश होना पड़ा। (इसके बाद इनकी सोफी हेस से भेंट हुई)। सन् १८७६ ई० के बाद ११ वर्ष तक एल्फ्रेड नोबेल की भेंट वान सट्नर-दम्पती से नहीं हुई। जब यह दम्पती सन् १८८७ ई० मे पेरिस आया तभी जाकर कही भेंट हो सकी। इसके बाद तो इन लोगो की यदा-कदा भेंट होती ही रहती थी। बर्था अपना रास्ता चुन चुकी थी और अब वह उस पर बडी तेजी से अग्रसर हो रही थी। वह "इन्वेण्टरी आफ ए सोल" नामक अपनी एक पुस्तक प्रकाशित करा चुकी थी और अब दूसरी लिख रही थी। इस पुस्तक का नाम था 'द मशीन एज'। बाद मे इन्होंने 'ले डाउन आर्म्स' नामक उपन्यास भी लिखा जो सन् १८८९ ई० मे प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास युद्ध-विरोधी साहित्य में गिना जाता है। बर्था वान सट्नर लगातार युद्ध के विरोध मे काम करती रही, और कुछ लोगो का विश्वास है कि इन्ही की प्रेरणा से एल्फ्रेड नोबेल ने शान्ति-पुरस्कार की स्थापना की थी। शायद इनकी इच्छा थी कि बर्था वान सट्नर को ही प्रथम शान्ति-पुरस्कार मिले—लेकिन यह सम्भव नही हो सका। बर्था वान सट्नर को सन् १९०५ ई० मे जाकर शान्ति-पुरस्कार मिला। क्योंकि सन् १९०१ ई० मे और सन् १९०२ ई० मे दो-दो व्यक्तियों को यह पुरस्कार प्रदान किया गया था, इसलिए शान्ति-पुरस्कार पाने वालों में वह सातवी थी। इस समय उनकी अवस्था ६२ वर्ष की थी। पुरस्कार प्राप्ति के बाद यह नौ वर्ष और जीवित रही।

यही पर एक और स्त्री का भी जिक्र कर देना आवश्यक है। यह थी इनकी माँ। यह अपनी माँ को अत्यधिक प्यार करते थे, और मानते थे। इनकी माँ भी इनको मानती थी, और शुरू-शुरू मे जब एल्फ्रेड नोबेल का अपने पिता इमानुएल से नाइट्रोग्लीसरीन के आविष्कार के सम्बन्ध मे मत-मुटाव हो गया था, तो इनकी माँ ने एल्फ्रेड ही का साथ दिया और एक पत्र में लिखा था :—

"यह प्रश्न[1] अब भी समाप्त न होता यदि तुम इसको साहसपूर्वक न हल करते। मेरा नन्हा एल्फ्रेड यह तो समझता ही है कि उस वृद्ध पुरुष के अस्वस्थ होने के कारण वह कभी-कभी चिड़चिड़ा हो जाता है।"

सन् १८८९ ई० मे जब वह स्वर्गवासी हुई, तो एल्फ्रेड जिनकी अवस्था उस समय ५६ वर्ष की थी, अत्यन्त दुखी हुए, क्योंकि वही इनकी एकमात्र सहारा थी। यह अपनी माँ को धन-दौलत से अटाए रखते थे, और इनके अपनी माँ को लिखे गए पत्र प्रेम-पत्र की तरह होते थे। उनके मरने पर एल्फ्रेड ने यह आज्ञा दी थी कि उनकी माँ की कब्र पर जो पत्थर लगाया जाए उस पर "दूसरे आने वाले" के लिए जगह छोड़ दी जाए। उन्होने यह भी कहा कि 'दूसरे से मेरा मतलब 'अपने बूढे, कीड़ों से खाये हुए अस्तित्व से है। मैंने यह बात केवल मुडौलपन के लिये कही है क्योकि मेरी तरह के लोग बिना किसी व्यक्ति चित्र के ही सबसे अधिक प्रसन्न रहते है, चाहे वह प्रकाश का समार हो, चाहे अंधकार का। इस संसार मे, जहाँ पर एक करोड़ चौदह लाख दो पैर वाले बे-दुम के बन्दर बसते है, वहाँ पर कुछ भी होने की चेष्टा करना दुःख की बात है।'

उनकी माँ ने दो लाख अस्सी हजार स्वीडिश क्राउन छोड़ा था, जो इनको मिला। यह धन एल्फ्रेड नोबेल ने ही उनको समय-समय पर दिया था, इस कारण यह उसे लेना नही चाहते थे। इसलिये यह धन इन्होने कई संस्थाओं को दान के रूप में दे दिया।

बैरोनेस वान सट्नर (जिनका परिचय ऊपर दिया जा चुका है)ने अपने संस्मरण मे एल्फ्रेड नोबेल का उल्लेख किया है। इस पुस्तक से एल्फ्रेड नोबेल के विषय मे काफी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसी पुस्तक मे सर्वप्रथम इनकी उस इच्छा की उड़ती हुई झलक मिलती है जिसने आगे चलकर नोबेल पुरस्कार का रूप धारण किया था। ७ जनवरी सन् १८९३ ई० को नोबेल ने बैरोनेस को एक पत्र मे लिखा था "मेरी इच्छा है कि मैंने जो धन एकत्रित किया है उसमे एक पुरस्कार हर पाँचवें वर्ष दिया जाए" इनके देहान्त के बाद जब इनका वसीयतनामा पढ़ा गया तो ससार को बहुत आश्चर्य हुआ। इन्होने अपने वसीयतनामे में लिखा था :—

"जो धन बचेगा उसका उपयोग इस प्रकार किया जाएगा, जो मूल धन होगा, उसको मेरे एक्जिक्यूटर्स सुरक्षित सिक्युरिटीज मे लगाएँगे। और उनका एक धन-कोष भी बनेगा। इस धन-कोष से भी जो ब्याज प्राप्त होगा वह उन लोगों मे प्रतिवर्ष पुरस्कार-स्वरूप बाँटा जाएगा जिन्होंने पिछले वर्ष में मनुष्य-

१. कि—नाइट्रोग्लीसरीन का प्रथम आविष्कारक बाप था या बेटा।

जाति के लिए सर्वोपयोगी कार्य किया होगा। इस व्याज को पाँच बराबर हिस्सों मे बाँटा जायेगा, और बाँटने की विधि इस प्रकार होगी एक भाग उस स्त्री या पुरुष को दिया जाएगा जिसने पदार्थ-विज्ञान में सबसे महत्त्वपूर्ण अनुसन्धान या आविष्कार किया होगा, एक भाग उस स्त्री या पुरुष को दिया जाएगा जिसने रसायन शास्त्र मे महत्त्वपूर्ण अनुसन्धान किया होगा, एक भाग उस स्त्री या पुरुष को दिया जाएगा जिसने शरीर-शास्त्र या चिकित्सा-शास्त्र में सबसे महत्त्व-पूर्ण खोज की होगी, एक भाग उस स्त्री या पुरुष को दिया जाएगा जिसने साहित्य के क्षेत्र मे सबसे महत्त्वपूर्ण व आदर्शवादी स्वभाव की रचना लिखी होगी, और एक भाग उस स्त्री या पुरुष को जिसने राष्ट्रों के बीच शान्ति उत्पन्न करने के प्रयत्न किये होंगे या फौजों को कम करने के लिए राज्यों को उत्साहित किया होगा। पदार्थ-विज्ञान तथा रसायन-विज्ञान के पुरस्कार स्वीडिश एकेडेमी आफ साइन्स द्वारा, शरीर-शास्त्र या चिकित्सा-शास्त्र कैरोलीन इन्स्टी-ट्यूट स्टाकहाम द्वारा तथा शान्ति-पुरस्कार एक कमेटी द्वारा दिये जाएँगे। इस कमेटी मे पाँच सदस्य होगे, जिन्हे नार्वेजियन स्टार्टिग चुनेगी। यह मेरी अत्यन्त प्रबल इच्छा है कि इन पुरस्कारों के प्रदान करने मे उम्मीदवारों की राष्ट्रीयता का कोई भी ध्यान नही दिया जायगा, और उसी को पुरस्कार प्रदान किया जाएगा जो कि उसका अधिकारी होगा, चाहे वह स्कैंडिनेविया निवासी हो या न हो।"[1]

इन पाँचो मे नोबेल पुरस्कार के प्रदान तथा प्राप्त करने के लिए कुछ नियम निर्धारित है। इनका उल्लेख अनिवार्य है। इनका खुलासा नीचे दिया जाता है।

प्रत्येक वर्ष, सितम्बर के महीने मे प्रत्येक विषय की अलग-अलग कमेटियाँ, जो कि इन पुरस्कारो के लिये प्रत्याशियो के नाम पेश कर सकने की अधिकारी है, एक पत्र द्वारा सूचना देगी कि अब वे जिन-जिन लोगों के भी नाम उचित समझे कमेटी के सामने पेश करे। साहित्य के लिए निम्नाकित व्यक्ति या सस्थाएँ प्रत्याशियो के नाम पेश कर सकती है—

(१) स्वीडिश एकेडेमी के या और दूसरी एकेडेमी के, या और ऐसी संस्थाओ तथा समाजों के सदस्य जो कि स्वीडिश एकेडेमी के विधान तथा मत से सहमत है। (२) साहित्य तथा भाषा विज्ञान के विश्वविद्यालय के तथा विश्वविद्यालय के कालेजो के प्रोफेसर। (३) पिछले वर्षो के साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता। (४) भिन्न-भिन्न देशो के उन साहित्यिक समाजो के सभा

---

१. देखिये परिशिष्ट १।

पति जो कि अपने देशों के प्रतिनिधि माने जा सकते है।[1]

इन लोगों से यह भी अनुरोध किया जाता है कि अगले वर्ष के फरवरी माह की पहली तारीख तक अपने-अपने प्रस्ताव पेश कर दे। इन प्रस्तावों के साथ-साथ उनकी सिफारिशों के लिए प्रमाण भी पेश करना अनिवार्य है।

सितम्बर के महीने के पहले नोवेल कमेटी अपने प्रस्ताव स्वीडिश एकेडेमी को सामने पेश करेगी। प्रस्तावों पर विचार-विमर्श के बाद स्वीडिश एकेडेमी अपना अन्तिम निर्णय अधिक-से-अधिक अक्तूवर के अन्त तक कर लेगी। नवम्बर के मध्य तक यह निर्णय पक्का हो जायगा।

नोवेल के देहान्त के उपरान्त उनके उत्तराधिकारियो ने उनके धन को कानूनी तौर पर अपनाने की कोशिश की थी, परन्तु ५ जून, सन् १८९८ को उन्होंने एक समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये। इस समझौते की दो धारायें विशेष महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय हैं :

(१) आज से हम डा० नोबेल के वसीयतनामे को मानते हैं और यह भी प्रतिज्ञा करते है कि न तो हम, न हमारा कोई उत्तराधिकारी इनके धन को अपनाने की चेष्टा करेगा।

(२) पाँचों पुरस्कार कम-से-कम पाँच वर्ष में एक बार अवश्य दिये जाएँगे। पहला वर्ष वह होगा जब नोबेल फाउण्डेशन अपना कार्य शुरू करेगा। पुरस्कार इस उद्देश्य के लिए रखे गए धन का कम-से-कम ६० प्रतिशत होगा। यह पुरस्कार तीन से अधिक हिस्सों में नही बाँटा जायगा।

'साहित्य' का अर्थ केवल नम्र-साहित्य ही नही होगा वरन् वह सब लिखित सामग्री जो कि अपने गुणों के कारण साहित्यिक है।

डा० नोबेल के वसीयतनामे में लिखा है कि पुरस्कार उन पुस्तको पर प्रदान किया जायगा जो गत वर्ष तैयार की गई है।

पुरस्कार के लिए नाम तभी पेश किया जायगा जब कोई लिखित तथा छपी हुई पुस्तक होगी।

यदि किसी ऐसे कार्य पर पुरस्कार प्रदान किया जायगा जो कि दो या दो से अधिक लोगों ने मिलकर किया है, तो वे सब पुरस्कार के अधिकारी होगे।

यदि किसी भी काम करने वाले का देहान्त हो गया है, तो उस काम पर पुरस्कार नही मिलेगा। परन्तु यदि प्रस्ताव के पेश होने के उपरान्त देहान्त हुआ है, तो पुरस्कार दिया जा सकता है।

संस्था या संगठन को भी पुरस्कार देने का निर्णय भी कमेटी के हाथ

१. देखिये Appendix B, Noble Foundation Calender 1957-58, P. 37

से होगा।

यदि किसी वर्ष किसी विषय में पुरस्कार प्रदान करने योग्य कोई काम न हुआ हो, तो उस वर्ष के पुरस्कार का धन अगले साल के पुरस्कार में सम्मिलित कर दिया जायगा।

पुरस्कार प्रदान करने वाली संस्था स्वीडिश पुरस्कार सेक्शन के लिए एक नोबेल कमेटी निर्धारित करेगी, जिसमें तीन या चार या पाँच सदस्य होंगे। ये सदस्य पुरस्कार प्रदान करने के विषय में अपने विचार प्रकट करेंगे।

नोबेल कमेटी के सदस्य होने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह स्वीडिश नागरिक हो। जो लोग नार्वेजियन नहीं भी है, वे भी नार्वेजियन कमेटी के सदस्य हो सकते है।

किसी भी (स्त्री या) पुरुष के नाम पुरस्कार पर तभी विचार-विमर्श हो सकता है जब उसके नाम की किसी ऐसे व्यक्ति ने सिफारिश की हो जिसको इसका अधिकार है। व्यक्तिगत प्रार्थना-पत्रों पर विचार नहीं किया जाएगा।

अब प्रतिवर्ष की पुण्य-तिथि के अवसर पर नोबेल फाउन्डेशन की जयन्ती भी मनाई जाती है। शान्ति-सम्बन्धी कमेटी का समारोह आस्लो में, और बाकी चार स्टाकहाम में होता है। पुरस्कार-स्वरूप एक चैक, एक डिप्लोमा या प्रमाण-पत्र और एक स्वर्ण-पदक जिसके एक ओर डा० नोबेल की तस्वीर तथा दूसरी ओर एक लेख रहता है, प्रदान किया जाता है।

चैक को अगले वर्ष के अक्तूबर की पहली तारीख तक भुना लेना पड़ता है, अन्यथा वह धन फिर नोबेल फाउन्डेशन फन्ड मे चला जाता है।

पुरस्कार-विजेता के लिए यह जरूरी है कि पुरस्कार पाने के छ. महीने के अन्दर लगभग १० जून तक एक व्याख्यान जो कि उसके विषय से सम्बन्धित हो, दे। यह व्याख्यान स्टाकहाम मे दिया जाता है, केवल शान्ति-पुरस्कार-विजेता का व्याख्यान क्रिस्टियाना, आस्लो मे होता है।

पुरस्कार-प्रदान करने के विरोध मे प्राप्त हुए किसी विरोधपत्र पर ध्यान नहीं दिया जाता है।

नोबेल पुरस्कार प्रदान करने मे कुछ अजीब कठिनाइयो का सामना करना पड़ता है और कभी-कभी इसकी तीव्र आलोचना भी होती है। एल्फ्रेड नोबेल के वसीयतनामा के अनुसार स्टाकहाम मे जो एकेडेमी है उसे पुरस्कार प्रदान करने का अधिकार सौंपा गया था, स्टाकहाम मे एक से अधिक ऐकेडेमी है, किस एकेडेमी को यह कार्य सौंपा गया था। सबसे पहले तो यही प्रश्न उठा। अन्त मे स्वीडिश एकेडेमी इस पर राजी नहीं थी। ये कारण थे : (१) वसी-

यतनामा में इस बात का साफ-साफ उल्लेख न होना, और (२) एकेडेमी ने इस बात पर खूब गौर किया कि संसार भर के वर्ष भर के साहित्य से, जो कि पिछले वर्ष लिखा गया हो, सर्वश्रेष्ठ लेखक को छाँट निकालना अत्यन्त कठिन समस्या है, और एकेडेमी निर्णय चाहे जो भी हो, उस पर काफी नुक्ताचीनी होगी। परन्तु एकेडेमी इनकार करके इस सुअवसर को खोना भी नहीं चाहती थी अतः उसके संचालक सी० डी० आफ विरसेन ने इस कार्य को स्वीकार कर लिया। बाद मे जो नियम बने, वह सब डा० नोबेल के वसीयतनामे के अनुसार नही थे। इसके अनुसार उसी काम पर पुरस्कार प्रदान किया जाएगा जो कि गत वर्ष किया गया होगा और उसके पहले के कामो पर पुरस्कार तभी प्रदान किया जाएगा जबकि उसका महत्त्व आधुनिक समय मे ही ज्ञात होगा।

फिर नामो का प्रस्ताव भी प्रत्येक वर्ष की १ फरवरी तक हो जाना अनिवार्य है। इस नियम के कारण दो प्रकार की कठिनाइयाँ उत्पन्न होती है। एक तो यह कि यदि कोई पुस्तक इसके बाद प्रकाशित होती है, तो वह विचाराधीन नही हो पाती। सन् १६२६ ई० मे रेमार्क की पुस्तक आल क्वाइट आन द वैस्टर्न फ्रन्ट[1] के लिए असफल चेष्टा की गयी। दूसरी कठिनाई यह है कि जो प्रस्तावित नाम १ फरवरी के बाद आते है उन पर विचार नही किया जाता। साथ ही जो नाम गत वर्ष प्रस्तावित किये जा चुके है लेकिन इस वर्ष प्रस्तावित नही हुए है, उन पर भी विचार नही किया जाता।

प्रस्तावित नामों के मिल जाने के बाद एकेडेमी के स्थायी विशेषज्ञ उन पर विचार करके एक विशेष कमेटी नोबेल कमेटी के पास भेज देती है। इस काम का निर्णय अक्तूबर के अन्त तक मालूम हो जाता है, पहली नवम्बर के लगभग नोबेल कमेटी निर्णय कर लेती है। इस अवसर पर कम-से-कम बारह सदस्यों का उपस्थित होना अनिवार्य है या तो फिर इतने ही लोगो ने अपना-अपना मतपत्र भेज दिया हो। अगर किसी प्रत्याशी को आधे से अधिक पत्र नहीं मिल पाते है तो उस वर्ष पुरस्कार नही दिया जाता और वह आगामी वर्ष के लिए टाल दिया जाता है।

प्रत्येक वर्ष लगभग तीस नाम प्रस्तावित होते है। इनमे से कुछ नाम तो वे होते है जिन्हे करने वाले सदस्य एक साल के बाद दूसरे साल, और ऐसे ही कई साल तक प्रस्तावित करते रहते है। ऐसा भी हो सकता है कि एक ही वर्ष मे कई सदस्य एक ही नाम प्रस्तावित करे। कभी-कभी बार-बार वही नाम भेजने

१. रेमार्क का असली नाम था एरिक मारिया क्रैमर और उसकी पुस्तक का नाम (जर्मनी) मे था—इन वेस्टेन निख्स नूस।

से सफलता भी मिल सकती है, फिर कई ऐसे धुरंधर साहित्यकार भी थे जिनकी देन साहित्य मे अमर रहेगी, फिर भी उन्हे यह पुरस्कार नहीं मिल सका था।

विज्ञान के क्षेत्र मे ही ऐसा भी हो जाता है कि एक ही पुरस्कार उसी साल साथ-साथ काम करने वाले दो वैज्ञानिकों को प्रदान कर दिया जाता है। साहित्य में आज तक ऐसा नही हुआ है। केवल दो ही वर्ष ऐसा हुआ है जब एक ही पुरस्कार दो लेखकों में बट गया हो :—एक तो सन् १९०४ ई० में प्रावेन्स के कवि मिस्त्राल और स्पेन के नाट्यकार एकेगारे के बीच और दूसरे सन् १९१७ ई० मे दोनो डैनिश लेखको ग्येलेरुप और पोण्टोपिदान के बीच बंट गया था, अन्यथा हर साल या तो एक ही लेखक को यह पुरस्कार दिया जाता या फिर दिया ही नही जाता। साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार सन् १९१४ ई०, सन् १९१८ ई०, सन् १९३५ ई० और सन् १९४०-४३ ई० को छोड़ कर प्रत्येक वर्ष दिया जाता रहा है।

इस पुरस्कार को प्रदान करने के लिए दस दिसम्बर को एक बहुत बड़ा समारोह स्टाकहाम कन्सर्ट हाल में होता है। इस अवसर पर स्वीडिश अकादमी का एक सदस्य पुरस्कार विजेता को लोगों के सामने प्रस्तुत करता है और उसे एक स्वर्ण पदक, एक डिप्लोमा (जिस पर कि संक्षेप मे उन कारणों का उल्लेख होता है जिनके लिए उसे यह पुरस्कार दिया गया है) तथा एक चेक दिया जाता है। इस उल्लेख मे कभी-कभी पुरस्कार-विजेता लेखक की किसी एक पुस्तक का नाम भी लिया जाता है। आज तक ऐसे सात ही उदाहरण प्रस्तुत हैं।

ध्यान देने की बात है (जैसा कि साधारणत भारतवर्ष मे विश्वास किया जाता है) सन् १९१३ ई० मे रवीन्द्रनाथ टैगोर को यह पुरस्कार 'गीताजलि' के लिए नही प्रदान किया गया था। वैसे ही सन् १९५८ मे यह पुरस्कार बोरिस पास्तरनाक को उनके उपन्यास 'डा० जिवागो' के लिए नही, वरन् उनकी कविताओं की विशेषताओ के लिए प्रदान किया गया था।

इस क्षेत्र मे लेखिकाएँ लेखकों से पीछे हो, यह बात बहुत ठीक नही है। यह पुरस्कार लेखिकाओ ने भी अपने कला-कौशल से प्राप्त किया है। अब तक पांच लेखिकाओं को यह सम्मान प्राप्त हो चुका है।

फ्रांस को सबसे अधिक बार साहित्य का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। सबसे पहली बार यह गौरव फ्रांस को ही प्राप्त हुआ था। इस देश को साहित्य का पुरस्कार अब तक ११ बार मिल चुका है। इसके बाद ब्रिटेन और अमरीका का नंबर है, जिन्होंने यह पुरस्कार ६-६ बार पाया है। जर्मनी ने पांच बार, और इटली ने ४-४ बार, डेनमार्क, नार्वे, स्पेन और रूस ने ३-३ बार,

पोलेण्ड, स्विटजरलैण्ड, यूगोस्लेविया ने दो-दो बार तथा वेल्जियम, चिली, फिनलैन्ड, ग्रीस, आइसलैण्ड, भारत तथा आयरलैण्ड ने केवल एक-एक बार इस पुरस्कार को प्राप्त किया है।

इससे यह भी ज्ञात होता है कि आज तक एशिया-भर में इस पुरस्कार को पानेवाला एक ही देश है, और वह है भारत। भारत को साहित्य के अतिरिक्त विज्ञान का भी एक नोवेल पुरस्कार मिल चुका है। इसके प्राप्त करनेवाले हैं डा० चन्द्रशेखर वेंकेट रमन।

साहित्य को प्रथम पुरस्कार सन् १६०१ ई० में फ्रांस के कवि सुली प्रूधों को दिया गया। पुरस्कार की घोषणा होते ही इस पर नुक्ता-चीनी शुरू हो गई। फ्रांसीसी अकादमी के कई सदस्यों ने सुली प्रूधों का नाम प्रस्तावित किया था। इनको यह पुरस्कार देने में स्वीडिश अकादमी ने एक वहुत ही महत्त्वपूर्ण धारा का उल्लंघन किया था—और वह यह कि पुरस्कार किसी नवीन अर्थात् हाल ही में हुए काम के लिए मिलना चाहिए न कि उस काम के लिए जो वहुत पहले किया जा चुका है। पुरस्कार का समाचार पाने पर ४२ स्वीडिश लेखकों, कलाकारों तथा आलोचकों ने एक पत्र लियो टाल्स्टाय को लिखा जिसका आशय था कि यह पुरस्कार उन्हें ही मिलना चाहिए था। इसमे स्वीडिश अकादमी का कोई दोष नही था, क्योंकि टाल्स्टाय का नाम तो प्रस्तावित ही नहीं हुआ था और इसलिए स्वीडिश अकादमी उनके नाम पर विचार ही नहीं कर सकती थी, परन्तु इस वर्ष के उपरान्त भी टाल्स्टाय को कभी यह पुरस्कार नही मिला।

नोवेल के वसीयतनामे में लिखा है कि आदर्श प्रवृत्ति के किसी काम पर यह पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। इसलिए कई विख्यात लेखको को यह पुरस्कार नहीं दिया जा सका। उदाहरणार्थ हेनरिक, इब्सन और टामस हार्डी को यह पुरस्कार इसी कारण से नही मिला। दूसरी वार (१६०२) में यह पुरस्कार पिच्चासी-वर्षीय जर्मन इतिहासकार मामसन को दिया गया। इनकी पुस्तक 'ए हिस्ट्री आफ रोम' सन् १८५० में प्रकाशित हुई थी, और ५२ वर्ष वाद इन्हे यह पुरस्कार इसी पुस्तक पर मिला।

स्वीडिश अकादमी के सामने प्रतिवर्ष यह वड़ी जटिल समस्या उत्पन्न होती है कि संसार-साहित्य में से एक लेखक को कैसे चुना जाय, क्योकि लेखकों मे उपन्यासकार, नाटककार, कवि, दार्शनिक तथा इतिहास लिखने वाले सभी होते है। अधिकतर तो पुरस्कृत व्यक्ति लेखक ही होते हैं, परन्तु तीन पुरस्कृत व्यक्ति दार्शनिक थे—यूकेन, वर्गसन तथा रसल। मामसन तथा चर्चिल इतिहास लिखने वाले लोगों में से हैं।

कम ही जानते थे, परन्तु इस पुरस्कार के मिलने के बाद इनके विषय में जिज्ञासा जागृत हुई और इनकी रचनाओं के अनुवाद तथा उनकी विवेचना यूरोप तथा अमेरिका में प्रकाशित हुए।

भावुकतापूर्ण कोमल पदावली तथा गंभीर विचार-धारा ये इनकी कविताओं के दो विशेष गुण हैं। शायद ये दोनों गुण इन्हें विरासत में मिले थे क्योंकि इनकी माँ को अपने प्रेमी से विवाह करने के लिये दस वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ी थी और विवाह के चार वर्ष बाद उनके पति का देहान्त हो गया था।

इनका पहला कविता-संग्रह, 'स्टान्सेज एट पोएम्स' (Stances et Poems) सन् १८६५ ई० में प्रकाशित हुआ था। इस समय इनकी अवस्था कुल २६ वर्ष थी। फ्रांस में इस संकलन की मुक्त-कंठ से प्रशंसा हुई। अतः इन्होंने वैज्ञानिक या वकील होने का इरादा छोड़कर कविता को ही अपनाने का निश्चय किया और सन् १८६६ में वह अपनी सरकारी नौकरी छोड़कर पूर्णतः साहित्य-साधना में जुट गए। इसके बाद जो कविताएँ प्रकाशित हुईं उनमें भावुकता तथा युक्ति का संघर्ष मिलता है। इनकी रचनाओं की यह विशेषता उत्तरोत्तर और अधिक प्रबल होती गई। सन् १८८८ ई० में इन्होंने 'ले बान्येर' नामक कविता प्रकाशित कराई। इसमें इन्होंने सुख (Happiness) को प्राप्त करने के तीन साधन बताये हैं : जिज्ञासा (Curiosity), विषय-सुख और विज्ञान (Sensuousness and Science), तथा सदाचार व त्याग (Virtue and sacrifice)। यह इनकी एक बड़ी और लम्बी कविता है। इसके पूर्व इन्होंने 'ला जस्टिस' नामक कविता प्रकाशित की थी, जिससे इनकी ख्याति फैली थी। इन दोनों कविताओं के अध्ययन से इनकी विचार-धारा का परिचय मिलता है।

इनकी रचनाओं में अनेक गुण पाये जाते हैं। उन रचनाओं में सच्चाई, सज्जनता तथा सरलता का अपूर्व परिचय मिलता है।

सन् १८९५ ई० में इनकी कविता 'कि से-जे' (Que sais-je) प्रकाशित हुई, जिसमें इनका ध्यान विज्ञान की ओर गया। इनकी कविता का एक विशेष गुण शंका (doubt) भी है। इनकी अन्तिम रचना 'पैस्केल' (Pascal)[1] से सम्बन्धित थी।

सुली प्रुधो के विषय में यह कहा गया है कि वह ऐसे कवि हैं जो कि विचार (think) करते हैं, न कि ऐसे विचार करने वाले जो कविता को केवल एक औज़ार (tool) की तरह इस्तेमाल करते हैं। इनकी रचना की सुन्दरता में लय का गुण है। संगीत इनकी कविता का विशेष अंग है।

---

१. (१६२३ – ६२) फ्रांस का एक प्रसिद्ध लेखक।

सुली प्रूधों केवल प्रथम फ्रांसीसी ही नहीं वरन् प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने साहित्य का नोवेल पुरस्कार प्राप्त किया था। इनकी रचनाओं में एक तीक्ष्णता, उदात्तता तथा भावुकता है जो कि उन्हें अन्य रचनाओं से भिन्न बना देती है।

इनको पुरस्कार प्रदान करते समय स्वीडिश अकादमी (Swedish Academy) ने कहा था :—

"इनकी कविताओं में हमे उच्च आदर्श का जो भव्य रूप, जो कलात्मक पूर्णता एवं मन और मस्तिष्क (बौद्धिकता एव भावुकता) का जो अपूर्व व अद्भुत सम्मिश्रण मिलता है" उसी के लिए इन्हें यह पुरस्कार दिया जाता रहा है। प्रूधों ने पुरस्कार का अधिकांश भाग दान कर दिया था।

अपने जीवन के अंतिम दिन इन्होंने शाटतने में काटे। इनके ये दिन सुख के नहीं थे। इनको अकेलापन बहुत सताता था और यह अस्वस्थ रहते थे। ७ सितम्बर सन् १९०७ को, ६८ वर्ष की अवस्था में इनका एकाएक देहान्त हो गया।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) स्टान्सेज एट पोएम्स (Stances et Poems)	१८६५
(२) लेस डेस्टिन्स (Les Destins)	१८७२
(३) लेस वेन्स टेन्ड्रेसेस (Les Vaines Tendresses)	१८७५
(४) लॉ जस्टिस (La Justice)	१८७८
(५) ल एक्सप्रेशन डान लेस वोक्स आर्ट्स (L'Expression dan les beaux arts)	१८८४
(६) ले वानहियूर (Le Bonheur)	१८८८
(७) रिफ्लेक्शन्स सूर ल'आर्ट डेस वर्स (Reflexions sur l'art des vers)	१८९२
(८) ला व्रे रेलिजन सेलान पैस्कल (La vraie Religion selon pascal)	१९०५



थ्योडोर मामसन
(१८१७-१९०३)

थ्योडोर मामसन (Theodor Mommsen) का जन्म जर्मनी के गार्डिग (Garding) नामक शहर मे ३० नवम्बर १८१७ को हुआ। कील में अपनी प्रारम्भिक शिक्षा करने के वाद इन्होंने रोमन कानून (Roman Law) का अध्ययन प्रारम्भ किया। सन् १८४३ ई० मे डैनिश सरकार ने इन्हे वजीफा देकर उच्च अध्ययन के लिए इटली भेज दिया। सन् १८४८ ई० मे जब इनकी आयु कुल ३१ वर्ष थी इन्हे लिपजिग मे सिविल लॉ के प्रोफेसर के पद पर नियुक्त कर दिया गया। कुछ समय के वाद (१८५० ई०) राजनीतिक कारणो से इन्हें उस पद से हटा दिया गया। परन्तु वाद मे (१८५२ मे) फिर से इन्हे ज्युरिख में प्रोफेसर वना दिया गया।

सन् १८५८ मे यह वर्लिन मे प्रोफेसर नियुक्त किए गए, जिसमे कि यह अपना अटूट ध्यान अध्ययन की ओर दे सके। यह कई वर्ष तक प्रशियन पार्लियामेट के सदस्य भी रहे। इन्होने अपने जीवन-काल मे अनेक विषयों का अध्ययन किया, उन पर अनेक पुस्तके लिखी और अपनी वुद्धि की तीक्ष्णता तथा विस्तार से लोगो को चकित कर दिया। इनकी मृत्यु १ नवम्बर १९०३ को शार्लटिन्वर्ग (Charlottenburg) नामक शहर मे हो गई। इस समय उनकी आयु ८६ वर्ष की थी।

मामसन दूसरे मनुष्य थे जिन्होंने नोवेल साहित्य पुरस्कार प्राप्त किया

था। इस पुरस्कार से इनकी मातृभूमि जर्मनी का सम्मान साहित्य-संसार में अत्यधिक बढ़ गया। थ्योडोर मामसन को जब पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की गई तो किसी को भी असन्तोष नही हुआ। परन्तु इसके साथ दो बातें और भी निश्चित हो गईं। एक तो यह कि 'साहित्य' (literature) शब्द का अर्थ जो स्वीडिश एकेडेमी लगाती है वह उतना संकीर्ण नहीं है जितना कि इसके आचार्य लगाते है। अब यह स्पष्ट हो गया कि 'साहित्य' की परिभाषा अधिक विस्तृत है और इसमें इतिहास भी सम्मिलित हो सकता है। दूसरी बात यह स्पष्ट हुई कि यह पुरस्कार उन सभी रचनाओं को ध्यान में रखकर दिया जाता है जो लेखक ने अब तक लिखी हैं न कि, जैसा कि एल्फ्रेड नोवेल के वसीयत-नामे में था, 'पिछले वर्ष' (the preceding year) प्रकाशित[1] हुई है। मामसन को यह पुरस्कार ८४ वर्ष की अवस्था में मिला था।

थ्योडोर मामसन प्रकाण्ड पडित थे। इन्होंने इतिहास, कानून तथा पुराण पुरावशेष शास्त्र (archaelogy) का गहरा अध्ययन किया था। इन्होंने बहुत से देशों का भ्रमण किया था। इन्होंने सौ से ऊपर नाना प्रकार की रचनाएँ की हैं। परन्तु इनकी ख्याति एक ही पुस्तक पर निर्भर है जिसका नाम भी नोवेल पुरस्कार प्रदान-पत्र (diploma) में लिखा है। इसका नाम है 'रोम के गेस्किस्टे' —रोम का इतिहास। यह पुस्तक चार खण्डो में है।

मामसन की यह पुस्तक न केवल उस समय के पंडितों को अपने विस्तार तथा गहराई से प्रभावित करने में सफल हुई थी वरन् इसने रोम के भूले हुए जीवन को एक बार फिर उसके जीवन्त रूप मे पाठकों के समक्ष ला खड़ा किया था। इस पुस्तक में इन्होंने न केवल रोम का, परन्तु सम्पूर्ण इटली का इतिहास प्रस्तुत किया है। रोम तथा रोम के लोग वैसे तो इटली का केवल एक अंग थे। परन्तु इन्होंने अपनी सभ्यता तथा शक्ति के बल पर समूचे इटली पर अपना आतंक जमा लिया था। मामसन ने इतिहास की एकता (unity of history) पर ज़ोर डाला है, और यह दिखाने की सफल चेष्टा की है कि १८०० ई० पूर्व के इटली तथा उन्नीसवी सदी के जर्मनी तथा यूरोप मे कोई भेद नही है। इन्होंने रोम की सभ्यता के मुख्य लोगों को फिर से जीवन प्रदान कर दिया है। सिसेरो (Cicero), हैनिबल (Hannibal), सुली (Sully) तथा सीज़र (Caeser) का परिचय करने में पाठक किसी पुराने मित्र से मिल रहा है। इस पुस्तक में कुछ अंश अब भी प्रसिद्ध हैं, जैसे कि हैनिबल का आल्प्स पार करना। इस पुस्तक में बहुत सी बातों का वर्णन है, जिससे कि मामसन के

१. देखिये—कोड आफ़ स्टैचूट्स, सेक्शन ३, पृ० २।

अपरिमित ज्ञान तथा पाडित्य का परिचय मिलता है।

मामसन की पुस्तक केवल ऐतिहासिक घटनाओ तक ही सीमित नहीं है। उसमें धर्म, लोगों का रहन-सहन, साहित्य तथा कला का भी अच्छा-खासा वर्णन है। मामसन ने अतीत का वर्णन तो चतुराई तथा विलक्षणता से किया ही है, परन्तु इनकी रचनाओं से उनके वर्तमान के ज्ञान का भी वोध होता है।

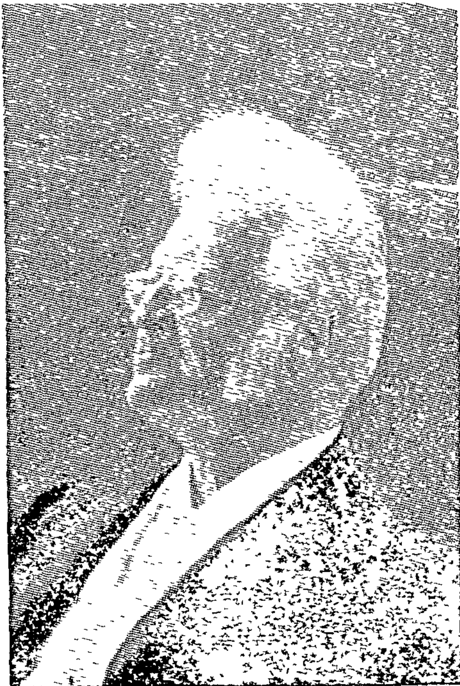
इनको यह पुरस्कार ८५ वर्ष की अवस्था मे १० दिसम्वर सन् १९०२ को मिला था, और इसके वाद यह पूरे एक साल भी जीवित न रहे।

सन् १९०२ मे स्वीडिश एकेडेमी ने इन्हे पुरस्कार देते समय कहा था :

"यह ऐतिहासिक रचनाओ की कला के सर्वश्रेष्ठ आचार्य है। इनकी रचना 'रोम का इतिहास' विशेष रूप से उल्लेखनीय है।"

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) हिस्ट्री आफ रोम (A History of Rome)	१८६२
(२) रोम, आदि काल से ४० ई० पू० तक (Rome, From the Earliest Times to 40 B. C.)	१८६७
(३) द प्राविन्सेज आफ द रोमन एम्पायर, फ्राम सीजर टु डायोक्लेशियन (The Provinces of the Roman Empire, from Caeser to Dicocletian)	१८६७



व्योर्नस्तयेर्ने व्योर्न्सन

(१८३२–१९१०)

व्योर्न्सन का जन्म नार्वे के एक देहात क्विन्के (Kvinke) में ८ दिसम्बर सन् १८३२ ई० को हुआ था। इनके पिता एक गिर्जाघर के पादरी थे और इनके जन्म के समय क्विन्के ही में काम करते थे। सन् १८३७ ई० में जब व्योर्न्सन ५ वर्ष के थे, इनके पिता का स्थानान्तर क्विन्के से नूसेट (Noesset) हो गया। क्विन्के एक बहुत ही रूख-सूखा देश था, और वहाँ प्राकृतिक सौन्दर्य का एकदम अभाव था, परन्तु नूसेट बड़ी ही सुन्दर जगह थी। व्योर्न्सन को यह नई जगह बहुत पसन्द आई। इन्होंने नार्वे की राजधानी आस्लो (Oslo) के विश्वविद्यालय से स्नातक की परीक्षा पास की। इस समय यह २० वर्ष के थे। इन्होंने यूरोप तथा अमेरिका का देशाटन भी किया। इन्होंने एक सिने-तारिका से विवाह किया था। इनका दाम्पत्य जीवन अत्यधिक आनन्ददायक और सुखी था। इनकी पत्नी लेखिका भी थीं। कहा जाता है कि जब ये दोनों किसी जगह खाने के लिए जाते थे, तो रीति-रिवाज के ढंग के विपरीत, इनकी पत्नी इनके दाहिने तरफ बैठती थीं। राजनीतिक कारणों से इनको कुछ समय के लिए देश भी छोड़ना पड़ा। नार्वे के दूसरे महान् लेखक, हेन्रिक इब्सन (Henrık Ibsen) से इनकी

मित्रता विश्वविद्यालय मे अध्ययन करते समय ही हो गई थी और यह मित्रता फिर जीवन भर बनी रही। शायद इसी के फलस्वरूप इनकी पुत्री की शादी इब्सन के लड़के से हुई थी। इनका देहान्त २६ अप्रैल १९१० को हुआ।

ब्योर्न्सन को यदि नोबेल पुरस्कार न भी प्रदान किया गया होता तो भी उनकी महानता में कोई कमी नही होने वाली थी। परन्तु इस पुरस्कार ने, जैसा कि होता है, इनके गुणों पर, स्वीकृति की छाप लगा दी। इनको यह पुरस्कार सन् १९०३ मे मिला था। यह तीसरे लेखक थे जिन्होंने यह सम्मान प्राप्त किया। अपने देश, नार्वे मे तो यह प्रथम व्यक्ति थे। जब इनको यह पुरस्कार मिला, तब इनकी आयु ७१ वर्ष की थी।

डा० एल्फ्रेड नोबेल के वसीयतनामे के अनुसार, जो पाँच आदमी नार्वेजियन स्टोर्टिंग (Norwegian Storting) से शान्ति के लिए पुरस्कार प्रदान करने के विषय में विचार-विनिमय करने के लिए चुने गये थे, उनमें से एक ब्योर्न्सन भी थे। इन्होंने अपने ७८ वर्ष के जीवन में कई प्रकार से अपने देश तथा साहित्य की सेवा की। इन्होने कविता, उपन्यास, नाटक, कहानी इत्यादि सभी कुछ लिखा है। यह कई बार थियेटर के मैनेजर तथा डायरेक्टर भी रहे। इन्होंने लोगो को सच्चाई का जीवन व्यतीत करने का, तथा राष्ट्रों के बीच आपस में शान्ति बनाये रखने का संदेश दिया। पुरस्कार मिलने के पहले ही इनको 'नार्वे के पिता' की उपाधि मिल गई थी।

इनकी साहित्य-सेवा लोक-कथाओं तथा लोक-गीतो मे विशेष रूप से प्रदर्शित है। इनकी आरम्भ की रचनाओं में ग्रामीण (किसान) जीवन का चित्रण है तथा उसके साथ-साथ कवि के आदर्श और सागा (Saga) तथा नार्वे के जीवन का वास्तविक खाका भी है। उनके नाटकों को समस्या-नाटक ही कहना उचित होगा। इनकी रचनाओ में गम्भीरता तथा शक्ति और सद्भाव का एक अनोखा मिश्रण हमें मिलता है। ब्योर्न्सन कवि थे, और उनकी रचनाओं में नार्वे के जीवन का रंगीन चित्रण भरा पड़ा है। उनके नाम मे ब्योर्न शब्द दो बार आया है। नार्वे की भाषा मे इसका अर्थ होता है 'भालू'। लोगों का कहना है कि इनमे भालू ही जैसी शक्ति थी, और बुराइयो की तरफ वह ऐसे ही झपटते थे जैसे भालू अपने शिकार की तरफ झपटता है।

उन्होंने अपने देश की लोक-कथाओ का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया था। उनको इस बात का गर्व था कि उनके पूर्वज किसान थे। और इन्ही दोनों कारणो से वह वहाँ के जीवन को अंकित करने में विशेष रूप से सफल हुए थे। इनकी कविताओ मे देश-भक्ति के उद्‌गार हैं और इनकी कुछ रचानाएँ तो

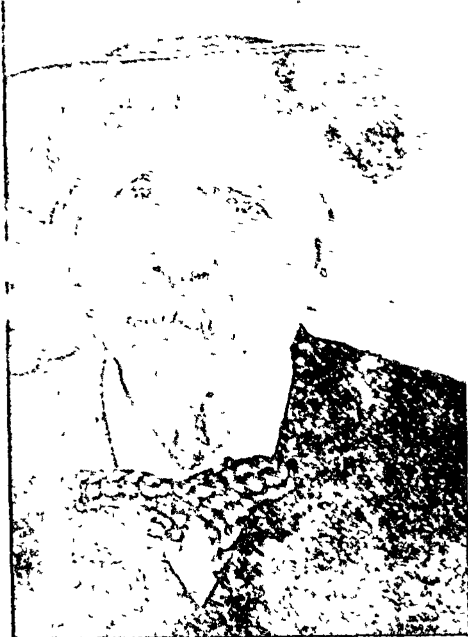
राष्ट्रीय गान तक मानी जा चुकी है।

सन् १६०३ में स्वीडिश अकादमी ने इन्हें पुरस्कार देते हुए कहा था—

"एक कवि के रूप मे उन्होंने जो आदर्श, उच्च, भव्य व वहुमुखी कार्य किया है और जो प्रेरणा की ताजगी तथा आत्मा की शुद्धता दोनो ही दृष्टियों से अद्भुत और अपूर्व है, उनके उसी कार्य के सम्मान मे यह पुरस्कार उन्हें दिया जा रहा है।"

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) सिन्नोवे सोल्बाकेन (Synnove Solbakken)	१८५७
(२) आर्ने (Arne)	१८५२
(३) ए हैप्पी वॉय (A Happy Boy)	१८६०
(४) फिशरमेडेन (Fishermaiden)	१८६८
(५) बिटवीन दी बैटिल्स (Between the Battles)	१८५७
(६) लेम हुल्डा (Lame Hulda)	१८५२
(७) काङ्ग स्वेरे (Kong Sverre)	१८६१
(८) द ग्रेट ट्रोलॉजी (The Great Trology)	१८६२
(९) सिगर्ड द वैस्टर्ड (Sigurd the Bastard)	१८६२
(१०) सिगर्ड जोलसरफर (Sigurd Jolsarfar)	१८७२
(११) द न्युली मैरीड (The Newly Married)	१८६५
(१२) मैरी स्टुअर्ट इन स्कॉटलैण्ड (Mary Stuart In Scotland)	१८६५
(१३) पोएम्स एण्ड सांग्स (Poems and Songs)	१८७०
(१४) आर्नल्जाट जेलीन (Arnljot Gelline)	१८७०
(१५) ए वैन्क्रप्सी (A Bankruptcy)	१८७४
(१६) द किंग (The King)	१८७७
(१७) द न्यू सिस्टम (The New System)	१८७९
(१८) जियोग्रेफी एण्ड लव (Geography and Love)	१८८५
(१९) बियान्ड अवर पावर्स (Beyond Our Powers)	१८८३



फ्रेडरिक मिस्त्राल

(१८३०–१९१४)

फ्रेडरिक मिस्त्राल प्रावेन्स (Provence) के कवि थे, और उनको फ्रान्स का कवि इसी माने मे कहा जा सकता है कि प्रावेन्स फ्रास का एक अंग बन गया है। परन्तु प्रावेन्स का अपना जीवन, अपना व्यक्तित्व तथा अपना अलग लोक-साहित्य है और उसे 'फ्रास' कह कर सम्बोधित करना गलती होगी।

ये बाते जान लेना इसलिये आवश्यक हो जाता है क्योकि फ्रेडरिक मिस्त्राल, जिन्हे सन् १९०४ ई० मे साहित्य का पुरस्कार मिला था, प्रावेन्स के, न कि फ्रांस के लेखक तथा कवि थे। इनका पूरा नाम था फ्रेडरिक जॉजेफ एटियेन मिस्त्राल (Frederik Joseph Etienne Mistral)। इनका जन्म ८ सितम्बर १८३० ई० को मेलान, बूशे-दू-रोन (Maillane, Bouche-du-Rhone) नामक नगर के अमीर किसान-परिवार में हुआ था। इनकी माँ गांव की सीधी-सादी धार्मिक प्रकृति की स्त्री थी। फ्रेडरिक मिस्त्राल ने अपनी माँ से ही अपने देश की लोक-कथाओं तथा गीतों को अपनाना सीखा था। फ्रेडरिक मिस्त्राल पर सुन्दरता का प्रभाव बहुत जल्दी पड़ता था और उन्होंने अपने गांव की सुन्दरता का आभास बहुत कम उम्र मे ही पा लिया था।

नौ वर्ष की अवस्था में इन्हें एविग्नान (Avignon) नामक शहर में शिक्षा के लिए भेजा गया। एविग्नान में जॉजेफ रॉमेनिल (Joseph Roumanille) नामक एक शिक्षक थे। उन्होंने फ्रेडरिक मिस्त्राल के गुणों को शुरू में ही भाँप लिया था। उन्होंने स्कूल में नवयुवकों की एक संस्था बनाई थी। इस संस्था के सदस्यों ने यह प्रण किया कि वह आजीवन कविता, प्रेम तथा प्रावेन्स के उपासक रहेगे। बाद मे मिस्त्राल ने इस सस्था को 'फेलिब्रेस' (Felibres) का नाम दिया। इन लोगों ने यह भी प्रण किया कि भविष्य में प्रावेन्स ही की भाषा में पुस्तकें लिखेगे और इसी भाषा का प्रचार करेंगे। फेलिब्रेस को इस कार्य में काफी सफलता मिली। यह भी कहा जाता है कि फ्रेडरिक मिस्त्राल ने अपनी कुछ कवितायें अपनी अनपढ़ माँ को दिखाई थी। उन्हे पूरी आशा थी कि वह उनकी प्रशंसा करके उन्हें उत्साहित करेंगी। परन्तु उनकी माँ तो एकदम निरक्षर थीं। इस पर फ्रेडरिक मिस्त्राल ने यह निश्चय किया कि अब वह अपनी माँ ही की भाषा में कविता करेंगे।

एविग्नान की शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने नाइम्स विश्वविद्यालय (Nimes University) से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और फिर उच्च अध्ययन के लिए 'एक्स' नामक शहर में चले गये।

यह प्रावेन्स के बड़े भक्त थे। इसका गुण—इन्होंने अपनी रचनाओं मे भी इसका बहुत गुणगान किया है। इनको फ्रेन्च अकादमी (French Academy) का सदस्य भी बनाया गया, परन्तु इन्होंने सदस्य होने से इन्कार कर दिया, क्योंकि इसके कारण इनको प्रावेन्स छोड़ना पड़ता। इन्होने ४६ वर्ष की अवस्था पर आर्लेसियन खान्दान (Arlesian Family) की एक सुन्दर स्त्री से शादी की। इनकी पत्नी का नाम मारी रिविएर (Marie Riviere) था।

२५ मार्च सन् १९१४ को मेलेन में इनका देहान्त हो गया। उस समय इनकी अवस्था ८४ वर्ष की थी।

सन् १८५९ ई० में फ्रेडरिक मिस्त्राल ने 'मिरीयो' (Mireio) नामक कविता प्रावेन्स की भाषा मे प्रकाशित की। इसमें प्रावेन्स की लोक-कथाएँ, गीत तथा रोमांचकारी घटनायें (Romantic episodes) वर्णित है। इसको 'पैस्टारेल एपिक' (Pastoral epic) कहना अनुपयुक्त न होगा। जब इसका अनुवाद फ्रेडरिक मिस्त्राल ने फ्रांसीसी भाषा में किया, तो पेरिस के लोग इसे पढ़कर मन्त्र-मुग्ध हो गये और लेखक को वर्जिल (Virgil), थिआक्रिटस (Theocritus) तथा एरिआरटो (Ariorto) की उपाधियाँ मिलने लगी। सर्वप्रथम इसी कविता ने लेखक को ख्याति प्रदान की थी। इसकी कहानी तो कुछ खास नही है—

मिरीयो नाम की एक लडकी है । उसका बाप बहुत ही धनी है । वह एक गरीब लडके से प्रेम करती है, परन्तु पिता के कारण उससे शादी नही कर सकती । उन दोनों का जीवन आशा और निराशा में कटता जाता है । परन्तु अन्त मे मिरीयो को यह ज्ञात हो जाता है कि उसकी शादी उसके प्रेमी से नही हो सकती । वह भागकर एक गिर्जा मे जाती है, जहाँ उसका देहान्त हो जाता है ।

यह एक अत्यन्त ही सुन्दर कविता मानी गई है । इसमे रोमांचकारी घटनाये तो है ही, साथ-साथ प्रकृति का सौन्दर्य तथा प्रावेन्स के रीति-रिवाजों का भी वहुत सुन्दर वर्णन है । इसमें कविता का भी रस है और वास्तविकता का भी ।

सन् १८६७ ई० में इनकी 'कैलेन्डु' (Calendau) नामक कविता प्रकाशित हुई । इसका भी विषय वही है अर्थात् एक राजकुमारी का एक निर्धन युवक से प्रेम । इसमे राजकुमारी अपने प्रेमी को प्रेरणा देती है । यह भावुकतापूर्ण कविता है ।

फ्रेडरिक मिस्त्राल ने प्रावेन्स की भाषा, साहित्य तथा लोक-कथाओं के ऊपर कविता का जादू डाला । उनकी कविताओ में देश-प्रेम का जितना सुन्दर, मार्मिक तथा रुचिकर चित्रण है, उतना शायद प्रावेन्स के किसी अन्य लेखक की रचनाओ मे नही मिलता । इन्होंने देहाती जीवन का लोगों का, उनकी मामूली, घरेलू जीवन की वातों और घटनाओ का उल्लेख किया है । इनकी कविताओं ने एक नया आदर्श रखा था । इनकी रचनाओ मे संगीत तथा भावुकता का अद्भुत सम्मिश्रण मिलता है ।

इनको ७४ वर्ष की अवस्था मे नोवेल पुरस्कार प्रदान किया गया । यह 'फ्रान्स' के दूसरे कवि तथा लेखक थे जिन्हे इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था । इनको तथा स्पेन के एक लेखक को यह पुरस्कार आधा-आधा दिया गया । लेकिन पुरस्कार आधा-आधा वँट जाने पर भी उन्हें सम्मान उतना ही मिला था ।

इनको सम्मानित करते समय स्वीडिश अकादमी ने कहा था—"इनकी कविताओ की अपूर्व मौलिकता तथा सच्ची प्रेरणा के लिए, जिसमे इनके देश का प्राकृतिक सौन्दर्य तथा वहाँ का लोक-जीवन अपने सही और वास्तव रूप मे प्रतिविम्बित हुआ है, और साथ ही साथ इनके 'प्रावेन्स के शव्द-शास्त्रज्ञ' होने के नाते "इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है ।"

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) मिरीयो : ए प्रावेन्सल पोएम (Mireio : A Provencal Poem)	१८५६
(२) कैलेन्डु (Calendau)	१८६७
(३) लिस आइसेलो डाआर पोएम्स (Lis Iselo d'or Poems)	१८६७
(४) लू पोनेमो डान पाउज (Lou Ponemo don Pouse)	१८६७
(५) ट्रेसोर डान फिलीब्रिज (Tresor don Felıbrige)	१८७८-८६
(६) काम्प्रिहेन्सिव लेक्सीकान आफ प्रावेन्स (Comprehensive Lexicon of Provence)	१८८६



जोज़े एकेगारे
(१८३२–१९१६)

जोजे एकेगारे, जो कि 'एकेगारे' के ही नाम से संसार मे मशहूर है, नोबेल पुरस्कार पाने वाले प्रथम लेखक है। यह पुरस्कार इनको सन् १९०४ ई० में फ्रेडरिक मिस्त्राल के साथ ही प्रदान किया गया था। इस वर्ष के लिए जो धन पुरस्कार-स्वरूप दिया जाने वाला था, वह आधा-आधा इन दोनों मे बांट दिया गया, परन्तु सोने का तमगा तथा डिप्लोमा दोनो को मिला था।

एकेगारे का जन्म स्पेन की राजधानी मैड्रिड में सन् १८३२ ई० के मार्च महीने मे हुआ था। इन्होंने आरम्भ मे इन्जीनियरिंग का अध्ययन किया था और एस्केला डे केमिनोस (Escuela de Caminos) में भर्ती हुए थे। इन्होंने कुछ समय तक अल्मेरिया (Almeria) और ग्रनाडा (Granada) में इन्जीनियर के पद पर काम भी किया था, परन्तु फिर गणित के प्रोफेसर होकर अपने पुराने स्कूल वापस आ गए। बाद मे यह मैड्रिड के विश्वविद्यालय मे भी प्रोफेसर रहे।

एकेगारे ने अपने ८४ वर्ष के जीवन में नाना प्रकार के कार्य किए। इनमे अपूर्व स्फूर्ति थी और इनकी बुद्धि अत्यन्त तीक्ष्ण थी। इन्होंने साहित्य-सेवा तो खिलवाड़ या 'हॉबी' के रूप मे शुरू की थी। इन्होंने तो शायद कभी

स्वप्न में भी नहीं सोचा होगा कि यह एक दिन स्पेन के ही नहीं, परन्तु समूचे संसार के महान् लेखकों में गिने जाने लगेंगे। इन्होंने अपने देश की राजनीति में भी काफी भाग लिया था और यह कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा तथा आय-व्यय आदि मन्त्रालयों के समय-समय पर मन्त्री भी रहे थे। यह अपने देश के अत्यन्त सम्मानित नेताओं में गिने जाते थे। इनका देहान्त सन् १९१६ में हुआ।

यूरोप के विभिन्न देशों के साहित्य का प्रभाव, जैसा कि स्वाभाविक और अनिवार्य ही है, एक-दूसरे पर पड़ता रहा है। परन्तु ऐसा देखा जाता है कि स्पेन तथा स्पेन के साहित्य की स्थिति इस मामले में कुछ पृथक् है, फिर भी यह कहना न्यायसंगत न होगा कि स्पेन के ऊपर न किसी देश या उसके साहित्य का प्रभाव पड़ा है और न इसकी किसी पुस्तक ने यूरोप के किसी और देश के साहित्य को किसी भी प्रकार प्रभावित किया है। उदाहरण-स्वरूप सन् १६१६ ई० में प्रकाशित सर्वेन्टीज (Cervantes) का डान क्विक्जोट (Don Quixote) का उल्लेख पर्याप्त होगा। इस पुस्तक का प्रभाव आंगल साहित्य पर कितना अधिक पड़ा है, यह कहना असम्भव है।

एकेगारे को नोबेल पुरस्कार नाटक के लिए मिला था। यह प्रथम नाटककार थे जिन्होंने यह सम्मान पाया था। अभी तक तीन लेखकों को कविता के तथा एक को इतिहास के लिए यह पुरस्कार मिला था। इन्होंने दो वर्षों (१८७४-७६) के बीच तीन नाटक 'द वाइफ आफ द एवेन्जर', 'एट द हिल्ट आफ द स्वोर्ड' तथा 'ग्लैडियेटर आफ रैवेना' लिखे, परन्तु इनमे से कोई भी ऐसा नहीं था जिससे इनकी ख्याति स्पेन के बाहर जाती। इन्होंने सन् १८७७ ई० में एक नाटक लिखा जिसके कारण काफी विवाद हुआ और इनका नाम बाहर के देशों में भी फैल गया। यह था 'मैडमैन आर सेन्ट' (Madman or Saint)। इसका मुख्य पात्र डान लारेन्जो (Don Lorenzo) है। उसको अपने जीवन के अन्त में मालूम होता है कि उसे धोखा दिया गया है। वह अपनी आया (nurse) युआना (Juana) का लड़का है, न कि एक अच्छे घराने की धनी स्त्री का। उसकी आया उसको यह राज बताकर मर जाती है। अब डान लारेन्जो बूढ़ा हो चला है और उसकी लड़की की शादी अल्मान्टे के डचेज के लड़के से पक्की हो चुकी है। लेकिन वह अब निश्चय कर चुका है कि सच्ची बात को नहीं छिपाएगा। परन्तु उसके घराने में इसका विरोध होता है। उसके इलाज के लिए लोग पागलों के डाक्टरों को बुलाते हैं। वह एक वकील को बुलाकर अपना धन तथा नाम इत्यादि सब छोड़ने का निश्चय करता है। उसके अन्तिम शब्द हैं :

"क्या ? क्योंकि कोई अपना कर्तव्य करने पर तुला है, इसलिए वह पागल है ? यह कभी नही हो सकता ! आदमी न तो इतना अन्धा है और न इतना पतित ही है ।"

इसके बाद सन् १८८१ ई० मे "द ग्रेट गैलिओटो' और सन् १८९२ ई० मे 'द सन आफ डान युआन' प्रकाशित हुए । इन दोनो के बीच में एकेगारे और भी नाटक लिखते रहे । इनमे से कुछ ऐतिहासिक, कुछ रूमानी (romantic), कुछ शोकान्त तथा कुछ सुखान्त थे । इन्होने रूमानी नाटकों को फिर से जाग्रत करने की कोशिश की । इनके नाटकों मे उत्तेजना (passion) तथा कर्तव्य का सघर्ष प्रदर्शित हुआ है । इनका विचार इनके पात्रों से अधिक महत्वपूर्ण है । इनके पात्रों में भावना का ही सर्वोच्च स्थान है : "पात्र तो केवल उन भावनाओ को प्रदर्शन करने के साधन मात्र है ।" जब कौटुम्बिक सच्चाई के कारण इनके नाटकों मे भावुकता का संघर्ष होता है, तो उसमें एक वीर-रस (chivalry) का आभास होता है ।

सन् १८८० ई० के लगभग पाश्चात्य देशों के आचार्यो ने एकेगारे के नाटको का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया । 'द ग्रेट गैलिओटो' में यह दिखाया गया है कि जब कुछ लोग बिना जिम्मेदारी के या बिना विचार के, दूसरो के विषय मे बात-चीत करते है, तो क्या फल होता है ।

जब एकेगारे को नोबेल पुरस्कार मिला (१९०४) तब इनकी अवस्था ७२ वर्ष थी । वास्तव मे इनके लिखने के दिन खत्म हो चले थे । कुछ लोग तो इन्हे बीते हुए युग का लेखक कहने भी लगे थे । परन्तु इस पुरस्कार ने इनकी रचनाओ की तरफ लोगो का ध्यान फिर से आकर्षित कर दिया । इनकी रचनाओ में इनके गम्भीर विचारों का, इनकी तीक्ष्ण, पैनी बुद्धि का, इनके व्यंग का प्रमाण मिलता है ।

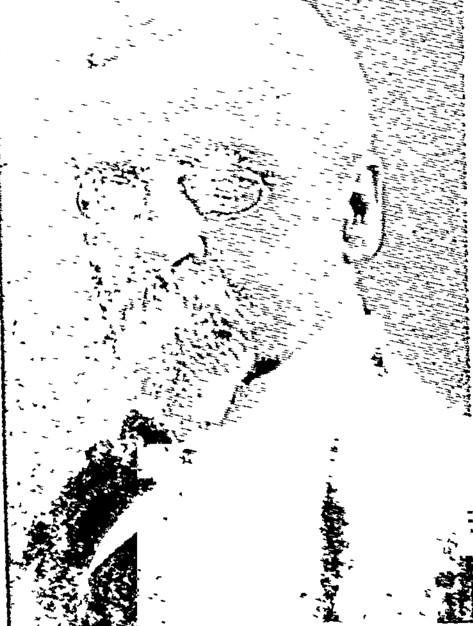
एकेगारे ३० वर्ष तक साहित्यिक मान तथा ख्याति के स्वामी बने रहे परन्तु अब उनके देहान्त के ४३ वर्ष बाद, इनके पढ़ने वाले कम है । इनके नाटको की कथा-वस्तु सुन्दर तथा सुदृढ होती है । इन्होने स्पेन तथा संसार की बुराइयों की तरफ पाठको तथा थियेटर जाने वालों का ध्यान आकर्षित किया था । इन्होंने गद्य तथा पद्य दोनों का प्रयोग कुशलता से किया है ।

इनको पुरस्कार प्रदान करते समय स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"इनकी अनेक व अद्भुत रचनाओ के सम्मान में, जिन्होने सर्वथा अपूर्व, विशिष्ट मौलिक ढंग से स्पेन की महान् नाट्य-परम्परा का पुनरुद्धार किया है ।" इन्हें यह पुरस्कार दिया जा रहा है ।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) द वाइफ आफ द एवेन्जर (The Wife of the Avenger)	
(२) ऐट द हिल्ट आफ द स्वोर्ड (At the Hilt of the Sword)	१८७४
(३) द ग्लैडियेटर आफ रेवेना (The Gladiator of Ravenna)	१८७६
(४) मैडमैन आर सेन्ट (Madman or Saint)	१८७७
(५) द ग्रेट गैलिओटो (The Great Galeoto)	१८८१
(६) द सन आफ डान युआन (The Son of Don Juan)	१८९२



हेनरिक सीनकीविच
(१८४६–१९१६)

हेनरिक सीनकीविच (Henryk Sienkiwick) नोवेल पुरस्कार पाने वाले पोलैण्ड के प्रथम लेखक थे। इनके वाद दूसरा नोवेल पुरस्कार प्राप्त करने के लिए पोलैण्ड को उन्नीस वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। आज तक पोलैण्ड को केवल दो ही नोवेल पुरस्कार प्राप्त हुए है। ये दोनों साहित्य के हैं और ऐतिहासिक साहित्य के लिए प्रदान किये गए है। पोलैण्ड को और कोई पुरस्कार प्राप्त करने का श्रेय नही प्राप्त हो सका है।

हेनरिक सीनकीविच का जीवन अपने देश की राजनीति से सम्वन्धित था। यह सामान्यतया स्वीकृत अर्थों में 'साहित्यकार' (Man of Letters) नही कहे जा सकेंगे। इनके देश का इतिहास ही इस वात का प्रमाण है कि वहाँ के लोग स्वाधीनता को कितना श्रेष्ठ समझते है और उसके लिए कितनी कुर्वानी करने को तैयार रहते हैं।

हेनरिक सीनकीविच का जन्म वोला आकरेजेस्का (Wola Okrzjska), सीयल्सी (Siedlece) पोलैण्ड में सन् १८४६ ई० में हुआ था। इन्होंने वारसा विश्वविद्यालय मे शिक्षा पाई थी। सन् १८६३ में, राजनीतिक क्रान्ति के कारण

इनको अपना देश छोड़कर रूस जाना पड़ा। यह संसार देखने तथा ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक थे और इसके लिए इन्होंने दक्षिण यूरोप का भ्रमण एक जिप्सी (Gypsy) का भेष बदलकर किया। सन् १८८० ई० मे यह पोलैण्ड लौट आये। इसी वर्ष इनकी पत्नी का देहान्त हो गया। इन्होंने इंगलैण्ड, फ्रांस, इटली, स्पेन, ग्रीस, अफ्रीका और पूर्वी देशों की यात्रा की। सन् १९१६ ई० मे सत्तर वर्ष की अवस्था में इनका देहान्त स्विटज़रलैण्ड में हो गया। विश्वयुद्ध के बाद सन् १९२४ ई० में इनके शव को क्रैको (Cracow) पोलैण्ड ले जाकर दफनाया गया।

हेनरिक सीनकीविच ने साहित्य की सेवा नाना प्रकार की रचनाओं से की है। इनकी प्रथम रचना 'ए प्राफेट इन हिज ओन कन्ट्री' (A Prophet In His Own Country), 'लिटवाज' (Litwos) के नाम से लिखी गई है। इसी नाम से 'फ्राम द नोटबुक आफ ए पोसेन' (From the Notebook of a Posen) भी है। इन्होंने अमेरिका के भ्रमण-काल में कई रचनायें कीं।

इनकी 'ट्रिलॉजी' (Trilogy), 'विद फायर एण्ड स्वोर्ड' (With Fire and Sword), जिसमें १६४७-१६५१ की, 'द डेल्यूज' (The Deluge), जिसमें १६५२ से १६५७ की, तथा 'पैन माइकिल' (Pan Michael), जिसमें १६७०-७४ तक की पोलैण्ड की ऐतिहासिक घटनायें वर्णित है—प्रसिद्ध है। इन तीन बड़ी-बड़ी रचनाओं में इन्होंने बहुत कुशलता के साथ १६४७ से १६७४ तक का पोलैण्ड का जीवन चित्रित किया है। इनसे इनके अपरिमित ज्ञान का परिचय मिलता है। इनकी रचनाओं में पोलैण्ड के नागरिकों के दैनिक जीवन का विलक्षण चित्रण है। उनकी परेशानी, डर, प्रेम, लड़ाई, झगड़ा सभी कुछ मिलता है। पोलैण्ड पर कज्जाकों (Cossaks), तुर्की लोगों (Turks) तथा स्वीडस (Swedes) के हमले इस काल में हुए थे। लेखक ने बड़ी सजीवता और विद्वत्ता के साथ इन सब घटनाओं का जीवन्त विवरण प्रस्तुत किया है।

इन्होंने सन् १८९६ ई० में उस पुस्तक की रचना की जिससे इनका नाम देश-विदेश में अभी तक लिया जाता है और जिसका तीस-पैंतीस भाषाओं मे अनुवाद हो चुका है तथा जिसकी फिल्म भी कई देशों में बन चुकी है। यह पुस्तक उनके गम्भीर अध्ययन का ही फल है। इसका नाम लेखक ने रखा था 'को वाडिस'[1] (Quo Vadis)। यहाँ पर इसकी कहानी का सारांश देना अनुपयुक्त न होगा। 'को वाडिस' में रोम के उस समय के जीवन का चित्रण है जब वहाँ

१. लैटिन (Latin) भाषा की कहावत। इसका अर्थ है तू किधर जाता है? (Whither Goest Thou?)

ईसाई धर्म फैल रहा था। इस समय वहाँ का राजा नीरो[1] (Nero) था। इस उपन्यास की नायिका एक क्रिस्तान लड़की है, जिसका नाम था लिजिया (Ligia)। यह एक आदर्श रोमेन्टिक (ideal romantic) नायिका है। यह रोम के एक व्यक्ति विनिशियस (Vinicius) से, जो कि पैगेन[2] है, प्रेम करती है। विनिशियस पेट्रोनियस (Petronius) का, जो कि एक शक्तिशाली व्यक्ति है, रिश्तेदार है। लिजिया विनिशियस के महल जाती है। वहाँ से वह अपने सच्चे तथा ईमानदार नौकर, अर्सस (Ursus) द्वारा बचाई जाती है। अर्सस उसे लाकर ईसाइयो के बीच छिपा देता है। विनिशियस उसका पीछा करता है परन्तु अर्सस एक बार फिर उसे बचा लेता है। इसी सबमें विनिशियस घायल हो जाता है, पर उसकी सेवा-शुश्रूषा ईसाई लोग करते है। अब विनिशियस भी ईसाई मत ग्रहण कर लेता है। बाद में जब नीरो के हुक्म से रोम शहर में आग लगा दी जाती है (जिससे कि ईसाइयों पर दोष मढ़कर उनको सजा दी जा सके) तो विनिशियस लिजिया को बचाता है। लिजिया के ईसाई होने के कारण उसे एक जगली साँड के सींग से बाँधकर अखाड़े मे लाया जाता है। यहाँ पर अर्सस भी ईसाई होने के कारण लाया गया है। वह साँड़ की गर्दन अपने हाथों से मरोड़कर उसे मार डालता है, और लिजिया को बचा लेता है। इसे देखकर दर्शकगण लिजिया और अर्सस को छुड़ाने की आवाज लगाते है। ये दोनो छोड़ दिये जाते हैं। बाद मे लिजिया और विनिशियस की शादी हो जाती है।

इस तेजस्वी उपन्यास में सीनकीविच ने पहली शताब्दी मे रोम के जीवन तथा नीरो के राज का बहुत ही वास्तविक चित्रण किया है। यह एक धार्मिक-ऐतिहासिक उपन्यास है। इसके पात्र—पाल (Paul), पेट्रोनियस, अर्सस और चिलो (Chilo) तथा नायिका लिजिया का चित्रण बहुत सुन्दर तथा सजीव है। नीरो अपनी भयंकर करतूतों से अप्रिय बन जाता है।

कुछ लोगों का मत है कि इसमे लिजिया का चित्रण करके लेखक ने अपने देश का ही चित्रण किया है, और इस पुस्तक का नाम 'तू किधर जाता है?' लेखक के समय के संसार के लिए एक प्रश्न है।

पोलैण्ड के लेखकों ने संसार के सामने एक आशा-भरा आदर्श रखा है। इनकी रचनाओं से सहानुभूति तथा आत्मिक शक्ति का बोध होता है। इनकी रचनाओं में आशा का संदेश मिलता है और मनुष्य का विश्वास संसार की अच्छी चीजों में और दृढ हो जाता है। इन्होंने फ्रांस के उपन्यासकार एमिल जोला

१. नीरो (५४-६८) रोम का निर्दयी राजा। इसने ईसाइयों को सताया था।
२. पैगन (Pagan) रोम-निवासियों के धार्मिक मत मानने वाला।

की रचनाओं के विषय में कहा था कि "उपन्यास का कर्तव्य है कि जीवन को और दृढ़ बनाये, न कि कमजोर करे, सुन्दर बनाये न कि गन्दा करे, सुख-सन्देश लाये, न कि दुख-सन्देश।

इनको पुरस्कार देते समय स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"महाकलाकार के अपूर्व और विलक्षण गुणों के कारण" इन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन वर्ष
(१) ट्रिलाजी (Trilogy)	
[क] विद फायर एण्ड स्वोर्ड (With Fire and Sword)	१८९०
[ख] द डेल्यूज (The Deluge)	१८९१
[ग] पैन माइकेल (Pan Michael)	१८९३
(२) को वाडिस (Quo Vadis)	१८९६
(३) विदाउट डागमा (Without Dogma)	१८९३
(४) चिल्ड्रेन ऑफ द सायल (Children of the Soil)	१८९५
(५) लेट अस फालो हिम (Let Us Follow Him)	१८९७
(६) सीलान्का (Sielanka)	१८९८
(७) इन वेन (In Vain)	१८९९
(८) नाइट्स ऑफ द क्रॉस (Knights of the Cross)	१९००



जिओसुए कार्डूची
(१८२५–१६०७)

सन् १६०६ में पहली बार इटली को नोवेल पुरस्कार पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यों तो रोम (इटली) के विषय मे दो लेखको को : थ्योडोर मामसन को 'रोम का इतिहास' तथा हेनरिक सीनकीविच को 'को वाडिस' के लिए यह सम्मान प्राप्त हो चुका था परन्तु जिओसुए कार्डूची ही वास्तव मे इटली के प्रथम लेखक थे जिन्हें यह पुरस्कार प्रदान क रसम्मानित किया गया था। इनके बाद आज तक इटली के केवल तीन और लेखको को साहित्य का नोवेल पुरस्कार मिला है।

जिओसुए कार्डूची का जन्म २७ जुलाई, १८२५ को वाल्डे कास्टेलो (Val de Castello) टस्कनी (Tuscuny) मे हुआ था। इनके पिता माइकेल कार्डूची (Michael Carducci) गाँव के डाक्टर थे, जो कि अपने राजनीतिक विचारों के कारण जेल भी हो आये थे। परन्तु यह जिओसुए कार्डूची के जन्म के पहले की घटना है। जब जिओसुए कार्डूची तीन वर्ष के थे तभी इनके माता-पिता इन्हें लेकर टस्कन मारेम्मा (Tuscan Maremma) में

बाल्घेरी (Bolgheri) नामक जगह चले गये जो कि प्राकृतिक दृष्टि से बहुत सुन्दर स्थान है। इनकी शिक्षा का आरम्भ घर पर ही हुआ था। इनके पिता ने इनको लैटिन सिखायी तथा इनकी माँ ने इनको एल्फिएरी[1] (Alfieri) की कविताओं का रसास्वादन कराया था। इन्होंने शूलपाई (Scoule Pie) में भी शिक्षा पाई थी।

इक्कीस वर्ष की अवस्था में इनकी नियुक्ति सैन मिनिएटो अल टेडेस्को (San Miniato al Tedesco) के जिम्नीजियम में रेटारिक (Rhetoric) के प्रोफेसर के पद पर की गई थी। अपने राजनीतिक विचारों के कारण इनको अरेजो (Arezzo) में पढ़ाने की आज्ञा नहीं दी गई। इस समय यह बहुत ही हीन दशा में थे, और पुस्तकालयों में जा-जाकर अध्ययन करते थे। इन दिनों इनका जीवन अत्यधिक कष्टमय था। एक ही वर्ष के अन्दर इन्हें अपने भाई दान्टे (Dante) की आत्महत्या तथा पिता के देहान्त का दुख उठाना पड़ा। इनकी शादी एक अच्छी लड़की से हुई और इनका जीवन कुछ सुखी हुआ। फिर इनका तीन वर्ष का पुत्र, जिसे यह बहुत प्यार करते थे, जाता रहा। इसी वर्ष इनकी माँ का भी देहान्त हो गया।

सन् १८५४ ई० में जिओसुए कार्डूची बोलोग्ना विश्वविद्यालय (University of Bologna) में प्रोफेसर नियुक्त हुए। इस पद पर यह अपनी मृत्यु तक कार्य करते रहे।

अपनी वृद्धावस्था में यह बहुत कमजोर हो गये थे। इनका एक पैर भी बेकार हो गया था और लकवा का भी कुछ असर था। इनको १० दिसम्बर, १९०६ को साहित्य का पुरस्कार मिला, और दो महीने बाद, १६ फरवरी, १९०७ को इनका देहान्त हो गया। *उस समय इनकी अवस्था ८२ वर्ष की थी।*

जिओसुए कार्डूची का स्थान देशभक्त कवियों में बहुत ऊँचा है। इनकी रचनाओं में अपने देश का स्थान प्रथम रहा है। इन्होंने अपने साथ नौजवानों का एक गुट बनाया था जिसका ध्येय था रोमांचकारी (romantic) रचनाओं को प्रथम स्थान से हटाकर क्लैसिक (classic) रचनाओं को प्रधानता देना। इनकी कुछ सर्वश्रेष्ठ कवितायें १८६०—७० में 'डिसिन्नेलिया' (Decennalia) के नाम से प्रकाशित हुई थी। इसमें एक कविता थी 'इन्नो ए सटाना' (Inno a Satana) जिसमें क्रान्ति की भावना की सराहना की गयी थी। इन्होंने फ्रान्स के लेखक विक्टर ह्यूगो[2] को अपना आदर्श बनाकर

---

१. एल्फिएरी (१७४९—१८०३) इटली का कवि।

२. ह्यूगो (१८०—८८५) फ्रांस के महत्त्वपूर्ण लेखक।

राजनीतिक रचनाएँ करना आरम्भ कर दिया था। इनकी कविता 'ओडी बारबेरे (Odi Barbare) जो कि १८७७ में प्रकाशित हुई थी और जिसके लिए होरेस[1] (Horace) की नकल की गई थी, वहुत उच्च कोटि की मानी जाती है।

जिओसुए कार्डूची की रचनाओ में पाई जाने वाली प्रमुख विशेषताएँ है :

(१) देश-प्रेम, (२) रोमांच (romance) की अवहेलना तथा क्लासिसिज्म (classicism) की प्रशंसा, (३) राजनीतिक धाराएँ (political trends), (४) स्वाधीनता की पूजा (Worship of liberty)।

इनकी रचनाओ में गेटे[2] (Goethe), शिलर[3] (Schiller) तथा हाइन[4] (Heine) का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इन्होंने इटली के महान् कवि दाते (Dante) की रचनाओ की व्याख्या वडी सुन्दरता से की है। जिओसुए कार्डूची की महानता का प्रमाण यही है कि इनकी रचनाओं के अनुवाद करने वालो मे दो को (थ्योडोर मामसन और पाल हीज) साहित्य का नोवेल पुरस्कार मिला था।

जिओसुए कार्डूची ने कविता मे कुछ नए प्रयोग भी किए थे। इन्होने विना अनुप्रास (rhyme) की कविता की। इनकी रचनाओं मे कम-से-कम प्रारम्भिक रचनाओ मे व्यग भी मिलता है। प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रेम, एक विलक्षण खूवसूरती तथा शक्ति, कुछ सजीदगी तथा दुख का आभास इन्होने कराया है। इन्होने अपनी वृद्धावस्था मे कहा था :

"जीवन मे मेरे तीन ध्येय रहे है राजनीति में—सवसे पहले इटली, कला मे—सवसे पहले क्लैसिकल कविता, जीवन मे—सवसे पहले निश्छलता तथा शक्ति।"

इनकी कविता के विपय मे कुछ और वातें भी उल्लेखनीय है। इन्होंने ईसाई धर्म की बुराइयो की तीव्र निन्दा की थी। इसी कारण इन्होंने कभी-कभी पैगेन[5] धर्म की तारीफ भी की है। जिओसुए कार्डूची ऐतिहासिक तथा महाकवियों की ओर अधिक आकृष्ट थे। अतीत का इटली तथा क्लैसिकल साहित्य ही उनका आदर्श था। वह 'सत्य के साथ वास्तविकता के प्रस्तुती-

---

१. होरेस रोम का कवि।
२. गेटे (१७४६—१८३२) जर्मनी के महत्वपूर्ण लेखक एवं दार्शनिक।
३. शिलर (१७५६—१८०५)।
४. हाइन (१७६७—१८५६।
५. पैगेन (Pagan) ईसाईमत के पहले का यूरोप का मत।

करण' (representation of reality with truth) के पक्षधर थे। इनकी कविता का आदेश एक था 'कला की दृष्टि से वास्तविकता का प्रदर्शन।' जिओसुए कार्ड्रूची ने तीन विषयों को अपना कार्य-विषय माना है : मनुष्य (Man), प्रकृति (Nature) तथा स्वतन्त्रता (Liberty)। उनकी कविता में स्त्री को आदर्श दृष्टि के बजाय रोजाना की स्त्री के शारीरिक आकर्षण (physical attraction) की दृष्टि से देखा गया है।

इनको पुरस्कार देते समय स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"इनके गंभीर पांडित्य तथा आलोचनात्मक अनुसंधान के लिए ही नही वरन् सर्वोपरि तो इनकी रचनात्मक शक्ति, शैली की मौलिकता व ताजगी तथा गतात्मक क्षमता, जोकि इनकी कविताओं का प्रमुख गुण है—के लिए इन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है।"

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) सैफिक्स ऐण्ड ऐल्सायक्स (Sapphics and Alcaics)	१८५३
(२) इन्नो ए सटाना (Inno a Sanata)	१८६३
(३) लेविया ग्रान्डिया (Levia Grandia)	१८६७
(४) ओडी बारबेयर (Odi Barbare)	१८७३—१८७७



रुडयार्ड किप्लिंग

(१८६५–१९३६)

सन् १६०१ ई० से लेकर जब साहित्य का नोवेल पुरस्कार सर्वप्रथम फ्रांस को प्रदान किया गया था, सन् १६०६ ई० तक, यह पुरस्कार सात बार दिया जा चुका था। फ्रांस, जर्मनी, नार्वे, स्पेन, पोलैण्ड तथा इटली इससे सम्मानित हो चुके थे। फ्रास को यह सम्मान दो बार (१६०१—१६०४) मिल चुका था। परन्तु अभी तक इंगलैण्ड को, जिसको अपने साहित्य पर घमण्ड था और है, और जिसके एक लेखक ने कहा था कि इंगलैण्ड से यदि कहा जाय कि तुम अपने साम्राज्य और अपने साहित्य में से एक चीज़ चुन लो, तो वह साहित्य ही चुनेगा। यह पुरस्कार नहीं मिला था। यह कहना गलत होगा कि इंगलैण्ड के किसी लेखक का नाम ही प्रस्तुत किया गया था, क्योंकि स्विन्वर्न (Swinburne), जॉर्ज मेरिडिय (George Meredith), जॉन मॉर्ले (John Morley), टॉमस हार्डी (Thomas Hardy), सर जेम्स वारी (Sir James Barrie) और रावर्ट ब्रिजिज़ (Robert Bridges) के नाम नोवेल फाउन्डेशन (Nobel Foundation) तथा स्वीडिश अकादमी के सामने रखे जा चुके थे परन्तु और देशों के सामने इंगलैण्ड यह पुरस्कार प्राप्त करने मे असफल रहा था। तभी अक्तूबर सन् १६०७ ई० मे यह समाचार विजली की तरह सारे

संसार में फैल गया कि इस वर्ष का साहित्य का नोबेल पुरस्कार रुडयार्ड किप्लिग (Rudyard Kipling) ग्रेट ब्रिटेन को प्रदान किया गया है।

इस घोषणा के साथ ही अन्य कई बातों का उल्लेख करना आवश्यक है। पहला तो यह है कि नोबेल के वसीयतनामे की भाषा से यह आभास होता है कि वह कम उम्र, नवयुवक लेखकों को उत्साहित करना चाहते थे, क्योंकि उन्होंने कहा था :

"जिसका ब्याज पुरस्कार के रूप मे प्रतिवर्ष उन लोगों में बाँटा जाएगा जिन्होंने पिछले वर्ष मानव-जाति को सबसे अधिक लाभ पहुँचाया है।"

अगर उनका यह मन्तव्य न होता तो 'पिछले वर्ष' (during the preceding year) शब्दों का प्रयोग क्यों करते। परन्तु यह कह देना न्याय-संगत होगा कि नोबेल ने कहीं भी और कुछ इस विषय में नहीं कहा है। परन्तु फिर भी यह उल्लेखनीय है कि इस पुरस्कार के पहले सबसे कम उम्र के विजेता हेनरिक सीनकीविच (पोलैण्ड, १९०५) थे, जिन्हें यह ५९ वर्ष की अवस्था में मिलाथा। यह वह अवस्था है जब कि आदमी अपना काम इस संसार में करीब-करीब खत्म कर चुका होता है। रुडयार्ड किप्लिग को यह पुरस्कार केवल ४२ वर्ष की अवस्था में मिला। आज तक यह पुरस्कार इससे कम या इतनी अवस्था में नहीं मिला है। दूसरा प्रश्न जो उठाया गया था वह यह है कि साहित्य के लिए 'आदर्शवादी स्वभाव की रचना' (work of an idealistic tendency) की क्या परिभाषा है ? किप्लिग की रचनायें कहाँ तक आदर्शवादी हैं, और सन् १९०१ ई० से सन् १९०७ ई० तक के पुरस्कार-विजेताओं में और इनमें क्या-क्या समान विशेषतायें है ? फिर क्या इंगलैण्ड के जीवित लेखकों में इनकी रचनायें ही सर्वश्रेष्ठ थीं।[1] इनकी रचनाओं की विशेषता को कुछ लोग आदर्श नहीं मानते थे। उनकी दृष्टि में तो यह साम्राज्यवाद के पक्षपाती थे और उसी का ढिढोरा पीटते थे। परन्तु सब लोग इससे सहमत नही थे।

एक प्रश्न और है, जो शायद यहाँ पहली बार उठाया जा रहा है। किप्लिग के माता-पिता अंग्रेज थे, परन्तु किप्लिग बम्बई में पैदा हुए थे। उन्होंने भारतवर्ष के विषय में भी लिखा है। जार्ज बर्नार्ड शॉ आयरलैण्ड में पैदा हुए थे और उन्होंने अंग्रेजों के बारे में लिखा था। उन्हें तो ग्रेट ब्रिटेन का माना गया। क्या किप्लिग को भारतवर्ष का नहीं माना जा सकता ? रही भाषा की बात.

---

१. देखिए Code of Statute *1951* (p. 2) : "the interest on which shall be annually distributed in the form of prizes to those who, during the preceding year, shall have conferred the greatest benefit on mankind."

तो टैगोर का दृष्टांत दिया जा सकता है।

रुडयार्ड किप्लिग की जीवनी भी और लेखकों से भिन्न है। वह पहले लेखक थे जो यूरोप के बाहर पैदा हुए थे, जो पूरब को जानते थे, और जिन्होंने इसके बावत लिखा भी था।

रुडयार्ड किप्लिग का जीवन-वृत्तान्त संक्षेप मे इस प्रकार है :

उनके पिता का नाम जॉन लॉकवुड किप्लिग (John Lockwood Kipling) और माता का एलिस मैक्डोनाल्ड (Alice Macdonald) था। इनके पिता टेरा कोटा के मॉडेलर और डिजाइनर (Modeller and Designer of terra-cotta) थे। बाद मे यह बाम्बे आर्ट स्कूल के डायरेक्टर होकर आ गए थे। यहीं बाम्बे में ३० दिसम्बर, १८६५ ई० को रुडयार्ड किप्लिग का जन्म हुआ था।

छः वर्ष की अवस्था तक किप्लिग भारतवर्ष में ही रहे और भारतवर्ष की आया और यहाँ के नौकरों से भारत के किस्से सुनते रहे। इसके बाद यह विलायत पढने के लिए भेजे गये। परन्तु इनका स्वास्थ्य इतना खराब था कि पाँच साल तक यह स्कूल न जा सके। ग्यारह वर्ष के होने पर यह 'वेस्टवर्ड हो' (Westward Ho) नामक कालेज मे दाखिल किए गये। इस स्कूल में ऐंग्लो इडियन अफसरो के बच्चे पढते थे। सत्रह वर्ष की उम्र में यह स्नातक की उपाधि लेकर भारत लौट आये। इन्होंने किसी विश्वविद्यालय में अध्ययन नही किया।

इनके पिता, इनके लौटने पर सन् १८८२ ई० में, लाहौर के म्युजियम (Museum) के डायरेक्टर थे। रुडयार्ड किप्लिग इस कारण लाहौर गये। वहाँ यह सिविल एण्ड मिलिट्री गज़ट (Civil and Military Gazette) के सहायक सम्पादक नियुक्त हुए। इन्होने अपनी पत्रिका के लिए कुछ कविताएँ भी लिखनी शुरू कर दी, जो बाद मे पुस्तकाकार रूप में छपी। सन् १८८६ ई० में यह प्रयाग के पायनीयर[1] (Pioneer) नामक दैनिक के सम्पादक होकर गये। इसी समय इन्होंने देश का भ्रमण भी किया और फौज के लोगों से भी खूब अच्छी तरह जान-पहचान कर ली। सन् १८८६ ई० में यह पायनीयर की तरफ से चीन, जापान, सैन फ्रांसिस्को और न्यूयार्क के रास्ते इंगलैण्ड भेजे गये।

किप्लिग जाकर लण्दन में रहने लगे और अपना साहित्यिक काम करने लगे। सन् १८९२ ई० में इनकी शादी केरोलीन स्टार्र बलेस्टिर (Caroline Starr Balestier) नामक एक अमरीकी लडकी से हो गई। कुछ दिन यह अमरीका मे भी रहे परन्तु सन् १८९६ ई० मे विलायत लौट आए। अमरीका

१. अब यह लखनऊ से निकलता है।

में इनके दो पुत्रियाँ हुई थीं। किप्लिग इस समय भी निरन्तर अपना साहित्यिक काम करते रहे। सन् १९१४ ई० में इनका इकलौता लड़का लड़ाई मे काम आया।

सन् १९०७ ई० में इनको नोवेल पुरस्कार मिला था। उसके वाद भी इनको इनकी साहित्य-सेवा के लिए कई उपाधियाँ मिलती रहीं। इन्होंने आर्डर ऑफ मेरिट (Order of Merit) लेने से इन्कार कर दिया था। परन्तु सन् १९२६ ई० में रॉयल सोसाइटी ऑफ लिटरेचर (Royal Society of Literature) की तरफ से स्वर्ण पदक स्वीकार कर लिया। इनको कई विश्वविद्यालयों ने ऑनरेरी (Honorary) डिग्रियाँ प्रदान कीं।

१८ जनवरी सन् १९३६ ई० को सत्तर वर्ष की अवस्था में इनका देहान्त लन्दन में हो गया।

रुडयार्ड किप्लिग की रचनाओ में कई विशेषताएँ विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने साहित्य को अन्तर्राष्ट्रीयता प्रदान की। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक तथा कविता साहित्य की लगभग सभी विधाओं में साहित्य-रचना की। लेकिन एक प्रकार से उनको पत्रकार कहना अनुचित न होगा। इनकी रचनाओं में भारतवर्ष के अंग्रेजों के समाज का वहुत ही वास्तविक वर्णन है। इन्होंने फौज के सिपाहियों की जिन्दगी, उनकी वहादुरी, सच्चाई तथा तकलीफों का मसाला लेकर अनेक रचनाये लिखीं।

इनकी भाषा विशेष रूप से आकर्षक और सजीव है क्योंकि यह उन्हीं शब्दों का प्रयोग करते है जो कि रोजमर्रा की बोलचाल में आते हैं। इन्होंने अपने देशवासियों का ध्यान उनके जीवन की ओर खींचा जो साम्राज्य के कोने-कोने में फैले थे। इनका विचार उस समय के विचार का प्रतीक था कि गोरे लोगों को और लोगों को सभ्य वनाना है। इसको उन्होंने श्वोतांग का भार (White-man's Burden) कहा। इन्होंने विक्टोरिया का भी हास्यप्रद उल्लेख किया और कहा कि जो लोग केवल इंगलैण्ड को जानते हैं वह इंगलैण्ड के विपय में क्या जानते हैं ?

इनकी कविताओं तथा रचनाओं ने पाश्चात्य जगत् को चकित कर दिया। इनके लिए अपने देश में तो सम्मान की कमी नहीं थी। इनकी पुस्तकें तथा कवितायें इतनी जल्दी विक रही थी कि लोग चकित थे। कुछ लोगों ने इनको दुमदार सितारा (Comet) कहकर इनकी हँसी उड़ाने की कोशिश भी की परन्तु यह उनकी गलती थी। सन् १९०७ ई० में जव इनको नोवेल पुरस्कार मिला, तव इनकी धाक पश्चिम में पूर्ण रूप से बैठ गई। पुरस्कार मिलने के

अट्ठाईस वर्ष बाद तक यह जिन्दा रहे और कुछ श्रेष्ठ रचनाये तो उन्होंने पुरस्कार प्राप्त करने के बाद ही लिखी।

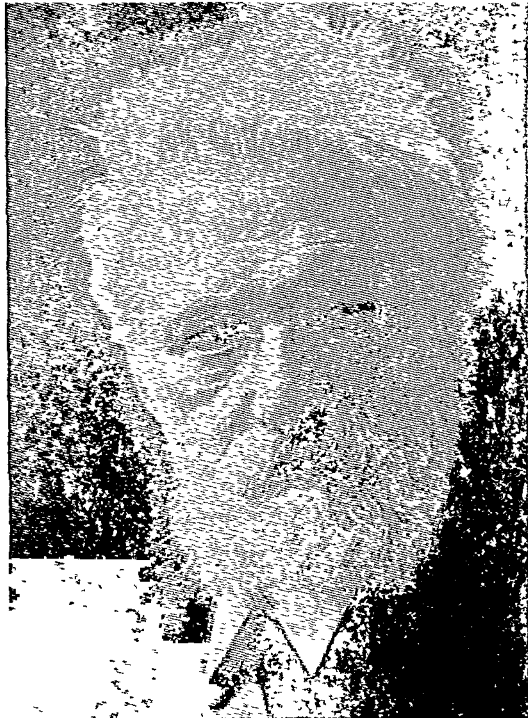
किप्लिग की रचनाएँ देश-भक्ति से ओत-प्रोत हैं। उनकी भाषा ऐसी है कि उसमे आम बोल-चाल के शब्द तथा कहावते अपने-आप आते चले गए हैं। इनकी रचनाओ का अनुवाद सन् १९३० ई० के पहले ही दैनिक डच, फ्रान्सीसी, जर्मन, इटैलियन, पोलिश, रूसी, सर्वियन, स्पेनिश तथा स्वीडिश भाषाओं मे हो चुका था।

किप्लिग ने ५३ वर्ष साहित्य-सेवा की। पुरस्कार प्रदान करते समय स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"निरीक्षण-शक्ति के लिए, विचार-शक्ति की अपूर्वता के लिए, विचारों की शक्ति के लिए तथा वर्णन की अद्वितीय शक्ति के लिए, जोकि इस विश्व-प्रसिद्ध लेखक की रचनाओं की विशेषता है ;" इनको यह पुरस्कार दिया जाता है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) डिपार्टमेण्टल डिट्टिज़ (Departmental Ditties)	१८८६
(२) वैरेकरूम वैलेड्ज़ (Barrackroom Ballads)	१८९२
(३) पोएम्स (Poems) ३ जिल्द	१८८६—१९१९
(४) प्लेन टेल्स फ्राम द हिल्स (Plain Tales From the Hills)	१८८२
(५) द लाइट दैट फेल्ड (The Light That Failed)	१८९०
(६) द जगल बुक (The Jungle Book)	१८९४
(७) सेकेण्ड जंगल बुक (Second Jungle Book)	१८९५
(८) किम (Kim)	१९०१
(९) दाइ सर्वेन्ट ए डाग (Thy Servant A Dog)	१९३०



रुडाल्फ क्रिस्टाफ यूकेन
(१८४६–१९२६)

आठवें वर्ष साहित्य का नोबेल पुरस्कार दूसरी बार जर्मनी के एक लेखक को मिला। अब तक केवल फ्रांस को ही यह सम्मान दो बार (१९०१—१९०४) मिला था। सन् १९०८ ई० में यह सम्मान प्राप्त करने वाले थे रुडाल्फ क्रिस्टाफ यूकेन। इनका जन्म ५ जनवरी, १८४६ को पूर्वीय फ्रीसिया (East Frisia) आरिक (Aurich) नामक शहर में हुआ था। जब इनको यह पुरस्कार प्रदान किया गया, उस वर्ष नोबेल कमेटी में काफी मतभेद था। कमेटी के कुछ सदस्य इंगलैण्ड के कवि स्विन्बर्न (Swinburne) के पक्ष में थे और दूसरे सदस्य स्वीडन की सेल्मा लेजरलॉफ (Selma Lagerlof) के पक्ष में। इस मतभेद के कारण यह पुरस्कार जर्मनी के दार्शनिक यूकेन को मिल गया, जिसके विषय में कहा गया कि यह "निःसन्देह अकादमी के सबसे निर्बल प्रदानों में से एक था।"[1]

पूर्वीय फ्रीसिया हालैण्ड के निकट जर्मनी का एक प्रदेश था। आरिक (Aurich) यहाँ के लोगों का सामाजिक केन्द्र (social centre) था।

---

१. देखिये नोबेल : द मैन-एण्ड हिज् प्राइजेज, एडिटेड, बाई द नोबेल फाउन्डेशन।

की विषमता और इनके उस साहस तथा शक्ति के लिए जिसके द्वारा इन्होंने अपनी अनेक रचनाओं में जीवन का एक आदर्शवादी दर्शन प्रस्तुत किया है इन्हें यह पुरस्कार दिया जा रहा है।"

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) प्राब्लम आफ ह्यूमन लाइफ (Probelms of Human Life)	१८६०
(२) लाइफ्स वेसिस एण्ड लाइफ्स आइडियल (Life's Basis and Life's Ideal)	१६०७
(३) द मीनिंग एण्ड वैल्यू आफ लाइफ (The Meaning and Value of Life)	१६०२
(४) मेन करेण्ट्स आफ मॉडर्न थॉट (Main Currents of Modern Thought)	१६०६
(५) ट्रूथ आफ रेलिजन (Truth of Religion)	१६११
(६) नालेज एण्ड लाइफ (Knowledge and Life)	१६१२
(७) रुडाल्फ यूकेन हिज लाइफ, वर्क एण्ड ट्रैवेल्स, वाई हिमसेल्फ (Rudolf Eucken : His Life, Work and Travels, by Himself.)	१६२२



सेल्मा लागरलोफ
(१८५८–१९४०)

सेल्मा लागरलोफ को साहित्य का नोवेल पुरस्कार प्राप्त होने साथ के ही एल्फ्रेड नोबेल के देश-निवासियों को पहली बार यह गौरव प्राप्त हुआ। इसके पहले, आठ वर्ष में, नौ बार यह पुरस्कार दिया जा चुका था, परन्तु अभी तक स्वीडेन को यह पुरस्कार नहीं मिला था। नोवेल ने अपने वसीयतनामे में साफ-साफ कहा था :

"यह मेरी तीव्र इच्छा है कि इस पुरस्कार के दिए जाने में, उम्मीदवारों की राष्ट्रीयता की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा और जो भी व्यक्ति सर्वाधिक उपयुक्त और इसे पाने का अधिकारी होगा उसी को यह पुरस्कार मिलेगा—चाहे वह स्कैण्डिनेविया[1] का हो या न हो।

सेल्मा लागरलोफ पहली लेखिका थीं जिन्हें यह सम्मान मिला था। प्रथम नौ पुरस्कृत साहित्यकारों में सभी पुरुष थे। इनको यह पुरस्कार ५१ वर्ष की अवस्था में मिला था।

१. स्कैण्डिनेविया : नार्वे, स्वीडन, डेन्मार्क और आइसलैण्ड।

सेल्मा ओटिलियाना लोविसा लागरलोफ (Selma Ottiliana Lovisa Lagerlof) इनका पूरा नाम था। इनका जन्म २० नवम्बर १८५८ ई० को स्वीडेन के एक कुलीन घराने में हुआ था। इनके पिता का नाम एरिक लागर-लोफ (Erik Lagerlof) और इनकी माँ का नाम लोविसा वालराथ (Lovisa Wallroth) था। इनके पिता फौज मे लैफ्टिनेण्ट थे। साढे तीन वर्ष की अवस्था मे सेल्मा को इन्फैन्टाइल पैरेलेसिस (infantile paralysis) हो गई थी, जिसके फलस्वरूप यह आजीवन लगडी ही रही। इनके घर मे एक अच्छा-खासा पुस्तकालय था। वह उसी मे बैठकर पढती रहती थी। इस तरह इन्होने अपने बचपन मे ही अपने देश और अपने देश के विषय में बहुत-सी कहानियाँ पढ़ डाली थी। इनकी दादी भी इन्हे खूब किस्से सुनाया करती थी। इन्हे स्कूल नहीं भेजा गया था और इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई थी।

इनका जन्म वार्मलैण्ड (Varmland) नामक शहर मे हुआ था, जो कि दक्षिणी स्वीडन मे है, और जहाँ की जलवायु गरम है। एक बार इन्होने जाडे के मौसम में स्टाकहॉम में एक नाटक देखा था जिससे यह अत्यधिक प्रभावित हुई, और इन्होने स्वय भी एक नाटक लिख डाला। फिर भी जब इनकी रचनाओं के प्रकाशन का अवसर आया तो इनकी कविताएँ ही पहले प्रकाशित हुईं।

बाईस वर्ष की उम्र मे यह स्टाकहॉम मे शिक्षा लेकर एक अध्यापिका की हैसियत मे लैण्डस्क्रोना (Landskrona) नामक शहर, जो कि उत्तरी स्वीडन मे है, चली गई। इस हिस्से को डेल्केरिया (Delcaria) कहते है। इनकी रचनाओ मे वार्मलैण्ड (Varmland) और डेल्केरिया (Delcaria) की लोक-कथाओ का अत्यधिक वर्णन भी मिलता है। तीस वर्ष की आयु तक ऐसा मालूम होता था कि इनका जीवन एक साधारण अध्यापिका की तरह ही बीतेगा, परन्तु जब इन्होने सन् १८९१ ई० मे अपनी पहली पुस्तक 'गास्टा बर्लिग' (Gosta Berling) प्रकाशित कराई तो बाते कुछ बदलने लगी। सन् १८९४ ई० मे इन्हे देशाटन के लिए एक छात्रवृत्ति दी गई और इन्होने अध्यापिका के पद से त्याग-पत्र दे दिया। वह इस छात्रवृत्ति से इटली चली गई और बाद मे समूचे यूरोप का भ्रमण करती हुई पैलेस्टाइन तक गई।

यह देखने मे बहुत सुन्दर नही थी। इनके जीवन मे 'रोमान्स' सिर्फ एक बार कुछ दिनो के लिए ही आया था। लेकिन यह प्रेम-सम्बन्ध भी सम्भवत. सफल नही हो सका था इसलिए यह आजीवन अविवाहित रही।

सन् १९०४ मे स्वीडिश अकादमी की तरफ से इनको स्वर्ण-पदक प्रदान किया गया, और सन् १९१४ मे यह उसकी सदस्य चुनी गईं। यह पहली

महिला थीं जिन्हें अकादमी ने अपना सदस्य बनाया था। सन् १९०७ में अप्साला विश्वविद्यालय (Upsala University) ने इनको पी-एच० डी० (Ph. D.) की उपाधि प्रदान की।

इन्होंने अब आराम के साथ जीवन व्यतीत करना शुरू कर दिया। जाड़ों में यह फैलुन (Falun) में रहती थी और गर्मियों में अपने पैतृक घर मरबाका (Marbacka) में।

सन् १९११ ई० मे इन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय महिला मताधिकार सम्मेलन (International Woman Suffrage Convention) में भाग लिया था। सन् १९३९ ई० में यह बीमार पड़ गई और साल-भर की बीमारी के बाद १६ मार्च १९४० को पेरिटोनाइटिस (Peritonitis) के कारण इनका देहान्त हो गया। उस समय इनकी अवस्था ८१ वर्ष ५ महीने थी।

इनकी शुरू की रचनाओं मे इंगलैण्ड के लेखक टामस कार्लाइल (Thomas Carlyle) का प्रभाव प्रत्यक्ष है। उनकी 'हीरो एण्ड हीरोवर्शिप' (Hero And Heroworship) नामक पुस्तक ने इन्हे अत्यधिक प्रभावित किया था। परन्तु जैसी रचनाएँ यह स्वयं करना चाहती थी उसके लिए यह प्रभाव अच्छा नही था।

इनकी पहली पुस्तक 'द स्टोरी आफ गोस्टा बर्लिग (The Story of Gosta Berling) शीर्षक से प्रकाशित हुई। इसमें स्वीडन के जीवन का चित्रण था।

सन् १८९४ ई० में 'इन्विजिविल लिन्क्स' (Invisible Links) का प्रकाशन हुआ। इसमें किसानों, मछुओं, बच्चों तथा जानवरो की कथाएँ है। इन सबमे लेखिका ने आत्मिक संधि (Spiritual unity) का प्रदर्शन किया है। सन् १८९७ ई० में इनकी धार्मिक पुस्तक 'मिरैकिल्स आफ एण्टी क्राइस्ट' (Miracles of Anti-christ) प्रकाशित हुई। इसमे सेल्मा लागरलोफ ने सिसली (Sicily) के पुराने इतिहास को नया जीवन प्रदान किया है। दो साल बाद, सन् १८९९ ई० में 'फ्राम ए स्वीडिश होमस्टीड' (From A Swedish Homestead) प्रकाशित हुई।

सेल्मा लागरलोफ ने स्कूल के बच्चो के लिए भी दो पुस्तके लिखी थी। सन् १९०७ में स्वीडन के स्कूल-अधिकारियों ने स्वीन के भूगोल पर एक ऐसी पुस्तक लिखने को इनसे कहा जो कि बच्चो तथा अध्यापकों दोनो को पसन्द आ सके। इन्होंने 'द वन्डरफुल ऐडवेन्चर्स आफ निल्स' (The Wonderful Adventures of Nils) (१९०७) और 'फरदर ऐडवेन्चर्स आफ निल्स'

(Further Adventures of Nils) लिखीं। ये दोनों ही पुस्तकें अत्यधिक लोकप्रिय हुईं।

सेल्मा लागरलोफ ने अनेक पुस्तकों, कहानियों तथा धार्मिक उपन्यासों की रचना की है। इनकी रचनाओं ने अत्यधिक सरलता और सादगी है। इन्होंने अपने देश के साहित्य और जीवन में सम्बन्ध स्थापित किया था। यह सदैव स्वीडन की कथाओं का प्रयोग करती थी। इनकी रचनाओं में 'घर' (House) का प्रमुख स्थान है।

सेल्मा लागरलोफ का नाम कई वर्ष से स्वीडिश अकादमी के सामने आ रहा था, परन्तु अकादमी के सचिव वाइसेन इनके पुरस्कार पाने के विरुद्ध थे। लेकिन अन्तत. सन् १६०६ ई० में सारे विरोधों के बावजूद इन्हें यह पुरस्कार मिल ही गया।

स्वीडिश अकादमी ने इनके सम्बन्ध में कहा था :

"इनके उच्च आदर्शवाद, जीवन्त कल्पना-शक्ति तथा आत्मिक बोध, जो इनकी रचनाओं की विशेषता है" के लिए इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियां

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) द स्टोरी आफ गोस्टा बर्लिंग (The Story of Gosta Berling)	१८६८
(२) इन्विजिबिल लिन्क्स (Invisible Links)	१८६६
(३) मिरैकिल्स आफ एण्टी क्राइस्ट (The Miracles of Anti-christ)	१८६६
(४) फ्राम ए स्वीडिश होमस्टेड (From a Swedish Homestead)	१६०१
(५) द वन्डरफुल ऐडवेन्चर्स आफ निल्स (The Wonderful Adventures of Nils)	१६०७
(६) द एम्परर आफ पोर्चुगालिया (The Emperor of Portugallia)	१६१६
(७) मारबाका (Marbacka)	१६२४
(८) द डायरी आफ सेल्मा लागरलोफ (The Diary of Selma Lagerlof)	१६२६ / १६३६



पाल हेस
(१८३०–१९१४)

साहित्य का ग्यारहवाँ नोबेल पुरस्कार फिर जर्मनी के लिए घोषित किया गया। यह सन् १९१० ई० में पाल जोहान लुडविग हेस (Paul Johann Ludvig Heyse) को मिला। अब तक यह पुरस्कार किसी भी देश को दो बार से अधिक नहीं मिला था। दो वर्ष बाद ही, सन् १९१२ ई० में यह पुरस्कार एक बार फिर इसी देश को दिया गया, तो यूरोप के दूसरे देशों को क्षोभ, आश्चर्य तथा ईर्ष्या अवश्य हुई होगी।

पाल हेस का जन्म १५ मार्च, १८३० ई० को हुआ था। इनके पिता बर्लिन विश्वविद्यालय (Berlin University) में भाषा-विज्ञान के प्रोफेसर थे। वह अपनी विद्वत्ता के लिए प्रसिद्ध थे। इनकी माँ एक प्रतिष्ठित यहूदी खानदान से थीं। इनकी माँ की कल्पना-शक्ति अत्यन्त प्रखर थी और वह तीव्र भावना (Passionate) के स्वभाव की थीं। पाल हेस ने अपनी माँ से भावुकता तथा अपने पिता से वास्तविकता (realism) सीखी थी। हेस के घर में अच्छे-अच्छे लेखक, कवि तथा कलाकार जमा हुआ करते थे। इससे पाल हेस को भी उत्साह मिलता था। इनके मित्रों में कूग्लर (Kugler) नामक एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति था। वह कला के इतिहास के लिए प्रसिद्ध था। बाद में पाल हेस ने कूग्लर की

मुख्य कृतियाँ

पुस्तक का नाम

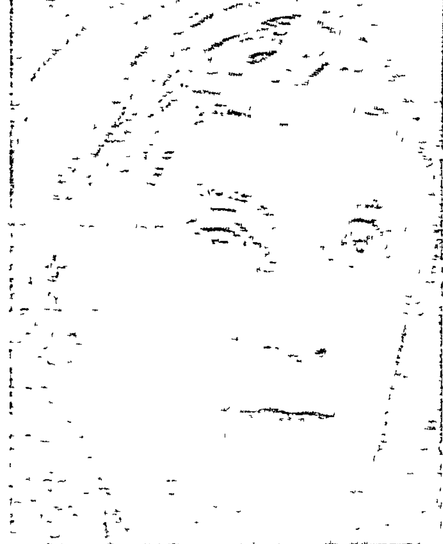
(१) आत्मकथा
(Autobiography)

(२) ल अर्राबियाटा
(L' Arrabiata)

(३) ऐट द घोस्ट आवर
(At the Ghost Hour)

(४) ए डिवाइडेड हार्ट
(A Divided Heart)

(५) मेरी ऑफ मैग्डाला
(Mary of Magdala)



मारिस मैटरलिंक

(१८६२—१९४९)

बेल्जियम यूरोप के उत्तर में एक छोटा-सा देश है, जिसका क्षेत्रफल केवल ११,७५२ वर्गमील है और जिसने अपने इतिहास में बहुत उथल-पुथल देखी है। इसके लोग सौन्दर्य के उपासक तथा कला-प्रिय हैं। इस देश को सन् १९११ में पहली बार साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके पुरस्कृत लेखक थे मारिस मैटरलिंक।

काउन्ट मारिस (मूरिस) पालिडोर मारी बर्नहार्ड मैटरलिंक (Count Maurice (Mooris) Polidore Marie Bernhard Maeterlink) का जन्म २९ अगस्त १८६२ में घेन्ट (Ghent) नामक शहर में हुआ था। घेन्ट बेल्जियम के फ्लैन्डर्स (Flanders) नामक प्रान्त का एक मुख्य नगर है। मारिस मैटरलिंक ने जेसुइट कालेज आफ सान्टे बार्बे (Jesuit College of Sainte-Barbe) में अध्ययन किया। इसके कारण इनके ऊपर धर्म तथा धार्मिक प्रवृत्तियों का बहुत प्रभाव पड़ा। इन्होंने घेन्ट विश्वविद्यालय में कानून भी पढ़ा। सन् १८८६ ई० में वह पेरिस गये। वहाँ इनकी भेंट प्रतीकवादी (symbolist) स्कूल के कवि विलियर्स डे ल' आइल एडम (Villiers de L' Isle Adam) तथा अन्य कवियों से हुई। इन्होंने सन् १८८६ ई० में वकालत करना शुरू कर दिया था, परन्तु इसमें इनको सफलता न मिली। स्पष्ट है कि इनका मन अपने पेशे में न होकर कहीं और था। सन् १८८९ ई० में अपने पिता की मृत्यु होने

Storm), 'ब्रेल्जियम ऐट वार' (Belgium at War), 'द वार्गोमास्टर ऐट स्टाइल मान्डे (The Bergomaster at Stilemonde), 'द क्लाउड दट लिफ्टेड' (The Cloud That Lifted) मे स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इनका विचार था कि मनुष्य अज्ञात कारणों से पैदा होता है, उसके ऊपर छिपे हुए असर निरन्तर होते रहते हैं और प्रकृति तथा मनुष्य मे/बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध है।

इनकी रचनाओं में 'द ट्रेजर आफ हम्बल' (The Treasure of the Humble), 'लाइफ ऐण्ड फ्लावर्स' (Life and Flowers), और 'द लाइफ आफ द बी' (The Life of the Bee) भी हैं। इस आखिरी पुस्तक का इनकी रचनाओं में विशेष स्थान है। इन्होंने स्वयं शहद की मक्खियाँ पालना शुरू कर दिया था जिसमे कि यह इस विषय का गहराई से अध्ययन कर सकें।

इनकी पहले की रचनाओं मे पूर्वबोध (Premonition) का आभास मिलता है। लेकिन यह पूर्वबोध बाद की रचनाओं में अन्तर्ज्ञान या अन्तःस्फूर्ति (Intuition) में परिवर्तित हो गया है।

सन् १९११ ई० में नोबेल कमेटी ने इन्हें पुरकार देते समय कहा: "इनकी बहुमुखी रचनाओं, और विशेष रूप से इनके नाटकों के लिए, जिसमें गहरी कल्पना-शक्ति तथा कवित्तपूर्ण विचार-शक्ति है, जो कि कभी-कभी परियों की कहानी के रूप मे गहरी प्रेरणा प्रदर्शित करते हैं और जो पाठकों की भावनाओ को अज्ञात रूप से प्रभावित करते है तथा इनकी विचार-शक्ति को जाग्रत करते है, यह पुरस्कार दिया जा रहा है।"

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) द प्रिन्सेज़ मेलीन (The Princess Maleine)	१८९२
(२) पेलास एण्ड मेलिसान्डे (Pellas and Melisande)	१८९२
(३) अलादीन एण्ड पैलोमाइड्स (Alladin and Palomides)	१९९२
(४) द ब्लू बर्ड (The Blue Bird)	१९०९
(५) द लाइफ आफ स्पेन (The Life of Spain)	१९२२
(६) द लाइफ आफ द बी (The Life of the Bee)	१९०१



गर्हार्ट हाप्टमैन

(१८६२–१९४६)

१९१२ में यह पुरस्कार जर्मनी को मिला। अव तक ग्यारह वर्ष में नार्वे, स्पेन, पोलैण्ड, इटली, ग्रेट ब्रिटेन, स्वीडन और बेल्जियम को एक-एक बार, फ्रांस को दो बार और जर्मनी को तीन बार इस पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया जा चुका था। जर्मनी के लिए यह चौथा अवसर था। अभी तक अमरीका, रूस, यूरोप के अनेक देशों तथा अफ्रीका, एशिया और आस्ट्रेलिया के किसी भी लेखक को यह पुरस्कार नही मिला था। आस्ट्रेलिया को तो यह सम्मान आज तक नहीं प्राप्त हो सका है। १९१२ में गर्हार्ट जोहान रावर्ट हाप्टमैन (Gerhart Johann Robert Hauptman) ने यह पुरस्कार पाया।

इनका जन्म १५ नवम्बर, १८६२ को हुआ था। गर्हार्ट हाप्टमैन के पिता का नाम रावर्ट हाप्टमैन (Robert Hauptman) था, जिनके विषय में इन्होंने वाद में एक नाटक भी लिखा था। इनकी माँ का नाम था मारी स्ट्रैहलर (Marie Strahler)।

गर्हार्ट हाप्टमैन ब्रेस्ला (Breslau) में स्कूल भेजे गए, जहाँ पर यह अच्छे विद्यार्थियों में गिने जाते थे। किन्ही कारणों से इनके पिता का कारवार चौपट हो गया और इनको स्कूल से हटाकर एक रिश्तेदार के पास रखा गया। वह वड़े सज्जन और धर्मात्मा आदमी थे तथा उनको संगीत से विशेष प्रेम था। इस कारण धर्म तथा संगीत दोनों का प्रभाव इन पर पड़ा। परन्तु

इन्होंने मूर्ति बनाने की कला (sculpture) में अधिक रुचि प्रकट की। १८८० मे यह ब्रेस्ला के रॉयल कालेज आफ़ आर्ट (Royal College of Art) मे फिर से भर्ती हुए। इनके पिता तथा चाचा का विचार इनको किसान बनाने का था, परन्तु उसमे उनको निराश होना पड़ा। रायल कालेज मे भी यह अच्छे विद्यार्थी नही थे। तीन ही सप्ताह के बाद इनको चेतावनी दी गई थी और १८८१ मे यह करीब-करीब-तीन महीने के लिए कालेज से निकाल दिए गए थे। रायल कालेज में १८८२ तक पढ़ते रहने के बाद यह जेना (Jena) चले गए। इन्होंने प्रोफेसर हेकेल के साथ प्राणीशास्त्र तथा प्रोफेसर रुडाल्फ यूकेन के साथ दर्शन का अध्ययन भी किया। कुछ दिनों बाद यह देशाटन के विचार से स्पेन तथा इटली चले गए।

इन्होंने इटली में कुछ दिन मूर्ति बनाने का काम किया। परन्तु वहाँ उन्हे टायफाइड हो गया। इनकी देखभाल एक जर्मन लड़की मारी थाइनेमान (Marie Thienemann) ने की। बाद में इन दोनों की शादी हो गई। यद्यपि इनके तीन पुत्र हुए फिर भी इन लोगों का दाम्पत्य जीवन सुखी नही था, इसलिए इन्होंने एक-दूसरे से तलाक ले लिया। १९०५ मे गर्हार्ट हाप्टमैन ने मार्गरेट मारशक (Margarete Marschalk) से शादी की। इनके इस पत्नी से एक लड़का हुआ।

गर्हार्ट हाप्टमैन ने ऐक्टर (actor) बनने की कोशिश भी की थी परन्तु वह असफल रहे। धीरे-धीरे इनकी रचनाओं के कारण इनका नाम अपने देश मे तथा उसके बाहर फैलने लगा और लोग इनकी रचनाओं की ओर आकर्षित होने लगे। जैसे-जैसे इनकी उम्र बढती गई इनका सम्मान भी बढ़ता गया। यहाँ तक कि लोग इनकी गेटे से तुलना करने लगे। जब इनके पास पर्याप्त मात्रा मे धन हो गया तब यह बड़ी शान के साथ रहने लगे। ऐसा कहा जाता है कि यही एक ऐसे आत्मसम्मान वाले लेखक थे जिन्होने नाजी (Nazi) राज्य मे जर्मनी नही छोड़ा।

८ जून, १९४६ को इनका देहान्त हो गया।

इन्होंने १८८५ के लगभग कविता की एक पुस्तक प्रकाशित की थी, परन्तु बाद मे इस पुस्तक को इन्होने वापस ले लिया था। यह थी प्रामीथेडेन्लास (Promithedenlos)। १८८७ में इनकी कुछ और कविता-पुस्तके तथा एक उपन्यास प्रकाशित हुए। इसी समय इनकी भेंट आर्नो होल्ज (Arno Holz) से हुई, जो कि जर्मनी में सुविख्यात थे। आर्नो होल्ज का गर्हार्ट हाप्टमैन पर बहुत प्रभाव पड़ा। इनका पहला नाटक बिफोर डॉन (Before Dawn)

बर्लिन में फ्री स्टेज सोसाइटी (Free Stage Society) द्वारा प्रदर्शित किया गया। इनका पहला महत्त्वपूर्ण नाटक था 'द वीवर्स' (The Weavers)। इसमे इन्होंने १८४० में जुलाहों की दुखी अवस्था का चित्रण किया है। इनका तीसरा नाटक 'हेन्नेल' (Hannele) था। इनके 'द सकेन वैल' (The Sunken Bell) नामक नाटक ने तो इनकी ख्याति चारो ओर फैला दी। कुछ लोगो का तो यहाँ तक कहना है कि इनको नोबेल पुरस्कार विशेष रूप से इसी नाटक के कारण ही मिला था।

सच बात तो यह है कि लेखक ने अपनी ही आकांक्षा को नाटक के रूप मे प्रकट किया था। इसमे लेखक की ही समस्या प्रतिबिम्बित है, ससार-भर के कलाकारों की नही। यह नाटक संसार के सर्वोत्तम नाटकों मे गिना जाता है।

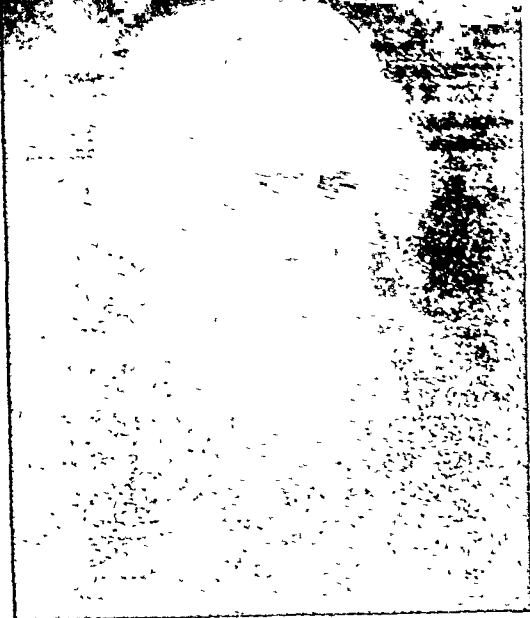
इसके उपरान्त इन्होने और भी रचनाएँ की जैसे 'रोज बर्न्ड' (Rose Bernd), 'द बीवर कोट (The Beaver Coat) और 'लोनली लाइव्ज (Lonely Lives)। इन्होने कविता भी लिखी है और उपन्यास भी। इनके प्रमुख उपन्यास है 'द फूल इन क्राइस्ट इमानुयेल क्विन्ट (The Fool In Christ Emanuel Quint), 'ऐटलान्टिस' (Atlantis), 'फैन्टम' (Phantom)। इनके अतिरिक्त भी इन्होंने अन्य कई कृतियाँ साहित्य को दी थीं।

स्वीडिश अकादमी ने इनके सम्बन्ध मे कहा था :

"अपने सफल, सजीव और विशिष्ट नाटकों मे नाट्य-कला की जो सेवा की है उसी के सम्मान-स्वरूप इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।"

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) लोनली लाइव्ज (Lonely Lives)	१८९८
(२) द कमिग आफ पीस (The Coming of Peace)	१९००
(३) द संकेन वैल (The Sunken Bell)	१९००
(४) हेन्नेल (Hennele)	१९०२
(५) ऐटलान्टिस (Atlantis)	१९१२
(६) फैन्टम (Phantom)	१९१२
(७) द आइलैण्ड आफ द ग्रेट मदर (The Island of the Great Mother)	१९२५
(८) द फूल इन क्राइस्ट इमानुएल क्विन्ट (The Fool In Christ Emanuel Quint)	१९२६



रवीन्द्रनाथ टैगोर
(१८६१–१९४१)

नोवेल के वसीयतनामे मे साफ-साफ लिखा था कि "यह मेरी अत्यन्त प्रवल इच्छा है कि इन पुरस्कारों के प्रदान करने मे उम्मीदवारो की राष्ट्रीयता पर कोई ध्यान नही दिया जायगा, और उसी को पुरस्कार प्रदान किया जायगा जो उसका अधिकारी होगा, चाहे वह स्कैंडिनेवियन हो या न हो।" यदि यह वात ध्यान मे रखी जाय तो इस पर थोडा आश्चर्य होना अस्वाभाविक नही है कि पहले तेरह पुरस्कार, जो १९०१ से १९१२ के बीच वितरित किये गए, यूरोप के ही लोगो तथा देशों को मिले और किसी-किसी देश को तो एक से अधिक वार भी मिले। परन्तु यूरोप के वाहर के किसी देश को यह पुरस्कार नही मिला यहाँ तक कि अमेरिका के लोगो को भी नही। इसलिए सन् १९१३ मे जव यह घोषणा की गई कि इस वर्ष यह पुरस्कार रवीन्द्रनाथ टैगोर को प्रदान किया गया है तो संसार के साहित्य-प्रेमियो की दृष्टि पूरव, एशिया और विशेष रूप से भारत की ओर भी गई।

रवीन्द्रनाथ टैगोर न केवल प्रथम भारतीय थे जिन्हे यह पुरस्कार प्राप्त हुआ था, वरन् वह प्रथम एशियाई भी थे। यहाँ यह कह देना भी अनुचित न होगा कि विज्ञान के क्षेत्र मे भी एशिया के देशो मे भारत ही ने सवसे पहले यह गौरव

प्राप्त किया था। १९३० में डॉ० चन्द्रशेखर वेंकट रमन को ४२ वर्ष की अवस्था में पदार्थविज्ञान (Physics) के लिए यह पुरस्कार मिला था। डॉ० रमन के वाद तो सन् १९५७ में दो चीनियों तथा १९४९ मे एक जापानी को पदार्थविज्ञान के लिए यह पुरस्कार मिल चुका है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र में भारत ही एशिया का पथ-प्रदर्शक रहा है। यह भारतवर्ष के लिए गौरव की वात है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म ६ मई, १८६१ को कलकत्ता मे हुआ था। इनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर थे। वह अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति के, ज्ञान-प्रिय तथा सज्जन स्वभाव के थे। उनके पिता राजा द्वारिकानाथ टैगोर थे। देवेन्द्रनाथ टैगोर ने राजा की उपाधि छोड़कर महर्षि की उपाधि ग्रहण कर ली थी, क्योंकि वह सांसारिक भोग-विलास तथा ऐश्वर्य की अपेक्षा ज्ञान तथा धर्म को कहीं अधिक महत्त्व देते थे।

रवीन्द्रनाथ टैगोर उनके सातों पुत्रों मे सबसे छोटे थे। जव रवीन्द्र वावू १३ वर्ष के थे, तव इनकी माँ का देहान्त क्षय रोग से हो गया था, जिसमें इनको वहुत बड़ा धक्का लगा था। इसी के कारण इनका पालन-पोषण नौकरों के हाथों हुआ था। इनको वचपन से ही साहित्य तथा सगीत में अधिक रुचि थी। आरम्भ मे इनकी शिक्षा प्राइवेट ट्यूटरों (Private tutors) द्वारा तथा प्राइवेट स्कूलों में हुई। १८७८ में यह इंग्लैड अपने बडे भाई के साथ रहने गए। वहाँ यह यूनिवर्सिटी कालेज, लन्दन मे भर्ती हुए और कानून पढने गए। परन्तु इनको यह वहुत नहीं भाया और यह भारत लौट आये। १८८३ मे यह फिर जाने वाले थे, परन्तु किन्ही कारणों से न जा सके। इसी साल (१८८३) मे इनकी शादी मृणालिनीदेवी से हो गई। इनको एक लड़का तथा एक लड़की भी हुई।

सन् १९१५ में इन्हें तत्कालीन भारत सरकार ने 'सर' का आदरसूचक खिताब भी दिया था, जो इन्होंने १९१९ में जलियानवाला काण्ड के बाद सरकार को लौटा दिया था, परन्तु कुछ वर्षो बाद इसको प्रयोग में लाने की आज्ञा दे दी थी। इनको अनेक विश्वविद्यालयों से डॉक्टर की उपाधि भी प्रदान की गई थी। १९३० में इन्होंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में हिव्वर्ट (Hibbert) व्याख्यानमाला के अन्तर्गत व्याख्यान भी दिये थे। इसके बाद यह जर्मनी, डेन-मार्क, रूस तथा अमेरिका का देशाटन करते रहे, और दो वर्ष उपरान्त पर्शिया (ईरान) में भी गए। सन् १९०१ में इन्होंने शांतिनिकेतन में 'विश्व भारती' नामक संस्था स्थापित की थी जो अव विश्वविद्यालय है। इन्होने वह सारा धन, जो इन्हें नोवेल पुरस्कार से मिला था, विश्व भारती मे ही लगा दिया था। ६८ वर्ष

की अवस्था मे इन्होने चित्र बनाना आरम्भ किया और मास्को, बर्लिन, म्यूनिख, पेरिस, बर्मिघम और न्यूयार्क में अपने चित्रों की प्रदर्शनियाँ भी की। १९४० मे उनावसूफोर्ड विश्वविद्यालय ने इन्हे डॉक्टर की उपाधि दी।

इनके अन्त के दिन सुख तथा शांति से कटे। इन्होंने ही सर्वप्रथम सन् १९१९ मे गाधीजी को 'महात्मा' की उपाधि दी थी। इनका ससार के बडे-बड़े लोगो मे परिचय था और इनका नाम समूचे विश्व मे बडे सम्मान से लिया जाता था। ७ अगस्त, १९४१ को ८० वर्ष की अवस्था मे इनका देहावसान हो गया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने आठ वर्ष की अवस्था से हो कविता लिखना आरम्भ कर दिया था। इनके ऊपर विहारीलाल चक्रवर्ती तथा विद्यापति का गहरा प्रभाव पडा था। इनके ऊपर भारतवर्ष की प्राचीन धार्मिक पुस्तको का भी बहुत प्रभाव था और इन्होंने भारतवर्ष के पन्द्रहवी तथा सोलहवी शताव्दी के वैष्णव कवियो की रचनाओ को फिर से जीवन प्रदान किया था। कबीर, रामप्रसाद तथा अन्य रहस्यवादी (Mystic) कवियो से इन्होंने बहुत-कुछ ग्रहण किया था। इनकी रचनाएँ रस से ओतप्रोत है। इन्होने कविता, नाटक, उपन्यास तथा कहानियाँ लिखी है। इनकी कवितायें बंगाल के दैनिक जीवन का अग बन चुकी है तथा इनकी कहानियाँ विश्वप्रसिद्ध है।

इनको पुरस्कार कैसे मिला, इसकी भी एक कहानी है। डॉ० ऐन्डर्स ऑस्टरलिग (Dr. Anders Osterling) ने 'नोबेल द मैन एण्ड हिज प्राइजिज़' मे लिखा है·

"अब तक (१९१२) पुरस्कार केवल यूरोप के लेखको को प्रदान किया गया था, लेकिन जब १९१३ मे रवीन्द्रनाथ टैगोर (१८६१–१९४१) इसके विजेता हुए, तो क्षितिज एकाएक बहुत ही सन्तोपजनक रूप से फैल गया। इस समय टैगोर की ख्याति अंग्रेजी बोलने वाली दुनिया मे बिलकुल नयी थी, लेकिन इनका नाम एक अग्रेज टामस स्टर्ज मूर ने लन्दन मे रायल सोसाइटी के सदस्य होने के नाते इस पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया था और कमेटी की रिपोर्ट, जिसे कि नये-नये हुए प्रधान हेरैल्ड जार्ने ने लिखा था, यह प्रकट करती है कि इनकी (टैगोर) उम्मीदवारी से उनको एक सुखद आश्चर्य हुआ। यह सच है कि जार्ने ने एक पक्षपाती प्रेक्षक की तरह व्यवहार किया, और यह मत प्रकट किया कि टैगोर की सुन्दर कविता मे कितना इनका अपना है, और कितना हिन्दू धर्म की पुरानी तथा धार्मिक रचनाओ मे लिया गया है, यह कहना कठिन है। जब तक कि इन ऐतिहासिक कडियो की ठीक-ठीक जानकारी करने के लिए

पर्याप्त समय नही मिल जाता, तब तक इस वात का निर्णय करना कठिन है कि टैगोर के धार्मिक रहस्यवाद तथा उनकी कविता मे कितना उनका अपना है और कितना पुराना या दूसरों का।"

यह सच है कि कमेटी ने एक दूसरे उम्मीदवार की सिफारिश करने का निर्णय किया था वह थे फ्रान्सीसी साहित्यिक, इतिहासकार तथा उपदेशक, एमील फ़ूगे। परन्तु उस समय तक टैगोर का नाम अन्य सदस्यो के मन मे भी बैठ गया था, और वे लोग इनका साथ देने को तैयार थे। अंतिम निर्णय के लिए वर्नर फान हाइडेन्स्टाम का एक लेख वहुत हद तक जिम्मेदार था। 'गीताजलि' (कविता सग्रह), जिसे टैगोर ने स्वयं ही अंग्रेजी मे अनूदित कर प्रकाशित कराया था, के विषय में हाइडेन्स्टाम ने कहा : "मैने उसे गहरी भावुकता के साथ पढ़ा और मै किसी ऐसी गीत-कविता का ध्यान जिसे मैने इधर बीसियो वर्ष मे देखा हो, नही कर सकता। यह एक अतुल्य अनुभव था, इसकी तुलना मै केवल एक ताजा, साफ सोते के पानी से कर सकता हूँ। इनकी रचनाओ मे जो मुलायम तथा सच्ची धार्मिक भावुकता है, जो हृदय की शुद्धता है, जो अच्छाई तथा स्वाभाविक शान है, वे सब गुण मिलकर एक गहरा तथा असाधारण आत्मिक सौन्दर्य प्रदान करते है। उनकी कविता में कोई बात वाद-विवाद करने या उथल-पुथल करने की नही है, कोई झूठी बात नहीं है, कोई सांसारिक या छोटी बात नही है, और यदि कभी भी किसी कवि के विषय में यह कहा जाय कि उसमें वे सब गुण है जिनके कारण वह नोवेल पुरस्कार का अधिकारी हो जाता है तो यही वह पुरुष है। अब जब कि हम लोगों ने आखिर मे उच्चकोटि का एक आदर्शवादी लेखक खोज ही निकाला है तो अब हम लोगों को उसे छोड़ना नही चाहिए। प्रथम बार और शायद आने वाले अनेक वर्षो के लिए, हम लोगों को इस बात का विशेष अधिकार मिला है कि एक बड़े नाम का पता लगा ले। और अब यह काम हमे इसके पहले करना है जबकि उसका नाम दैनिक पत्रों व पत्रिकाओ के स्तम्भो में रोज ऊपर-नीचे आना शुरू हो जाय। यदि इस खोज का पूरा उपयोग करना है, तो हम लोगो को देर नही करनी चाहिए और साल-भर और एक के लिए कह कर आज यह अवसर नही खो देना चाहिए।"

पुरस्कार का स्वागत भारतवर्ष मे खूब धूम-धाम से किया गया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के विषय मे भारतीय पाठको के लिए न तो साहित्य की कमी है न सूचनाओं की। वह केवल बगाल के ही नही वरन् तमाम भारत या तमाम पूर्व के थे। उनकी रचनाओ मे धर्म, भावुकता, कविता, सगीत, गान, ज्ञान, उपदेश सभी का मिश्रण है। परन्तु यहाँ यह कह देना अप्रासगिक न

होगा कि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने नोबेल पुरस्कार पाने के बाद साहित्य को कोई महत्त्वपूर्ण रचना नही दी। इनकी रचनाओ का पढ़ना या समझना, या उसका रसास्वादन सरल काम नही है। बोरिस पास्तरनाक ने एक बयान मे कहा था कि वह टैगोर की रचनाओ का अनुवाद करने वाले हैं। उन्होंने यह भी कहा कि "टैगोर मुझसे बहुत दूर हैं। उनका दर्शन, उनकी धारणायें, उनके जीवन के सिद्धान्त भी अजीब हैं। जब कोई टैगोर की रचना का प्रथम पृष्ठ पढता है तो वह यह पूछता है कि अब आगे के पृष्ठ पर वह क्या लिखेंगे।"[१]

रवीन्द्रनाथ टैगोर को पुरस्कार प्रदान करते समय कमेटी ने कहा था :

"इनकी अत्यन्त सूक्ष्मग्राही, ताजा तथा सुन्दर रचनाओ के कारण, जिसके द्वारा अपूर्व कला सहित इन्होंने अपने कवितामय विचार को अपने ही अग्रेजी शब्दो मे प्रकट करके, उन्हे पश्चिम के साहित्य का एक अग बना दिया है।" इन्हे यह पुरस्कार दिया जाता है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम

(१) गीताजलि (Gitanjali)
(२) माली (Mali)
(३) कबीर के सौ पद (Kabir ke Sau Pad)
(४) चित्रा (Chitra)
(५) डाकखाना (Dak-khana)
(६) घर-बाहर (Ghar-Bahar)
(७) गोरा (Gora)
(८) कहानियाँ आदि (Stories, etc)
(९) द रैक (The Wreck)

१. दिनमान : लखनऊ, ७ नवम्बर, १९५८।



रोमाँ रोलाँ
(१८६६–१९४४)

१ फरवरी १९१४ तक, और वर्षो की भाँति, कई लेखकों के नाम स्वीडिश अकादमी के सामने प्रस्तुत किये गए थे और उन पर विचार-विमर्श हो ही रहा था कि अगस्त में विश्व-युद्ध छिड़ गया और यूरोप में राजनीतिक तथा सामाजिक उथल-पथल हो गई। यह निश्चय करना कठिन हो गया कि किसको और कैसे पुरस्कार प्रदान किया जाय। इसलिये १९१४ का पुरस्कार स्थगित कर लिया गया, और यद्यपि स्वीडिश अकादमी ने यह निश्चय कर लिया था कि इस वर्ष का पुरस्कार स्विटजरलैण्ड के लेखक कार्ल स्पिटेलर (Carl Spitteler) को प्रदान किया जाय, फिर भी यह निर्णय लागू नही किया गया। इस कारण १९१४ में साहित्य और शाति का पुरस्कार किसी को नही दिया गया। इसलिए तीनों पुरस्कार इसी वर्ष (सन् १९१६) प्रदान किये गए। इस अवसर के निकल जाने के वाद कार्ल स्पिटेलर को पाँच वर्ष प्रतीक्षा करनी पड़ी, और तव जाकर १९१९ में विश्व-युद्ध के बाद इन्हे यह सम्मान मिला।

इस वर्ष नोवेल कमेटी की रिपोर्ट में प्रोफेसर जार्ने (Professor Hjarne) ने एक वात कही जो उल्लेखनीय है। उन्होने कहा कि एल्फ्रेड नोवेल

ने इन पुरस्कारो को विश्व-शांति तथा भिन्न-भिन्न देशों में आपस मे एकता तथा मैत्री-भाव फैलाने के विचार से स्थापित किया था और इसका तात्पर्य यह भी था कि संसार के देशो मे आपसी द्वेष-भावना मिट जाय। परन्तु अब यह बात प्रत्यक्ष है कि इस पुरस्कार के कारण देशों मे वैमनस्य बढ़ता जा रहा है। यही नहीं, पृथक्-पृथक् देशो के लेखकों तथा वैज्ञानिको मे आपस मे वैमनस्य पैदा हो जाता है। और, जबकि ऐसा मौका आता है जैसा कि आजकल है (१९१४-१५), तब भिन्न-भिन्न देशो के लेखक अपनी लेखनी को देश-सेवा मे लगा देते है—अन्य देशो से जिनसे कि राजनीतिक झगड़ा चल रहा है, अपने सांस्कृतिक बन्धन तोड़ लेते है और हमारे काम पर आक्षेप करते है। कुछ नोबेल पुरस्कार-विजेता, जो कि जीवित है, एक-दूसरे को बुरा-भला कहने लगे है—इनमे मैटरलिक, हाप्टमैन, यूकेन तथा किप्लिग विशेष रूप से अग्रणी है। इस कारण कमेटी का कर्तव्य है कि अपने पुरस्कारो द्वारा इस वैमनस्य को बढ़ने न दे। यदि कोई ऐसा कदम उठाया जा सकता है जिससे यह बात रोकी जा सकती है, तो उस कदम को उठाना चाहिये।

सन् १९१६ मे १९१५ का पुरस्कार फ्रास के लेखक रोमाँ रोलाँ को मिला।

रोमाँ रोलाँ का जन्म फ्रास के मध्य मे स्थित क्लेमेसी (Clamecy) नामक एक छोटे-से शहर मे २९ जनवरी १८६६ को हुआ था। क्लेमेसी बूव्रान (The Beuvron) और यान (The Yonne) नामक दो नदियों के मुहाने पर बसा हुआ है। इसके चारो ओर सुन्दर पहाडियाँ भी हैं। इनके पिता तथा दादा दोनो ही नोटरी (Notary) थे। वे लोग स्वतत्रताप्रिय, प्रसन्न-चित्त तथा आलोचक वृत्ति के थे। उनमे देश-प्रेम भी कूट-कूटकर भरा था। इनकी माँ को सगीत से प्रेम था और यह सगीत-प्रेम इन्हे भी विरासत मे मिला।

इनका बचपन काफी सुख में बीता था। इन्होने चौदह वर्ष की अवस्था तक क्लेमेसी (Clamecy) के कॉलिज मे ही शिक्षा पाई और तदुपरान्त सेंट लुईस और लुईस-ले-ग्रैण्ड (St. Louis and Louis le-Grand) मे। सन् १८८६ मे बाईस वर्ष की अवस्था मे यह इकोल नार्मेल सुपिरियोर (Ecole Normale Superieure) मे भरती हो गए। यहाँ पर इनके शिक्षकों मे गेब्रियल मोनाड (Gabriel Monod), अर्नेस्ट लेविस (Ernest Lavisse), वाइडल डे लाब्लाशे (Vidal de Lab'ache), बाण्ट्रो (Bontroux), ब्रोचर्ड, ब्रुनेटियेर (Brunetiere), और गैस्टन वायसो (Boissier) ऐसे विशेषज्ञ थे। ये लोग इतिहास, भूगोल, दर्शन तथा आलोचना के क्षेत्र के प्रकाण्ड विद्वान् थे। सन्

१८८९ मे रोमाँ रोलाँ स्नातक होकर रोम फ्रेंच स्कूल में पढ़ने गये। इन्होने इटली तथा सिसिली का भ्रमण किया और समाज में मिल-जुलकर जीवन को देखा। रोम का प्रभाव रोमाँ रोलाँ पर बहुत गहरा है।

सन् १८९१ में यह पेरिस लौट आये। यहाँ इनकी शादी माइकेल ब्रीयेल (Michael Breal) की पुत्री से हुई। इन्होंने इसके बाद डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। इनकी थीसिस का विषय था 'द आरिजिन्स ऑफ द ओपेरा इन यूरोप: लल्ली और स्कर्लाट्टी के पूर्व—१८९५ (The Origins of the Opera in Europe : Lully and Scarlatti—1895)। इसके बाद यह अपने पुराने स्कूल इकोल नार्मल सुपिरियोर में शिक्षक नियुक्त हुए। सन् १९१३ मे फ्रास ने इन्हे ग्रैण्ड प्रिक्स (Grand prix) की उपाधि से विभूपित किया। जब १९१४ की लड़ाई शुरू हुई तब यह स्विटजरलैण्ड मे थे। इनकी अवस्था (४८) के कारण इनको लड़ाई मे नहीं जाना पडा, परन्तु इन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय रेड क्रास मे काम किया। यह लड़ाई के एकदम विरुद्ध थे और इन्होने १९१४-१५ में जर्नल डेजिनेव (Journal de Genev) मे युद्ध के विरुद्ध भी कई लेख लिखे थे। इस कारण, अपने देश में तथा दूसरे देशो मे भी, जो अपनी आत्म-रक्षा के लिए लड रहे थे, इनकी काफी बदनामी हुई। इन लेखो मे 'अबव द कान्फ्लिक्ट' (Above the Conflict) अभी तक प्रसिद्ध है।

युद्ध के बाद सन् १९१९ मे यह पेरिस लौट आये, परन्तु दो वर्ष के बाद ही फिर यह स्विटजरलैण्ड मे जाकर रहने लगे। इन्होंने विलेनेवू नामक शहर मे एक आलीशान मकान ले लिया। यह मकान लेमान झील के किनारे पर बना हुआ था। यहाँ सोलह वर्ष अपने पिता तथा बहिन के साथ रोमाँ रोलाँ रहने रहे। इनको दूसरे विश्व-युद्ध का आभास मिल गया था और जब सन् १९३९ मे द्वितीय विश्व-युद्ध की आग भड़क उठी तो इन्होने एक बार फिर अपनी रचनाओ के माध्यम से युद्ध के विरुद्ध आवाज उठाना शुरू कर दिया। इन्होंने अधिनायकवाद (Facism) और नाजीवाद (Nazi-ism) का विरोध खुलेआम किया।

सन् १९३८ में यह फ्रास लौट आये और अपने जन्म-स्थान क्लेमेसी के पास वेज़ेली (Vezelay) नामक गाँव में रहने लगे। लड़ाई के समय विच्वी सरकार ने इन्हें नजरबन्द (House-arrest) कर दिया था, परन्तु इनका काम लड़ाई के खिलाफ जो काम करना था, वह चलता रहा।

३० दिसम्बर १९४४ को ७८ वर्ष की अवस्था मे वेजेली मे इनका देहान्त हो गया।

रोमाँ रोलाँ ने अपने ७८ वर्ष के जीवन में कई प्रकार से साहित्य-सेवा की है। इन्होंने नाटक, जीवनियाँ तथा उपन्यास तो लिखे ही है इनके साथ-ही-साथ यह अखबारों तथा पत्रिकाओ में भी लेख आदि लिखते रहे थे। इनके ऊपर बीथोविन, शेक्सपीयर और गेटे का अत्यधिक प्रभाव पडा था। फ्रांस के लेखकों मे स्टैंडाल, वाल्तेयर, डाइडेराट तथा रूसो का भी इन्होंने गहन अध्ययन किया था।

इनकी पहली रचना 'सेंट लुइस' (St. Louis) नामक एक नाटक है जो इन्होंने १८९७ मे प्रकाशित कराया था। सन् १९०० के बाद इनकी रचनाएँ चार्ल्स पिगी (Charly Piguy) की पाक्षिक पत्रिका मे प्रकाशित होने लगी। इसी में इनका विश्व-प्रसिद्ध उपन्यास 'ज्या क्रिस्तोफ' (Jean Christophe) भी प्रकाशित हुआ। 'लाइव्ज ऑफ इलस्ट्रियस मेन' (Lives of Illustrious Men) और कई और दूसरी रचनाएँ भी इसी पत्रिका द्वारा ससार मे आई।

सन् १९१४ की लडाई का खुले-आम विरोध करने के कारण इनकी बडी बदनामी हुई थी, परन्तु जब सन् १९१६ मे इनको साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला, तब ससार मे फिर से लोगों के हृदय मे इनके प्रति सम्मान पैदा हो गया। लडाई के समय इन्होने दो उपन्यास—'पिअरे एट लुस' (Pierre et Luce) और 'क्लेराम्बाल्ट' (Clerambault) लिखे। इसी समय इन्होने एक नाटक 'लिलूली' भी लिखा।

रोमाँ रोलाँ का भारतवर्ष से विशेष रूप से सपर्क तथा सम्बन्ध है। इन्होंने 'महात्मा गाधी : द मैन हू बिकेम वन विद द युनीवर्स' (Mahatma Gandhi . The Man Who Became One With The Universe) और रामकृष्ण परमहस तथा विवेकानन्द की जीवनियाँ लिखकर भारत की प्रतिष्ठा तो बढायी ही, साथ ही साथ यह भी निश्चय कर दिया कि यह स्वयं भी भारत के महान् पुरुषो को समझ सकते है। इनकी रवीन्द्रनाथ ठाकुर से भी मित्रता थी। इन्होने सन् १९२५ से १९३४ के बीच 'द सोल एन्चैण्टेड' (The Soul Enchanted) नामक पुस्तक लिखी। इसके बाद इन्होंने फ्रांस की क्रांति के विषय मे कई नाटक लिखे।

रोमाँ रोलाँ एक निर्भीक और स्पष्टवादी लेखक थे। कहा जाता है कि जब एक दूसरे साहित्य के नोबेल पुरस्कार-विजेता, अनातोले फ्रास (Anatole France) से पूछा गया कि उन्होंने लड़ाई के विरुद्ध आवाज क्यो नही उठाई थी, तो उन्होंने कहा था—"मुझे डर लगता था।"

रोमाँ रोलाँ को लोग केवल उनकी एक रचना 'ज्या क्रिस्तोफ' तथा

भारतीय अध्ययनों के कारण जानते है। 'ज्या क्रिस्तोफ' इनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है।

वैसे तो यह कृति विशेष रूप से अच्छी नहीं कही जा सकती, परन्तु इसने फ्रांस तथा जर्मनी के तत्कालीन सामाजिक जीवन का जो परिचय कराया है वह अद्वितीय है। इसमें जो कुछ भी घटनाएँ घटती हैं या जो भी पात्र प्रस्तुत किये जाते है वे सब समाज के किसी-न-किसी अग पर प्रकाश तथा किसी-न-किसी रूप में मनुष्य की मनोवैज्ञानिक दशा का प्रदर्शन करते है। इसमे एक सगीतज्ञ के जीवन की कहानी है, जो संसार के दैनिक जीवन से घवराकर कला में सुख पाने की आशा से अपने को उसका सेवक वना देता है। इसमें, इस एक पात्र ज्या क्रिस्ताफ द्वारा लेखक ने अपने तथा प्रत्येक मनुष्य के जीवन के सघर्ष का चित्र प्रस्तुत किया है। इस नायक द्वारा रोमाँ रोलाँ ने प्रत्येक मनुष्य के सुख-दुख, अनुभव, प्रेम, आकांक्षा, अभिलाषा, सघर्ष तथा सफलता का वर्णन किया है। यह पुस्तक १८६५ से १६१२ तक लिखी गई और इसके अलग-अलग भाग (यह १२ भागों मे है) फ्रांस, इटली, स्विटजरलैण्ड तथा इंगलैण्ड मे लिखे गए। इसमें लगभग १५०० पृष्ठ है।

रोमाँ रोलाँ को पुरस्कार प्रदान करते हुए नोवेल ने कहा था :

"इनकी साहित्यिक रचनाओं के ऊँचे आदर्श के सम्मानस्वरूप, तथा उस सहानुभूति और सत्य के प्रेम के लिए, जिसके द्वारा इन्होंने नाना प्रकार के मनुष्यो का वर्णन किया है, इन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।"

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) ज्या क्रिस्ताफ (Jean Christophe)	१६१२
(२) महात्मा गाधी (Mahatma Gandhi)	१६२४
(३) रामकृष्ण और विवेकानन्द (Ram Krishna & Vivekanand)	१६३०
(४) प्राफेट्स ऑफ ए न्यू इंडिया (Prophets of a New India)	
(५) द जर्नी विदिन (The Journey Within)	
(६) एसेज ऑन म्युजिक (Essays on Music)	



कार्ल गस्तफ वर्नर फान हेइदेन्स्ताम
(१८५९–१९४०)

कार्ल गस्तफ वर्नर फान हेइदेन्स्ताम को जब १९१६ मे साहित्य का पुरस्कार मिला तो उनके देश स्वीयन की एक माँग पूरी हुई। इनके पहले १९०९ मे सेल्मा लागरलोफ को यह पुरस्कार प्रदान करके स्वीडिश अकादमी ने एल्फ्रेड नोबेल के देश को सम्मानित किया था। यह उल्लेखनीय है कि इस पुरस्कार को प्रदान करने मे न तो नोबेल कमेटी और न स्वीडिश अकादमी ही किसी प्रकार के पक्षपात के लिए उत्तरदायी बनाई जा सकती है। किसी भी देश को यह पुरस्कार बार-बार नही प्रदान किया जाता, किसी भी देश के बड़े या छोटे होने का विचार नही किया जाता। बेल्जियम को यह पुरस्कार १९११ मे मिला, परन्तु रूस और अमेरिका अभी तक इस सम्मान से वचित थे। आस्ट्रेलिया को तो यह आज तक नहीं मिला है। इस पुरस्कार के प्रदान करने मे किसी देश की राजनीति का भी कोई प्रभाव नही पडता। १९१५ मे पदार्थविज्ञान (Physics) के लिए दो इगलैण्ड-निवासियो को तथा उसी साल रसायनशास्त्र (Chemistry) के लिए एक जर्मन निवासी को यह पुरस्कार दिया गया था।

कार्लफान हेइदेन्स्ताम का जन्म ६ जुलाई १८५९ को ओल्शाम्मर

(Olshammer) नामक स्थान पर हुआ था। यह शहर उनके पैतृक इस्टेट (estate) ओरेब्रो (Orebro) मे था। ये लोग स्वीडन के एक अमीर खानदान के थे और इनके पितामहो ने देश की राजनीति तथा लड़ाइयो में भाग लिया था। बचपन मे कार्ल फान हेइदेन्स्ताम का स्वास्थ्य ठीक नही रहता था। यह उन दिनों अपने देश के शूरवीरो की कथाएँ तथा कविताएँ पढते रहते थे। इन्ही दिनो पुस्तको के माध्यम से इनका परिचय वेल्मैन (Bellman), टेग्नर (Tegner), विटैलिस (Vitalis), टोपेलियस (Topelius) जैसे लेखकों से हुआ। लेकिन १७ वर्ष की अवस्था मे इनका स्वास्थ्य इतना खराब हो गया कि इनको स्कूल छोड़कर दक्षिणी देशो के भ्रमण के लिए भेज दिया गया। इन्होने जर्मनी, फ्रांस, इटली, स्विटजरलैण्ड तथा पूरबी देशो के देशाटन मे कई वर्ष व्यतीत किये। चार वर्ष बाद यह रोम आए और फिर पेरिस मे इकोलडेस बोएक्स आर्ट्स (Ecole des Beaux Arts) मे अध्ययन करते रहे।

स्विटजरलैण्ड निवासी इमिलिया उग्ला (Emılia Uggla) नामक एक लड़की से शादी करने के कारण इनकी अपने खानदान वालो से अनवन हो गई और यह सन् १८८० से १८८७ तक अपने देश नही गए। जब सन् १८८७ मे इनके पिता का देहान्त होने वाला था तब यह स्वीडन लौटे। दो वर्ष वाद यह नार्वे और फिर स्विटज़रलैण्ड चले गए। सन् १८९३ मे इनकी पत्नी का देहान्त हो गया। सन् १८९६ मे इन्होंने आल्गा वाइवर्ग (Olga Wıberg) से शादी की, परन्तु कुछ ही समय के वाद इन्होंने अपनी इस दूसरी पत्नी को तलाक दे दिया। १९०० मे इन्होंने तीसरी बार ग्रीटास्जोवर्ग (Gretas joberg) से शादी की। इस समय इनकी आयु ४१ वर्ष तथा इनकी पत्नी की आयु २० वर्ष की थी।

सन् १९१२ में यह स्वीडिश अकादमी के १८ सदस्यों मे एक चुने गए। तीन वर्ष पहले स्टाकहाम विश्वविद्यालय ने इन्हें पी-एच० डी० (Ph. D.) की उपाधि प्रदान की थी। सन् १९१६ मे इन्हे नोवेल पुरस्कार प्रदान किया गया। २० मई १९४० को ८० वर्ष की अवस्था में स्टाकहाम मे इनका देहान्त हो गया।

कार्लफान हेइदेन्स्ताम शुरू में चित्रकार वनने के आकांक्षी थे और कुछ समय तक इन्होने जेरोम (Gerome) के साथ पेरिस में यह कला सीखी भी थी। इनके आलोचकों ने इनकी रचनाओं मे, इंगलैण्ड के कवि कीट्स की भाँति चित्रकला का प्रभाव अकित पाया है। जिस समय यह अपने माता-पिता से, अपनी प्रथम शादी के कारण अलग रहते थे, उस समय की इनकी रचनाएँ, जो कि वाद में संग्रीहत करके 'पिल्ग्रिमेजिज एण्ड वाण्डर ईयर्स' (Pilgrimages And

Wander Years) के नाम से १८८८ में प्रकाशित हुई। इनकी तत्कालीन मानसिक स्थिति का एक स्पष्ट चित्र हमारे सामने प्रस्तुत है। इन कविताओं में घर लौट जाने की प्रबल उत्कंठा तथा अन्याय के प्रति विरोध का प्रदर्शन है। इनमें इन्होंने अपनी माँ से न मिल पाने के लिए दुख प्रकट किया है।

'पिल्ग्रिमेजिज एण्ड वाण्डर ईयर्स' के बाद इनका दूसरा कविता-संकलन 'पोइम्स' (Poems) के नाम से प्रकाशित हुआ। इसमें कई प्रकार की रचनाएँ थीं, जैसे 'ए मैन्स लास्ट वर्ड टू ए वूमन' (A Man's Last Word To A Woman) और 'दि फारेस्ट आफ टिवेडेन' (The Forest of Tiveden)। ये कविताएँ बहुत जल्दी ही लोकप्रिय हो गई। पोइम्स (१९०२) में इन्होंने अपने देश स्वीडन को जनतन्त्र के विषय में ज्ञान प्रदान किया है। यह स्वीडन के राष्ट्रकवि (Sweden's Laureate) की उपाधि तो प्राप्त कर ही चुके थे, परन्तु जब सन् १९०९ में इनकी पुस्तक 'न्या डिक्टर' (Nya Diktar) प्रकाशित हुई, तब इनकी महानता में किसी को भी कोई संदेह नहीं रह गया। नोबेल पुरस्कार के प्रदान किये जाने में इस पुस्तक पर विशेष रूप से जोर दिया गया था। इन्होंने इस पुस्तक के बाद केवल एक पुस्तक और लिखी थी और वह थी 'द स्वीड्स एण्ड देयर चीफ्टेन्स' (The Swedes and Their Chieftains) यह एक बालोपयोगी रचना थी।

कार्लफान हेइदेन्स्ताम की कविताएँ तो उच्च कोटि की हैं ही, इनके उपन्यास भी काफी महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय हैं। सन् १८८९ में इनका उपन्यास 'एण्डीमियान' (Endymion) प्रकाशित हुआ। इसमें एक पुरानी कहानी को फिर से जीवन प्रदान करने का प्रयत्न किया गया है। कार्लफान हेइदेन्स्ताम ने दिखाया है कि पूर्व के एक प्रेमी को पश्चिमी वातावरण कैसे लाचार कर देता है। पिल्ग्रिमेजिज की तरह इसमें भी पूर्वी देशों का उत्तम वर्णन है। इस पुस्तक में इन्होंने 'कल्पनाशील यथार्थवादी' (Imaginative realist) होने का परिचय दिया है। सन् १८९० में इनकी पुस्तक 'पेपिटाज वैडिंग' (Pepita's Wedding) प्रकाशित हुई। यह पुस्तक इन्होंने एक यहूदी कवि, आस्कर लेवार्टिन (Oscar Levertin) के साथ मिलकर लिखी थी। पेपिटाज वैडिंग में इन्होंने पाठकों तथा लेखकों से अनुरोध किया था कि प्रकृतिवाद[1] (Naturalism) को छोड़-

१. 'नैचुरेलिज्म' (Naturalism) ने यूरोप के साहित्य में अपना सिक्का उन्नीसवीं शताब्दी में ही जमा लिया था। इसके मुख्य प्रचारक थे फ्रांस के एमिल ज़ोला तथा स्वीडन के ऑगस्ट स्ट्रिंडबर्ग (August Strindberg) वास्तविक (realism) को आगे बढ़ाकर नग्न रूप में गन्दगी सहित प्रदर्शित किया जाता है।

कर साहित्यकारों को आदर्शवादी बनना चाहिए और आन्तरिक शांति की खोज करनी चाहिए। सन् १८६२ में 'हैन्स ऐलियेनस' (Hans Alienus) में भी इनके कल्पनाशील यथार्थवादी होने का परिचय मिलता है। इस पुस्तक का नायक फास्ट (Faust) की तरह है और वह ग्रीस के इस पुराने विचार कि मनुष्य का जीवन शांति के लिए बना है, को प्रकट करता है। 'द चार्ल्समैन' (The Charlesman) कार्लफान हेईन्स्ताम की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। इसमें उन्होंने अपने देश के राजा चार्ल्स बारहवें (Charles XII) (१६८२-१७१८) तथा उनके सैनिकों के जीवन के विषय में सुन्दर कविताएँ लिखी हैं। यह स्वीडन का राष्ट्रीय महाकाव्य (National Epic) माना जाता है। सीधी-सादी परन्तु अत्यन्त सुन्दर व मार्मिक शैली में इन्होंने चार्ल्स बारहवें के जीवन, उनके द्वारा लड़ी गई लड़ाइयों तथा उनकी हार-जीत का बहुत ही मनोरम वर्णन किया है।

'द चार्ल्स मैन' के उपरान्त इनकी और भी रचनाएँ प्रकाशित हुई। 'सेंट जार्ज एण्ड द ड्रैगन (Saint George and the Dragon) 'सेंट बिर्गिट्टाज़ पिल्ग्रिमेज' (Saint Birgittas Pilgrimage), तथा 'फारेस्ट मर्मर्स' (The Forest Murmurs) इनकी रचनाओं मे विशेष उल्लेखनीय है।

जब कार्लफान हेड्देन्स्ताम का नाम नोबेल पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया गया तब वह स्वीडिश अकादमी के सदस्य थे। नोबेल कमेटी ने इनके विषय में कोई भी रिपोर्ट नही दी और इसी बात से सन्तोष कर लिया कि इनके न पुरस्कृत होने पर डेन्मार्क के दो लेखकों—कार्ल ग्येलेरुप (Karl Gjellerup) और हेनरिक पोण्टोपिदान (Henrik Pontoppidan) के नाम विचाराधीन रखे जाएँ। परन्तु स्वीडिश अकादमी ने कार्लफान हेड्देन्स्ताम को ही पुरस्कार प्रदान किया और कहा :

"हमारे साहित्य के नये युग के अग्रणी प्रतिनिधि होने के महत्त्व के सम्मान में" इन्हें यह पुरस्कार दिया जाता है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) पिल्ग्रिमेजिज़ एण्ड वाण्डर ईयर्स (Pilgrimages and Wander Years)	१८८८
(२) पोइम्स (Poems)	१६०२
(३) एण्डिमियान (Endymion)	१८८६
(४) द चार्ल्स मेन (The Charles Men)	
(५) न्या डिक्टर (Nya Diktar)	१६०६



कार्ल एडाल्फ ग्येलेरुप

(१८५७–१९१९)

सन् १९१६ मे जब कार्ल फान हेइन्देस्ताम को नोवेल पुरस्कार दिया गया था, तभी दो और लेखको के नाम भी प्रस्तावित किये गए थे—यह लेखक थे कार्ल ग्येलेरुप और हेनरिक पोण्टोपिदान। ये दोनो लेखक डेनमार्क के निवासी थे, और सन् १९१६ मे तो नही हां सन् १९१७ में, इन दोनों को साथ-साथ यह पुरस्कार आधा-आधा प्रदान किया गया। परन्तु यह बात ध्यान रखने योग्य है कि उस पुरस्कार को प्रदान करने के सम्बन्ध मे कमेटी के सदस्यो मे मतभेद था। कमेटी के एक सदस्य ने कार्ल ग्येलेरुप को ही इस सम्मान के योग्य समझा था और इससे डेनमार्क के साहित्यिक इतिहासकार (Literary historian) विल्हेम ऐण्डरसेन (Vilhelm Andersen) भी सहमत थे।

इस वर्ष यह पुरस्कार आधा-आधा बांट तो दिया गया, परन्तु कमेटी ने यह अनुभव किया कि ऐसा करने मे दो लेखको की एक-दूसरे से तुलना करना अनिवार्य हो जाता है और यह अच्छी बात नही है। अत: सन् १९१७ के बाद यह प्रथा ही उठा दी गई और अब प्रतिवर्ष सिर्फ एक ही लेखक को यह पुरस्कार दिया जाता है। कमेटी ने यह भी समझा कि इस प्रकार के बँटवारे से

जनता यह समझती है कि पुरस्कार पाने वाले न केवल आधे-आधे धन के ही अधिकारी थे वरन् वे सम्मान की दृष्टि से भी आधे ही सम्मान के योग्य है।

कार्ल एडाल्फ ग्येलेरुप एक पादरी के पुत्र थे। इनका जन्म जीलैण्ड (Zealand) के रोहोल्ट (Rohokte) नामक स्थान पर २ जुलाई सन् १८५७ को हुआ था। जीलैण्ड डेन्मार्क का एक टापू है और इस पर वहाँ के दो प्रसिद्ध नगर कापेनहेगेन (Copenhagen) तथा एल्सिनोर (Elsinore) बसे हुए है। इन्होने अपने पिता की आज्ञानुसार धर्मशास्त्र (Theology) का अध्ययन तो कर लिया, परन्तु वह स्वय पादरी नही बनना चाहते थे। इनका झुकाव तो किसी दूसरी ओर ही था। इस सम्बन्ध मे इन्होने अपने विचार अपने एक उपन्यास 'द डिसाइपिल आफ द ट्युटोन्स (The Disciple of the Teutons) (सन् १८८२) मे प्रकट भी कर दिए थे। १३ अक्तूबर १६१६ को इनकी मृत्यु हो गई।

कार्ल ग्येलेरुप आधुनिकतावादी विचारधाराओ और मतो मे बहुत रुचि लेते थे और इन्होने चार्ल्स डारविन (Charles Darwin), जार्ज ब्रैन्डस (George Brandes) तथा हर्बर्ट स्पेन्सर (Herbert Spencer) की रचनाओं का अध्ययन भी किया था। इनका ध्यान 'एडा'[1] की तरफ भी आर्काषित हुआ था और उनसे यह बहुत प्रभावित हुए थे। यह बहुत वर्षों तक ड्रेस्डेन मे भी रहे थे।

कार्ल ग्येलेरुप अपनी रचनाओ की सामग्री जुटाने के लिए काफी घूमे-फिरे थे। इनकी रचनाओं मे कला तथा सगीत का विशेष स्थान है और इन विषयो पर इन्होने अलग से भी लिखा है। वैग्नर (Wagner) ने भी इनको प्रभावित किया है। इन्होने क्रिश्चियनिटी (Christianity) की आधुनिक प्रगति को ग्रीस के सौन्दर्य-प्रेम से मिलाने का प्रयत्न किया है। इन्होने 'एडा' तथा 'सागा'[2] का अनुवाद भी किया था। इनकी रचनाओं का अंगरेजी मे अनुवाद न होने के कारण वहाँ के लोग इनसे कम परिचित हैं। इनकी दो मुख्य रचनाएँ अंगरेजी मे अनुवादित हो चुकी है। एक है 'द पिल्ग्रिम कामानिटा (The Pilgrim Kamanita) और दूसरी 'मिन्ना' (Minna)। द पिल्ग्रिम कामानिटा

---

१. 'एडा'—आइसलैण्ड के साहित्य के दो संग्रहों का नाम। पुराना संग्रह कविता-रूप का है तथा नया गद्य-रूप का। पुराना संग्रह (Elder Edda) सन् १२०० के लगभग तथा नया (Younger Edda) सन् १२३० के लगभग खोजकर निकाला गया था।

२. 'सागा' (Saga) आइसलैण्ड या नार्वे की गद्य-कहानियाँ।

की कथा इस प्रकार है :

भारतवर्ष में पहाड़ों से घिरा हुआ एक देश है, जिसे अवन्ति कहते हैं। वहाँ के एक धनी व्यापारी का पुत्र है। वह पढ़ा-लिखा है और संगीत तथा अन्य कलाओं में निपुण है। बीस वर्ष का होने पर उसे कौशम्बी के राजा उदयन के पास भेजा जाता है। वहाँ पर उसका एक लड़की से प्रेम हो जाता है और वह अब अपनी यात्रा के अन्त पर पहुँच जाता है।

इस पुस्तक की भारतवर्ष के लिए विशेषता यह है कि इसका क्रीड़ा-स्थान भारत में ही है। इस पुस्तक पर लार्ड बायरन की 'डान युआन' (Don Juan) नामक कविता का प्रभाव प्रत्यक्ष है।

कार्ल ग्येलेरुप की रचनाओं को जर्मनी में अधिक समझा जाता था, और जब उनको साहित्य का पुरस्कार प्रदान किया गया तब उसके अपने देश में तो उतनी खुशी नहीं ज़ाहिर की गई जितनी और देशों और विशेषकर जर्मनी में। 'अमेरिकन-स्कैन्डिनेवियन रिव्यू' के लेखक ने कहा कि उनका साहित्य पाना उनके अपने देश के लोगों को बहुत उत्साहित नहीं कर पाया। उनकी रचनाओं द्वारा उनके देश के लोगों को जर्मनी के दर्शनशास्त्र का भी ज्ञान हुआ था। इनकी रचनाओं में तीक्ष्णता है। संगीत इनकी मुख्य विशेषता है।

इनको पुरस्कार प्रदान करते समय नोबेल कमेटी ने कहा था :

"ऊँचे आदर्शों द्वारा प्रेरित इनकी विविध, सजीव व समृद्ध कविता के लिए" इन्हें पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

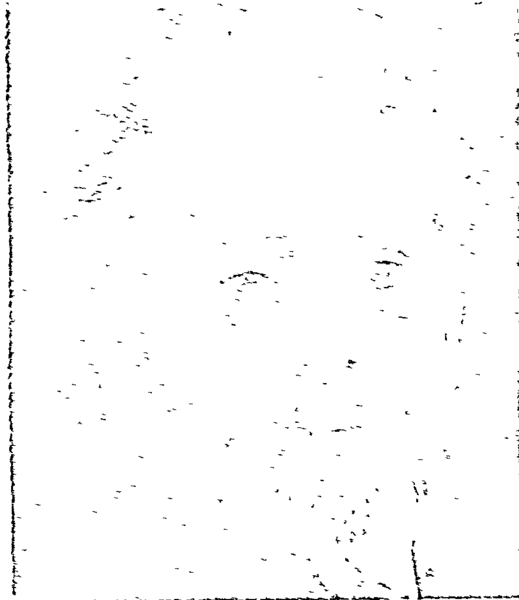
प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) डाई आफ्फरफियूर (Die Opferfeuer)	१६०३
(२) डास वाइल डर वालेन्डेटेन (Das Weil der Vollendeten)	१६०७
(३) डाई वेल्टवान्डरर (Die Weltwanderer)	१६१०
(४) डर गोल्डेन ज्वाइग (Der Golden Zweig)	१६१७

(५) रोमुलस १९२४
(Romulus)

(६) डर पिल्गर कामानिटा १९०७
(Der Pilger Kamanita)

(७) मिन्ना १९१३
(Minna)



हेनरिक पोण्टोपिदान

(१८५७–१९४३)

हेनरिक पोण्टोपिदान के पिता पादरी थे। इनका जन्म २४ जुलाई १८५७ को फ्रेडेरेसिया (Fredericia) जटलेण्ड (Jutland) डेन्मार्क मे हुआ था। इनके पूर्वजो मे कई लोगो ने चर्च की सेवा की थी। सन् १८६३ ई० मे ये लोग रैण्डर्स (Randers) नामक शहर मे जाकर बस गये। सोलह वर्ष की अवस्था होने पर सन् १८७३ ई० मे, इन्जीनियरिंग के अध्ययन के लिए चले गये। परन्तु सन् १८७७ मे इनके मन मे एकाएक साहित्य-सेवा की इच्छा उठी और इसके बाद इन्होंने और सब बातो का विचार छोड दिया।

इनकी पहली शादी मेरी अक्सेन्बाल (Marie Oxenball) से हुई थी परन्तु बाद मे तलाक हो गया। इनकी दूसरी पत्नी का नाम था अन्त्वानेत काफेड (Antoinette Kofoed)। १९२८ ई० मे इनकी दूसरी पत्नी का देहान्त हो गया। हेनरिक पोण्टोपिदान की कोई सन्तान नही है। कुछ दिन तक यह कोपेनहेगेन के समीप शार्लाटेन्लुण्ड (Charlottenlund) नाम के स्थान पर रहते रहे। यही पर २१ अगस्त सन् १९४३ ई० मे ८६ वर्ष की अवस्था मे इनका देहान्त हुआ था।

सन् १८८१ मे इनकी पुस्तक 'क्लिप्ड विंग्स' (Clipped Wings) प्रकाशित हुई। यह एक कहानी-सग्रह था। इस संकलन की 'द चर्चशिप' (The Churchship) नामक कहानी-साहित्य में बहुत ऊँचे स्थान की अधिकारिणी मानी जाती है। इन्होने अपनी 'ट्रिलाजी' (Trilogy), जो कि १८९२ से १९१६ के बीच लिखी गई थी, से साहित्यिक ख्याति प्राप्त की थी। इनकी पहली पुस्तक है 'द प्रामिज्ड लैण्ड' (The Promised Land), इसको पोण्टोपिदान ने बहुत ही ध्यानपूर्वक लिखा था। इस पर तथा इनकी दूसरी रचनाओं पर भी इब्सन (Ibsen) का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। आदर्शवादी लोगों की इस पुस्तक मे निराशा की झलक मिलती है। इसके नायक को आलोचकों ने गद्य-ब्रैन्ड (Prose-Brand) कहा है। दूसरी पुस्तक 'लकी पीटर' (Lucky Peter) लेखक के व्यक्तित्व पर आधारित है, और इस कारण इसे 'सब्जैक्टिव' कहा गया है। इसका नायक, पीटर, लेखक की भाँति एक पादरी का पुत्र है और इंजीनियरिंग का अध्ययन करता है। तीसरी पुस्तक 'द किंगडम आफ द डैड' (The Kingdom of the Dead) पहले विश्व-युद्ध के समय लिखी गई थी और इसमें देश-प्रेम का अधिक आभास मिलता है।

इनकी रचनाओं में असन्तोष की झलक मिलती है क्योंकि यह संसार की अवस्था से असन्तुष्ट थे। 'ईगिल्स फ्लाइट' (Eagle's Flight) तथा 'मिमोसाज' (Mimosas) नामक कहानियाँ इनकी कला की प्रतिनिधि रचनाएँ है। यह आदर्शवादी थे और इनकी रचनाओ मे डेन्मार्क के शहरी तथा ग्रामीण जीवन का जो चित्र मिलता है, वह फोटोग्रैफिक (Photographic) कहा जाता है।

इनके विषय में आस्कर गीस्मार (Oscar Geismar) ने कहा था :

"कलाकार के नाते यह सर्वश्रेष्ठ नही है परन्तु बदलती हुई अजीबोगरीब दुनिया में, यह अपने देश के लोगों के साथ रहे है। इनकी आत्मा कोमल है, और जो इन्होने अनुभव किया है वह डैनिश भाषा में साफ तथा समझने लायक भाषा मे लिखा है। शब्द उनकी लेखनी से धीमे-धीमे और शान्तिपूर्वक निकलते है······परन्तु इस शान्ति के नीचे एक उद्‌गार छिपा रहता है।"

जूलियस क्लाजेन ने कहा था कि पोण्टोपिदान अपनी शैली के किसी भी चिह्न को उजागर किए बिना स्वयं शैली के आचार्य के रूप में प्रस्तुत करता है।

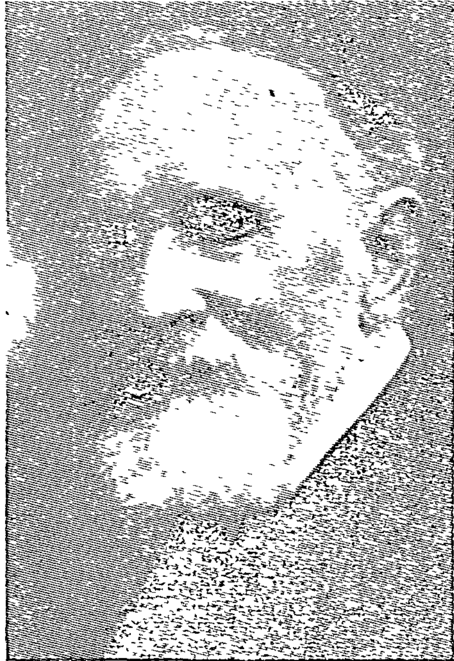
इनको पुरस्कार प्रदान करते समय कमेटी ने कहा था :

"डेन्मार्क के आजकल के जीवन के विश्वसनीय चित्रण के लिए इन्हें यह पुरस्कार दिया जाता है।"

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) विलेज टेल्स (Village Tales)	१८८३
(२) द ऐपाथिकैरीज डाटर्स (The Apothecary's Daughters)	१८६०
(३) इमानुएल और चिल्ड्रेन आफ द सायल (Emanuel, or the Children of the Soil)	१८६२
(४) द प्रामिज्ड लैण्ड (The Promised Land)	१८६६
(५) लकी पीटर (Lucky Peter)	१८६८
(६) द किंगडम आफ द डैड (The Kingdom of the Dead)	१६००





कार्ल फ्रेडरिक जार्ज स्पिटलर

(१८४५–१९२४)

प्रथम विश्व-युद्ध के कारण सन् १९१८ में साहित्य का नोवेल पुरस्कार किसी को भी नही दिया गया। सन् १९१९ का पुरस्कार १९२० में स्विटजरलैण्ड के कार्ल स्पिटलर को प्रदान किया गया। स्विटजरलैण्ड शायद संसार का सबसे छोटा देश है जिसे यह सम्मान प्राप्त हुआ है। इसके अधिकांश निवासी जर्मन भाषा ही का प्रयोग करते है। कार्ल फ्रेडरिक जार्ज स्पिटलर भी, जर्मन-भाषा ही के लेखक थे।

इनका जन्म २४ अप्रैल १८४५ को वैसेल (Basel) के निकटस्थ लीस्टाल (Liestal) नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता डाक-तार विभाग मे काम करते थे। वाद मे वह वर्न (Berne) के खजाने के सचालक तक हो गए थे। वचपन में कार्ल स्पिटलर ने संगीत तथा चित्रकला मे तो निपुणता का परिचय दिया था, लेकिन साहित्य के प्रति उदासीन ही थे। वैसेल में इनके ऊपर भाषा-विज्ञान आचार्य वैकरनागेल (Wackernagel) और कला इतिहासकार वर्क हार्ड (Burckhardt) का गहरा प्रभाव पडा। वर्क हार्ड ने ही इन्हे ल्युडोविको ऐरिआस्टो (Ludovico Ariosto) (१४७४–१५३३) की रचनाओ से परिचित कराया था, जिससे प्रेरित होकर इन्होने कविता लिखना आरम्भ कर दिया।

इन्होंने दो वर्ष (१८६३-६५) कानून का भी अध्ययन किया और तीन वर्ष (१८६५-६८) तक ज्यूरिख (Zurich) तथा हाइडलवर्ग के विश्वविद्यालयों मे इन्होंने धर्मशास्त्र की शिक्षा भी ग्रहण की। इसके वाद यह रूस चले गए और वहाँ के एक जनरल के कुटुम्ब मे 'प्राइवेट ट्यूटर' हो गए। १८७६ में इनके पिता का देहान्त हो गया और यह अपने देश लौट आये। यहाँ पर इन्होंने कुछ दिन तो लडकियो के एक स्कूल मे अध्यापन कार्य किया और फिर नूवेवील (*Neuveville*) मे हैडमास्टर हो गए।

हैडमास्टर का पद ग्रहण करने पर इन्होने देखा कि इन्हे साहित्य-सेवा के लिए समय ही नही मिलता, इसलिए इन्होने इस पद से त्यागपत्र दे दिया। अव यह वैसेल के एक पत्र के सम्पादक वन गए। सन् १८६१ मे इनको कुछ धन पैतृक सपत्ति के रूप मे मिल गया और इन्होने १८६२ मे सपादक के पद से भी त्यागपत्र दे दिया। सन् १८८३ मे इन्होने अपनी एक शिष्या से शादी कर ली। उस समय इनकी अवस्था ३८ वर्ष थी। सन् १८६२ से अपने जीवन के अन्त तक यह लूसर्न (Lucerne) नामक स्थान पर अपनी पत्नी तथा दो पुत्रियो के साथ रहते रहे। २८ दिसम्बर १९२४ को ७६ वर्ष की अवस्था मे इनका देहान्त हो गया।

जव यह रूस मे 'प्राइवेट ट्यूटर' का काम करते थे, तव इन्होंने 'प्रोमथ्यूस एण्ड एपीमेथियस' (Prometheus And Epimetheus) नामक कविता की रूपरेखा तैयार कर ली थी। यह कविता पहले-पहल 'फेलिक्स-टैण्डम' (Felix Tandom) के नाम पर १८८०-८१ मे प्रकाशित हुई, परन्तु फिर दस वर्ष वाद इसे लेखक ने अपने ही नाम से प्रकाशित कराया। इस कविता मे दर्शन तथा आधुनिक विचारो का अद्भुत मिश्रण है। इनके ऊपर इस वात का आरोप लगाया गया कि इन्होने नीत्शे (Nietzsche) की रचना 'दस स्पेक जरथुस्ट' (Thus Spake Zarathustra) की नकल की है, परन्तु इन्होने इस आरोप के प्रतिरोध मे एक छोटी-सी पुस्तक 'नीत्शे से मेरे सम्बन्ध मे' (My Relations with Nietzsche) लिखकर अपने को निर्दोष सावित कर दिया। सन् १८८३ मे इनकी पुस्तक 'एक्स्ट्रा मुण्डाना' (Extramundane) प्रकाशित हुई। इसमे स्पिटलर ने विश्व-रचना का इतिहास (History of Creation) प्रस्तुत किया है। सन् १८६१ मे 'वटरफ्लाईज' (Butterflies) नाम की इनकी रचना प्रकाशित हुई। इनके एक आलोचक विडमान (Widman) ने इस रचना के विषय मे लिखा था : "इन छोटे तथा सुन्दर कीड़ो से मनुष्य का ध्यान एक अज्ञात तथा करुणामय रूप की ओर आकर्षित होता है। इन कीडो के भाग्य को

कवि ने एक नाटकीय त्रासदी व दुर्धर सौन्दर्य मे परिवर्तित कर दिया है।"

कार्लस्पिटेलर की सबसे महत्त्वपूर्ण रचना है 'आलम्पिअन स्प्रिग' (Olympian Spring)। इसके पाँच भाग है, और तीस से भी अधिक स्कंध (Cantos)। यह आयम्बिक कप्लेट्स (Iambic couplets) में लिखी गई है। इसकी कहानी कोई विशेष ऊँचे पैमाने की नही है। सृष्टि के ऊपर शासन करने वाला अनान्के (Ananke) पौराणिक कथाओं का एक पात्र है। वह सब देवताओं को नरक लोक 'इरेब्स' (Erebus) मे कैद कर देता है। परन्तु वह इन देवताओं को एक दूर के संसार तक जाने की आज्ञा देता है। इस समय अनान्के की पुत्री मोइरा (Moira) की कृपा से ससार मे वसन्त का आगमन होता है, और चारों ओर शान्ति छा जाती है। परन्तु जैसे-जैसे देवता संसार के करीब आते-जाते है, यहाँ पर उदासी तथा दु ख छाने लगता है। परन्तु देव दूत अपने गानों से फिर सुख तथा शान्ति का सन्देश देते है और कहानी का पहला भाग यहाँ समाप्त हो जाता है। यह स्पिटलर का आदर्शवाद है। दूसरे भाग मे हेरा (Hera) को, जो अमैज़न्स (Amazon) की रानी है, जीते जाने और हिरैक्लीज (Herakles) की कहानी है। यह कहा जाता है कि हिरैक्लीज सच की स्थापना के लिए पृथ्वी पर घूमता रहता है।

कार्ल स्पिटेलर की पुस्तक 'ओलम्पिअन स्प्रिग' की आलोचकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। नोवेल कमेटी ने भी इस पुस्तक का उल्लेख किया है।

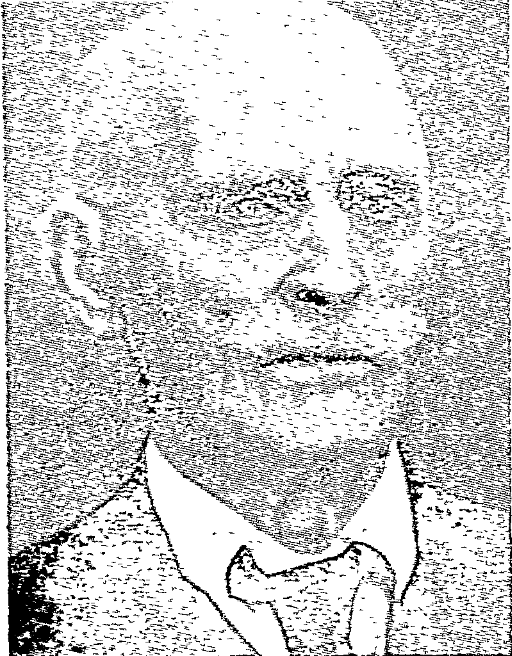
पुरस्कार देते समय कमेटी ने कहा था :

"इनके महाकाव्य ओलम्पिअन स्प्रिग की प्रशंसा-स्वरूप" इन्हे पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) प्रोमथ्यूस एण्ड एपीमैथस (Prometheus and Epimetheus)	१८८०-८१
(२) एक्स्ट्रामुण्डा (Extramunda)	१८८३
(३) बटरफ्लाईज (Butterflies)	१८८९
(४) वैलेड्ज (Ballads)	१८९६

(५) लाफ़िंग ट्रुथ्स १८६८
(Laughing Truths)
(६) कानरैड द लेफ्टिनैण्ट १८६८
(Conrad the Lieutenant)
(७) द ओलम्पिअन स्प्रिंग १६०५-१६१०
(The Olympian Spring)
(८) साग्स आफ़ वैल्स १६०६
(Songs of Bells)
(६) इमागो १६०६
(Imago)
(१०) द गर्ल्स हेटर्स १६०७
(The Girl Haters)
(११) माई अर्लियस्ट एक्स्पीरिएन्सेज़ १६१४
(My Earliest Experiences)
(१२) द सफ़रर (पुरानी रचना का नया रूप)
(The Sufferer—New Version of Earlier Work)



क्नुत पीडरसन हैमसन

(१८४६–१६५२)

बीसवाँ पुरस्कार (१६१०) में नार्वे निवासी क्नुत पीडरसन हैमसन को मिला। नार्वे को इसके पूर्व एक बार (१६०३) यह पुरस्कार मिल चुका था।

क्नुत हैमसन का जीवन बहुत अनोखा था। यों तो साहित्य के नोबेल पुरस्कार-विजेताओं के जीवन में कुछ-न-कुछ अनोखापन पाया जाना अस्वाभाविक नहीं माना जाता, परन्तु फिर भी, इनका जीवन स्वयं एक रोमान्स (Romance) है।

क्नुत हैमसन का जन्म नार्वे में लोम नामक स्थान पर ४ अगस्त १८५६ को हुआ था। इनके पिता का नाम था पीडर पीडरसन (Peder Pederson) और माता का तोरा आल्सदातर (Tora Olsdatter)। इनके माता-पिता दोनों ही जमींदार खानदान के थे। इन्होंने स्वयं लिखा है कि इनको कोई नियमित शिक्षा नहीं मिली थी। चार वर्ष की आयु से ही यह अपने एक सम्बन्धी (सम्भवतः चाचा) लोफ़ोतेन द्वीप (Lofoten Islands) में रहने लगे थे। इन्हें एक मोची के साथ काम सीखने को लगा दिया गया। उन्नीस वर्ष की अवस्था में इन्होंने एक लम्बी कविता तथा एक उपन्यास प्रकाशित कराया। इससे जो कुछ रुपया इन्हें मिला, उसको लेकर यह देश-देश विचरने लगे। यह क्रिस्तिना

विश्वविद्यालय (ओस्लो) में जाकर अध्ययन करना चाहते थे। इन्होंने बारी-बारी से कोयला खोदने का, जहाजो पर सामान लादने-उतारने का, प्राइवेट ट्यूटर का, क्लर्क का, डाकखाने का, राजदरबार के वाहक का काम किया। इसके बाद यह विश्वविद्यालय मे दाखिल हुए, परन्तु निर्धनता के कारण इन्हे अपनी पढाई बीच मे ही छोड़नी पड़ी। अब यह अमेरिका के लिए चल पड़े। जाते समय यह जहाज़ के सबसे सस्ते दर्जे में सफ़र कर रहे थे। वहाँ पर इन्होंने पादरी होने का निश्चय किया। कुछ दिन तक यह खेतो मे और गौशालाओं मे काम करते रहे, फ्रांसीसी साहित्य पर व्याख्यान देते रहे, पर इन सबके अन्त मे शिकागो मे स्ट्रीट कार के कण्डक्टर हो गए। कहा जाता है कि यह जब स्ट्रीट कार में चलते थे तो जेब मे किताबें रखे रहते थे और उनको पढ़ा करते थे, और लोगों को उतारना-चढ़ाना भूल जाते थे। इसलिए यह वहाँ से भी निकाल दिए गये। तब फिर यह स्वदेश लौट आये, लेकिन यहाँ पर भी जीविका का कोई साधन न होने के कारण फिर अमेरिका चले गए। वहाँ कुछ दिन तक यह व्याख्यान देते रहे, पर फिर बाद मे न्यूफाउण्डलैण्ड (Newfoundland) मे मछुआ बनकर काम करने लगे।

सन् १८८९ में इनकी रचनाओं का प्रकाशन आरम्भ हो गया और यह शान्तिमय जीवन व्यतीत करने लगे। यह नोयरहाम मे रहने लगे। इनकी पत्नी, मेरी एण्डरसन (Mary Anderson), इनके दो पुत्र तथा तीन लड़कियाँ इनके साथ रहते थे। क्नुत हैमसन ने द्वितीय विश्व-युद्ध मे हिटलर का साथ दिया था और १९४३ मे यह हिटलर से मिले भी थे। परन्तु जब लड़ाई खत्म हो गई और इनका देश फिर स्वतन्त्र हो गया तो इनको हिटलर का साथ देने के जुर्म मे कैद कर लिया गया। उस समय इनकी अवस्था ८५ वर्ष की थी। इनकी पत्नी को भी क़ैद किया गया था। परन्तु इनके स्वास्थ्य तथा मानसिक स्थिति के कारण इनको छोड दिया गया।

हैमसन के अन्त के दिन दुखदायी थे। हिटलर का साथ देने से बड़ा अपराध करना असम्भव माना जाता था। आज़ादी के बाद इनके देशवासियो ने, जिन्होंने इनकी पुस्तकें बड़े चाव से खरीद-खरीदकर पढी थी, उनको लौटा दिया। यहाँ तक कि १९ फरवरी, १९५२ को ९२ वर्ष से भी अधिक की आयु मे जब इनका देहान्त हुआ तो इनके देश ने इस बात पर कोई विशेष दुख नहीं प्रकट किया। अन्त तक लोग इन्हें दुश्मनों का साथ देने वाला ही समझते रहे। ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि यदि यह इतनी अवस्था तक जीवित न रहते और दूसरी लड़ाई के पहले ही इनका स्वर्गवास हो जाता तो इनके देश मे

भी इनकी ख्याति बनी रहती।

क्नुत हैमसन की रचनाओ की विशेषता यह है कि इनमें लेखक ने पूर्ण रूप से अपना व्यक्तित्व प्रकट किया है। इनकी पुस्तको मे इनके जीवन का प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखाई देता है। यदि इनकी पुस्तको को उसी काल-क्रम के अनुसार पढ़ा जाय जैसे कि वे लिखी गई थी और छपी थी तो इनके मानसिक विकास का पूर्ण रूप से ज्ञान हो सकता है।

क्नुत हैमसन की पहली रचना सन् १८७८ मे प्रकाशित हुई थी। यह एक गम्भीर कविता थी 'मीटिग अगेन' (Meeting Again)। इसी वर्ष इनकी कहानी ज्यार्जर (Bjorger) भी छपी। इन रचनाओं पर लेखक का नाम दिया गया था नूड पीडरसन हैम्सुण्ड (Knud Pederson Hamsund)। कविता मे कवि ने अपने जीवन पर ही प्रकाश डाला था और यही बात इनकी कहानी पर भी लागू होती है।

.सन् १८८६ ई० मे यह अमेरिका गए थे, पर फिर वापस लौटकर नार्वे चले गए। इनकी पुस्तक 'ऑफ़ अमेरिकन कल्चर' (Of American Culture) तैयार थी। अमरीका मे असफल होने के कारण इन्होने यह पुस्तक कुछ कटुता से लिखी थी। सन् १८८८ मे, कापेनहेगेन मे एडवर्ड ब्रेण्ड्स (Edward Brands) की कृपा से इनकी रचना हगर (Hunger) एक पत्रिका न्यू साइल (New Soil) में छपने लगी। यह अब भी छद्म नाम से ही लिखते थे। सन् १८९० ई० मे यह रचना पुस्तक-रूप में प्रकाशित हुई। हगर में लेखक ने एक अत्यन्त कोमल हृदय के आदमी के ऊपर भूख (या निर्धनता) के प्रभाव का वर्णन किया है। इसका नायक क्नुत हैमसन की तरह एक असफल लेखक है जो कि शरीर तथा दिमाग दोनों से बीमार है। भूख के कारण उसे अजीब चीजे (Hallucination) दिखाई पडती है। लेखक ने अपने अनुभव का वर्णन वास्तविकता से किया है। इसमें कोई कथावस्तु नही है। इसमें केवल लेखक के कष्टों तथा उसकी आशाओ की झलक मिलती है।

सन् १८९२ ई० मे इनकी रचना 'मिस्ट्रीज़' (Mysteries) प्रकाशित हुई। इसका नायक जोहान नागेल (Johan Nagel) भी लेखक की ही तरह जीवन मे अपना स्थान खोजता फिरता है। इसका प्रेम पैस्टर (Pastor) की पुत्री हैग्नी की लैण्ड से हो जाता है, परन्तु दुखी जीवन के कारण यह आत्महत्या कर लेता है। लेखक ने अपने जीवन से सामग्री लेकर 'एडिटर लिन्ज' (Editor Lynge) तथा 'पैन' (Pan) और अपना नाटक 'सनसैट' (Sunset) भी लिखा था। इसके पहले इन्होने दो नाटक 'ऐट द गेट्स ऑफ द किगड्म' (At

the Gates of the Kingdom) और 'लाइफ़्ज़ प्ले' (Life's Play) लिखे थे।

सन् १९०९ ई० मे इनकी पुस्तक 'चिल्ड्रन ऑफ़ द एज' (Children of the Age) और इसके वाद 'सेगेल्फ़ाज टाउन' (Segelfoss Town) प्रकाशित हुई। इसके वाद इनकी महत्त्वपूर्ण रचना 'ग्रोथ ऑफ द सॉइल' (Growth of the Soil) १९१७ ई० में छपी।

इस पुस्तक के कारण क्नुत हैमसन को यूरोप तथा अमेरिका मे बड़ी ख्याति मिली। इसमे नार्वे के कई पात्र आते हैं। इसमे कलात्मक सश्लिप्टता (artistic unity) भी है।

इनकी रचनाओ मे साहित्यिक कला का आभास सर्वव्यापी है। इनकी रचनाओं मे वास्तविकता तो फोटो की तरह है। यह दार्शनिक भी है और इनकी पुस्तको मे इनके दार्शनिक विचार भी कहानियो के माध्यम से प्रकट हुए हैं। इनकी वास्तविक शिक्षा स्कूल मे नही, संसार मे हुई थी। लगन, न्याय तथा हास्य इनकी रचनाओ के मुख्य गुण हैं।

इनकी रचनाओं मे दोप भी हैं। यह सुस्त, लापरवाह तथा ढीले-ढाले लेखक हैं। इन्होंने काम (sex) पर काफी जोर दिया है। यह व्यभिचार को माफ नही करते, परन्तु ऐसा लगता है जैसे यह उसे सजा भी नही देना चाहते। इनकी पुस्तको मे कोई सदाचारपूर्ण विचार (moral ideas) नही मिलता, और इस कारण इनका लोकप्रिय होना कठिन हो जाता है।

इनकी एक और पुस्तक महत्त्वपूर्ण है 'वैगावाड्स' (vagabonds) इसमें भी लेखक ने कुछ आदमियो तथा औरतों को लेकर जीवन-दर्शन कराया है। इसमे न तो कोई नायक है और न कथावस्तु।

सन् १९२० मे नोवेल कमेटी ने इनको पुरस्कार देते समय कहा था

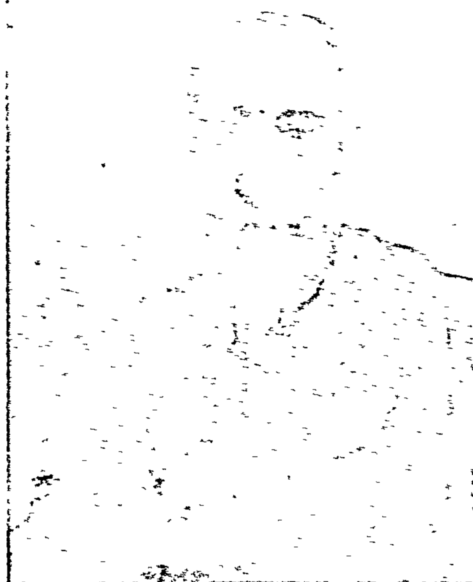
"इनकी महत्त्वपूर्ण रचना 'ग्रोथ ऑफ द सॉइल' के लिए इनको यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।"

प्रमुख कृतियां

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) ऑफ़ अमेरिकन कल्चर (Of American Culture)	१८८७
(२) हंगर (Hunger)	१८९०
(३) पैन (Pan)	१८९४

(४) ऐट द गेट्स ऑफ़ द् किंगडम (At the Gates of the Kingdom) १८९५
(५) लाइफ्ज़ प्ले (Life's Play)
(६) सन सैट (Sun set) १८९८
(७) चिल्ड्रन ऑफ द एज (Children of the Age) १९०९
(८) सेगेल्फ़ास टाउन (Segelfoss Town) १९०१
(९) ग्रोथ ऑफ़ द सॉइल (Growth of the Soil) १९२१
(१०) लुक बैक आन हैप्पीनेस (Look Back On Happiness) १९४०





अनातोले फ्रांस

(१८४४–१९२४)

अनातोले फ्रांस का वास्तविक नाम जैक्स अनातोले थिबाल्ट (Jacques Anatole Thibault) था। इनके दादा मोची थे, और पिता फ्रांसोआ नोयल थिबाल्ट (Francois Noel Thibault) भी कोई विशेष पढ़े-लिखे नहीं थे। उन्होंने पढ़ना भी अपने-आप ही सीखा था। पेरिस में उनकी किताबों की दुकान थी, जिसमें उस समय के प्रसिद्ध लेखक आते-जाते रहते थे। अनातोले फ्रांस के ऊपर उनकी माँ-बाप के इकलौते लड़के थे, इस कारण इनकी माँ तथा दादी इनको बहुत प्यार करती थीं, परन्तु प्यार के कारण यह बिगड़ने नहीं पाए।

बचपन में इन्हें कालेज स्टानिस्लास (College Stanislas) भेजा गया, जहाँ पर ग्रीस तथा रोम का क्लासिकल साहित्य पढ़ाया जाता था, परन्तु स्कूल में इन्होंने पढ़ाई-लिखाई की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। सच बात तो यह है कि जहाँ एक ओर स्कूल में यह विशेष अध्ययन नहीं कर पाए, वहाँ दूसरी ओर अपने पिता की दुकान में रखी किताबों को पढ़-पढ़कर और वहाँ इनके घर पर आने वाले लोगों से मिल-जुलकर इन्होंने साहित्य का अच्छा-खासा ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

इनकी माँ का इनकी योग्यता और सामर्थ्य मे पूरा-पूरा विश्वास था। एक बार जब इनके प्रोफेसर की रिपोर्ट इनके घर आई तो उसमें लिखा था—"प्रगतिशून्य आचरण खराब।" इस रिपोर्ट को देखने के बाद इनके पिता ने यह मान लिया कि उनका लडका एकदम निकम्मा है, परन्तु इनकी माँ ने इनको दिलासा और उत्साह दिया, और बड़े प्यार से इनसे कहा—"तुम लेखक बनो मेरे बेटे! तुम्हारे पास बुद्धि है और तुम अपनी बुद्धि से ईर्ष्यालु लोगो की जबान बन्द कर सकते हो।" इनको प्रभावित करने वाली चीजो मे दो ही प्रमुख थी—एक तो उनकी माँ और दूसरा इनका अपना शहर पेरिस। अनातोले फ्रास पेरिस शहर को बहुत प्यार करते थे। इन्होने पेरिस के पार्कों तथा प्रसिद्ध इमारतो, सड़क के किनारे बनी दुकानो, वहाँ के नागरिको, जन-जीवन और आचार-व्यवहार—इनका अपनी पुस्तको मे न केवल सजीव वर्णन किया है वरन् प्रशसा भी की है।

अनातोले ने इकोल डेस चार्टस (Ecole des Chartes) मे इतिहास का अध्ययन किया था जहाँ इन्होने धर्म की पुस्तको का भी अध्ययन किया था और कैथोलिक धर्म तथा उनके धर्माचार्यों और पादरियो के बारे मे भी ज्ञान प्राप्त किया था, वहाँ सन् १८७० ई० के फ्रास और प्रशिया के बीच हुए युद्ध (Franco-Prussian War) मे भाग भी लिया था।

सन् १८८० ई० के लगभग इन्होने मैम्सेल गुएरिन (Mml. Guerin) से शादी की थी और एक लडकी भी इनको इस शादी से हुई थी। लेकिन बाद में तलाक हो गया। सन् १८८३ ई० मे इनके जीवन मे एक विशेष महत्त्वपूर्ण घटना घटी, और यह घटना थी मदाम आरमान दि कैलावेट (Mme. Arman de Caillavet) से इनकी दोस्ती। यह मदाम आरमान दि कैलावेट ही थीं जिन्होंने इन्हे लेखक बनने के लिए प्रोत्साहित और बाध्य किया था। इस दोस्ती के बाद यह और मदाम दि कैलावेट के साथ ग्रीष्म ऋतु मे फ्रास तथा इटली में भ्रमण पर चले जाते थे और जाडे मे पेरिस लौट आते थे। यह क्रम कई वर्षों तक चलता रहा और इनकी दोस्ती भी एक-दो वर्ष नही वरन् पूरे सत्ताइस वर्ष तक बनी रही। इसीलिए सन् १९१० में जब मदाम दि कैलावेट का देहान्त हुआ तो अनातोले फ्रांस को बडा धक्का लगा और यहाँ तक कि बहुत दिनों तक तो यह कोई काम ही नही कर पाए।

सन् १९१४ में यह एक छोटी सी 'इस्टेट' (estate) ला बेकेल्लेरी (La Bechellerie) पर जाकर रहने लगे। यह विश्व-युद्ध को बुरा मानते थे। लेकिन इन्होंने अपने देश के बचाव के लिए कुछ काम किए थे। सन् १९१९

मे यह दक्षिण अमेरिका में लेक्चर देने गये। सन् १९२० ई० में ७६ वर्ष की अवस्था मे इन्होंने दूसरी शादी की। इनकी दूसरी पत्नी का नाम था एमा लाप्रेवोटे (Emma Laprevotte)। १३ अक्तूबर सन् १९२४ में ८० वर्ष की अवस्था मे इनका देहान्त हो गया।

अनातोले फ्रान ने अपने अस्सी वर्ष के लम्बे जीवन मे साहित्य को अनेक रचनाएँ दी है। जहाँ ईश्वर ने इन्हें अवसर, धन, बुद्धि, इच्छा सभी कुछ दिया था वहाँ इन्होंने भी इन सब चीजो तथा सुविधाओ का पूरा-पूरा उपयोग किया था।

सन् १८६७ मे जब अनातोले फ्रान्स कुल २३ वर्ष के थे 'ला गजट राइमी' (La Gazette Rimee) मे इनकी दो कविताएँ प्रकाशित हुई थी। इन कविताओ का विषय राजनीति था और इन्होने इनके अध्ययन से राजनीतिक समस्याओ की ओर इंगित किया था। इसके परिणामस्वरूप यह पत्रिका बन्द कर दी गई। एक वर्ष बाद इनकी 'द एट्यूड आफ एल्फ्रेड दि विग्नी' (The Etude of Alfred de Vigny) नामक रचना प्रकाशित हुई, जिससे कि इनकी ख्याति कुछ बढी, और इनकी मुलाकात पार्नासियन ग्रुप (Parnassian Group) और उनके नेता लेकान्टे दि लिस्ले (Leconte de Lisle) से हुई। इसके बाद इनको सीनेट के पुस्तकालय मे नौकरी मिल गई। इन्होंने कविताओं की दो पुस्तके प्रकाशित की, परन्तु इनमे कोई विशेष गुण नही प्रकट हुए। इसके बाद 'द ब्राइड आफ कॉरिन्थ' (The Bride of Corinth) मे इनकी विशेषताओ की कुछ झलक मिली।

सन् १८८१ मे इनकी पुस्तक 'द क्राइम आफ सिल्वेस्त्रे बोनार्ड' (The Crime of Sylvestre Bonard) प्रकाशित हुई। इस पुस्तक के प्रकाशन से न केवल अपने देश मे प्रख्यात हुए बल्कि यूरोप और अमेरिका तक मे इनकी ख्याति फैल गई। इस पुस्तक मे यद्यपि कथावत या कथानक के नाम पर कुछ विशेष उल्लेखनीय नही है। लेकिन इसकी शैली बहुत ही मार्मिक और अजीब है। दस वर्ष बाद तो स्वय अनातोले फ्रास ने इस पुस्तक का मजाक उडाते हुए कहा था—"मैंने तो इसे एक पुरस्कार के लिए लिखा था और वह पुरस्कार मुझे मिला भी।"

यह पुरस्कार एकेडेमी फ्रासासे (Academy Fransasey) ने प्रदान किया था।

इसके बाद तो इनकी पुस्तके बड़ी जल्दी-जल्दी प्रकाशित होने लगी। इन्होंने उपन्यास, जीवनी, लेख, ऐतिहासिक पुस्तके इत्यादि बहुत-सी साहित्य-

विधाओं मे रचनाएँ लिखकर साहित्य का कोष भरा। इनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध पुस्तक 'थाया' (Thais)[1] है, जिसके विषय मे लेखक ने कहा था—"मैंने पहली पुस्तक[2] दूसरो को खुश करने के लिए लिखी थी, और यह स्वयं को प्रसन्न करने को।"

जैसा कि आपको पता ही है कि किसी भी लेखक को पुरस्कार प्रदान करने से पहले नोबेल कमेटी के सदस्य उसके सम्बन्ध में अपनी लिखित राय देते हैं। जो राय अनातोले फ्रास के लिए दी गई थी उससे इनकी कमजोरियों तथा अच्छाइयों दोनों पर ही अच्छा प्रकाश पडता है।

कमेटी के एक सदस्य जार्न (Hjarne) ने कहा था कि इनकी रचनाओं में अजीबोगरीब किस्म की खूबियाँ व धारणाएँ है, परन्तु इस तरह की धारणा तथा इस तरह की उपलब्धि के आदर्श साहित्य के लिए दिया जाने वाला एल्फ्रेड नोबेल का पुरस्कार नही है। यदि मुझे एक कहानी के उपयोग करने की आज्ञा मिले तो मै कहूँगा कि अनातोले फ्रांस को इस पुरस्कार के प्रत्याशी के रूप में अखाड़े से निकाल दिया जाय, परन्तु खुशी और पूरे सम्मान के साथ करीब-करीब वैसे ही प्लेटो ने होमर के लिए कहा था · "सबसे अच्छी फूलों की माला जो मिले उसे पहनाकर और पूरे सम्मान तथा प्रतिष्ठा के साथ, उन्हे अपने रिपब्लिक के बाहर कर दिया जाय।"

इसके विपरीत, एक दूसरे सदस्य हेनरिक शूक (Henrik Schuk) ने इतनी ही जोर से अनातोले फ्रांस का पक्ष लेते हुए कहा था कि इनको यह पुरस्कार केवल प्रदान किया ही नहीं जा सकता वरन् प्रदान किया जाना भी चाहिए। उन्होंने अपनी सम्मति प्रकट करते हुए कहा

"यह सच है कि वह नास्तिक हैं और वे लोग, जो कि इतने भाग्यशाली है कि उन्होंने जीवन की पहेली को बूझ लिया है, इसको त्रुटि समझ सकते हैं, क्योकि यह एक ऐसी चीज़ है जो कि नोबेल फाउण्डेशन के आदर्श की रक्षा करने के कर्तव्य से टकराती है। परन्तु अनातोले फ्रांस कभी भी एक ऐसे कर्तव्य-हीन शक्की नहीं रहे है, जिन्होंने न्याय तथा मानवता को पैरों-तले कुचलते हुए देखा हो।" आगे चलकर शूक ने कहा, "जब उनकी सम्पूर्ण रचनाओ पर नजर डाली जाती है तब उनकी साहित्य-रचनाओं को आदर्श रचनाएँ कहना ही पड़ेगा, बशर्ते कि हम इस शब्द के अर्थ को किसी तरह की धार्मिक वर्जनाओ या सीमाओं के पीछे न छिपा दे।" अनातोले फ्रांस के बारे में ऐसी एक-दो नही

१. इस सम्बन्ध मे देखिये भगवतीचरण वर्मा की 'चित्रलेखा'।

२. द क्राइम ऑफ सिल्वेस्त्रे बोनार्ड।

वरन् दर्जनों परस्पर-विरोधी बातें कही गई लेकिन निर्णय अनातोले के ही पक्ष मे हुआ और सन् १६२१ मे पुरस्कार देते हुए कमेटी ने कहा :

"इनकी तेजस्वी साहित्यिक उपलब्धि के लिए, जिनमे शैली की मौलिकता व सामर्थ्य, मानवता के लिए सहानुभूति व विशालहृदयता, सच्चा सौन्दर्य और सच्चा फ्रानीसी मिज़ाज विशेष उल्लेखनीय है"—इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) द क्राइम ऑफ सिल्वेस्त्रे बोनार्ड (The Crime of Sylvestre Bonard)	१८८१
(२) थाया (Thais)	१६०६
(३) द गाड्स आर अथर्स्ट (The Gods Are Athirst)	१६१३
(४) लाइफ ऑफ जोन ऑफ आर्क (Life of Joan of Arc)	१६०६
(५) रबेलायस (Rabelais)	१६२६

सन् १६३० मे इनके सम्पूर्ण साहित्य को ४१ खण्डों मे प्रकाशित कर दिया गया है।



जासिन्तो बेनावेन्ते वाइ मार्तिनेज़

(१८६६–१९५४)

जासिन्तो बेनावेल वाई मार्तिनेज केवल जासिन्तो वेनावेन्ते के नाम से प्रसिद्ध है। यह स्पेन के दूसरे नाटककार थे जिन्होने नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया था। इनके पहले १९०४ मे जोज एकेगारे वाइ इज़ागुयेर (Jose Echegaray y Eiza-guirre) को यह सम्मान मिला था।

जासिन्तो वेनावेन्ते का जन्म स्पेन की राजधानी मैड्रिड (Madrid) मे १२ अगस्त, १८६६ को हुआ था। इनके पिता डा० मैरिएनो वेनावेन्ते (Dr. Mariano Benavente) वच्चों के रोगो के विशेपज्ञ थे। वह अपने क्षेत्र में काफी धन और ख्याति अर्जित कर चुके थे। डा० मैरिएनो वेनावेन्ते अपने पुत्र को वैरिस्टर बनाना चाहते थे। इसीलिए पहले जासिन्तो का नाम सैन इसिड्रो इन्स्टिट्यूट (San Isidro Institute) मे लिखाया गया, परन्तु इन्होने पढने की तरफ कोई विशेप ध्यान नही दिया। इनका मन घर पर ही लगा रहता था, और यह वही पर वच्चों के साथ नाटक खेला करते थे। अपने पिता को प्रसन्न

करने के विचार से इन्होंने मैड्रिड विश्वविद्यालय के लॉ स्कूल में नाम तो लिखा लिया, परन्तु १८८५ में डा० मैरिएनो बेनावेन्ते का देहान्त हो जाने पर इन्होंने स्कूल जाना छोड दिया। इसके बाद यह पूरी तरह साहित्य-साधना में जुट गए। इनके व्यक्तिगत जीवन के विषय में कुछ और नही ज्ञात होता। १४ जुलाई सन् १९५४ में मैड्रिड में इनका देहान्त हो गया।

सन् १८९२ मे जब इनकी आयु कुल छब्बीस वर्ष थी इन्होंने 'टिएट्रो फैन्टैस्टिको' (Teatro Fantastico) के नाम से अपनी पहली पुस्तक प्रकाशित कराई। इस पुस्तक में इनके ४ नाटक सकलित थे। इनके नाटकों को पढ़ने पर शेक्सपियर तथा मूसे का ध्यान आता है। इसके बाद जासिन्तो बेनावेन्ते ने और कई रचनाएँ प्रकाशित कराई। कुछ दिनो बाद इन्होंने 'कार्टास् डे मुजेरेस्' (Cartas de Mujeres) प्रकाशित किया। इसमें कुछ काल्पनिक स्त्रियों के पत्र दिये गये है। इनकी वास्तविकता से जासिन्तो बेनावेन्ते की तीक्ष्ण बुद्धि का परिचय मिलता है।

६ अक्तूबर, १८९४ को पहली बार इनका एक नाटक 'एल निडो अजेनो' रगमच पर प्रदर्शित किया गया। इसके बाद अगले सात वर्षों में इन्होंने अट्ठारह नाटक लिखे। इन नाटकों में स्पेन के अभिजात्य वर्ग के लोगों का मजाक उडाया गया था। इसके बाद लेखक ने स्पेन के किसानों तथा मध्य वर्ग के लोगों का चित्रण किया। सन् १९०७ में इनका नाटक 'द बान्ड्स आफ़ इन्टरैस्ट' प्रदर्शित किया गया। इससे इनकी ख्याति बहुत फैली। यही नाटक इनकी सर्वश्रेष्ठ कृति माना जाता है। इन्होंने शेक्सपियर के नाटक का स्पैनिश भाषा में अनुवाद भी किया था। यह एक पत्रिका 'ला विडा लिटरैरिया' के सम्पादक भी रहे थे। सन् १९०९ में इन्होंने पारेडान (Porredon) नामक एक फिल्मी सितारे (actor) के साथ बच्चों के लिए एक थियेटर भी चालू किया। इसमें इनका नाटक 'द प्रिन्स हू लर्नट एवीथिंग, आउट आफ बुक्स' (The Prince Who Learnt Everything Out of Books) खेला गया।

सन् १९१३ मे यह रायल स्पैनिश एकेडेमी (Royal Spanish Academy) के सदस्य चुने गये और उसी वर्ष इनका नाटक 'ला माल्करिडा' भी प्रदर्शित किया गया। इस नाटक में किसानों के जीवन का प्रदर्शन अत्यन्त वास्तविकता से किया गया है। इन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी का साथ दिया था। इस विषय पर इनके लेख 'एल आनो जर्मनोफिलो' (El Ano Germanofilo) के नाम से प्रकाशित हुए है। जब सन् १९२३ में इनको

नोबेल पुरस्कार प्रदान किए जाने की घोषणा की गई तो कुछ नौजवानों ने इसका विरोध किया, परन्तु स्पेन के रईसो ने इनका साथ दिया।

सन् १९५२ मे इनके पाँच व्यंग्यात्मक नाटक प्रकाशित हुए। इनकी आखिरी नाटक 'द ब्राज हस्बेन्ड' अप्रैल १९५४ में खेला गया। इनको फ्रैन्को (Franco) ने भी सम्मान प्रदान किया था।

जासिन्तो बेनावेन्ते उतने उग्र या उन्मूलनवादी नही थे जितना कि स्पेन, फ्रांस या रूस के लेखक है। वह परम्परा को मानते थे। उनकी रचनाओं ने जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। उनके नाटकों को देखने के बाद दर्शक कुछ सोचने के लिए बाध्य हो जाते है। अन्य पुरस्कार-विजेताओं की भाँति जासिन्तो बेनावेन्ते ने भी बहुत-से देशों का भ्रमण किया था।

इन्होने छोटे-लम्बे, रोमाटिक तथा वास्तविक—सभी प्रकार के सैकडो नाटक लिखे है। इनके ऊपर इब्सन और बर्नार्ड शॉ का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इनके नाटकों में फैन्टेसी (Fantasy) की प्रधानता है, जिसके कारण इनका ध्यान पूर्व (Orient) की ओर आकर्षित हुआ था। इन्होने 'द फायर ड्रैगन' (१९०३) भारत से और 'द चलो जैकेट' (१९१६) चीन से प्रेरणा पाकर लिखा था। फैन्टेसी के कारण इनके नाटकों को बहुत सफलता प्राप्त हुई। इनके 'कामेडी आफ मैनर्स' (Comedy of Manners) भी बहुत सफल माने जाते हैं।

सन् १९२२ मे इन्हें पुरस्कार देते हुए कमेटी ने कहा था :

"स्पेन के नाटक की समर्थ और सजीव परम्परा को इन्होंने जिस सुन्दर रीति से आगे बढ़ाया है," इसी के लिए इन्हे यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) टिएट्रो फैन्टैस्टिको (Teatro Fantastico)	१८९२
(२) दाइ ब्रदर्स हाउस (Thy Brother's House)	
(३) इन सोसाइटी (In Society)	१८९३
(४) द बान्ड्स आफ इन्टरैस्ट (The Bonds of Interest)	१९०७
(५) द प्रिन्स हू लर्नट एव्रीथिंग आउट आफ बुक्स (The Prince Who Learnt Everything Out of Books)	१९०९
(६) ला मल्केरिडा (La Malquerida)	१९१३



विलियम बटलर याट्स

(१८६५–१९३९)

१९२३ मे साहित्य का नोबेल पुरस्कार आयरलैण्ड के लेखक तथा कवि विलियम बटलर यीट्स को प्रदान किया गया। इस वर्ष कमेटी ने इग्लैण्ड के लेखक तथा कवि टामस हार्डी (Thomas Hardy) के लिए भी काफी विचार-विमर्श किया, परन्तु अन्त मे यीट्स ही इसके अधिकारी माने गए। भारतवर्ष की भाँति आयरलैण्ड को भी आज तक केवल एक ही बार साहित्य का पुरस्कार मिला है। इन दोनो देशो को एक-एक बार फिजिक्स (Physics) का भी पुरस्कार मिल चुका है, भारत के डॉ० चन्द्रशेखर वेंकट रमन (१९३०) को और आयरलैण्ड के अर्नेस्ट टामस सिण्टम वैल्टन (Ernest Thomas Sintom Walton) (१९५१) को। इन पुरस्कारो के अतिरिक्त इन दोनो देशो को और किसी क्षेत्र मे कोई नोबेल पुरस्कार नही मिला है।

विलियम बटलर यीट्स का जन्म १३ जून, १८६५ को सैण्डीमाउण्ट (Sandymount) नामक स्थान पर हुआ था। यह स्थान डब्लिन के पास है। इनके पिता का नाम जान बटलर यीट्स (John Butler Yeats) था। पहले तो यह प्राभिकर्ता (Attorney) थे, पर फिर इन्होने चित्रकला को अपनाया, और उसमे ख्याति पाई। इनके भाई जेक थे। जैक ने भी कला मे बहुत नाम पैदा किया था। इनकी मा का शादी के पहले का नाम पालेक्सफेन (Poollexfen) था।

ये लोग प्रोटेस्टेण्ट धर्म के अनुयायी थे। विलियम बटलर के बचपन का अधिकाश समय लन्दन मे बीता जहाँ पर इन्होने गाडाल्फिन स्कूल, हैमरस्मिथ

(Godolfin School, Hammarsmith) में शिक्षा पाई। उनका काफी समय स्लिगो 'आयरलैण्ड' में भी बीता था। इनके माता-पिता यहीं रहते थे। इनके नाना का कपड़े तथा जहाजों का व्यापार था। पन्द्रह वर्ष की अवस्था में यह डब्लिन वापस ले जाये गये और इनका नाम इरैस्मस स्मिथ स्कूल (Erasmus Smith School) मे लिखा दिया गया। सन् १८८३ से १८८६ तक इन्होंने कला का अध्ययन किया, परन्तु इनको यह मालूम होने में देर न लगी कि यह कविता में अधिक दिलचस्पी रखते हैं, और फिर तो इन्होंने कला का अध्ययन करीब-करीब छोड़ ही दिया।

इनके बाद यह आकर फिर लन्दन में रहने लगे परन्तु सन् १८९६ में वह फिर आयरलैण्ड चले गये, और वहाँ पर अपने देश की क्राति मे भाग लेने लगे। इसी समय इनका परिचय माड गोन (Maud Gonne) नामक एक स्त्री से हुआ। यह परिचय शीघ्र ही प्रणय-सम्बन्धों मे परिवर्तित हो गया और इनका यह प्रणय-प्रसंग जीवन-भर चलता रहा।

सन् १९१७ में इन्होंने जार्जी लीज (George Lees) नामक स्त्री से शादी कर ली। इनको एक लड़का तथा एक लड़की हुई। सन् १९२२ से १९२८ तक यह आयरिश फ्री स्टेट (Irish Free State) की सीनेट के सदस्य भी रहे। शादी के कुछ ही दिनों बाद इन्हें मालूम हुआ कि इनकी पत्नी 'मीडियम' (Medium) थीं, जो कि अपने-आप लिखती थीं। इनको इन सब चीजों मे बहुत दिलचस्पी थी। कभी यह कहते कि इनको परियों में विश्वास था, कभी कहते कि स्लिगों में इनके घर का माली घर के पहले के मालिक को एक खरगोश के रूप में देखता था, और कभी कहते कि यदि हम लोगों के स्वप्न सच्चे हो जाते तो कविता लिखना बन्द हो जाता। पुरस्कार पाने के बाद यह यूरोप तथा अमरीका में खूब घूमे।

२८ जनवरी, १९३९ को ७४ वर्ष की अवस्था मे इनका देहांत हो गया। उस समय यह संसार के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लेखकों मे गिने जाते थे।

आरम्भ में यीट्स लन्दन में रहते थे, और 'फिन डे सिएक्ल' (Fin de Siecle) नामक कवियों के ग्रुप के एक सदस्य थे। इन कवियों का जीवन एक विशेष प्रकार का होता था। इसी समय इन्होंने अर्नेस्ट राइस (Ernest rhys) के साथ मिलकर राइमर्स क्लब (Rhymer's Club) की स्थापना की। डासन (Dawson) तथा लायनेल जान्सन (Lionel Johnson) भी इनके सदस्य थे। इस समय को कैल्टिक ट्विलाइट (Celtic Twilight) का समय कहा जा सकता है। इस समय यह जो भी लिखते थे, उसमे प्रतीकों की भरमार

भापा का अपूर्व सौन्दर्य तथा सगीत रहता था। कुछ समय के बाद इनकी भेट लेडी आगस्टा ग्रेगरी (Lady Agusta Gregory) से हुई। इन्होंने उनके साथ मिलकर आयरिश लिटरेरी थियेटर (Irish Literary Theatre) चालू करवाया, जो कि बाद मे 'अबे थियेटर' (Abbey Theatre) हो गया। यही आयरिश एकेडेमी (Irish Academy) की भी नीव था। सन् १६१० तक इन्होंने नाटक लिखे और उनको रंगमच पर भी पेश करवाया। यह आयरलैण्ड के साहित्यिक पुनरुत्थान (Literary Renaissance) के नेता थे। इन्होंने कई प्रकार की रचनाएँ की है, जिनमे गीत (lyric), नृत्य-नाटिका (ballad) और नाटक है। इन्होंने परम्परा से चले आने वाले रीति-रिवाजो तथा स्वप्नो मे सगीत तथा कविता पैदा की है। इनकी रचनाओं मे स्वप्न तथा आयरलैण्ड की कथाओ का अद्भुत मिश्रण है। इन्होंने स्वयम् कहा है कि 'जब मै नौजवान था, तब मेरी कविता करने की शक्ति वृद्ध हो चुकी थी, और जब मै बूढा हुआ हूँ तब मेरी शक्ति नौजवान हुई है।' यह अपनी रचनाओ में निरन्तर सशोधन-परिवर्द्धन करते थे। इनकी मृत्यु पर 'द न्यू रिपब्लिक' ने लिखा था, "यह शेली (Shelley) की भाँति ऐसे समय मरे जबकि इनकी रचना-शक्ति अपने यौवन पर थी, और इनका भी काम अधूरा रह गया।"

कविता के क्षेत्र मे ही नही, वरन् नाटक के क्षेत्र मे भी इन्होंने अपनी अपूर्व रचनाओ मे साहित्य का कोप भरा है। इनकी प्रारम्भिक नाट्य-रचनाओ मे इनके देश के पुराने रोमान्टिसिज्म (Romanticism), नये प्रतीकवादी आन्दोलन तथा इनके देश की लोक-कथाओ का अपूर्व मिश्रण मिलता है। 'द काउन्टस, कैथलीन' मे हमारे इस कथन की पुष्टि हो जाती है। इसे सन् १८६६ मे रगमचित किया गया था। यीट्स की साहित्य को एक बहुत बडी देन यह है कि इन्होंने गीति-नाट्य (Poetic drama) को नई जिन्दगी प्रदान की थी। सन् १८६४ मे उनके 'द लैण्ड आफ हार्ट्स डिजायर' (The Land of Heart's Desire), सन् १६०२ मे 'कैथलीन नि हूलिहान' (Cathleen Ni Houlihan), १६०३ मे 'द आवर ग्लास' (The Hour Glass) और १६०४ मे 'द शैडोई वाटर्स' (The Shadowy Waters) का प्रकाशन हुआ। इसके बाद भी इन्होंने कई और नाटक लिखे।

यीट्स आयरलैंड के ही नहीं, वरन् समूचे पश्चिम के बहुत ही उच्च कोटि के लेखक माने जाते है। इन्होंने ही अपने देश की आत्मा को साहित्यिक रूप प्रदान किया था और विश्व मे उसका परिचय कराया। उनका गद्य उनकी कविता से कम सुन्दर नही माना जाता। यद्यपि इन्हे कुछ लोगो ने आयरलैण्ड

के साहित्यिक डिक्टेटर (Literary Dictator) की उपाधि दे दी थी, फिर भी इन्होंने अपने विचारों को दूसरों पर थोपने की चेष्टा तो दूर-कल्पना तक नही की थी।

सच बात तो यह है कि इस छोटे-से लेख में इनकी सब विशेपताओं का उल्लेख करना सर्वथा असम्भव है, क्योंकि यह एक विचित्र लेखक थे।

१९२३ में नोबेल कमेटी ने पुरस्कार देते समय इनके बारे मे कहा था :

"इनके प्रेरणादायक व जीवन्त काव्य के लिए, जो समूचे राष्ट्र की आत्मा को उच्चतम कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करता है," इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) द विंड अमांग द रीड्स (The Wind Among the Reeds)	१८९९
(२) द कैल्टिक ट्विलाइट (The Celtic Twilight)	१८९३
(३) द शैडोई वाटर्स (The Shadowy Waters)	१९००
(४) व्हेयर देयर इज नथिग (Where There Is Nothing)	१९०३
(५) प्लेज फार एन आयरिश-थियेटर (Plays For An Irish Theatre)	१९१२
(६) रिवरीज़ ओवर चाइल्डहुड (Reveries Over Childhood)	१९२२
(७) ए विज़न आफ फिलासफी (A Vision of Philosophy)	१९२५



व्लाडिस्ला स्टैनिस्ला रेमाण्ट

(१८६८–१९२५)

व्लाडिस्ला स्टैनिस्ला रेमाण्ट पोलैण्ड के दूसरे लेखक थे जिनको नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था ।

रेमाण्ट का वास्तविक नाम रेमाण्ट (Reymont) था । इनका जन्म ७ मई, १८६८ को एक मध्यवित्त परिवार मे हुआ था । इनके पिता वायु-चक्की चलाते थे और ये लोग कोबिया विल्का (Kobia Wielka) मे रहते थे । रेमाण्ट के जन्म के समय कोबिया विल्का रूसी पोलैण्ड (Russian Poland) मे था । वे वही गाँव के एक स्कूल मे पढते भी थे और गाय-बैल भी चराते थे । उस समय रूसी सरकार की आज्ञा थी कि कोई भी व्यक्ति पोलिश भाषा का प्रयोग न करे, परन्तु यह उस आज्ञा का खुलेआम उल्लघन करते थे और इसीलिए यह कभी-कभी स्कूल से निकाल भी दिये जाते थे ।

अपने ५७ वर्ष के जीवन मे इन्होंने कई प्रकार के व्यवसाय किये थे । कभी इन्होंने एक क्लर्क के पद पर कार्य किया, तो कभी रेलवे की नौकरी और कभी तार-घर मे कोई काम । इन्होंने गिरजाघर मे भी एक पद प्राप्त किया था । इनका जीवन उथल-पुथल से भरा था । इन्होंने देशाटन भी खूब किया था । इनको इनकी मृत्यु के केवल एक वर्ष पहले यह पुरस्कार मिला था और इसीलिए

इन्हें उसका पूरा मौका मिला था, पर यह उसका पूरा फ़ायदा भी नही उठा सके। ५ दिसम्बर १९२५ को इनका देहान्त हो गया।

रेमाण्ट ने अधिकतर कहानी तथा उपन्यास ही लिखे है। इन्होने एक ऐतिहासिक उपन्यास, 'द इयर १७९४' भी लिखा, परन्तु यह सफल नही रहा। इनकी 'फर्मेन्ट्स', 'द ड्रीमर', 'द वैम्पायर' तथा 'ओपिअम स्मोकर्स' नामक रचनाएँ भी विशेष महत्त्व नही रखती है। इनकी सर्वश्रेष्ठ कृति 'द पीजेन्ट' है। इसकी कहानी इस प्रकार है—

मैथ्यु वारिना एक बड़ा परन्तु वृद्ध किसान है। वह अपनी जमीन अपने लड़के ऐन्टन को नही देना चाहता। परन्तु देश के नियमों के अनुसार उसे ऐसा करना पड़ता। इस नियम से छुटकारा पाने के लिए वह यग्ना नाम की एक सुन्दर तथा कामुक लड़की से शादी कर लेता है। यग्ना को अपनी 'विजय' पर बहुत घमण्ड था और वह जीवन का आनन्द लूटना चाहती थी। लेकिन कुछ ही दिनों बाद वह ऐन्टन की प्रेयसी बन जाती है। उधर जमीदार के खिलाफ़ बगावत करने में बारिना घायल हो जाता है। ऐन्टन एक आदमी को मार डालता है, और गिरफ़्तार कर लिया जाता है। फिर वसन्त का आगमन होता है, और बारिना अपने खेत में बीज बोते हुए मर जाता है। ऐन्टन जेल से रिहा कर दिया जाता है। यग्ना अपने दुश्चरित्र के कारण गाँव वालों द्वारा खूब पीटी जाती है और गाँव से निकाल दी जाती है।

'द पीजेन्ट्स' संसार के सर्वोत्तम उपन्यासो में गिना जाता है। इसमें कानून और प्रकृति के द्वन्द्व का प्रदर्शन किया गया है। इसमें ज़मींदार, जो अपने को जमीन का मालिक समझता है, और किसान, जोकि खेत को जोतता-बोता है, के बीच के अमर-द्वन्द्व का प्रदर्शन है। इस उपन्यास मे रेमाण्ट ने चारो ऋतुओ का बहुत ही सुन्दर और सजीव वर्णन किया है। इसमें शरद् ऋतु मे शादी तथा कूबा का मरना, जाड़े मे यग्ना और ऐन्टन का प्रेम, वसन्त में बारिना का मरना तथा ग्रीष्म में यग्ना का भीड़ द्वारा पीटा जाना—इन सबका अत्यन्त मार्मिक चित्रण है। इस पुस्तक मे कथा-वस्तु के साथ-साथ प्राकृतिक वर्णन अत्यन्त सुन्दर तथा कवित्वमय है।

रेमाण्ट को अपनी इस पुस्तक द्वारा नोबेल पुरस्कार पाने में बहुत सहायता मिली। यह पुस्तक पुरस्कार-घोषणा के कुछ ही सप्ताह पहले प्रकाशित हुई थी। रेमाण्ट के बाद पोलैण्ड को आज तक कोई नोबेल पुरस्कार नही मिला है।

इनको पुरस्कार देते समय स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"इनके महान् राष्ट्रीय ग्रन्थ 'द पीज़ेन्ट्स' के लिए इनको यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम

(१) द कमेडीन (The Commedienne)
(२) शार्ट स्टोरीज (Short Stories)
(३) द प्रामिज्ड लैण्ड (The Promised Land)
(४) द पीजेन्ट्न (The Peasants)
(५) द इयर १७६४ (The Year 1794)
(६) फर्मेण्ट्स (Ferments)
(७) द ड्रीमर (The Dreamer)
(८) द वैम्पायर (The Vampire)
(९) ओपिअम स्मोकर्स (The Olympian Smokers)



जार्ज बर्नार्ड शॉ
(१८५६–१९५०)

जार्ज बर्नार्ड शॉ के नाम तथा उनकी रचनाओ से भारतवर्ष की शिक्षित जनता भली-भाँति परिचित है। इनकी रचनाएँ विश्वविद्यालयों मे पढाई जाती हैं, और इनके नाटक भी कालेजो मे खेले जाते हैं। इनके विषय मे ससार मे किसी भी शिक्षित व्यक्ति को, कुछ बताने की आवश्यकता नही है, क्योंकि यह अब विश्व-साहित्य के प्रधान लेखको मे माने जाते हैं।

किप्लिंग भारतवर्ष मे पैदा हुए थे, परन्तु उनको कई कारणो से अग्रेज़ी साहित्यकार माना गया था। यीट्स आयरलैंड मे पैदा हुए थे। परन्तु लन्दन मे रहकर अग्रेजी मे लिखने पर भी इनको आयरलैण्ड का लेखक माना गया था। शॉ भी आयरलैण्ड मे पैदा हुए थे, परन्तु इनको ग्रेट ब्रिटेन का ही माना जाता रहा है।

बर्नार्ड शॉ का जन्म २६ जुलाई, १८५६ को हुआ था। इनके पिता का नाम जार्ज कार्र शॉ (George Carr Shaw) और माँ का नाम लुसिन्डा

एलिज़बेथ गर्ली (Lucinda Elizabeth Gurley) था। बर्नार्ड शॉ के पिता नोटरी तथा दलाल थे। बर्नार्ड शॉ के दो बड़ी बहिने तो थी, भाई कोई नही था। शॉ के पिता किसी भी व्यवसाय मे कभी सफल नही हो पाए थे। वह अपने को हमेशा एक अच्छे खानदान का आदमी कहते थे। बर्नार्ड शॉ की माँ को सगीत से अत्यधिक प्रेम था। बर्नार्ड शॉ तथा उनकी माँ के ऊपर सगीतज्ञ जार्ज जान वैण्डेल्युर ली (George John Vandeleur Lee) का बड़ा प्रभाव पड़ा था।

बर्नार्ड शॉ सन् १८६७ मे स्कूल भेजे गए। इन्होंने दो-तीन स्कूलो मे शिक्षा पाई। चार साल बाद सन् १८७१ मे जबकि यह अभी १५ वर्ष के ही थे इन्होंने स्कूल छोड़ दिया। इस बीच सन् १८६८ मे इनकी माँ अपनी लड़कियो और शॉ के साथ ली के मकान में रहने लगी थी। ली के यहाँ शॉ को सगीत की अच्छी शिक्षा मिली, जिसका आगे चलकर इन्हे बड़ा लाभ हुआ। स्कूल छोडने पर बर्नार्ड शॉ के दफ्तर मे क्लर्की कर ली। यहाँ पर इन्हे १८ शिलिंग मासिक वेतन मिलता था, लेकिन बाद मे बढते-बढते वह ४ पाउन्ड मासिक हो गया। लेकिन शीघ्र ही इन्हे इस काम मे घृणा हो गई और सन् १८७६ मे यह इस नौकरी से त्यागपत्र देकर लन्दन चले गए।

अपनी निर्धनता और कार्र शॉ के शराबीपने से घबराकर, बर्नार्ड शॉ की माँ अपनी दोनो लडकियो को साथ लेकर सन् १८७५ मे ही लन्दन चली गई थी। वहाँ पर वह सगीत-शिक्षा देकर अपनी जीविका चलाती थी।

वहाँ यह अपनी माँ के साथ रहने लगे और साहित्य-साधना मे जुट गए। परन्तु नौ वर्ष (१८७६ से १८८५) मे कमाने के नाम पर यह कुल ६ पाउण्ड कमा पाए। इन दिनो इनके पिता भी इन्हे प्रति सप्ताह एक पाउण्ड भेज देते थे। इन्होंने सात वर्ष मे पाँच उपन्यास लिखे परन्तु इन उपन्यासो से भी इन्हे कोई सफलता नही मिली।

इसके बाद इन्होंने उपन्यास लिखना छोड दिया और 'पाल माल गज़ेट' (Pall Mall Gazette) नामक पत्रो मे लिखना शुरू कर दिया। इसी समय 'फेबियन सोसाइटी' (Fabian Society) के भी यह सदस्य हो गए। सन् १८९२ ई० मे इनका पहला नाटक 'विडोअर्स हाउसेज' (Widowers' Houses), जो कि इन्होंने विलियम आर्चर (William Archer) के साथ लिखा था, प्रस्तुत किया गया। इससे इन्हे बहुत सफलता मिली। सन् १८९८ मे इनकी दो पुस्तकें (६ नाटक) प्रकाशित हुईं—'प्लेज प्लेजेन्ट एण्ड अनप्लेजेण्ट' (Plays Pleasant & Unpleasant)। इसके बाद तो इनकी ख्याति चारों ओर फैल गई।

वर्नार्ड शॉ ने चालीस वर्ष की अवस्था मे मिस शर्लाट पेन-टाउन्सेण्ड (Miss Charlotte Payne-Townsend) से शादी की थी। १२ सितम्बर, १९४३ को इनकी पत्नी का देहान्त हो गया। इन लोगों को कोई सन्तान नही हुई थी।

वर्नार्ड शॉ के विषय में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण वात का उल्लेख कर देना यहाँ आवश्यक है। यह पहले पुरस्कृत लेखक थे जिन्होने पुरस्कार-स्वरूप जो धन मिला था उसे लौटा दिया था और उसकी सहायता से एंग्लो-स्वीडिश लिटरेरी फ़ाउण्डेशन (Anglo-Swedish Literary Foundation) की स्थापना करा दी थी। हॉ, पुरस्कार के साथ जो सम्मान मिलता है, वह इन्होने स्वीकार कर लिया था।

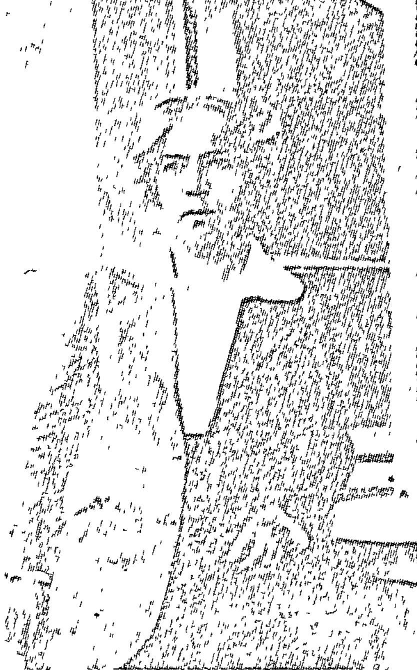
२ नवम्बर, १९५० को ९४ वर्ष की अवस्था मे वर्नार्ड शॉ का देहान्त हो गया। यह पुरस्कार के वाद २४ वर्ष तक जीवित रहे। परन्तु पुरस्कार के वाद इन्होने कोई विशेष काम नही किया। जब यह एक बार विश्व-भ्रमण के लिए निकले थे, तो वम्वई भी आए थे।

शायद वर्नार्ड शॉ पहले और आखिरी लेखक है, जो अपनी हास्य-प्रद रचनाओ के लिए ससार मे प्रसिद्ध है और जिन्हें नोवेल पुरस्कार मिला हो। कुछ लोगों को इनकी रचनाओं मे आदर्शवाद का अभाव लगता है, परन्तु ऐसी बात नही है। इनकी रचनाएँ 'कैण्डिडा' और 'मैन एण्ड सुपरमैन' इनके आदर्श लेखन की साक्षी है। इनको पुरस्कार प्रदान करते समय कमेटी ने कहा था—

"इनकी रचनाओं के लिए जिनमें आदर्शवाद तथा मानवता दोनों की ही छाप है तथा जिनमें चुटीला और प्रेरणा-व्यंग्य प्राय: अपूर्व काव्यमय सौन्दर्य के साथ व्यक्त हुआ है, इन्हें यह पुरस्कार दिया जा रहा है।"

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) आर्म्स एण्ड द मैन (Arms & The Man)	१८९४
(२) कैण्डिडा (Candida)	१८९५
(३) मैन एण्ड सुपरमैन (Man and Superman)	१९०५
(४) पिग्मैलियन (Pygmalion)	१९१२
(५) द एप्पिलकार्ट (The Applecart)	१९२९



ग्रेज़िया डेलेडा

(१८७५–१९३६)

१९२६ का पुरस्कार ग्रेजिया डेलेडा को प्रदान करके अकादमी ने दूसरी बार इटली को सम्मानित किया था। यह भी कहना अनुपयुक्त न होगा कि ग्रेजिया डेलेडा दूसरी महिला थी जिन्हे यह पुरस्कार मिला था। पहली महिला स्वीडन की सेल्मा लागरलोफ थी, जिन्हे यह पुरस्कार सन् १९०९ मे मिला था।

ग्रेजिया डेलेडा का जन्म इटली के सार्डीनिया नामक द्वीप के एक छोटे-से गॉव नुओरो (Nuoro) मे सन् १८७५ मे हुआ था। इनके पिता ने शिक्षा तो कानून की पाई थी, परन्तु उनका मन कानून की बजाय खेती और व्यापार मे कहीं अधिक लगता था। इनके घर पर हर तरह के लोग आते-जाते रहते थे। ग्रेजिया की शिक्षा तत्कालीन दृष्टि से काफी अच्छी हुई थी। इनके पति, श्री पालमेरिनो मडेसानी (M. Palmerino Madesani) लोम्बार्डी के रहने वाले थे। श्री मडेसानी की भेंट काफी कम उम्र मे ही हो गई थी। बाद मे शादी के बाद ये लोग रोम चले गए, और वहाँ पर श्री मडेसानी ने एक सरकारी नौकरी कर ली। इनके दो लड़के भी है।

ग्रेजिया डेलेडा ने अपनी शुरू की जिन्दगी मे बहुत दुःख-भरे दृश्य देखे

थे, जिनका उनके ऊपर काफी गहरा और अमिट प्रभाव पड़ा था। इनकी रचनाओं मे दुखद अनुभवों का जो इतना अधिक उल्लेख और चित्रण मिलता है उसका कारण यह प्रभाव ही है। वैसे इनका घरेलू जीवन सुखमय था। ६१ वर्ष की अवस्था मे रोम मे इनका देहान्त हो गया।

ग्रेजिया डेलेडा ने अपनी सभी रचनाओ मे अपनी जन्म-भूमि, सार्डीनिया का किसी-न-किसी रूप मे चित्रण अवश्य किया है। अपने देश के लोगो, वहाँ के रीति-रवाजों तथा कथाओ का चित्रण व वर्णन इन्होने बहुत ही मार्मिक व सजीव ढंग से किया है। इन्होने अपने लेखन की शुरुआत तो कहानियो से की थी, लेकिन बाद मे रोमान्स (Romances) और उपन्यास भी लिखे। इनको अपनी पुस्तक 'रीड्ज इन द विण्ड' बहुत पसन्द थी क्योकि इनका कहना था कि हम लोग भी 'रीड' (नरकुल) की तरह है, और हम लोगो के भाग्य का निर्णय भी हवा के झोंके करते हैं। सार्डीनिया को ही अपनी कथा-कहानियों का क्षेत्र बनाने के सम्बन्ध में इन्होंने एक जगह लिखा था—

"मै सार्डीनिया को जानती हूँ, तथा इसको प्यार करती हूँ। इसके लोग मेरे लोग है। इसके पहाड़ तथा इसकी घाटियाँ मेरे अपने अग है। हम लोग विपय या प्लाट के लिए क्यो चिन्ता करे जबकि आँख खोलते ही प्राणी-मात्र का नाटक हमारे सामने आ जाता है। जो विपय हम लोगो की शक्ति के बाहर है, उनके ऊपर लिखने से अच्छा तो यही है कि जिस जीवन का हम लोग अकन-आकलन कर सकते हैं उसके विपय में लिखे। और सार्डीनिया ने मुझसे पुकार-कर कहा था कि मुझे वाणी दो। मेरे बारे मे लिखो।"

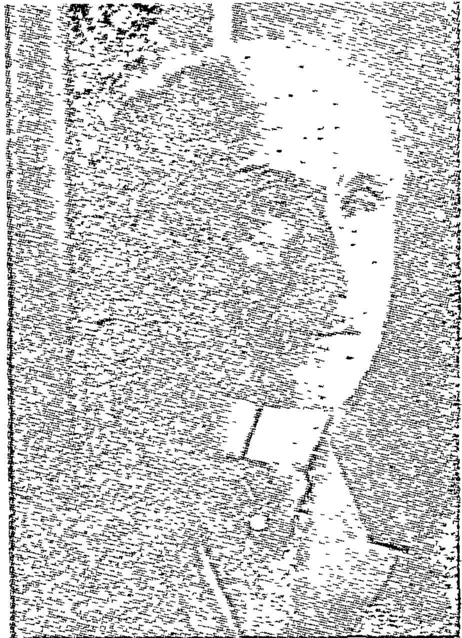
इन्होंने जो कुछ लिखा है वह अपने मन की शान्ति और सुख के लिए ही लिखा है। इन्होने यह भी कहा था कि मन की शान्ति पहली चीज है, पाठक और सफलता तो बाद में आती है। यह अपने देश इटली की इटैलियन एकेडेमी आफ इम्मार्टल्स (Italian Academy of Immortals), जो सन् १९२९ मे मुसोलिनी ने स्थापित की थी, की भी सदस्य चुनी गई थी। इस अकादमी की केवल दो और औरतें सदस्य थी। इनकी गद्य-रचनाओ को इनकी कविताओ से ऊँचा स्थान दिया जाता है। इनकी रचनाओं मे हमे घरेलू जीवन का वास्तविक और जीवन्त चित्रण मिलता है। इनके ऊपर दोस्तोवेस्की (Dostovesky) और गोर्की (Gorki) का गहरा प्रभाव पडा था। इनकी पुस्तको मे मनोविज्ञान कम है, पर ऊपरी (External) चीजो से उसका चित्रण बहुत सुन्दर है। इन्होने अपनी लेखनी से संसार के उस अंश को अमरता प्रदान की है जो भुलाया जा रहा था, और जो काल के गाल मे शीघ्रता से समाता जा रहा था।

पुरस्कार देते हुए स्वीडिश अकादमी ने इनके बारे कहा था—

"आदर्शवाद द्वारा प्रेरित इनकी रचनाओं के लिए, जो अमूर्त को मूर्त में ढाल सकने वाली सफाई के साथ इनके अपने द्वीप के जीवन को चित्रित करती है, तथा गहराई और सहानुभूति के साथ समूची मानव-जाति की समस्याओं का विवेचन-विश्लेषण करती हैं," इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) आफ्टर द डाइवोर्स (After the Divorce)	१९०५
(२) द मदर (The Mother)	१९२३
(३) रीड्स इन द विंड (Reeds In the Wind)	१९१३



हेनरी बर्गसन
(१८५९–१९४१)

हेनरी बर्गसन साहित्य के नोबेल पुरस्कार-विजेताओं में सताइसवें व्यक्ति थे, और फ्रांसीसियों में पाँचवें। अभी तक फ्रांस तथा जर्मनी को चार-चार बार यह सम्मान मिल चुका था, और अन्य देशों को एक-एक या दो-दो बार। अब फ्रांस फिर आगे बढ़ गया, और जब दो वर्ष बाद जर्मनी को यह पुरस्कार मिला, तब ये दोनों देश फिर बराबर हो गए। परन्तु सन् १९३७ ई० में मार्टिन दु गार्ड (Martin du Gard) के पुरस्कृत होने के बाद फ्रांस सदैव प्रथम रहा, और आज भी इस क्षेत्र में सबसे आगे है।

हेनरी बर्गसन को शुद्ध साहित्यिक प्रयास के लिए ही नोबेल पुरस्कार नहीं प्रदान किया गया था। इस सम्बन्ध में स्वीडिश अकादमी के स्थायी सचिव डॉ० एण्डर्स आस्टरलिंग ने अपनी पुस्तक में एक स्थान पर लिखा है—"हालाँकि यह उन इने-गिने अवसरों में से था जबकि शुद्ध साहित्यिक रेखा छोड़ दी गई थी। यह प्रत्यक्ष है कि इस निर्णय के पीछे आधुनिक साहित्य पर बर्गसन का स्थायी व प्रेरणादायक प्रभाव काम कर रहा था। हेनरी बर्गसन ही एकमात्र अ-साहित्यिक लेखक नहीं थे जिन्हें यह सम्मान मिला है, इस प्रसंग में बर्ट्रेण्ड रसल का नाम भी लिया जा सकता है जिन्हें सन् १९५० ई० में यह पुरस्कार दिया गया था।

हेनरी वर्गसन का जन्म १८ अक्तूबर, १८५९ को पेरिस में हुआ था। इनके पिता यहूदी थे। इनकी माँ ने इन्हें न केवल अंग्रेजी भाषा का ज्ञान कराया वरन् गम्भीर अध्ययन-मनन और चिन्तन की ओर भी उन्होंने इनका ध्यान आकर्षित किया था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा लाइसी कान्डार्से (Lycee Condorset) नामक स्कूल में हुई थी। उन दिनों गणित इनका प्रिय विषय था। इसके बाद जब यह इकोल नार्मेल सुपिरियूर (Ecole Normale Superieure) में अध्ययन कर रहे थे तब इनके ऊपर रवैसों (Ravaisson) का प्रभाव पड़ा। अध्ययन समाप्त करने के बाद यह कई जगह प्रोफेसर रहे, और अन्त में इकोल नार्मेल सुपिरियूर मे अध्यापक हो गये। इनके कई छात्रों ने इनकी अध्यापन-कला की मुक्त-कंठ से प्रशंसा की है। इनके व्याख्यान इतने अच्छे होते थे कि पेरिस के बड़े-से-बड़े व्यक्ति सुनने के लिए आते थे। इनके विद्यार्थी इनको लवा (lark) कहा करते थे, क्योंकि इनकी आवाज़ बहुत ही मधुर थी। यह अपने घर पर अपने विद्यार्थियो से हमेशा मिलने को तैयार रहते थे। ४ जनवरो, सन् १९४१ को वर्गसन का देहान्त हो गया।

वर्गमन ने दर्शन-शास्त्र का गहरा अध्ययन किया था, और इनकी ख्याति इनके दार्शनिक विचारो के ही कारण है। कान्ट (Kant) ने विज्ञान को गणित-पदार्थ-शास्त्र (Mathematical physics) कहा था। वर्गसन ने दूसरे विज्ञानों को फिर से अध्ययन करके उनको दार्शनिक रूप दिया। इनका कहना था कि दार्शनिको ने परिवर्तन की व्याख्या करते हुए समय को पारम्परिक (conventional) रूप ही दिया है, और वास्तविकता को भुला दिया है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति को परिवर्तन का आभास भिन्न-भिन्न रूप से होता है। इस वास्तविकता को समझना तथा मानना चाहिये। इन्होंने मनोवैज्ञानिक जीवन में स्वतन्त्रता का भी आभास किया, और कहा कि स्वतन्त्रता कर्तव्य में ही प्रदर्शित होती है। इसका कोई पहले से कानून नही बन सकता। चित्त (Mind) का पदार्थ (Matter) पर इस प्रकार का प्रभाव होता है। इस प्रभाव की जाँच वर्गसन के 'माटियेर एट मेमाएर' (Matiere et Memoire) नामक पुस्तक मे की गई है।

वर्गसन के मतानुसार, शरीर विशेषकर दिमाग का अस्त्र है। याददाश्त मनोवैज्ञानिक है। भूत काल की क्रियाएँ बनी रहती है...और इन्ही क्रियाओं से वर्गसन प्राणिविद्या (Biology) की सहायता से अपने सिद्धान्तों को प्रमाणित करते हैं।

वर्गसन ने केवल साहित्य मे ही अपनी प्रवीणता नही दिखाई है। वह

विज्ञान का अध्ययन भी वहुत प्रेम से करते थे। सन् १९१३ ई० में वह लन्दन की 'सोसाइटी फ़ार साइकीकल रिसर्च' (Society for Psychical Research) के सभापति चुने गये थे, और वहाँ दिया गया उनका भाषण अभी तक उत्तम श्रेणी का माना जाता है।

अपने महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक अनुसन्धानों के साथ-साथ बर्गसन और भी काम करते रहते थे। इनकी रचनाओं मे दो पुस्तकों को प्रधानता प्राप्त हो चुकी है। इनमें से एक है 'ड्रीम्स' और दूसरी है 'लाफ्टर।'

'ड्रीम्स' नामक पुस्तक में इन्होंने स्वप्नों के होने के कारण पर अनुसन्धान किया है। इन्होंने लिखा है कि हम लोगों की याददाश्त उसी तरह दिमाग में दवी रहती है जैसे कि वायलर (boiler) में आप और स्वप्न उसी के भाग निकलने का जरिया है।

इनकी दूसरी छोटी पुस्तक 'लाफ्टर' अधिक सुविख्यात है। इसका अनुवाद संसार की लगभग सभी भाषाओं में हो चुका है। इसमे वर्गसन ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि केवल मनुष्य हँसता है और उसके हँसने के कारणों का उन्होंने पता लगाया है। हँसी, भावना और समाज में क्या सम्बन्ध है, इस पर भी इन्होने प्रकाश डाला है। हास्य-रस के अध्ययन के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

सन् १९२८ ई० में १९२७ का पुरस्कार प्रदान करते हुए अकादमी ने इनके सम्बन्ध में कहा था—

"इनके सारगर्भित व ओजस्वी विचारो तथा उस मेधावी शक्ति तथा नव-प्रतिभा के लिए जिसके माध्यम से वे प्रस्तुत किए गए है," इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) एन इण्ट्रोडक्शन टु मैटाफ़िज़िक्स (An Introduction to Metaphysics)	१९१२
(२) मैटर एण्ड मेमॅरी (Matter And Memory)	१९११
(३) टाइम एण्ड फ्री विल (Time And Free Will)	१९१०
(४) ड्रीम्स (Dreams)	१९१४
(५) लाफ्टर (Laughter)	१९११



सीग्रिद उण्डसेत

(१८८२–१९४०)

सन् १९२८ ई० मे नार्वे की सीग्रिद उण्डसेत को यह पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

सीग्रिद उण्डसेत का जन्म २० मई, सन् १८८२ ई० को कलण्डबार्ग (Kallundborg) (डेन्मार्क) मे हुआ था। इनके पिता इगवाल्ड मार्तिन उण्डसेत (Ingvald Martin Undset) एक प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता थे और उन्ही के प्रोत्साहन से सीग्रिद उण्डसेत ने नार्वे का इतिहास बहुत ध्यान से पढा था। इनकी माँ डेन्मार्क की महिला थी।

इन्होने क्रिस्टियाना मर्केन्टाइल कालेज (Christiana Mercantile College) मे शिक्षा पाई थी। इन्होंने अपने पिता के सचिव का भी काम किया था, जिसके कारण इनको नार्वे के इतिहास का अच्छा ज्ञान हो गया था। अपने पिता के मरने के बाद इन्होंने दस वर्ष तक नौकरी की, जिससे इनको दफ़्तरों में काम करने वाली लड़कियो के जीवन के विषय मे अच्छा-खासा ज्ञान प्राप्त हो गया था। सन् १९११-१२ ई० मे इन्होने ए० सी० स्वर्स्टेड (A. C. Svarsted) नामक कलाकार (artist) से शादी की, और कुछ समय तक गृहिणी तथा उपन्यास-लेखिका का मिश्रित जीवन व्यतीत किया। सन् १९११ ई० के लगभग यह रोमन कैथोलिक हो गई थी। सन् १९४० ई० मे ६८ वर्ष की अवस्था में इनका देहान्त हुआ।

"आइसलैण्ड की पुरानी कथाओ को आदर्श मानकर यह अब तक अपनी सबसे अधिक प्रभावित करने वाली रचना 'क्रिस्टिन, लदानस्डाटर' तथा इसका दूसरा भाग 'आलव आडन्स्सन्' पूरी कर चुकी थी। पहली पुस्तक का स्थान तो आधुनिक नार्वे के महान् कथा-साहित्य मे सर्वोपरि है, क्योकि इसकी रचना-कला अपने-आपमें बहुत ही सुगठित है, तथा चरित्र-चित्रण बहुत ही अच्छे ढग से हुआ है। इसमे मनोवैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि तथा इन ठोस गुणों के कारण यह पुस्तक अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य मे अपना स्थान रखने मे सफल हुई है। लेखिका के पहले की रचनाओं द्वारा जो उसके ओजस्वी व्यक्तित्व की छाप पडी थी, वह लड़ाई के समय मे उसके देश की स्थिति से और भी दृढ हो गई है।"[1]

इन शब्दो से लेखिका की कला का थोड़ा-बहुत परिचय पाठकों को अवश्य मिल गया होगा। वास्तव मे इनकी कला अद्वितीय थी।

यह अपने पात्रों को अपने जीवन का अग बना लेने के बाद ही उनको अपनी रचनाओ में आने देती थी। इसी वजह से इनके पाठको को वे इतने सजीव लगते है। इनके पात्रों के छोटे-मोटे दुख-सुख अत्यन्त वास्तविकता के साथ चित्रित किये गए है। इनकी अधिकाश कहानियाँ तथा उपन्यास दुखान्त है। इनके पात्र अधिकतर नार्वे के चौदहवी तथा पन्द्रहवी शताब्दी के मध्यवर्ग के होते है। उन्ही के दैनिक जीवन को सामने रखकर सीग्रिद उण्डसेत ने अपनी रचनाएँ की है। यही कारण है जिससे कि चौदहवी शताब्दी का देहाती जीवन इनकी रचनाओ मे साकार और सजीव बन सका है।

आरम्भ में इन्होने अपनी कहानियों मे उन स्त्रियो के जीवन का चित्रण किया था जो दफ्तरों में काम करती है, जिनकी शादी बेमेल हो जाती है और जिनको जीवन में निराशा का मुँह देखना पड़ता है। यह अपनी रचना, 'जेनी' (Jenny) के कारण समूचे विश्व मे विख्यात हो गई थी। जेनी की कहानी इनकी रचनाओ की प्रतिनिधि मानी जा सकती है। जेनी की कुछ कथा इस प्रकार है —

जेनी नार्वे की एक भावुक तरुणी है। उसे अपनी मातृभूमि मे रहना और वहाँ जीवन जीना पसन्द नही है। और वह नार्वे से रोम चली जाती है, क्योंकि वह अध्ययन भी करना चाहती है और कलाकार भी होना चाहती है। कला-साधना से उसको एक प्रकार का सन्तोष मिलता है, परन्तु अब उसके हृदय मे एक दूसरी भूख जागती है—प्रेम तथा प्रेमी की। अब उसकी अवस्था २८ वर्ष की है। वह हेल्गे नामक एक पुरुष से प्रेम करने लगती है। हेल्गे उससे हर माने

१. ऐन्डर्स ओस्टरलिग : द लिटरेरी प्राइज—ई० नोबेल द मैन एण्ड हिज प्राइजेज।

में कमजोर है। इसलिए उसे पत्नी तथा माँ—दोनों का काम करना पड़ता है। वह हेल्गे के साथ नार्वे लौट जाती है, जहाँ पर उसे फिर निराशा का सामना करना पड़ता है। वह वापस रोम आ जाती है और कुछ दिनो के दुखपूर्ण जीवन के बाद आत्महत्या कर लेती है। परन्तु इसके पहले वह अपने कलाकार साथी गनर हेगेन से अपने दिल का हाल इन शब्दो में कहती है—"केवल काम ही पूरा नही होता, क्योंकि यह बहुत ही व्यक्तिगत बात है। काम का आनन्द एक ही बात मे आता है—उसके करने में, और इसको हम किसी और से बँटा नहीं सकते। परन्तु जब तक आनन्द बँटाया न जाय, तब तक आनन्द सुख मे परिवर्तित नही होता।"

सीग्रिद उण्डसेत ने प्रेम के विषय में भी लिखा है। इनकी ऐतिहासिक रचनाएँ प्रसिद्ध है। इनकी सर्वश्रेष्ठ रचना 'क्रिस्टिन लव्रान्स्डट्र' (Kristin Lavransdatter) (तीन भागों मे) है।

इनको पुरस्कार देते हुए एकेडेमी ने कहा था :

"विशेष रूप से इनके मध्यकालीन उत्तरीय जीवन के सशक्त चित्रण के लिए" इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम

(१) क्रिस्टिन लव्रान्स्डट्र (तीन भागों मे)
(Kristin Lavransdatter)
अ. द ब्राइडल रीथ (The Bridal Wreath)
ब. द मेजेस्टी ऑफ हुसादी (The Majesty of Husady)
स. द क्रास (The Cross)

(२) मास्टर ऑफ़ हेस्टविकेन (The Master of Hestviken)
अ. द ऐक्स (The Axe)
ब. द स्नेक पिट (The Snake Pit)
स. इन द वाइल्डरनेस (In The Wilderness)
द. द सन एवेन्जर (The Son Avenger)

(३) जेनी (Jenny)

(४) गुन्नार्स डाटर (Gunnar's Daughter)

(५) इमेजिज इन ए मिरर (Images In A Mirror)

(६) द वाइल्ड आर्चिड (The Wild Orchid)

(७) द बर्निंग बुश (The Burning Bush)
(८) इडा एलिज़बेथ (Idas Elizabeth)
(९) स्टेजिज़ ऑन द रोड (Stages On The Road)
(१०) द लांगेस्ट ईअर्स (The Longest Years)
(११) द फेथफुल वाइफ (The Faithful Wife)
(१२) सागा ऑफ़ सेन्टस् (Saga of Saints)
(१३) मैन विमैन एण्ड प्लेसिज़ (Men, Women and Places)
(१४) मैडम डोरोथी (Madam Dorothea)



टामस मान
(१८७५–१९५५)

टामस मान को सन् १९२९ ई० मे यह पुरस्कार प्रदान किया गया। यह जर्मनी के एक यहूदी थे। इनके पहले जर्मनी के चार लेखक (मामसन—१९०२, यूकेन—१९०८, हेस—१९१०, और हाप्टमैन—१९१२) इम पुरस्कार द्वारा सम्मानित हो चुके थे। ऐसा प्रतीत होता है कि पहले विश्व-युद्ध के कारण जर्मनी के लेखकों से स्वीडिश अकादमी का रुष्ट होना स्वाभाविक था, जिसके कारण शान्ति के दस वर्ष वाद तक जर्मनी को यह पुरस्कार नही मिला। इनका नाम पाँच वर्ष पहले भी रखा गया था, परन्तु उस समय भी इनको न देकर यह पुरस्कार पोलैण्ड के लेखक रेमाण्ट को दिया गया था। साथ ही यह भी स्मरणीय है कि इनको यह पुरस्कार उस रचना 'बुडनब्रुक्स' (Buddenbrooks) पर दिया गया था, जो इन्होने पच्चीस वर्ष की अवस्था मे लिख ली थी—न कि किसी उस रचना पर जो सन् १९२९ के आसपास प्रकाशित हुई हो।

टामस मान का जन्म ६ जून, सन् १८७५ को हुआ था। हेनरिक के पिता ल्युवेक (Lubeck) नामक शहर के सीनेटर और एक वड़े व्यापारी थे। इनकी माँ की रगों मे पोर्चुगीज खून भी था। टामस मान ने सोलह वर्ष की अवस्था तक स्कूल मे अध्ययन किया। अपने पिता के देहान्त के वाद यह म्यूनिख अपनी माँ के पास चले गए। वहाँ यह दिन मे एक वीमा कम्पनी में काम करते थे, और रात को पढ़ते-लिखते थे। कुछ दिन वाद यह 'सिम्पिलसिसिमस' (Simplicissimus) नामक अखवार के प्रकाशन में सहायता देने लगे। वाद में यह अपने भाई के साथ इटली चले गए। सन् १९०१ ई० में इन्होंने अपना

पहला उपन्यास 'बुडनब्रूक्स' प्रकाशित कराया। इस पुस्तक से इनका नाम यूरोप-भर में फैल गया। सन् १९०९ ई० में इनकी दूसरी पुस्तक 'रायल हाइनेस' प्रकाशित हुई। इसमें इन्होंने जर्मनी के एक राजकुमार क्लास हाइनरिक का एक अमरीकी लखपती की लड़की से प्रेम दिखाया है। इसके पहले एक लघु उपन्यास 'टोनियोग्रोगर' (Toniogroger) सन् १९०३ ई० में तथा 'डेथ इन वेनिस' सन् १९११ ई० में प्रकाशित हुआ था। इस बीच इन्होंने और भी बहुत-कुछ लिखा था। इनकी पुस्तक 'द मैजिक माउण्टेन' (The Magic Mountain) सन् १९२४ ई० मे प्रकाशित हुई। इन्होंने हिटलर का विरोध किया था और यह जर्मन छोड़कर अमरीका भाग गए थे। यहाँ इन्होंने जाजेफ़-उपन्यास (The Joseph Novels) लिखे।

'द मैजिक माउण्टेन' इनकी सर्वश्रेष्ठ रचना समझी जाती है। इसका कथानक तो कोई विशेष उल्लेखनीय कथा-वस्तु नही है—हैन्स कैस्टार्प हैनबर्ग का एक नौजवान इजीनियर है। नौकरी करने के पहले वह अपने रिश्ते के भाई (कजिन) जोअकिम जइम्सेन से मिलने स्विस सेनेटोरियम जाता है। स्विस सेनेटोरियम डेवास (Devos) मे एक ऊँचे पहाड़ पर बना हुआ है। यहाँ पर केवल तपेदिक के ही मरीज़ रहते हैं। यहाँ वह केवल तीन सप्ताह के लिए आया था, परन्तु सात साल तक ठहर जाता है, और जब सन् १९१४ ई० में लड़ाई छिड़ जाती है, तब वह उसमे भाग लेने चला जाता है। इन सात वर्षों में यहाँ पर इसकी 'शिक्षा' पूरी हो जाती है। यहाँ इस सेनेटोरियम में कई प्रकार के मरीज़ रहते हैं, और इनका आपस मे मन-मुटाव, ईर्ष्या, झगड़ा, प्रेम तथा दार्शनिक वार्तालाप होता रहता है। हैन्स कैस्टार्प का प्रेम एक रूसी महिला, क्लाडिया शाशा (Claudia Chauchat) से हो जाता है। वहाँ पर तीन और मरीज़ हैं, जोकि तीन तरह के भिन्न पुरुष ही नहीं हैं, वरन् वे तीन प्रकार के विचारों के प्रतिनिधि भी हैं। ये लोग आपस में निरन्तर बहस और विचार-विनिमय करते रहते हैं। इनका प्रभाव हैन्स कैस्टार्प पर भी पड़ता रहता है। पुस्तक के अन्त में यूरोप में लड़ाई छिड़ने की खबर आती है, और हैन्स कैस्टार्प डेवास से चला आता है। लड़ाई में उसके बचने की कोई आशा नहीं रहती है।

कुछ आलोचकों के मतानुसार 'द मैजिक माउण्टेन' टामस मान की सर्व-श्रेष्ठ रचना है। इसमें प्रथम विश्व-युद्ध के पहले के यूरोप की स्थिति का दिग्दर्शन है। इसमें उन विचारों का उल्लेख है जो यूरोप में प्रचलित थे। यह 'बुडनब्रूक्स' से भी अधिक लोकप्रिय हुआ है। इनको पुरस्कार देते समय अकादमी ने कहा था—

"विशेष रूप से इनके महान् उपन्यास 'बुडनब्रुक्स' के लिए जिससे इन्हे समकालीन साहित्य में अधिक-से-अधिक सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त होती गई है" इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) बुडनब्रुक्स (Buddenbrooks)	१९०१
(२) थाट एण्ड लाइफ (Thought and Life)	१९४१
(३) ए यग मैन एण्ड हिज डाग (A Young Man And His Dog)	१९३०
(४) द मैजिक माउण्टेन (The Magic Mountain)	१९२४
(५) जाजेफ एण्ड हिज ब्रदर्स (Joseph And His Brothers)	१९३६
(६) यग जाजेफ (Young Joseph)	१९३५
(७) जाजेफ इन इजिप्ट (Joseph In Egypt)	१९३८
(८) जाजेफ द प्रोवाइडर (Joseph The Provider)	१९४४
(९) द ट्रान्सपोज्ड हैड्ज (The Transposed Heads)	१९४१



सिंक्लेयर लेविस

(१८८५–१९५१)

सन् १९३० ई० मे प्रथम बार युनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका के एक लेखक को नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। केवल साहित्य के क्षेत्र में ही अमेरिका को इस सम्मान के लिए तीस वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पडी थी, दूसरे क्षेत्रों में तो स्थिति इसके विपरीत थी। अन्य क्षेत्रों मे अमेरिका मे अब तक किस-किस विषय पर किन-किन व्यक्तियो को कब-कब यह पुरस्कार मिला था उसकी सूची इस प्रकार है :

१. शान्ति सन् १९०६ ई० : थ्योडार रूजवेल्ट (४८ वर्ष मे) (Theodore Roosevelt)

२. भौतिकी सन् १९०७ ई० : एल्बर्ट अब्राहम माइकेल्सन (Albert Abraham Michelson)

३. चिकित्सा और औषधि-शास्त्र सन् १९१२ ई० : एलेक्सिस कैरेल (Alexis Carrel)

४. रसायन-शास्त्र सन् १९१५ ई० : थ्योडार विलियम रिचर्ड्स (Theodore William Richards)

अमेरिका को अब तो पिछले पैंतीस वर्ष मे (सन् १९३० ई०—सन् १९६५ ई०) छ. बार साहित्य-पुरस्कार मिल चुका है। इन छ नोबेल पुरस्कार विजेताओं मे से पॉच तो उपन्यासकार ही है। इन पॉच मे एक महिला भी है—पर्ल बक (Pearl Buck)। एक बार एक नाटककार ओनील (O' Neill) को

भी यह सम्मान मिल चुका है।

सन् १९३० ई० मे सिंक्लेयर लेविस को यह पुरस्कार मिला था। इनका जन्म ७ फरवरी, सन् १८८५ ई० को सौक सेन्टर (Sauk Centre) नामक गाँव में हुआ था। इस गाँव मे केवल ढाई हज़ार लोग रहते थे। इनके पिता गाँव के डॉक्टर थे, और इनके नाना का भी यही पेशा था। इनके एक चाचा और एक भाई भी डॉक्टर थे। जब यह कम उम्र के थे तब यह अपने पिता के साथ मरीजो को देखने भी जाया करते थे, और कभी-कभी उनकी मदद भी करते थे। इनको स्कूल नही भाया, और इन्होंने सन् १९०२ ई० में स्कूल छोड़ दिया। परन्तु स्कूल छोड़ने के बाद ही इन्होंने अपने मन से बहुत-सी किताबे पढ़ डाली। सन् १९०३ ई० में यह येल विश्वविद्यालय (Yale University) में प्रविष्ट हुए। वहाँ भी इन्होंने बहुत-सी पुस्तके पढ़ी, और 'येल लिटरेरी मैगजीन' (Yale Literary Magazine) के सम्पादक भी हुए। यह दूसरे अखबारों के लिए लिखकर धन कमाते थे। दो बार यह गर्मी की छुट्टियों मे इगलैण्ड भी गए थे।

सन् १९०६-७ ई० में अमेरिका के एक दूसरे प्रसिद्ध लेखक अप्टन सिंक्लेयर (Upton Sinclair) से उनकी मित्रता हो गई। सन् १९०७ ई० में यह न्यूयार्क जाकर रहने लगे, और वहाँ पर अखबारों मे लिखकर धनोपार्जन करने लगे। इसी साल यह 'ट्रान्सेटलाण्टिक टेल्स' (Transatlantic Tales) के सहायक सम्पादक भी थे। सन् १९०८ ई० मे इन्होंने येल में अपनी पढ़ाई समाप्त कर दी और पत्रकारिता के क्षेत्र में चले गए।

इनकी पहली पत्नी का नाम ग्रेस लिविंगस्टोन हेग्गर (Grace Livingstone Hegger) और दूसरी का डोरोथी थाम्पसन (Dorothy Thompson) था। इनकी पहली पत्नी से एक लड़का था।

इन्होंने देशाटन भी खूब किया और अनेक पत्रिकाओं मे इनके लेख भी प्रकाशित हुए। सन् १९२० ई० में इनका उपन्यास 'मेन स्ट्रीट' (Main Street) प्रकाशित हुआ। इससे इनका बहुत नाम हुआ। इन्होंने कुछ व्याख्यान भी दिए थे। इसके बाद यह देश-विदेश घूमते रहे और अपने अनुभवों को पुस्तकों का रूप देते रहे। १० जनवरी, सन् १९५१ ई० को इनका देहान्त हो गया।

इनकी सबसे अधिक प्रसिद्ध पुस्तक 'बैबिट' (Babbit) है। इसकी कथा इस प्रकार है :—

जार्ज फ़ोलान्स्बी बैबिट ज़ेनेप नामक नगर में एक मकान बेचने वाला दलाल है। वह अपनी शिक्षा के अनुसार घरेलू अच्छाइयों, रिपब्लिकन पार्टी तथा

मध्यम वर्ग के जीवन में विश्वास करता है। ४६ वर्ष की अवस्था में एकाएक वह अपने जीवन से ऊब जाता है और अपने एक कलाकार मित्र, पाल राइस्लिंग के साथ छुट्टी बिताने चला जाता है। लौटने पर बैबिट को जेनिथ में सुख नहीं मिलता और वह अपने को बदलना चाहता है। उसका प्रेम मिसेज़ टैनिस जुडिक नामक एक विधवा से हो जाता है, परन्तु कुछ ही समय के बाद उसका मन बदल जाता है। अब वह उदारतावाद में मन लगाने की कोशिश करता है, परन्तु इसके लिए उसके मित्र उसको अच्छा नहीं समझते। एकाएक उसकी पत्नी वाइरा की तबीयत खराब हो जाती है और वह फिर उसके पास आ जाता है।

इस पुस्तक में सिंक्लेयर लेविस ने अमरीका के व्यापारी-वर्ग के नीरस जीवन का चित्रण किया है। इसके कथनोपकथन, चरित्र तथा तीखे व्यंग्य पाठकों को बहुत भये। परन्तु साथ ही यह भी कहना उचित है कि अमेरिका में बहुत से पाठकों को यह पुस्तक नाराज़ करने में भी सफल हुई। यूरोप में पढ़ने वालों को यह लगा कि बैबिट अपने देश का प्रतिनिधि चरित्र है, परन्तु लेखक ने स्वयं कहा है कि "मैंने बैबिट को प्रतिनिधि अमरीकी नहीं कहा है।"

इनको पुरस्कार प्रदान करते समय कमेटी ने कहा था—

"इनकी शक्तिशाली तथा सजीव चित्रण करने की कला और नये प्रकार के पात्रों को व्यंग तथा हास्य-रस के साथ रचने के लिए" इन्हें यह पुरस्कार दिया जाता है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) अवर मिस्टर रेन् (Our Mr. Wren)	१९१४
(२) द ट्रेल ऑफ ए हाक् (The Trail Cf A Hawk)	१९१५
(३) द इन्नोसेण्ट्स (The Innocents)	१९१७
(४) द जाब (The Job)	१९१७
(५) फ्री एअर (Free Air)	१९१९
(६) मेन स्ट्रीट (Main Street)	१९२०
(७) बैबिट (Babbit)	१९२२
(८) ऐरोस्मिथ (Arrowsmith)	१९२५
(९) मैन ट्रैप (Mantrap)	१९२६
(१०) डाड्सवर्थ (Dodsworth)	१९२९



एरिक एक्सेल कार्लफ़ेल्ट

(१८६४–१९३१)

एरिक एक्सेल कार्लफेल्ट (Eric Axel Karlfeldt) तीसरे स्वीडिश लेखक थे जिन्हे यह पुरस्कार सन् १९३१ ई० मे प्रदान करने की घोषणा की गई। परन्तु चूंकि इनका देहान्त कुछ महीने पहले ही हो गया था, इसलिए इन्हे यह पुरस्कार प्रदान नही किया जा सका। यह पहले लेखक थे जिन्हे मृत्यूपरान्त पुरस्कार दिया गया था। पुरस्कार के नियमों के अनुसार जब किसी लेखक का नाम स्वीडिश अकादमी के सामने रखा जाए, तो उसको जीवित होना चाहिए। जिस वर्ष के पुरस्कार के लिए नाम रखा जाए, उस वर्ष की १ फरवरी तक नाम अकादमी के सामने पहुँच जाना चाहिए। उसी वर्ष अक्तूबर, नवम्बर मे पुरस्कार की घोषणा हो जाती है। इस तरह इन्हे यह पुरस्कार अकादमी के नियमों के अनुसार ही मिला था।

परन्तु एक प्रश्न और उठता है—एल्फ्रेड नोबेल ने अपनी वसीयत मे यह लिखा था कि यह पुरस्कार उस व्यक्ति को प्रदान किया जाए जिसकी रचना आदर्शवादी हो। यह भी कहा जाता है कि नोबेल ने कहा था . "मै स्वप्न देखने वालो की सहायता करना चाहता हूँ, क्योकि उनको जीवन-पथ पर अग्रसर होने मे कठिनाई होती है।" इन बातो का निष्कर्ष (?) यह निकलता है कि नोबेल नौजवान लेखको-लेखिकाओं की सहायता करना चाहते थे। परन्तु जो पुरस्कार दिए गए, उनमे से अधिकतर उन्ही को दिए गए जो कि अपना काम पूरा कर चुके थे और जिनका रचना-काल लगभग समाप्त हो चुका था। मामसन को

जब यह पुरस्कार मिला उस समय वह ८५ वर्ष के थे, और एक वर्ष बाद उनका देहान्त भी हो गया था। वयोवृद्ध लेखकों के पक्ष मे दो बाते कही जाती हैं, एक तो यह कि जब इस शताब्दी के आरम्भ मे पुरस्कार देना शुरू हुआ तब यूरोप मे इतने महत्त्वपूर्ण लेखक थे जिनको भुलाया नही जा सकता था, और दूसरा यह कि कम उम्र के लेखकों को पुरस्कार देने के साथ यह निश्चित नही होता कि वह लेखन-क्रम जारी ही रखेंगे। पुरस्कृत लेखको की औसत अवस्था ६२ वर्ष पर आँकी गई है।

कुछ भी हो, यदि किसी लेखक को उसके देहान्त के पश्चात् पुरस्कृत किया जाता है, तो मत-भेद का क्षेत्र बढ़ जाता है। कोई लेखक कितना भी गुणी क्यो न हो, मरने के बाद तो वह फिर लेखनी का प्रयोग नही कर सकता।

एरिक एक्सेल कार्लफ़ेल्ट का जन्म स्वीडन के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित फोकार्ना (Folkarna) नामक शहर मे हुआ था। इस क्षेत्र को डलेकार्लिया (Dalecarlia) कहते है। इनके पिता का नाम एरिक एर्सन कार्लफेल्ट (Erik Ersson Karlfeldt) था। वह वकील थे। इनकी माँ का नाम अन्ना जैन्स्डाट्टर (Anna Jansdotter) था, और उनकी पहले भी एक शादी हो चुकी थी। इनके माता-पिता दोनों ही किसानो के वश से थे। इनके पिता ने सर्वप्रथम किसानो मे ही अपने कानूनी ज्ञान का प्रयोग किया था। एरिक के ऊपर डलेकार्लिया के प्राकृतिक सौंदर्य का बहुत प्रभाव पडा था।

एरिक ने वेस्ट्रास (Vestras) मे और उसके बाद उपसाला विश्वविद्यालय (Upsala University) मे शिक्षा पाई थी। जब यह विश्वविद्यालय के प्रथम वर्ष मे थे तो इनके पिता की पूरी सम्पत्ति तथा पैतृक घर का नाश हो गया और इस आघात के कारण कुछ दिनों के बाद वह स्वय भी चल बसे। परन्तु धन-हीन होने पर भी एरिक एक्सेल ने अपना अध्ययन नही छोडा और सन् १९०२ ई० में यह स्नातक हो गए। इसके बाद कुछ दिनों तक यह अध्यापन-कार्य करते रहे। सन् १९०३ ई० मे यह स्टाकहोम मे एकेडेमी ऑफ एग्रिकल्चर मे लाइब्रेरियन हो गए और सन् १९१२ ई० तक इस पद पर बने रहे। सन् १९०४ ई० में यह स्वीडिश एकेडेमी के सदस्य बनाए गए और तीन साल बाद यह नोबेल प्राइज कमेटी के सदस्य नियुक्त कर दिए गए। सन् १९१२ ई० मे यह इसके स्थायी सचिव हो गए और अपनी मृत्यु तक इस पद पर बने रहे। सन् १९०६ ई० मे यह गोटबर्ग नामक शहर के एकेडेमी ऑफ सोशल साइन्सिज एण्ड रिसर्च (Academy of Social Sciences & Research) के भी सदस्य हो गए थे।

कार्लफेल्ट बहुत व्यस्त जीवन व्यतीत करते थे, पर फिर भी इन्होंने पाँच

वार सन् १८९५ ई०, सन् १८९८ ई०, सन् १९०६ ई०, सन् १९१८ ई० और सन् १९२७ ई० में अपनी कविताओं के संग्रह प्रकाशित कर लिये थे। इनको सन् १९२२ ई० मे—४८ वर्ष की अवस्था मे—नोवेल पुरस्कार प्रदान किया गया था, परन्तु यह कहकर कि यह पुरस्कार और स्वीडिश लेखकों को मिल चुका है, और स्वीडेन के वाहर उनकी कविता को जानने वाले वहुत ही कम लोग हैं, इन्होंने पुरस्कार लेने से इनकार कर दिया।

यह सचमुच आश्चर्य की वात है कि इनके वडे कवि होते हुए भी इनकी कविताओ को इनके देश के वाहर जानने वाले इने-गिने लोग ही थे। इनकी कविताओं का एक सग्रह मिनेसोटा विश्वविद्यालय प्रेस (University of Minesota Press) ने प्रकाशित किया था, और इनकी कविताएँ 'पोइट्री' (Poetry) और 'पोइट लोर' (Poet Lore) नामक पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही थी। इन्होंने अधिकतर गीति-कविताएँ ही लिखी है और इनके लिए प्रकृति और उस स्थान के किसान ही इनके प्रेरणा-स्रोत थे। यहाँ तक कि इनको अपनी जाति का प्रतिनिधि (Tribal Spokesman) कहा जाता था। ये अपनी रचनाओं में कोई उपदेश या शिक्षा नही देते थे, वरन् मात्र अपनी भावनाओ और विचारों को प्रकट कर देते थे। इगवे हैडवाल (Yngve Hedvall) ने कहा था कि उनकी रचनाओं के रसास्वादन के लिए स्वीडिश होना आवश्यक है।

इन्होंने शादी काफ़ी देर से की थी। इनकी पत्नी इनसे २० वर्ष छोटी थी। देखने मे यह स्वस्थ और भूरे रग के वालों वाले थे। इनकी अवस्था ने इनके ऊपर कम ही असर किया था, इसीलिए यह देखने में अपनी उम्र से कम लगते थे। यह प्रभावशाली, हिम्मती तथा धुन के पक्के थे। इनके तीन वच्चे थे, जिनको इनके पुरस्कार से लाभ हुआ।

इन्हे पुरस्कार देते हुए सन् १९३१ ई० मे स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"एरिक एक्सेल कार्लफेल्ट की कविताओ के लिए।"

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) विल्डमार्क्स आक कार्लेविवसार (Vildmarks och Karleksvsor)	१८९५-१९०६
(२) फ्रिडालिना पोएसी आक़ डालमाल निन्डार पारिम (Fridolina poesi och Dalmalninger parim)	१९०२

(३) फ्लोरा आक पोमोना — १८०६
(Flora och Pomona)

(४) स्काल्डेन लुसिडोर — १८१४
(Scalden Lucidor)

(५) डिक्टर — १८१६
(Dikter)

(६) फ्लारा आक वेल्लोना — १८२८
(Flora och Bellona)

(७) हास्टहार्न — १८२७
(Hosthorn)



जान गाल्सवर्दी

(१८६७–१९३३)

सन् १९३२ ई० मे बत्तीसवॉ पुरस्कार तीसरी बार इगलैण्ड को मिला। इस वर्ष पुरस्कार पाने वाले जान गाल्सवर्दी से अग्रेजी उपन्यास और नाटक के सभी पाठक भली-भॉति परिचित है, और यहॉ उनका विस्तारपूर्वक परिचय देना अनावश्यक है। परन्तु चूंकि हिन्दी-प्रेमियो से इनका उतना सम्बन्ध नहीं है, इसलिए उनके विषय मे यहॉ कुछ बताया जाता है।

जान गाल्सवर्दी का जन्म १४ अगस्त, सन् १८६७ को किंगस्टन (Kingston) सरे (Surrey) मे हुआ था। इनके पिता का नाम भी जान गाल्सवर्दी ही था और इनकी माँ का नाम था ब्लान्श बेली (Blanche Bailey)। इनके पिता प्राभिकर्ता (Attorney) थे, और ये लोग डेवानशायर (Devonshire) नामक स्थान के निवासी थे। जान गाल्सवर्दी का परिवार काफ़ी अमीर था, इसलिए अग्रेजी के अन्य कई लेखकों की भाँति निर्धनता से इनका कभी पाला नही पड़ा था।

जान गाल्सवर्दी बोर्नमथ (Bournemouth) के स्कूल में पढ़ने के बाद सन् १८८१ मे इगलैण्ड के प्रसिद्ध स्कूल हैरो में दाखिल हो गये। यहॉ इनको फुटबाल खेलने का शौक हुआ और अपनी टीम के यह कैप्टेन भी हो गये। पढ़ने मे इनकी अधिक रुचि नही थी—न यहॉ और न न्यू कालेज, ऑक्सफोर्ड

(New College, Oxford) मे जहाँ इन्होंने उच्च कोटि की शिक्षा पाई थी। सन् १८६० ई० में इन्होंने कानून की डिग्री भी प्राप्त कर ली। घर के धनी होने के कारण इन्होंने वैरिस्ट्री नहीं की, और कुछ दिनों बाद रूस फीजी, अमरीका, केनेडा, आस्ट्रेलिया तथा और कई देशों की यात्रा पर निकल गए।

सन् १८९१ ई० में इनके चचेरे भाई ने आडा कूपर नामक लड़की से शादी की, परन्तु यह शादी सफल नहीं हुई, और आडा के तलाक के बाद, २२ सितम्बर, सन् १६०५ ई० को इन दोनों की शादी हो गई। आडा सुन्दर तथा सुशील थी। जान गाल्सवर्दी और आडा का विवाहित जीवन सुखपूर्वक चल रहा था। कहा तो यह भी जाता है कि जान गाल्सवर्दी को साहित्य में महानता प्राप्त करवाने का श्रेय आडा को ही है।[1] आडा उनको बराबर बढ़ावा देती रहती थीं और उनके काम करने के लिए साधन उपलब्ध किया करती थी।

२८ वर्ष के सुखी विवाहित जीवन के बाद, ३१ जनवरी, सन् १६३३ ई० को ६६ वर्ष की अवस्था मे लन्दन मे जान गाल्सवर्दी का स्वर्गवास हो गया और इनकी इच्छानुसार इनकी राख हवा मे बिखेर दी गई।

जान गाल्सवर्दी बड़े सज्जन तथा सुशील पुरुष थे। इन्हें घोडो तथा कुत्तों से बहुत प्रेम था। धनी होने के कारण यह भली प्रकार रहते थे और इनके कई अपने मकान भी थे। इनके समय के सभी अच्छे लेखक—एडवर्ड गार्नेट (Edward Garnett), हिलेयर वेलाक (Hilaire Belloc), फ़ोर्ड मैडाक्स—फ़ोर्ड (हफ्फर) (Ford Madox—Ford Hueffer), टामस सेकाम्ब (Thomas Seccombe), बर्नार्ड शॉ (Bernard Shaw), जाजेफ कानरेड (Joseph Conrad), विलियम हेनरी हडसन (William Henry Hudson) सब इनके मित्र थे।

जान गाल्सवर्दी ने सत्तरह उपन्यास, कहानियाँ (भाग १२), लेख, छब्बीस नाटक और कुछ कविताएँ लिखी हैं। लेकिन इनका ख्याति मुख्यत: इनके उपन्यासों पर आधारित है, परन्तु अपने समय मे इनके नाटकों ने भी इनके लिए कुछ कम यश नही कमाया था।

इनके नाटकों का प्रभाव वहाँ के समाज पर भी पड़ा था। जान गाल्सवर्दी थे तो विक्टोरिया के समय के, और इसलिए विक्टोरियन (Victorian) भी कहे जा सकते थे, परन्तु इन्होने विक्टोरियन आदर्शो का ही अपनी रचनाओ में मज़ाक उड़ाया था। यह स्वयम् धनी थे, परन्तु इन्होंने बड़ी सुन्दरता से धनी

१. देखिये : मैरट, एच० वी० जान गाल्सवर्दी (लाइफ़ एण्ड लैटर्स)
(Marrot, H. V. : John Galsworthy—Life and Letters)

व्यक्तियों तथा श्रेणियों के ऊपर धन का कुप्रभाव चित्रित किया है। इनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना 'फारसाइट सागा' (Forsyte Saga) है, जिसमें इगलैण्ड के परिवर्तनशील समाज का चित्रण बड़ी सुन्दरता, व्यंग्य तथा वास्तविकता से किया गया है। जान गाल्सवर्दी ने कोडियों अमर पात्रो की रचना की है, जिनमे सोम्स फारसाइट (Soames Forsyte) विशेप महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय है।

सन् १९३२ ई० मे स्वीडिश एकेडेमी ने इनको पुरस्कार प्रदान करते हुए कहा था .

"इनकी विषय-निरूपण की अपूर्व और विशिष्ट कला के लिए, जोकि 'फारसाइट सागा' मे अपने उच्चतम रूप मे प्रकट हुई है," इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) द आइलैण्ड फैरिसीज (The Island Pharisees)	१९०४
(२) द मैन ऑफ प्रापर्टी (The Man of Property)	१९०६
(३) द डार्क फ्लोअर (The Dark Flower)	१९१३
(४) इन चान्सरी (In Chancery)	१९२०
(५) टु लेट (To Let)	१९२१
(६) लायल्टीज (Loyalties) ड्रामा	१९२२
(७) द व्हाइट मन्की (The White Monkey)	१९२४
(८) द सिल्वर बाक्स (The Silver Box)	१९३०
(९) द फारसाइट सागा (The Forsyte Saga)	१९२२



इवान एलेक्स्येविच बुनिन
(१८७०–१९५३)

इवान एलेक्स्येविच बुनिन के विषय में कई अनोखी बातें उल्लेखनीय हैं। पहली तो यही कि यह पहले रूसी लेखक हैं, जिन्हें साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिला था। इसके पहले छोटे-छोटे देश, जैसे स्विटज़रलैण्ड और इंगलैण्ड को यह पुरस्कार मिल चुका था। प्रथम ३२ पुरस्कारों में रूस को कोई भी स्थान नहीं मिल पाया था, और शायद इस बार भी अगर कमेटी में अधिक मतभेद न होता तो बुनिन को नोबेल पुरस्कार न मिलता। जिन दूसरे लेखकों के नाम कमेटी के सामने थे उन पर मतैक्य तो नहीं था, परन्तु वाद-विवाद और विचार-विमर्श करते समय यह पता अवश्य चल गया था कि बुनिन के पक्ष में काफी बड़ा बहुमत है, इस कारण इन्हें यह पुरस्कार दे दिया गया।[1]

इनके जीवन की कहानी भी बड़ी रोचक है। यह रूस के एक पुराने और रईस खानदान में पैदा हुए थे। इनकी जन्म-तिथि २२ अक्तूबर, १८७० है, और जन्म-स्थान वोरोनज़ (Voronezh)। सात वर्ष की अवस्था तक यह अपने पिता की 'एस्टेट' (estate) में रहे थे और वहाँ इन्हें एक ट्यूटर (tutor) पढ़ाता रहा था, जिसकी विशेषता—कहानी सुनाना और चित्र

१. देखिये; शुख इत्यादि : नोबेल द मैन एण्ड हिज़ प्राइजेज़, पृ० १२५।
(Schuch & others : Nobel the Man and His Prizes)

बनाना थी। इसने इन्हें रूस की लोक-कथा और परियों की कहानियाँ सुनाई। इनकी माँ इनको पुश्किन की कविताएँ सुनाती रहती थी। इन सबका प्रभाव इनके ऊपर बहुत गहरा पड़ा था। इसका परिणाम यह हुआ कि बुनिन ने लेखक होने का निश्चय कर लिया और फलस्वरूप आठ वर्ष की अल्प आयु में ही इन्होंने अपनी पहली कविता लिख ली।

इन्होंने एक साल के लगभग मास्को विश्वविद्यालय में भी अध्ययन किया था। फिर यह देशाटन करने निकल गये, और खारकोव (Kharkov), क्रीमिआ (Crimea), इटली (Italy), तुर्की (Turkey), पैलेस्टाइन (Palestine), मिस्र (Egypt), ग्रीस (Greece), अल्जीरिया (Algeria) और ट्यूनिशिया (Tunisia) मे भ्रमण करते रहे। बाद मे यह इंगलैण्ड व स्वीडन भी गये थे और फ्रास को तो इन्होंने अपना घर ही बना लिया था।

इन्होने सन् १८९८ ई० में ग्रीक रिफ्यूजीज (Greek Refugees) मक्नी की पुत्री से शादी कर ली थी। जब प्रथम विश्व-युद्ध छिड़ा, उस समय यह सुखी जीवन व्यतीत कर रहे थे, परन्तु जब रूस मे सन् १९१७ में क्रांति हुई तो यह मई, १९१८ मे मास्को से दक्षिण रूस चले गये, और फरवरी १९१९ मे फ्रास मे जाकर बस गये। इन्होंने अपने भागने का कारण बताते हुए अपनी पुस्तक 'मेमरीज एण्ड पोर्ट्रेट्स' (Memories and Portraits) मे लिखा है—

"रूसी क्राति का रूप बिलकुल बदल गया—जो भी लेखक वहाँ से भागना चाहते थे, भाग रहे थे, क्योंकि रूस मे उनके लिए कोई भी गुण्डा मौत का कारण बन सकता था—क्योंकि ऐसे गुण्डे अपनी प्रभुता के कारण अंधे हो गये थे......[1]

फ्रास ही मे इनको नोबेल पुरस्कार मिलने का समाचार मिला था, जिसके विषय मे इन्होंने इसी पुस्तक में अपने अनुभव लिखे हैं। इन्होंने काफ़ी सुखमय जीवन व्यतीत किया, परन्तु द्वितीय विश्व-युद्ध मे इन्हे बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। ८ नवम्बर, १९५३ मे ८३ वर्ष की अवस्था में हृदय-गति रुक जाने से उनका देहान्त हो गया। उस समय शायद इनकी पत्नी विरा निकोलाएव्ना (Vera Nikollaevna) इनके साथ थी।

बुनिन की रचनाएँ बहुत ही कम उम्र मे छपने लगी थीं, परन्तु तब भी इनका नाम रूस के बाहर होने मे देर लगी। इन्होने स्वय अपनी पुस्तक 'मेमरीज एण्ड पोर्ट्रेट्स' में कहा है कि "मुझे ख्याति प्राप्त करने के लिए बहुत काफ़ी इन्तजार करना पड़ा। इसके कई कारण थे। मै राजनीति से दूर रहता था और

१. पृ० १३।

अपनी रचनाओं में उससे सम्बन्धित किसी विषय पर कुछ नही लिखता था। मैं किसी साहित्यिक स्कूल का नही था—मै न तो अपने को पतनशील (Decadent) कहता था, और न प्रतीकवादी (Symbolist), न रोमांटिक (Romantic), यथार्थवादी (Realist) और न मैंने कोई नकाब लगाया, न कोई झण्डा ही फहराया……"[1]

इनकी कहानियाँ भी जो सन् १८६७ से ही छपने लगी थीं, अच्छी मानी जाती है। सन् १६०८ ई० में यह रूसी एकेडेमी के बारह सदस्यों में से एक चुने गये। इसके पहले इनको पुश्किन पुरस्कार (Pushkin Prize) मिल चुका था। सन् १६१० ई० में इनकी पुस्तक 'द विलेज' प्रकाशित हुई, जिससे इनकी लोकप्रियता और भी अधिक बढ गई। इनकी कहानियों मे 'द जैण्टिलमैन फ्राम सैनफ्रान्सिस्को' बहुत प्रसिद्ध है।

इनकी रचनाएँ संख्या में थोड़ी है, परन्तु गुणो की दृष्टि से वे उच्चकोटि की मानी जाती है। अकादमी ने इनके बारे मे कहा था :

"इनकी उस समर्थ कला के लिए जिसके द्वारा यह गद्य-लेखन के क्षेत्र मे रूस की क्लासीकल परम्परा को आगे बढ़ा रहे है," इन्हे यह पुरस्कार दिया जाता है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) द ड्रीम्स आफ़ चैग (The Dreams of Chang)	१६२३
(२) द जैन्टिलमैन फ्राम सैनफ्रान्सिस्को (The Gentleman From San Francisco)	१६२२
(३) द विलेज (The Village)	१६२३
(४) द वैल आफ डेज (आत्मकथा) (The Well of Days : Autobiography)	१६३३
(५) मेमोरीज़ एण्ड पोर्ट्रेट्स (Memoires And Portraits)	१६५१

---

१. पृ० ११।



लुइजी पिराण्डेलो

(१८६७–१९३६)

सन् १९३४ ई० मे इटली को तीसरी बार यह पुरस्कार मिला। यह पुरस्कार चौतीसवी वार प्रदान किया गया था। इस वर्ष का पुरस्कार प्राप्त करने वाले थे ६७ वर्षीय लुइजी पिराण्डेलो।

लुइजी पिराण्डलो का जीवन बहुत अजीव था और उन्होंने अपना अधिकाश जीवन दुखों में ही काटा था। इसके कई कारण थे।

लुइजी पिराण्डेलो का जन्म २८ जून, सन् १८६७ ई० को सिसिली (Sicily) नामक टापू के गिरगेन्टी (Girgenti) नामक शहर मे हुआ था। इनके पिता का नाम डान स्टीफेनो (Don Stefano) था, और माँ का नाम कैटेरीना (Caterina) था। डान स्टीफेनो गन्धक की खान के मालिक थे और काफ़ी अमीर भी। वह काफी हृष्ट-पुष्ट थे और अपनी पत्नी को जो छोटी और नाजुक थी, वहुत मानते थे।

लुइजी पिराण्डेलो ने गिरगेण्टी के स्कूल मे शिक्षा पाने के बाद कोमो (Como), पेलर्मो (Palermo) तथा रोम के विश्वविद्यालय मे शिक्षा पाई। यहाँ यह अपने प्राध्यापकों से अक्सर वाद-विवाद ही नही झगड़ा भी कर वैठते थे। वहाँ के प्रो० एमिलियो मोनाची (Prof. Emilio Monacci) के कहने पर यह सन् १८८८ ई० मे उच्च शिक्षा के लिए जर्मन के वोन विश्वविद्यालय में दाखिल हो गए और सन् १८९१ ई० में इन्होंने डॉक्टरेट की उपाधि भी प्राप्त कर ली।

सन् १८९४ ई० मे इनके पिता ने इनकी शादी अपने कारोबार के एक हिस्सेदार की लड़की एण्टोनिएत्ता पोर्तुलानो (Antonietta Portulano) के साथ कर दी। लुइजी ने अपनी पत्नी पार्तुलानो को शादी के पहले कभी देखा भी नहीं था। इनको खूब ढेर-सा दहेज मिला, और यह अपनी पत्नी के साथ रोम मे रहने लगे। अगले दस वर्ष तक इनका जीवन बड़ा सुखी रहा क्योंकि इनके पिता धन देते रहे थे। इनको तीन बच्चे भी हुए। सन् १८९५ ई० में स्टीफ़ेनो (Stefano), सन् १८९७ ई० में लीटा (Lietta) और सन् १८९९ ई० में फास्टो (Fausto)। परन्तु सन् १९०४ ई० में ये लोग अचानक निर्धन हो गए क्योंकि बाढ़ के कारण खानों में पानी भर गया था और इनके पिता का व्यवसाय खत्म हो गया था। लुइजी ने रोम मे स्त्री-शिक्षक कालेज (Women Teachers College), में नौकरी कर ली, परन्तु इनकी पत्नी को इस आर्थिक हानि से इतना मानसिक कष्ट हुआ कि वह पागल हो गई, और वह अपने पति पर धोखा देने का इल्ज़ाम लगाने लगी। इन्होंने अपने मित्रों की सलाह के विपरीत अपनी पत्नी को पागलखाने नही भेजा। सन् १९१४ ई० की लड़ाई में इनके पुत्र घर से चले गए। इनकी पुत्री ने अपनी माँ से थककर आत्म-हत्या करने की कोशिश की। सन् १९१८ ई० में जब इनकी पत्नी का देहान्त हो गया, तब जाकर कही इन्हे इस विपत्ति से छुटकारा मिल पाया।

सन् १९२५ ई० में फ्रासीसी सरकार ने इन्हें लीजियन ऑफ़ ऑनर (Legion of Honour) का सदस्य बनाकर सम्मान प्रदान किया और इटली की सरकार ने कमाण्डर आफ़ द क्राउन (Commander of the Crown) तथा मुसोलिनी ने हाई कमाण्डर ऑफ़ सेन्ट मारिस (High Commander of St. Maurice) बनाकर। परन्तु अन्त में इनका जीवन दुखपूर्ण ही रहा। यह देश-देश घूमते रहे। न तो इनका कोई अपना घर था, न पता। इनको जो धन नोबेल पुरस्कार-स्वरूप मिला था, उसे अपनी तीनों सन्तानो मे बाँट देने का प्रबन्ध इन्होने अपने वसीयतनामे में कर दिया था।

१० दिसम्बर, सन् १९३६ ई० को इनका देहान्त हो गया। उस समय इनकी अवस्था सत्तर वर्ष से छः महीने कम थी।

पारिवारिक और सामाजिक क्षेत्र में ही नही साहित्यिक क्षेत्र में भी लुइजी पिराण्डेलो का जीवन बड़ा विचित्र रहा है। सोलह वर्ष की अल्प अवस्था में ही इन्होंने कविता लिखना शुरू कर दिया था। इन्होने अपने समकालीन तथा प्रसिद्ध लेखक गेब्रियल डी अन्नुन्ज़िओ (Gabriele D'Annunzio) (१८६३-१९३४) का साहित्य में सदैव विरोध किया था। सन् १८९३ में इनको रोम में

एक उजड़ा कान्वेन्ट (Convent) मिल गया। इसके वाद इन्होने साहित्यिक क्षेत्र मे प्रगति करनी शुरू कर दी। इनकी मित्रता दूसरे लेखको से भी हुई, जिन्होने युगो आजेटी (Ugo Ojettı) तथा लुइजी पिराण्डेलो से कविता लिखना छुड़ाकर गद्य लिखना शुरू कराया। इनकी प्रथम गद्य-पुस्तक थी 'लव विदाउट लव' जो सन् १८६३ ई० मे छपी थी। कुछ वर्षो वाद 'द आउट कास्ट' और 'इल टनो' छपी थी।

लुइजी पिराण्डेलो की रचनाओं मे स्थानीय रग-भाग को जिसका मुख्य सम्वन्ध सिसिली मे है, प्रधानता मिली है। परन्तु इन्होने कुछ ही समय के वाद मनोवैज्ञानिक रचनाएँ लिखना आरम्भ कर दिया। इसका कारण इनका खुद का जीवन था जिसमे वहुत-सी अप्रिय घटनाएँ घटने लगी थी—इनके पिता का दिवालिया होना, स्त्री का पागलपन, पुत्रों का लडाई मे जाना, पुत्री की आत्महत्या की कोशिश, और गरीवी। सन् १६१८ ई० में इनको अपने देश मे साहित्यिक सम्मान मिलने लगा था। इसका मुख्य कारण यह था कि इटली के वाहर इन्हे अव तक काफी ख्याति मिल चुकी थी। अव तक इन्होने और भी रचनाएँ—जैसे कि 'द लेट माटिया पैस्कल' (The Late Matıa Pascal), 'द ओल्ड एण्ड द यग' (The Old and The Young) और 'शूट' (Shoot) भी प्रकाशित करा ली थी। इनकी वहुत-सी कहानियाँ भी—जैसे 'वेफे डेला मार्टे ए डेला विटा' (Beffa dela Morte e della Vıta), 'कुआण्ड उरा माटो' (Quand'era Mato) तथा 'वायन्के ए नेरे' (Bıanche e Nere)आदि इनके कई कहानी-सग्रहो मे छप चुकी थी। 'राइट यू आर इफ यू थिन्क यू आर' (Rıght You Are If You Thınk You Are), 'थिन्क इट ओवर' (Thınk It Over), 'गियाकोमिनो' (Gıacomıno), 'हेनरी द फोर्थ' (Henry IV) और 'सिक्स कैरेक्टर्स इन सर्च आफ एन ऑथर' (Sıx Characters In Search of An Author) आदि इनके नाटको ने भी इन्हे काफी प्रतिष्ठा दिला दी थी।

इनके विपय मे एण्डर्स आस्टरलिग(Anders Osterlıng)ने एक स्थल पर लिखा था कि, "इटैलियन अकादमी के सम्पूर्ण साहित्यिक विभाग की अनुशसा पर लुइजी पिराण्डेलो (१८६७-१६३६) सन् १६३४ ई० मे इटैलियन नाटकीय तथा दृश्यपूर्ण कला को अपने साहस तथा सच्चाई से पुनर्जाग्रत करने वाले साहित्यकार के रूप मे पुरस्कार-विजेता चुने गए।" जव पिराण्डेलो के नाटक पहले-पहल थियेटर में दिखाये गए तो ऐसा आभास होता था कि यह कुछ ही दिनो की वात है। परन्तु जल्दी ही यह स्पष्ट हो गया कि इनकी नाट्य-कला, जो सदैव ही मनुष्य के व्यक्तित्व की समानता से सम्वन्धित रहती है, वास्तव में

दार्शनिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रश्नों को अद्भुत रूप से तथा बार-बार प्रस्तुत करने में समर्थ और सफल है। ये प्रश्न इसके पहले इतनी स्पष्टता तथा इतने बलपूर्वक कभी नहीं प्रस्तुत किये गए थे। यह जादूगर केवल शिल्पविद्या में ही निपुण नही था, वरन् इसे मनुष्य के जीवन के साथ अविभाज्य अग की तरह जुड़े हुए ट्रैजिक चक्रव्यूह का भी पूरा-पूरा ज्ञान था। यही कारण है कि इनकी रचनाओं में एक दुखदायी गम्भीरता हमेशा बनी रहती है, यहाँ तक कि इनकी सुखान्त पिराण्डेलो का काम वास्तव मे नाटक को एक नई देन थी, और इसको ठीक समय पर एक साहित्यिक पुरस्कार मिला।"[१]

स्वीडिश अकादमी ने इनके बारे मे कहा था :

"नाट्य-कला और दृश्य-कला को साहस और सच्चाई से पुनर्जीवित करने के लिए" इन्हें यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) लव विदाउट लव (Love Without Love)	१८९३
(२) स्कामाण्ड्रा (Scamandra)	१९१०
(३) राइट यू आर (Right You Are)	१९१७
(४) द प्लेजर्स ऑफ ऑनेस्टी (The Pleasures of Honesty)	१९१७
(५) हेनरी फोर्थ (Henry IV)	१९२०
(६) सिक्स कैरेक्टर्स इन सर्च ऑफ एन ऑथर (Six Characters In Search of An Author)	१९२१

१. देखिये; शुख इत्यादि : नोबेल द मैन एण्ड हिज प्राइजेज, पृ० १२६।
(Schuch & Sohlman : Nobel The Man And His Prizes, p. 126)



यूजीन ग्लैडस्टन ओ'नील
(१८८८–१९५३)

सन् १९३५ ई० मे यह पुरस्कार किसी को भी नही प्रदान किया गया था।

यूजीन ग्लैडस्टन ओ'नील अमरीका के दूसरे लेखक थे जिनको सन् १९३६ ई० मे साहित्य का नोवेल पुरस्कार मिला था। छ: साल पहले सन् १९३० ई० में सिंक्लेयर लेविस को यह पुरस्कार मिला था।

यूजीनओ'नील का जन्म १६ अक्तूवर, सन् १८८८ ई० को न्यूयार्क सिटी (New York City) में हुआ था। इनके पिता का नाम जेम्स ओ'नील (James O'Neill) था। यह एक एक्टर (actor) थे और वालक यूजीन सात वर्ष के जीवन तक उनकी कम्पनी के साथ घूमता रहा था। इसके वाद यह स्कूल भेजे गए, और फिर प्रिन्स्टन विश्वविद्यालय (Princeton University) मे भी एक साल पढे। उसके वाद यह नौकरी करने लगे। कुछ दिनो के लिए यह होण्डुरस (Honduras) मे भी सोने की तलाश मे गए थे। वापस लौटने पर यह अपने पिता की कम्पनी मे सहायक मैनेजर हो गए। इसके वाद यह कई तरह की नौकरी करते रहे, और कुछ दिन इन्होने सिंगर सिलाई मशीन कम्पनी मे भी काम किया था। इसके वाद यह एक जहाज मे नौकरी करने लगे।

सन् १९१२ ई० मे डॉक्टरो ने वताया कि इन्हे तपेदिक हो गया है, इसलिए इन्हे कुछ दिन एक सेनेटोरियम में भी काटने पडे। सेनेटोरियम मे इन्होने नाटक की तरफ अपना ध्यान मोडा और एकांकी लिखने लगे। इन्होने इसी समय में अपनी कला तथा ख्याति की नीव डाली थी। पहली वार इन्हें दो वार

पुलिट्जर पुरस्कार (Pulitzer Prize) भी प्राप्त हुआ। पहली वार सन् १६२२ ई० में 'आना क्रिस्टी' (Anna Christie) पर और दूसरी वार सन् १६२८ ई० में 'स्ट्रेन्ज इण्टरल्यूड' (Strange Interlude) पर। सन् १६२२ ई० में इन्हें नेशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ आर्ट्स एण्ड लैटर्स (National Institute of Arts and Letters) की तरफ से स्वर्णपदक (Gold Medal) भी प्रदान किया गया। इनके नाटकों का यूरोप में वड़ा प्रभाव पड़ा था, और वहाँ पर इनकी रचनाओं को लोग बड़े चाव से पढ़ते थे। इनके पिता की नाटक-कम्पनी से इनको वहुत लाभप्रद अनुभव हुए थे। इनकी रचनाएँ स्वतन्त्रतापूर्ण हैं और इनमें इन्होंने नैतिक प्रश्नों पर प्रकाश डाला है। इनकी रचनाओं में मनुष्य का मनुष्य से सम्वन्ध नहीं दिखाया गया है, पर मनुष्य का ईश्वर से क्या सम्वन्ध होना चाहिए, इस पर विचार प्रकट किये गए हैं। इनके 'स्ट्रेन्ज इन्टरल्यूड' (Strange Interlude) और 'आह वाइल्डरनैस' (Ah, Wilderness) नाटकों का फिल्मीकरण हो चुका है। यह फ्रांस, स्विट्ज़रलैण्ड, वारमुडा (Barmuda) इत्यादि देशों में घूम चुके हैं।

इनके नाटक यूरोप के किसी भी देश या शहर में खेले जाने के पहले स्टाकहोम (Stockholm) में खेले गए थे। इनका नाटक, 'मोर्निंग विकम्स एलेक्ट्रा' (Mourning Becomes Electra) सन् १६३३ ई० में खेला गया था। कुछ लोगों का यह मत है कि इस नाटक के पहले दो भाग तीसरे भाग से अच्छे हैं। इनके नाटकों में भावुकता प्रधान है, और यह सभी प्रयोगात्मक (Experimental) हैं। इनके विचार तो करीव-करीव समूचे यूरोप से लिये गए हैं, पर उनका प्रयोग नया है। इसी वर्ष के पुरस्कार के लिए रोमाँ रोलाँ ने सिगमण्ड फ्रायड (Sigmund Freud) का नाम प्रस्तावित किया था, परन्तु फ्रायड को न मिलकर यह पुरस्कार उनके शिष्य को ही मिला। यूजीन ओ'नील की कई रचनाएँ विश्व-प्रसिद्ध हैं, और केवल उनका नाम लेने से ही आजकल के शिक्षित पुरुष को फौरन मालूम हो जाता है किसकी चर्चा हो रही है। इनकी मुख्य पुस्तकों में 'ऑल गाड्स चिल्लन गाट विंग्स' (All God's Chillun Got Wings) भी गिनी जाती है। इसकी कथा इस प्रकार है—

जिम हैरिस न्यूयार्क का एक नीग्रो है। वह एक श्वेत (White) लडकी से प्रेम करता है। परन्तु क्योंकि वह नीग्रो लोगों से नफ़रत करती है, इसलिए वह जिम के प्यार को ठुकरा देती है। वह कुछ दिनों तक एक दुराचारी आदमी, मिकी के साथ रहती है, उसे एक वच्चा भी होता है, और वह मर भी जाता है। अव इला जिम के प्रस्ताव को स्वीकार करके उसके साथ शादी कर लेती है।

दोनो कुछ दिनों के लिए फ्रान्स जाते है, और फिर लौट आते है क्योकि जिम लॉ पढना चाहता है। इला अपने पति के दिमाग और भावना से नीच कोटि की है, और वह जिम की मॉ और बहन को काला होने के नाते नफरत करती है। वह अपनी भावनाओं को छिपाने मे असमर्थ होती है और अपनी भावनाओं के कारण ही वह पागल हो जाती है, और अपने पति को इतना परेशान करती है कि वह अपनी परीक्षा मे फेल हो जाता है। परन्तु जिम धैर्य तथा सन्तोष के साथ उसकी देख-भाल करता है, और अन्त में प्रार्थना करता है कि 'हे ईश्वर, मुझे इस कष्ट के द्वारा, जो तू मुझे दे रहा है, उस बच्चे के लायक बना जो तू इस स्त्री, जिसे तू उठाने वाला है, की जगह भेज रहा है।"

इस नाटक मे ओ'नील ने अमरीका के श्वेताग लोगों पर टिप्पणी की है। सन् १९५६ ई० मे इनका देहान्त हो गया। स्वीडिश अकादमी ने इन्हे पुरस्कार देते हुए कहा था :

"इनकी नाट्य रचनाओ की शक्ति, ईमानदारी और गहरी भावुकता के लिए जिन्होंने ट्रैजेडी की एक सर्वथा मौलिक अवधारणा को साकार किया है" इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) द मून ऑफ 'द कॅरिब्बीज' (The Moon of the Caribbees)	१९१८
(२) द एम्परर जोन्स (The Emperor Jones)	१९२०
(३) द हेयरी एप (The Hairy Ape)	१९२२
(४) ऑल गाड्स चिल्लन गाट विंग्ज (All God's Chillun Got Wings)	१९२४
(५) डिजायर अन्डर द एल्म्स (Desire Under the Elms)	१९२४
(६) द ग्रेट गाड ब्राउन (The Great God Brown)	१९२६
(७) लजरस लाफ्ड (Lazarus Laughed)	१९२७
(८) मार्को मिलियन्स (Marco Millions)	१९२८
(९) स्ट्रेन्ज इन्टरल्यूड (Strange Interlude)	१९२८
(१०) मोर्निग बिकम्स एलेक्ट्रा (Mourning Becomes Electra)	१९३१



रोजर मार्तें दु गार

(१८८१–१९५८)

छत्तीसवाँ पुरस्कार फ्रांस को प्रदान किया गया। फ्रास को यह पुरस्कार सातवी बार मिला था। किसी और देश को यह सम्मान अभी तक पाँच वार जर्मनी से अधिक नही मिला था। सन् १९३७ ई० में सम्मानिन होने वाले लेखक थे रोजर मार्तें दु गार (Roger Martin du Gard)।

रोज मार्तें दु गार का जन्म पेरिस के पास निलीमुर-साइन (Neuilly-sur-Seine) नामक स्थान पर सन् १८८१ ई० मे हुआ था। इनके पूर्वज लोरेन (Lorrain) और बूर्वान (Bourbon) के रहने वाले थे, और पेशे से वकील और न्यायाधीश थे। रोजर मार्तें दु गार ने पेरिस के दो सर्वोत्तम स्कूलों काण्डार-सेट (Condorset) और जैन्सन-डि-सैली (Janson-de-Sailly) मे शिक्षा पाई थी। इन्होने तीन वर्ष इकोल डि चार्टेस (Ecole de Chartes) मे भी शिक्षा पाई थी, और यह सन् १९०६ ई० मे स्नातक हो गए। वचपन से ही इनको पढ़ने का बहुत शौक था, और इन्होंने टॉल्स्टाय की 'वार एण्ड पीस' नामक पुस्तक को अपनी बाइविल वना रखा था। शोध के कारण इनके मन मे सत्य के प्रति वहुत श्रद्धा हो गई थी।

सन् १९१४ ई० में इनको फौज मे भर्ती होना पडा। इन्होने लडाई में मनुष्य के जीवन का अच्छी तरह अध्ययन किया, और आगे चलकर उसका लाभ भी उठाया। सन् १९२५ ई० मे यह वलेम (Belleme) नामक स्थान पर वस गए। सन् १९३० ई० मोटर-दुर्घटना मे इनको चोट आ गई। जव नाजी लोगो

ने सन् १९४० ई० मे फ्रास पर हमला किया था, तो यह अपनी पत्नी और पुत्री के साथ पेरिस में ही रहते थे। फ्रास की हार के वाद यह वहाँ से भागकर दूसरी जगह जा वसे। नाजियो की हार के बाद यह फिर पेरिस मे आकर रहने लगे थे। सन् १९५८ ई० मे ७० वर्ष की अवस्था मे इनका देहान्त हो गया था।

रोजर मार्ते दु गार ने सन् १९०८ ई० मे अपना पहला उपन्यास 'डेवेनिर' (Devenir) प्रकाशित कराया। इस उपन्यास को इन्होने स्वयम् कुछ दिनों बाद तिरस्कृत कर दिया। इनकी पुस्तक 'ज्याँ बराय' (Jean Barois), जिस पर इन्होने अप्रैल १९१० से मई १९१३ तक परिश्रम किया था, वास्तव में इनके साहित्यिक प्रयास का पहला चरण है। आन्द्रे जीद ने भी, जोकि स्वयम् फ्रांस के एक प्रसिद्ध लेखक है, और जिनको सन् १९४७ ई० मे नोवेल पुरस्कार मिला था, इस पुस्तक की प्रशसा की थी। इस भारी पुस्तक को इनके मित्र गैस्टन गैलीमार्ड (Gaston Gallimard) ने आन्द्रे ज़ीद की प्रशंसा में प्रकाशित किया था। इस पुस्तक को इनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'ले थिबाल्ट्स' (Les Thibaults) का अगुआ समझना ठीक होगा, क्योकि मार्ते दु गार ने 'ज्याँ बराय' (Jean Barois) मे उन्ही अनुभवो का उल्लेख किया है 'जो ले थिबाल्ट्स' में उल्लिखित है। नूवेल रेवू फ्रांसे (Nouvelle Revus Francaise) के द्वारा इनका परिचय स्लम्बर्जर (Schlumberger) के और कोपो (Copeau) से हुआ, जिन्होने इन्हे नाटक लिखने के लिए उत्साहित किया।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद इन्होने सन् १९२० ई० मे अपनी मुख्य रचना "ले थिवाल्ट्स' लिखनी प्रारम्भ की। इसके अश सन् १९२२ ई० में प्रकाशित होने लगे थे, और अन्तिम किस्त १८ वर्ष बाद सन् १९४० ई० मे प्रकाशित हुई थी। इसके दस भाग (volumes) है। मुख्यत इसी पुस्तक के कारण इन्हे नोवेल पुरस्कार मिला था, और सन् १९३२ ई० मे 'लिटरेरी प्राइज ऑफ द सिटी ऑफ़ पेरिस' (Literary Prize of the City of Paris) भी इसी की देन था। इनकी इस पुस्तक मे फ्रास मे प्रथम विश्वयुद्ध के पहले के ग्यारह (१९०३-१९१४) वर्षो का वर्णन है। १९१४ ई० मे लड़ाई छिडने के बाद तो फ्रास का जीवन भी अन्य यूरोपीय देशो की भाँति उलट-पुलट गया था।

"यह सच है कि उपन्यासकार ने उन सब जटिल प्रश्नों को, जोकि उसने अपने सामने रखे थे, नही सुलझाया है, परन्तु कुछ परिस्थितियों तथा कुछ विशेष व्यक्तियो की मनोवैज्ञानिक दशाओ का चित्रण बहुत ही रोचक है।"[1]

---

१. देखिये शुख इत्यादि : नोवेल द मैन एण्ड हिज़ प्राइजेज, पृ० १२७।
(Schuk & Sohlman : Nobel The Man & His Prizes, p. 127.)

स्वीडिश आकादमी ने इन्हें पुरस्कार देते हुए कहा था :

"इनकी उस कला-सामर्थ्य और सच्चाई के लिए, जिसके द्वारा इन्होने मानवीय वैषम्य व भिन्नता तथा समकालीन जीवन के कुछ मूलभूत पहलुओं के चित्र अंकित किए हैं" इन्हें यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) डेवेनिर (Devenir)	१९०८
(२) ज्याँ वराय (Jean Barois)	१९१३
(३) ले-थिवाल्ट्स (Les Thibaults)	१९२२-४०
(४) ल गान्फ्ले (La Gonfle)	१९२८
(५) ले टेस्टामेन्ट डु पेयर लेलू (Le Testament du Pere Lelen)	१९२०
(६) वील फ्रांस (Vieille France)	
(७) रिकलैक्शन्स ऑफ आन्द्रे जीद (Recollections of Andre Zide)	१९५३





पर्ल बक

(१८९२-   )

छत्तीसवाँ पुरस्कार आठ वर्ष के अन्दर-अन्दर तीसरी वार अमरीका को प्रदान किया गया। इस वर्ष पुरस्कार पाने वाली पर्ल बक अमरीका की प्रथम लेखिका थी, जिन्हे यह सम्मान प्राप्त हुआ था।

पर्ल वक का जन्म २६ जून, १८८२ ई० को हिल्सवारो (Hillsboro) वेस्ट वर्जीनिया (West Virginia) मे हुआ था। इनके पूर्वज जर्मन, डच और फ्रासीसी थे। इनके माता-पिता मिशनरी थे, इसलिये इनका वचपन एकदम रसहीन रहा था। वचपन मे यह चीन चिंकियाग (Chinkiang) नामक शहर मे, जो याग्ट्सी (Yangtse) नदी के किनारे वसा हुआ है, रहती थी। यह अपने चीनी पड़ोसियो के यहाँ खूव जाती थी, और इनकी चीनी आया (nurse) इनको खूव चीन के किस्से सुनाती थी। सात वर्ष की अवस्था में इन्होने चार्ल्स डिकन्स (Charles Dickens) की रचनाएँ पढ़नी आरम्भ कर दी थी, और इन्ही रचनाओ के कारण यह इगलैण्ड को वहुत प्यार करने लगी थी। कम ही उम्र से यह शघाई (Shanghai) के एक अग्रेजी अखवार मे लिखने भी लगी थी। कालेज के लिए इनको इनकी माँ ने तैयार किया था, और इनको कला तथा सगीत की भी शिक्षा दी थी। इसके वाद इन्होने कुछ दिनों तक रैण्डालफ-मैकान वुमैन्स कालेज (Randolph-Macon Women's College) मे भी शिक्षा पाई थी।

चीन लौटने पर सन् १९१७ में २५ वर्ष की अवस्था में इन्होंने जॉन लासिंग बक (John Lossing Buck) नामक एक मिशनरी से शादी कर ली। शादी के पहले इनका नाम पर्ल सिडेन्स्ट्राइकर (Pearl Sydenstricker) था। अब यह अपने पति के साथ उत्तरी चीन में रहने लगी, जहाँ इन्हें अकाल और डाकुओं के कारण बहुत कष्ट सहने पड़े। इस बीच यह चीनी लोगो से खूब अच्छी तरह परिचित हो गई थी। कुछ दिनो तक इन्होंने नानकिन विश्वविद्यालय (University of Nankin) मे अंग्रेजी साहित्य पढ़ाने का काम भी किया। बाद मे यही काम कुछ दिन तक इन्होंने नेशनल विश्वविद्यालय (National University) में भी किया।

सन् १९२२ ई० में इन्होंने लेख लिखना शुरू किया, और इनका पहला लेख सन् १९२३ ई० में 'अटलान्टिक' (Atlantic) नामक पत्रिका मे प्रकाशित हुआ। एक साल बाद इनकी कहानी 'ईस्ट विण्ड : वैस्ट विण्ड' (East Wind : West Wind) 'एशिया' (Asia) नामक पत्रिका मे छपी। सन् १९३१ ई० मे इनकी रचना 'द गुड अर्थ' (The Good Earth) प्रकाशित हुई। एक वर्ष बाद इस पुस्तक पर इन्हे पुलिट्जर पुरस्कार (Pulitzer Prize) मिला। अब तक विश्व की लगभग सभी समृद्ध भाषाओ मे 'द गुड अर्थ' का अनुवाद हो चुका है।

चीन मे वैंग-लुग (Wang Lung) नाम का एक गरीब किसान था। वह कडी मेहनत से चावल इत्यादि पैदा करके अपना और अपने बाप का पेट पालता था। जब वैंग-लुग को पत्नी की जरूरत हुई, तब वह ह्वाग (Hwang) नामक बडे तथा मशहूर घराने की रसोईघर की दासी ओ'-लान (O'-Lan) को ले आये। वे दोनों अपने खेतों में खूब मेहनत करते थे, क्योकि दोनों ही धरती को बेहद प्यार करते थे। जब ओ'-लान को सन्तान होने वाली होती थी, वह तभी अपने पति से अलग होती थी।

कुछ समय बाद उनके देश में अकाल पड़ता है, और वे लोग दक्षिण की तरफ चले जाते है। रास्ते मे इन्हें बहुत कष्ट उठाने पडते है, यहाँ तक कि वे भीख माँगने के लिए भी मजबूर हो जाते है। वैंग-लुग अपने बूढे बाप को भी ले जाता है। दक्षिण मे क्रान्ति होती है, और एक अमीर आदमी का घर लूटा जाता है। वैंग-लुग को सोना तथा ओ'-लान को हीरा इत्यादि मिलते है। अब ये लोग वापस आते है।

लौटने पर वैंग-लुग फिर खेती शुरू करता है और धन कमाने लगता है। अब वे लोग एक पड़ोसी की मदद लेने लगते है, और उसको नौकर रख लेते

है। इनको अव तीन पुत्र तथा दो पुत्रियाँ भी होती हैं। वैग को अव धन का नशा चढने लगता है। वह अच्छे कपड़े पहनने लगता है और अपनी कुरूप पत्नी से नफरत भी करने लगता है। वह लोट्स नामक वेश्या को लाकर अपने घर में रख लेता है। लोट्स की दासी, जोकि वहुत सुन्दर स्त्री है, को भी वह अपनी रखैल वना लेता है।

उसके दोनों वड़े लड़के शादी करके अपनी-अपनी पत्नियों को घर ले आते है। तीसरा क्रान्तिकारी हो जाता है। मरने के पहले वैग-लुग को मालूम होता है कि उसके लडके उसकी जमीन वेचना चाहते है, क्योकि वे व्यापार करना चाहते है, इससे वैग-लुग को वहुत दुख होता है। इसी उपन्यास का दूसरा भाग 'सन्स' (Sons) और तीसरा भाग 'ए हाउस डिवाइडेड' (A House Divided) है।

सन् १९३५ ई० मे पर्ल वक ने अपने पति को तलाक दे दिया और रिचर्ड जे० वाल्श (Richard J. Walsh) से शादी कर ली। रिचर्ड जे० कम्पनी के डाइरेक्टर है। पर्ल वक की रचनाएँ भी इसी कम्पनी से प्रकाशित हुई है।

सन् १९३३ ई० मे पर्ल वक को येल विश्वविद्यालय (Yale University) से ए० एम० (A. M.) की उपाधि मिली। तीन साल वाद यह नेशनल इस्टीच्यूट आफ आर्ट्स एण्ड लैटर्स (National Institute of Arts & Letters) की सदस्य चुनी गई। इनको इसी प्रकार के और भी सम्मान मिले। इन्होंने एक वार एक भाषण मे कहा था : "मुझे मानना ही पड़ता है कि हम एक अजीव व्यक्ति है, क्योकि सच तो यह है कि हम विना उपन्यास लिखे सुखी नही हो सकते।"

सन् १९३८ ई० मे स्वीडिश अकादमी ने इन्हे पुरस्कार देते हुए कहा :

"इनके चीन के किसानो के यथार्थ जीवन के महाकाव्यीय चित्रण के लिए" इन्हे यह पुरस्कार दिया जाता है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) ईस्ट विण्ड : वैस्ट विण्ड (East Wind : West Wind)	१९३०
(२) द गुड अर्थ (The Good Earth)	१९३१
(३) सन्स (Sons)	१९३२

(४) द यंग रेवोल्युशनिस्ट (The Young Revolutionist) १९३२

(५) द मदर (The Mother) १९३४

(६) ए हाउस डिवाइडेड (A House Divided) १९३५

(७) दिस प्राउड हार्ट (This Proud Heart) १९३८

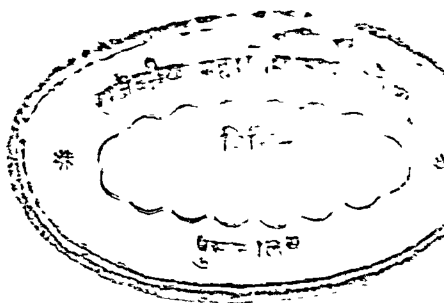
(८) द पैट्रिआट (The Patriot) १९३९

(९) अदर गाड्स (Other Gods) १९४०

(१०) टुडे एण्ड फॉर एवर (Today And For Ever) १९४१

(११) आफ मैन एण्ड विमैन (of Men And Women) १९४१

(१२) फ़ार एण्ड नीयर (Far And Near) १९४८





फ्रान्ज़ एमिल सिलापा

(१८८८–   )

फिनलैण्ड यूरोप के उत्तर मे एक छोटा-सा देश है। इसके पूरब मे रूस, उत्तर में नार्वे और स्वीडन और दक्षिण मे बाल्टिक समुद्र है। इसका क्षेत्रफल केवल १,३२,५८६ वर्ग मील है, और जनसख्या ४,२०,००,०००। इसको भी आज तक भारतवर्ष की तरह केवल दो ही नोबेल पुरस्कार मिले है। पहला सन् १६३६ ई० में फ्रान्ज एमिल सिलापा को साहित्य के लिए, और दूसरा सन् १६४५ ई० में अर्टुरी इल्मरी वर्टानेन (Arturi Ilmari Virtanen) को रसायन-शास्त्र (Chemistry) के लिए।

फ्रान्ज एमिल सिलापा का जन्म १६ सितम्बर, सन् १८८८ ई० में हुआ था। यह फिनलैण्ड के दक्षिण-पश्चिमी कोने पर स्थित हमीनकाइरो (Hameenkyro), पेरिस (Paris) मे पैदा हुए थे। इनके पूर्वज किसान थे, जो अपनी जमीन जोतते-बोते थे, परन्तु इनके पिता के पास जमीन नही थी, फिर भी वह खेती पर ही निर्भर थे। ये लोग बहुत ही निर्धन थे, परन्तु फिर भी माता-पिता की दो सन्तान और हुई थी, पर वह बाल-अवस्था में ही चल बसे। इनके पिता ने धनाभाव होते हुए भी इन्हें टेम्पेअर (Tempere) नामक स्थान पर पढने के लिए भेज दिया। यह पढ़ने में अच्छे थे, अपने मित्रों की (आर्थिक) सहायता से इन्होंने बीस वर्ष की अवस्था में मैट्रिकुलेशन (Matriculation) कर लिया। इसके बाद यह फ़िनलैण्ड की राजधानी हेल्सिगफर्स (Helsingfors) की, इसका नाम हेल्सिकी (Helsinki)

भी है, एलेक्जेण्डर युनिवर्सिटी (Alexander University) मे नैचुरल साइन्स (Natural Science) का अध्ययन करने चले गए। यहाँ इनका गायक सिवेलियस (Sibelius), चित्रकार इरो यानेफेल्ट और लेखक जुहानो आहो (Juhano Aho) से परिचय हुआ जोकि शीघ्र ही मित्रता में परिवर्तित हो गया।

२४ दिसम्बर, १९१३ को विश्वविद्यालय छोड़कर सिलापा अचानक घर लौट आए। इसका कारण इन्होने अपने कर्जदारों की अधीरता वताई थी। अब यह अपने को स्थायी अण्डरग्रेजुएट कहने लगे थे। इस समय यह हैमसन्, जिन्हें १९२० मे और मैटरलिक, जिन्हे १९११ में नोवेल पुरस्कार मिले थे, तथा स्ट्रिण्डवर्ग (Strindberg) से बहुत प्रभावित थे। सन् १९१६ ई० में इन्होने सीग्रिद मारिया सालोमकी (Sigrid Maria Salomaki) नामक एक नौकरानी से शादी कर ली। इन्होने स्वयम् लिखा है कि सीग्रिद की आयु २९ वर्ष होने से पहले ही इन्हे छः सन्तानें हो गई थी। इनका दाम्पत्य जीवन बहुत सुखी था।

सिलापा देखने मे वहुत लम्बे-चौड़े है। इनका वजन २५० पाउण्ड बताया जाता है। यह खाने और विशेप रूप से पीने के शौकीन है। अब इनके सात सन्ताने है, और सवको स्वयम् शिक्षा प्रदान करते हैं। इनको सन् १९३६ ई० मे फिनलैड के विश्वविद्यालय ने डॉक्टर ऑफ़ फिलासफी की ऑनरेरी डिग्री प्रदान करके सम्मानित किया था।

सिलापा ने बीसवी शताब्दी के दूसरे दशक के मध्य में लिखना आरम्भ कर दिया था। लोगों ने भी इनकी रचनाओं को रुचि के साथ पढ़ा। सन् १९१६ ई० में इनका प्रथम उपन्यास 'लाइफ एण्ड सन' प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक से इनका नाम फिनलैण्ड के अच्छे लेखकों में गिना जाने लगा। सन् १९१७ ई० मे इनकी पुस्तक 'चिल्ड्रन ऑफ मैनकाइण्ड इन द मार्च ऑफ़ लाइफ' (Children of Mankind In the March of Life) प्रकाशित हुई। इस पुस्तक से इनकी ख्याति और फैली, परन्तु दो वर्ष बाद सन् १९१९ ई० मे जब इनका उपन्यास 'मीक हैरिटेज' (Meek Heritage) प्रकाशित हुआ, तव तो इनका नाम फ़िनलैण्ड के साहित्यकारों की सूची मे शीर्ष स्थान पर पहुँच गया। 'मीक हैरिटेज' में इन्होंने अपने देश के गृह-युद्ध का वर्णन किया है। इस पुस्तक के प्रकाशित होने पर सरकार की तरफ़ से इनको आजन्म पेन्शन देते रहने की व्यवस्था कर दी गई।

इसके वाद इनकी रचनाएँ बराबर प्रकाशित होती रही। सन् १९२० ई०

में 'माई डियर फ़ादरलैण्ड' (My Dear Fatherland) नामक कहानी-संग्रह, सन् १६२३ में एक लड़की की प्रेम-कहानी और उसकी आत्म-हत्या 'हिल्डा और रैग्नर' (Hilda And Ragner), सन् १६२४ ई० में 'फ्राम द लेविल ऑफ़ द अर्थ' (From the Level of the Earth) और सन् १६२५ ई० में 'टालिन्माकी' (Tollinmaki) प्रकाशित हुई। सन् १६३१ ई० में 'मेड सिल्जा' (Maid Silja) प्रकाशित होते ही इनका यश यूरोप-भर में फैल गया।

सिलापा ने अपनी रचनाओं में अपने देश फिनलैण्ड के किसानों के जीवन के बड़े जीवन्त और मार्मिक चित्र उभारे है। इनकी रचनाओं में कविता का आभास भी मिलता है। इनको मनुष्य के सामाजिक जीवन के लिए बहुत दुख है, क्योंकि इनका विश्वास है कि मनुष्य अपने ही कर्मो द्वारा दुखी होता है। इनके ऊपर जर्मन लेखक स्पेंगलर (Spengler) की पुस्तक 'डिक्लाइन ऑफ़ द वेस्ट' (Decline of the West) (१६२३) का बडा प्रभाव पड़ा। इन्होंने बालोपयोगी छोटे-छोटे लेख भी लिखे है। इनकी पुस्तक 'फिफ्टीन्थ' (Fifteenth) (१६३६) से इनके दार्शनिक, कवि, ज्ञानी तथा फिनलैण्ड की सस्कृति (Culture) के प्रतिनिधि होने का प्रमाण मिलता है।

सिलापा की दो और पुस्तके उल्लेखनीय हैं—'वन मैन्स वे' (One Man's Way) (१६३२), जिसमें इन्होंने एक जवान किसान, जोकि अपनी युवावस्था की प्रेयसी को छोड़कर एक धनी परन्तु रोगी स्त्री से शादी कर लेता है, और 'पीपुल इन द समर नाइट' (People In the Summer Night) (१६३४), जिसमे प्रकृति के सौन्दर्य तथा शक्ति का दैवी बखान है।

सिलापा लिखते तो केवल फिनिश भाषा में ही है, परन्तु यह स्वीडिश बोलते है और इनकी पुस्तकें स्वीडन में बहुत प्रचलित है। जब इनको सन् १६३६ ई० में पुरस्कार दिया गया, तब फ़िनलैण्ड और रूस में युद्ध चल रहा था, जिसका उत्तरदायित्व रूस ही पर था। इस कारण हो सकता है कि स्वीडिश अकादमी के सदस्यों के मन में यह भावना रही हो कि इस वर्ष फ़िनलैण्ड को सम्मानित किया जाय।

स्वीडिश अकादमी ने इन्हें पुरस्कार देते हुए कहा था :

"अपने देश के खेतिहर जीवन और प्रकृति के एक-दूसरे के साथ सम्बन्धों को अच्छी तरह समझने तथा उन्हे कलात्मक ढंग से अंकित करने के लिए" इन्हें यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) लाइफ़ एण्ड सन (Life And Sun)	१९१६
(२) मीक हैरिटेज (Meek Heritage)	१९१९
(३) चिल्ड्रन ऑफ़ मैनकाइण्ड इन द मार्च ऑफ लाइफ़ (Children of Mankind In The March of Life)	१९१७
(४) माइ डियर फादरलैण्ड (My Dear Fatherland)	१९२०
(५) फ्राम द लेविल ऑफ़ द अर्थ (From The Level of The Earth)	१९२४
(६) टालिन्मकी (Tallinmaki)	१९२५
(७) द मेड सिल्जा (The Maid Silja)	१९३१



जोहान्स विल्हेम जेन्सेन

(१८७३–१९५०)

द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ जाने के कारण सन् १९४० ई० से सन् १९४३ ई० तक कोई भी नोबेल पुरस्कार नहीं दिया जा सका। परन्तु नियमानुसार पाँच वर्ष में कम-से-कम एक बार यह पुरस्कार देना अनिवार्य है, इस कारण बहुत लिखा-पढ़ी के बाद सन् १९४४ ई० में यह पुरस्कार डेनमार्क के ७१ वर्षीय जोहान्स विल्हेम जेन्सेन को प्रदान किया गया। डेनमार्क को पुरस्कार मिलने का यह दूसरा अवसर था, क्योंकि सन् १९७१ ई० में यह पुरस्कार दो लेखकों कार्ल एडाल्फ़ ग्येलेरुप (Karl Adolph Gjellerup) और हेनरिक पोण्टोपिदान (Hentik Pontoppidan) में बराबर-बराबर बाँटा गया था। इस प्रकार जेन्सेन तीसरे डेनिश लेखक थे जो स्वीडिश अकादमी द्वारा सम्मानित किये गए थे।

जोहान्स विल्हेम जेन्सेन डेनमार्क के मुख्य भाग, उत्तरी जटलैण्ड (North Jutland) में २० जनवरी, सन् १८७३ को एक किसान-परिवार में पैदा हुए थे। इनके पिता पशु-चिकित्सक थे। जोहान्स ने विबार्ग (Viborg) के एक स्कूल में शिक्षा पाई थी और उसके बाद वह नार्वे की राजधानी कोपेनहेगेन (Copenhagen) के विश्वविद्यालय में चिकित्साशास्त्र का अध्ययन करते चले गए थे। परन्तु वह विश्वविद्यालय की शिक्षा पूरी किए बिना ही विश्वविद्यालय छोड़कर देशाटन पर निकल गए और अपना समय लिखने में बिताने लगे। इस बीच हालांकि वह

कई बार अमरीका जा चुके थे, जब इनको सन् १६४४ में नोबेल पुरस्कार मिला तो अमरीका की जनता को बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि लोग जेन्सेन के नाम से परिचित ही नही थे।

धर्म में यह स्वाधीन विचारों के थे। इन्होने अपने देश मे कई अमरीकी लेखकों का प्रचार कराया है, जिनमें वाल्ट ह्विटमैन (Walt Whitman) और अर्नेस्ट हैमिंगवे (Ernest Hemingway) विशेष उल्लेखनीय है।

जेन्सेन को आखेट तथा खेल-कूद का बड़ा शौक है, और यह अपना समय कई प्रकार से व्यतीत करते है। यह मूर्ति कला, लोहारी राजगीरी (Mason) और लकड़ी पर नक्काशी करने के शौकीन है। इन्होने वायलिन भी बनाये हैं। इनकी शादी हो चुकी है और इनके तीन पुत्र भी हैं, जिनमें से दो चिकित्सक है। यह नाटे कद के आदमी है, और अपने देश ही मे 'अमरीकी' समझे जाते हैं।

२५ नवम्बर, सन् १६५० ई० को ७७ वर्ष की अवस्था में कोपनहेगेन में इनका देहान्त हो गया।

जेन्सेन को अमरीका बहुत प्रिय है और इनके दो प्रारम्भिक उपन्यासों का घटनास्थल भी शिकागो (Chicago) में है। इनकी प्रथम पुस्तक सन् १८६६ ई० मे प्रकाशित हुई थी, परन्तु साहित्य मे इनका नाम 'हिम्मरलैण्ड स्टोरीज़' (Himmerland Stories) नामक पुस्तक के प्रकाशन के बाद हुआ। इनका नाम अपने देश डेनमार्क मे तो जल्दी ही हो गया था, परन्तु और देशों मे इनकी ख्याति इनकी छः भागो मे प्रकाशित होने वाली 'द लांग जर्नी' (The Long Journey) नामक पुस्तक के प्रकाशन के बाद ही फैल पायी। हिम-युग (Ice Age) से लेकर कोलम्बस के समय तक का वर्णन है। यह पुस्तक सन् १६०८ ई० में आरम्भ की गई थी। इसके लिए जेन्सेन ने एशिया के कई देशों और यूरोप का भ्रमण कर सामग्री जुटाई थी।

'द लाग जर्नी' मे इतिहास और काल्पनिक घटनाओं का अद्भुत मिश्रण है। इसमें जो विचार प्रकट किये गए है वे वैज्ञानिक रूप से सच नही है, पर फिर भी यह पुस्तक यूरोप की महान् रचनाओं में गिनी जाती है।

जेन्सेन ने उपन्यास, कविता, तथा नाटक की रचना की है। इन्होने 'हैमलेट' (Hamlet) का डैनिश (Danish) भाषा में अनुवाद भी किया है। इन्होंने लेख (Essay) भी लिखे है, और यह दार्शनिक माने जाते है। पत्रकारो मे इनका स्थान बहुत ऊँचा है। इन्होने डारविन के जाति-विकास के सिद्धान्त—विकासवाद (Darwinism)—का प्रचार अपने देश मे किया था। चिकित्सा-शास्त्र की ओर भी इनका ध्यान सदैव रहता है। इन्होंने अपने देश के साहित्य

को यूरोप की निगाह मे काफी ऊँचा उठाया है। सब मिलाकर इनके लगभग ६० ग्रन्थ प्रकाशित हुए है।

सन् १९४४ ई० में स्वीडिश अकादमी ने पुरस्कार देते हुए कहा था :

"इनकी कवित्वमय कल्पना-शक्ति की दुर्लभ शक्ति और उर्वरता के लिए जिसके साथ बौद्धिक जिज्ञासा व उत्कण्ठा का विशाल क्षेत्र तथा सर्जनात्मक शैली की साहसिकता और ताजगी व नवीनता भी जुड़ी हुई है," इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) पीपुल ऑफ द हिम्मरलैण्ड (People of The Himmerland)	१८९८
(२) न्यू टेल्स फ्राम हिम्मरलैण्ड (New Tales From Himmerland)	१९०४
(३) हिम्मरलैण्ड शिस्टोरियर (Himmerland Shistorrier)	
(४) ट्रेडि सैमूलिग (Tredie Samling)	१९१०
(५) सिगापुर स्टोरीज (Singapore Stories)	१९०७
(६) मिथ्स (Myths)	१९०७, १९०८, १९१०, १९१२, १९२४
(७) ईयर बुक (Year Book)	१९१६, १९१७
(८) द फ़ाल ऑफ़ किग्ज़ (The Fall of Kings)	१९००-१
(९) मैडम ड ओरा (Madam d'Ora)	१९०४
(१०) द ह्वील (The Wheel)	१९०५
(११) पोयम्स (Poems)	१९०६
(१२) द लांग जर्नी (६ भाग) (The Long Journey)	
अ—द लौस्ट लैण्ड (The Lost Land)	१९१९
ब—फायर एण्ड स्वोर्ड (Fire And Sword)	१९०८
स—नार्ने गेस्ट (Norne Gaest)	१९१९
द—द ट्रेक ऑफ़ द सिम्ब्रियन्स (The Trek of The Cimbrians)	१९२२
घ—द शिप (The Ship)	१९१२
च—क्रिस्टोफ़र कोलम्बस (Christopher Columbus)	१९२१



गेब्रीला मिस्त्राल

(१८८६–१९५७)

साहित्य का नोबेल पुरस्कार पाने का सौभाग्य १९४५ में चिली को प्राप्त हुआ। चिली (Chile) दक्षिणी अमरीका का एक अंग है। चिली का इतिहास अपने आपमें बड़ा ही विचित्र है। यहाँ के निवासी पीरू (Peru) के इंका (Inca) थे। सन् १५४१ ई० में वाल्डीविया नामक स्पेन के बाशिन्दे ने इस देश पर हमला किया और नौ वर्ष के संघर्ष के बाद इसको जीत लिया। तब यह स्पेन का उपनिवेश हो गया, परन्तु सन् १८१० ई० में चिली ने स्पेन के विरुद्ध झण्डा खड़ा किया और आठ वर्ष बाद स्वाधीन हो गया। इसका क्षेत्रफल २,९०,१९५ वर्ग मील है। यह देश २,६०० मील लम्बा है, परन्तु कहीं भी १०० मील से अधिक चौडा नहीं है। यह दक्षिणी अमरीका के पश्चिम में प्रशांत महासागर के किनारे पर स्थित है।

चिली में स्पैनिश प्रभाव है। यहाँ की बोली स्पैनिश है और धर्म रोमन कैथालिक है।

आज तक चिली को एक ही नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ है, और वह भी एक स्त्री को। यह पुरस्कार पाँचवी बार किसी लेखिका को मिला था। इस बार की विजेता थी गेब्रीला मिस्त्राल। इनका वास्तविक नाम था लुसिला गाडाय वाई अल्कायागा (Lucila Godoy y Alcayaga)।

गेब्रीला मिस्त्राल का जन्म ७ अप्रैल, १८८९ को विकुना नामक एक छोटे-से शहर में हुआ था। इनके पिता का नाम ज़ेरोनिका गाडाय विलानुएवा,

(Jeronica Godoy Villanueva) और माँ का पेट्रोलिना अल्कायागा (Petrolina Alcayaga) था। इनके पूर्वज स्पैनिश, वास्क और इण्डियन (Spanish, Basque and Indian) थे। इनके पिता गाँव के अध्यापक थे और किसी समारोह या उत्सव के अवसर पर यदा-कदा कविताएँ भी लिख लिया करते थे। गेब्रीला मिस्त्राल की प्रारम्भिक शिक्षा इनके गाँव के स्कूल मे हुई थी और पन्द्रह वर्ष की अल्प अवस्था मे ही यह गरीब बच्चों को पढ़ाने लगी थी। बाद मे यह सैंटिआगो (Santiago) के पैडेगाजिकल कालेज (Pedagogical College) मे पढने चली गई, और फिर स्कूल में पढ़ाने लगी। तेईस वर्ष की अवस्था में यह इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल्स नियुक्त हो गई और फिर ६ वर्ष के लिए लिसियो डे लास एडीज (Liceo de Los Andes) में प्रोफेसर के पद पर इनकी नियुक्ति हो गई। सन् १९१८ ई० से सन् १९२२ ई० तक यह तीन स्कूलों में स्पैनिश की निदेशक और प्रोफेसर (Director and Professor of Spanish) थी। इन्होंने लाइब्रेरी का भी संगठन किया। सन् १९३१ मे यह बर्नार्ड कालेज (Bernard College) में स्पेन के इतिहास और साहित्य की प्रोफेसर होकर अमरीका गई। सन् १९३३ ई० मे यह मैड्रिड में चिली की कान्सल होकर गई, और इसी तरह यह लिस्बन (Lisbon), जेनेवा (Geneva) और नेपल्स (Naples) भी गई। सन् १९५७ ई० मे ६८ वर्ष की आयु मे इनका देहान्त हो गया।

इन्होंने काफ़ी कम उम्र में ही लिखना शुरू कर दिया था। सन् १९०७ ई० मे 'ला वाज डे एल्की' (La Voz de Elgui) कविता से इन्हे कुछ ख्याति मिली। यह कविता एक दुखद प्रेम-घटना पर आधारित है। सन् १९१४ ई० मे इनको इनकी तीन 'सानेट्स ऑफ़ डेथ' (Sonnets of Death) पर एक पुरस्कार भी मिला। इन तीनों कविताओं को इन्होंने अपने असली नाम से न भेजकर अपने उपनाम (जिसे छद्मनाम भी कहा जाता है) ग्रेब्रीला मिस्त्राल मे भेजा। अपने दो प्रिय कवियों—गेब्रिअल डिएन्नन्ज़ियो (Gabriel d'Annunzio) इटली और फ्रेडरिक मिस्त्राल (Frederik Mistral) के नामों का आदि और अन्त मिलाकर अपना यह नया नाम बनाया था। इनकी पुस्तक 'डेसोलेसियों' (Desolacion) न्यूयार्क के स्पैनिश इन्स्टिट्यूट (Spanish Institute) द्वारा प्रकाशित की गई थी। इसके बाद तो समय-समय पर इनकी और भी रचनाएँ प्रकाशित होती रही। इनके ऊपर बाइबिल, टेगोर, मेक्सिको के लेखक अमडो नर्वो (Amado Nervo) और निकारागुआ (Nicaragua) के रूबेन डारिओ (Ruben Dario) का प्रभाव स्पष्ट है।

इनके विषय में ऐंडर्स आस्टलिग (Anders Osterlıng) ने 'नोबेल द मैन एण्ड हिज प्राइजेज' नामक पुस्तक मे लिखा है :

"गेब्रीला मिस्त्राल की कविताएँ, जिनसे पहले स्वीडन-निवासी एकदम अपरिचित थे, जब कवि जाल्मर गुलबर्ग (Hjalmar Gullberg) द्वारा स्वीडिश भाषा में अनूदित की गई तो उसका भाग्य जाग उठा। गुलबर्ग के अनुवाद में इनकी कविताओं की वास्तविक शक्ति, कोमलता और उनका आवेश उजागर हो उठा। इनकी रचनाओं की सख्या यद्यपि अधिक नही है फिर भी उनमे बहुत-सी ऐसी कविताएँ है जिनमें एक सवेदनशील हृदय से निकली हुई लगभग सभी भावनाओं को वाणी मिली है और वे एक शक्तिशाली और कलाहीन व्यक्तित्व से सम्बन्ध स्थापित करती है। ये कविताएँ आपको इसका विश्वास दिला देती है कि आप किसी एक ऐसे अज्ञात और सुदूर-स्थित देश की विश्वसनीय आवाज सुन रहे है जो यूरोप की अतिशयोक्तियों और अधानुसरण जोकि दक्षिण अमरीका के अगणित कवियो में आसानी से खोजे जा सकते है, से सर्वथा मुक्त है।"[1]

इन्हें पुरस्कार देते हुए स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"इनके काव्यमय गीतों के लिए, जो शक्तिशाली भावनाओ से प्रेरित होते है और जिन्होने इनके नाम को सम्पूर्ण लैटिन अमरीकी जगत की आदर्शमय आकाक्षा का प्रतिरूप बना दिया है। इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।"

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) ला वाज डे एल्गुइ (La Voz de Elgui)	१६०७
(२) सानेट्स आफ डैथ (Sonnets of Death)	१६१४
(३) डेसोलासियों (Desolacion)	
(४) टर्नुरा (Ternura)	
(५) प्रेगुन्टाज-नब्ज ब्लांकाज-ला आरेसियो डेलामिस्ट्रा (Preguntas-Nubes Blancas-La Oracion de la Mastra)	१६३०

१. पृ० १३०।



हरमन हेस
(१८७७–१९६२)

सन् १९४ मे हरमन हेस को नोबेल पुरस्कार प्रदान करके स्वीडिश अकादमी ने यूरोप के छोटे, किन्तु रमणीक देश स्विटजरलैण्ड को दूसरी बार सम्मानित किया था। सन् १९१९ ई० मे कार्ल स्पिटलर ने यह पुरस्कार पाकर पहली बार अपने देश का स्थान साहित्य-जगत् मे ऊँचा किया था। अब तक और किसी स्विटजरलैण्ड निवासी को साहित्य का नोबेल पुरस्कार नही मिल पाया है। परन्तु यह स्मरणीय है कि अन्य क्षेत्रो मे स्विटजरलैण्ड को बहुत से पुरस्कार मिल चुके है।

इस बार के साहित्य नोबेल पुरस्कार विजेता का इतिहास अन्य विजेताओ से कुछ भिन्न है।

हरमन हेस ने स्वय अपने विषय मे लिखा है

"मै काल्व (Calw) ब्लैक फारेस्ट (Black Forest) मे पैदा हुआ था। मेरा खानदान प्रोटेस्टैण्ट धर्मावलम्बी था और मेरे सम्बन्धी उपदेशक, पादरी, चिकित्सक और मिशनरी थे, और चूकि मेरा खानदान कई राष्ट्रों का मिश्रण था, इस कारण मुझमे राष्ट्रीय भावना कुछ कम ही थी। मैने दो बार अपनी राष्ट्रीयता बदली है, और आज मै स्विस नागरिक हूँ। मै स्विस लोगो को अर्ध-देवता न समझते हुए अपने राजनीतिक स्टेट का पुजारी और उपासक हूँ। मेरे स्कूल के दिन और युवावस्था जर्मनी और स्विटजरलैण्ड मे विभाजित थे, और सन् १९१२ ई० से मै निरन्तर स्विटजरलैण्ड मे रहता आया हूँ। लड़कपन

में मुझे मिनिस्ट्री (Ministry) के लिए बुलाया गया। लेकिन इस पेशे से मैने शीघ्र ही अपना नाता तोड लिया। कई साल तक किताबे और पुराने समय की चीजें बेचता रहा था। सन् १८६६ ई० से अब तक अपनी कई पुस्तके भी प्रकाशित करा चुका हूँ। अपने प्रथम उपन्यास 'पीटर कामेनजिण्ड'—१६०४ (Peter Camenzind) की सफलता के उपरान्त मैंने केवल साहित्य को ही अपनी आजीविका बना लिया है।

"अपनी युवावस्था मे मैं बहुत से देशों का भ्रमण कर चुका हूँ। सन् १६११ ई० मे मैं भारतवर्ष मे था, और इस प्रकार मैंने अपने मिशनरी पिता और पितामह की प्राचीन रीति को आगे बढ़ाया है। मेरे पितामह को भारत के विषय में धुरन्धर विद्वान समझा जाता था। प्राचीन हिन्दुओ तथा प्राचीन चीनियो के अध्ययन का मेरे ऊपर उतना ही प्रभाव पडा है जितना कि निर्मल ईसाई मत का जो कि मेरे माता-पिता के घर मे छाया रहता था। मेरा राजनीतिक मत लोकतन्त्रवादी (democrat) का मत है, और मेरा विश्व-दृष्टिकोण एक व्यक्तिवादी (individualist) का। जिस वस्तु ने मेरे सम्पूर्ण जीवन को घेर रखा है, मुझे आकर्षित किया है और वास्तव मे बनाया है, वह सामाजिक प्रश्न नही थे, वरन् एक व्यक्ति के प्रश्न थे। नये इतिहास के व्यक्तित्व को बहुमत के सुख के नीचे दबाने से मै बहुत घृणा करता हूँ।

"मेरी पुस्तके, जिनमे कई पूर्णत गीता-सम्मत है, बिना किसी ध्येय या उद्देश्य के लिखी गई है। अपनी पुस्तकों द्वारा मेरा सम्पर्क अपने नवयुवक पाठको से हो गया है, और मैं उनका सलाहकार (Counsellor) बन गया हूँ।

"मेरी बहुत-सी पुस्तके स्कैन्डिनेवियन (Scandinavian) और स्लैविक (Slavic) भाषा में, कई जापानी मे, और कुछ फ्रांसीसी और अंग्रेजी में अनूदित हो चुकी है। बागबानी और पानी के रंगों से चित्र बनाना मेरे शौक हैं। सन् १६१६ ई० से मैं स्विटजरलैण्ड के मोग्टानोला (Montagnola) नामक शहर मे रहा हूँ। मैं आठ वर्ष से एक कविता लिख रहा हूँ।"

सन् १६०४ ई० मे इन्होंने बासेल (Basel) की मारिया बर्नूली (Maria Bernoulli) नामक युवती से विवाह कर लिया था। इस विवाह से इनको तीन पुत्र भी हुए। परन्तु सन् १६२३ ई० में इन दोनो में तलाक हो गया। हरमन हेस ने सन् १६३१ मे दूसरी शादी कर ली। इनकी दूसरी पत्नी का नाम निनान औस्लैण्डर (Ninon Auslaender) है।

इनके विषय में स्विटजरलैण्ड के दूतावास से निम्नलिखित सूचना प्राप्त हुई है :

"हरमन हेस वर्तमान समय के सर्व-प्रसिद्ध तथा उच्च कोटि के लेखकों में है। अग्रेजी भाषा बोलने वाले देशो मे इनकी रचनाओं में रुचि बढती जा रही है। टी० एस० इलियट ने अपनी कविता 'द वेस्ट लैण्ड' (The Waste Land) के नोट्स (Notes) मे इनकी रचनाओं को उद्धृत किया है। कालिन विल्सन (Colin Wilson) ने अपनी पुस्तक 'द आउटसाइडर' (The Outsider) मे इनके उपन्यास 'दर स्टेपेनउल्फ (Der Steppenwolf) की विवेचना की है। इनकी कई रचनाएँ पिछले तीस वर्षो मे विशेष रूप से सन् १९४५ ई० के बाद अग्रेजी मे अनूदित हो चुकी है।

इनकी मा फ्रेन्च-स्विस (French-Swiss) थी। यह स्कूल के दिनो मे बहुत दुखी थे। इनका विश्वास था कि एक व्यक्ति को अपना जीवन शान्तिमय रूप से व्यतीत करने का पूर्ण अधिकार है। यह शान्तिप्रिय हैं, और अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता के उपासक। इस विषय में इनका मत रोमाँ रोलाँ से बहुत मिलता है, और ये दोनो ही सगीत के भी प्रेमी है।

सन् १९४६ ई० मे स्वीडिश अकादमी ने इनको पुरस्कार प्रदान करते हुए कहा था : "इनकी प्रेरणा-युक्त रचनाओं के लिए, जोकि साहस तथा गहराई मे बढने के साथ ही, क्लैसिकल मानव-आदर्शो और शैली के उच्चकोटि के गुणो का भी उदाहरण है इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।"

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) पीटर कैमेन्जिण्ड (Peter Camenzind)	१९०४
(२) अन्टर्म राड (Unterm Rad)	१९०५
(३) गर्ट्रूड (Gertrud)	१९१०
(४) राशल्डे (Rosshalde)	१९१४
(५) नल्प (Knulp)	१९१५
(६) डेमियन (Demian)	१९१९
(७) मार्चेन (Marchen)	१९१९
(८) क्लिगसार्स लेट्जर सोमर (Klingsors letzer Sommer)	१९२०
(९) सिद्धार्थ (Siddhartha)	१९२२
(१०) डास ग्लास्परलेन्स्पाएल (Das Glasperlenspiel)	१९४३



आन्द्रे ज़ीद
(१८६९–१९५१)

आन्द्रे जीद का जीवन इस बात का प्रमाण है कि नोबेल पुरस्कार प्रदान करते समय लेखक के व्यक्तिगत जीवन पर कोई ध्यान नही दिया जाता, क्योंकि सन् १९४७ ई० में ७८ वर्ष की अवस्था मे जब इन्हे यह पुरस्कार देने की घोषणा की गई तो इनके जीवन के केवल चार वर्ष रह गये थे, और इनकी युवावस्था उन्ही दोषो से रँगी थी जिसके कारण इगलैंड के प्रसिद्ध लेखक आस्कर वाइल्ड (Oscar Wilde) को सन् १८९५ ई० मे दो वर्ष की कडी सजा दी गई थी, अस्तु।

आन्द्रे ज़ीद के आठवें लेखक थे, जिन्होने, ठीक दस वर्ष बाद अपने तथा अपने देश के लिए यह सम्मान प्राप्त किया था। इनका जीवन दूसरे नोबेल पुरस्कार-विजेताओं से कुछ भिन्न ही रहा है।

आन्द्रे ज़ीद का पूरा नाम आन्द्रे पाल गिलाम जीद (Andre Paul Guillaume Gide) था। इनके पूर्वज किसान थे। इनके पिता का नाम पाल जीद (Paul Gide) था और वह कानून के प्रोफेसर थे। इनकी माँ का नाम जुलियेट राण्डो (Juliet Rondeaux) था। वह एक अमीर घराने की पुत्री थी। पाल जीद फ्रांसीसी प्रोटेस्टेण्ट ईसाई थे और माँ जिसमें कुछ कैथलिक (Catholic) मिश्रण भी था, प्रोटेस्टेण्ट धर्मावलम्बी। सन् १८७७ ई० मे जब आन्द्रे केवल आठ वर्ष के थे, पाल जीद का देहान्त हो गया। फलस्वरूप आन्द्रे

ज़ीद के पालन-पोषण का भार तीन औरतो पर पडा। इनकी माँ को सदैव इस बात का डर बना रहता था कि उनके उत्तरदायित्व मे कही कोई गलती तो नही हो रही है। इस कारण आन्द्रे जीद की शिक्षा बडे अनियमित रूप से हुई। अधिकतर इन्होने प्राइवेट ट्यूटर (Private Tutor) से ही पढ़ा। इन ट्यूटर्स मे एक मोशाय डि लानू (M. de Lanux) भी थे, जिन्होने आन्द्रे जीद का परिचय यूरोप के सुप्रसिद्ध सगीतकार बाख (Bach) और शूमैन् (Schumann) से कर दिया था। उन दोनो का आन्द्रे पर बहुत प्रभाव पडा, जिसे उन्होने स्वय भी स्वीकार किया है।

सन् १८९० ई० मे आन्द्रे जीद ने स्कूल छोड दिया। अब आन्द्रे जीद थे, एक छोटा-सा घर था और था उनका पिआनो (Piano)। इस समय इनकी अवस्था लगभग २१ वर्ष थी और इनके जीवन मे धर्म तथा कामुकता का सघर्ष चलने लगा था। इसके फलस्वरूप इनकी पहली पुस्तक 'कहिअर्स द आन्द्रे वाल्टर' (Cahiers d' Andre Walter) प्रकाशित हुई। इनको अब स्टीफेन मलार्मे के यहाँ मगल की शाम को होने वाली पार्टियो का निमन्त्रण भी मिलने लगा। अब यह अपना अधिकाश समय साहित्य-साधना मे लगाने लगे थे। इन्होने दो-एक पत्रिकाएँ भी निकाली थी।

सन् १८९३ ई० मे यह अपने मित्र पाल एल्बर्ट लारेस के साथ अफ्रीका गये। यहाँ का इनका जीवन अत्यधिक अवर्णनीय है, और सदा के लिए इनको तथा इनके मित्र को कलुषित करता है। इन्ही दिनो इन्हे तपेदिक हो गई और डॉक्टरो ने इन्हे यूरा पहाड (Jura Mountain) पर भेज दिया। वहाँ से यह पेरिस आये, परन्तु फौरन ही वापस अफ्रीका चले गए, क्योकि अब इनके लिए सभ्य समाज मे रहना कठिन हो गया था। ब्लीडाह (Blidah) मे इनकी भेट आस्कर वाइल्ड (Oscar Wilde) और उनके मित्र लार्ड एल्फ्रेड डगलस (Lord Alfred Douglas) से हुई। सन् १८९५ ई० मे इनकी माँ का देहान्त हो गया और इन्हे बहुत-सा धन मिला।

इसी वर्ष (सन् १८९५ ई०) इन्होने अपनी एक सम्बन्धी मैडेलीन से विवाह किया, और उनके साथ अल्जेरिया चले गए। इतना कहना पर्याप्त होगा कि आन्द्रे जीद और उनकी पत्नी का जीवन दाम्पत्य जीवन नही था, और इन दोनो मे अन्त तक सघर्ष चलता रहा था। इस सघर्ष और झगडे के लिए वास्तव मे स्वयं आन्द्रे जीद ही जिम्मेदार थे। अपने जीवन मे आद्रे जीद ने यूरोप-भर का देशाटन किया था और जीवन के सभी प्रकार के आनन्द लूटे थे। इन्होने उम्र भी काफ़ी लम्बी पाई थी। १९ फरवरी, सन् १९५१ ई० को पेरिस मे इनका देहान्त हो गया।

आन्द्रे जीद को लेखक के रूप में देखने और आँकने के लिए समय और स्थान की आवश्यकता है। इनकी अधिकाश रचनाएँ इनके अपने ही जीवन वृत्त पर आधारित है। इनके जीवन मे धर्म और कामुकता में अन्त तक सघर्ष चलता रहा। जो कुछ भी इनको अनुभव होता था, उसे यह साहित्य के रूप में प्रस्तुत कर देते थे। इनकी प्रथम पुस्तक 'ले काहियर्स द आन्द्रे वाल्टर' (Les Cahiers d'Andre Walter) मे भी यही प्रसग है। इनकी दूसरी पुस्तक 'ट्रेट दु नार्सी' (Traite du Narcisse) है, जोकि इनके और पाल वालरी (Paul Valery) के आपस के वार्तालाप पर आधारित है। इसके बाद सन् १९२७ ई० तक इन्होंने कोई विशेष महत्त्व की रचना नही प्रदान की। सन् १९२७ ई० में इनकी दो पुस्तके 'वायेज अ कागो' (Voyage au Congo) और 'रिट्रर दु शाद' (Retour du Tahad) प्रकाशित हुई। इनकी दोनों ही पुस्तकों की कथावस्तु फ्रास द्वारा अफ्रीका पर किए गए अत्याचारों पर आधारित है। अपनी तीन पुस्तकों, 'द इम्मारलिस्ट' (The Immoralist), 'स्ट्रेट इज द गेट' (Straight Is The Gate) और 'टू सिमफनीज' (Two Symphonies) में इन्होने अपने जीवन के सघर्ष को अकित किया है। यह स्मरणीय है कि इन तीनो मे से पहली पुस्तक सन् १९०२ ई० मे और तीसरी प्रथम विश्वयुद्ध के बाद सन् १९१९ ई० मे प्रकाशित हुई थी। फरवरी, सन् १९०९ ई० मे इन्होने अपने कुछ साहित्यिक मित्रो के साथ 'नूवेल रेव्यू फ्रासे' (Nouvelle Revue Francaise) नामक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया जो कि प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यूरोप की सर्व-प्रसिद्ध आलोचनात्मक पत्रिका मानी जाने लगी। यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य था, क्योंकि इसके द्वारा एक तो गलीमार्ड (Gallimard) प्रकाशन स्थापित हुआ, और दूसरे आन्द्रे जीद ने इसके माध्यम से कई नये लेखकों और उनकी कला को प्रोत्साहन दिया। इनमे श्लम्बर्जर (Schlumberger), ऐलेन फर्नियर (Alain Fournier), काक्टो (Cocteau), ज्या रिचर्ड ब्लाख (Jean-Richard Bloch), रोजर मार्ते दु गार (Martin du Gard), यूल्स रोमा (Jules Romain) और ज्या गिरादो (Jean Giraudoux) विशेष उल्लेखनीय है। इनकी रचना 'द वेटिकन स्विण्डिल' (The Vetican Swindle) भी सन् १९१४ ई० मे इसी पत्रिका मे प्रकाशित हुई थी।

आन्द्रे जीद ने नाटक, जीवनी, लेख, आलोचना, आत्मकथा, यात्रा-विवरण आदि सभी विधाओ में लिखकर साहित्य का कोष भरा है। अपनी रचनाओं द्वारा यह न केवल फ्रास मे वरन् यूरोप और अमरीका मे भी ख्याति पा चुके है। इन्होने मनुष्य के जीवन के उस पहलू पर प्रकाश डाला है जो

अवितर गोप्य समझा जाता है—जैसे कि पुरुष-मैथुन या रति-क्रिया। इनके जीवन में बीसवीं शताब्दी के यूरोप के एक तीक्ष्ण बुद्धि वाले जीवन की झलक मिलती है। फिर भी इनकी रचनाओं में आदर्शमयी प्रवृत्ति (Idealist tendency) कही नही मिलती जोकि नोबेल के वसीयतनामे के अनुसार पुरस्कार दिए जाने की एक शर्त थी। इनके जर्नल्स (Journals—१८८६-१९३६) भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

सन् १९४७ ई० में इन्हे पुरस्कार प्रदान करते हुए स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"इनकी पूर्ण और कलात्मक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रचनाओं के लिए, जिनमें मानव-जाति की समस्याओं और स्थितियों को यथातथ्य रूप में बड़ी निडरता, सच्चाई और निराकिल मनोवैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि के साथ प्रस्तुत किया गया है इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।"

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) प्रामट्यूस इल्बाउण्ड (Prometeus Illbound)	
(२) स्ट्रेट इज़ द गेट (Straight Is The Gate)	१९०९
(३) द वेटिकन स्विण्डिल (The Vetican Swindle)	१९१४
(४) द काउण्टरफीटर्स (Vhe Counterfeiters)	१९२६
(५) द इम्मारलिस्ट (The Immoralist)	१९०२
(६) टू सिमफ़नीज़ (Two Symphonies)	१९१९
(७) इफ़ इट डाई (If It Die)	१९२६
(८) द जर्नल्स (The Journals)	
(९) कारीडान (Corydon)	



टी० एस० इलियट

(१८८८–१९६६)

सन् १९३३ ई० में इगलैण्ड के गाल्सवर्दी को नोबेल पुरस्कार मिला था। वह इगलैण्ड के तीसरे और ससार के बत्तीसवे नोबेल पुरस्कार-विजेता साहित्यकार थे। उनके बाद इंगलैण्ड को सोलह वर्ष तक इसकी प्रतीक्षा करनी पडी, और तब जाकर कहीं सन् १९४८ ई० मे उसे यह सम्मान मिल सका। इस बार यह पुरस्कार टी० एस० इलियट को प्रदान किया गया था।

टी० एस० इलियट का पूरा नाम टामस स्टियर्न्स इलियट (Thomas Stearns Eliot) है। इनका जन्म २६ सितम्बर, सन् १८८८ ई० को हुआ था।

टी० एस० इलियट के एक पूर्वज थे एण्ड्रू इलियट (Andrew Eliot)। वह ईस्ट कोकर (East Coker), सामरसेट (Somerset), ऐन्ड्रू इलियट से १७वी शताब्दी के अन्त मे ही अमरीका के मैसाचुसैट्स प्रान्त के बेवर्ली (Beverly) नामक स्थान पर चले गए थे। उनकी कई पुश्ते व्यापारी तथा पादरी रही थी। टी० एस० इलियट के दादा सन् १८३४ ई० में मिसूरी प्रान्त

के सेन्ट लुई (St. Louis) नामक स्थान पर जाकर बस गए थे। वहाँ के विश्वविद्यालय की स्थापना भी उन्होने की थी। उनके द्वितीय पुत्र हेनरी वेअर इलियट (Henry Ware Eliot—१८४१-१९१९) ने शार्लाट स्टियर्न्स (Charlot Stearns) नामक एक स्त्री से शादी कर ली थी। इन्ही की सातवी और अन्तिम सन्तान का नाम टामस स्टियर्न्स इलियट था।

टी० एस० इलियट या 'टाम' ने अपने जीवन के प्रथम १८ वर्ष सेन्ट लुई मे ही विताये। इन्होने अपने परदादा द्वारा स्थापित वाशिंगटन विश्वविद्यालय मे शिक्षा पाई और फिर सन् १९०६ ई० मे विश्व-विख्यात हारवर्ड विश्व-विद्यालय मे प्रवेश ले लिया, और एम० ए० की उपाधि प्राप्त कर ली।

यहाँ यह वैबिट (Babbitt) और सन्तायन (Santayana) के व्याख्यानो से बहुत प्रभावित हुए थे। इस समय के इनके मित्र कहते थे कि उच्चारण और नागरिकता को छोडकर यह पूरे अग्रेज थे। इन्होने एक वर्ष तक फ्रास के सार्बोन विश्वविद्यालय मे भी अध्ययन किया था और फिर हारवर्ड विश्वविद्यालय ही लौट आए थे, जहाँ इन्होंने पी-एच० डी० की उपाधि के लिए सस्कृत और पाली का भी अध्ययन किया। प्रथम विश्व-युद्ध के पहले यह जर्मनी गए थे। इन्होने आक्सफर्ड (Oxford) के मर्टन कालेज (Merton College) मे दर्शन का अध्ययन भी किया था।

सन् १९१५ ई० मे इन्होने विवियन हे-वुड (Vivienne Haigh-Wood) नामक लन्दन की एक महिला से शादी कर ली। कुछ दिन तक इन्होने एक स्कूल मे अध्ययन किया था और एक वैंक मे भी काम किया था। जव इन्होने सामुद्रिक सेना मे भरती होना चाहा, तो अस्वस्थ होने के कारण नही लिये गए। सन् १९३२-३३ ई० मे यह हारवर्ड विश्वविद्यालय मे चार्ल्स इलियट नार्टन प्रोफेसर ऑफ पोएट्री (Charlot Eliot Norton Professor of Poetry) होकर चले गए। सन् १९४८ ई० में इन्हे नोवेल पुरस्कार तथा इंगलैण्ड के सम्राट् जार्ज षष्ठम द्वारा आर्डर ऑफ मैरिट (Order of Merit) दिया गया। दो वर्ष वाद व्याख्यान देने के लिए यह फिर अमरीका गए। यह सन् १९२७ ई० मे ही ब्रिटिश नागरिक हो गए थे। सन् १९४७ ई० मे इनकी पहली पत्नी का देहान्त हो गया। वाद मे इन्होंने दूसरी शादी कर ली।

टी० एस० इलियट वहुत लम्वे थे। यह वहुत सुन्दर भी थे। इनकी भाषा मे व्यंग्य का पुट भी रहता है। इनको समझना मुश्किल होता था।

टी० एस० इलियट अच्छे कपड़े पहनने के शौकीन थे। यह वात-वात मे वड़ी मीठी चुटकी भी लेते थे। इनका कहना था कि यह क्लव की आरामकुर्सी

पर निद्रावस्था में आ जाते थे। परन्तु यह भी कहते थे कि चाय पीने के बाद इनका दिमाग ज्यादा अच्छी तरह काम करता था। नोबेल पुरस्कार का समाचार पाने पर इन्होंने कहा कि आप संसार में समाने के लिए बड़े नहीं हो जाते, संसार ही छोटा हो जाता है। सच बात यह है कि बीसवी शताब्दी की कविता को जितना अकेले इलियट ने प्रभावित किया है उतना अन्य कोई कवि नहीं कर पाया है। न केवल यह कि आज उनकी रचनाएँ लगभग सभी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में हैं, वरन् लगभग सभी उन्नत भाषाओं में उनके अनुवाद भी हो चुके हैं। इसलिए आज शायद आपको कोई ही ऐसा व्यक्ति मिलेगा जो इनकी रचनाओं से परिचित न हो। उनकी कविताओं, नाटकों, निबन्धों व लेखों—सभी ने साहित्य पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

इनका विचार था कि आजकल के लेखक विचार कम करते हैं, लिखते अधिक हैं, जबकि उन्हें लिखना कम चाहिए और चिन्तन-मनन अधिक करना चाहिए। (ये विचार उन्होंने उस समय व्यक्त किए थे जब सन् १९६१ में मैं उनसे लन्दन में मिला था।)

सन् १९१७ से सन् १९१९ तक इलियट 'इगोइस्ट' (Egoist) नामक पत्रिका के सहायक सम्पादक भी रहे थे। ५ जनवरी, सन् १९६५ को इनका देहान्त हो गया।

सन् १९४८ ई० में इनको पुरस्कार प्रदान करते हुए स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"समकालीन कविता का विशिष्ट पथ-प्रदर्शन करने के लिए इन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है।"

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) प्रुफ्राक एण्ड अदर आब्जरवेशन्स (Prufrock And Other Observations)	१९१७
(२) पोयम्स (Poems)	१९१९
(३) द सेक्रेड वुड (The Sacred Wood)	१९२०
(४) द वेस्ट लैण्ड (The Waste Land)	१९२२
(५) ट्रैडीशन एण्ड एक्सपैरिमेन्ट (Tradition and Experiment)	१९२९

(६) द यूज ऑफ पोइट्री एण्ड द यूज ऑफ क्रिटिसिज्म १९३३
(The Use of Poetry and the
Use of Criticism)
(७) मर्डर इन द कैथेड्रल १९३५
(Murder In the Cathedral)
(८) फैमिली रियूनियन (Family Reunion) १९३९
(९) द काक्टेल पार्टी (The Cocktail Party) १९५०
(१०) द कान्फीडेन्शियल क्लर्क १९५४
(The Confidential Clerk)



विलियम फ़ाकनर
(१८९०–१९६१)

विलियम फाकनर (William Faulkner) अमरीका के चौथे लेखक थे, जिन्हें सन् १९४९ ई० का नोवेल पुरस्कार प्रदान किया गया था।

विलियम फाकनर के परदादा का जन्म सन् १८२५ ई० मे हुआ था। उनका जीवन अत्यन्त रोमांचक था और उन्होंने अपने ६४ वर्ष के जीवन मे कई प्रकार के काम किए थे। उनके जीवन की अनेक घटनाएँ विलियम ने अपनी रचनाओं मे प्रस्तुत की हैं। उनके ऊपर दो बार खून का अभियोग लगाया गया, लेकिन दोनों ही बार वह निर्दोष पाए गए। वह सैनिक भी रह चुके थे, और उन्होने अमरीका के गृह-युद्ध में भी भाग लिया था। बचपन मे वह बहुत गरीब थे और बड़ी ही कठिनाई से अपना और अपनी माँ का पालन किया था। जीवन के अन्त मे वह एक रेल-कम्पनी के साझेदार हो गए थे। बाद मे तो वह राज्य विधान सभा (State Legislature) के सदस्य भी हो गए थे। उनके एक राजनीतिक विरोधी ने ५ नवम्बर, सन् १८८९ ई० को उन्हे गोली मार दी।

विलियम फ़ाकनर के दादा जान वेस्ली थाम्पसन फाकनर (John Wesley Thompson Faulkner) थे। वह वकील, बैंकर तथा अभिकर्त्ता थे। उन्होंने उच्चकोटि की शिक्षा पाई थी। उनके तीन बच्चे थे—एक पत्नी (हालैण्ड—Holland) दो लड़के जान वेस्ली थाम्पसन फ़ाकनर (John Wesley Thompson Faulkner II) और मरी (Murry)। मरी ने माड बटलर

(Maud Butler) नामक लडकी से शादी कर ली और उनके चार पुत्र हुए, जिनमे सबसे बड़ा विलियम फ़ाकनर था । इनका जन्म २५ सितम्बर, १८९० ई० को आक्सफोर्ड (Oxford) से ३५ मील दूर न्यू एल्वनी, यूनियन काउण्टी (New Albany, Union County) में हुआ था ।

विलियम फाकनर पढने मे अच्छे नही थे और इसीलिए इन्होने हाई स्कूल के बाद पढना छोडकर अपने पिता के बैंक मे नौकरी कर ली थी। स्कूल में यह अंग्रेजी मे फेल हो गए थे । इन्होंने अनेक पुस्तको और लेखकों का अध्ययन किया था । स्वय भी कुछ कविताएँ और कहानियाँ लिखी थी । इन्होंने चित्रकारी भी की थी । सन् १९१४ ई० मे इनकी जान-पहचान फ़िल स्टोन (Phil Stone) नामक एक नौजवान वकील से हुई, जिसने इनका वहुत साथ दिया । फिल स्टोन ने ही कान्रैड, एकिन, रावर्ट फ्रास्ट, एजरा पाउण्ड और शेरवुड ऐंडरसन (Conrad, Aitkin, Robert Frost, Ezra Pound, Sherwood Anderson) आदि लेखको से इनका परिचय कराया था ।

जव फाकनर लडाई मे भरती होने गए तो अपने छोटे कद (पाँच फुट) के कारण उन्हे भरती नही किया गया । तव यह रायल कैनेडियन फ्लाइंग कोर (Royal Canadian Flying Corps) में भरती हो गए, और उसमें यह सेकेन्ड लेफ़्टिनेन्ट के पद तक पहुँच गए । लडाई से लौटने के वाद इन्होंने मिसिसिपी विश्वविद्यालय मे नाम लिखाया और अंग्रेजी, स्पैनिश और फ्रेंच का अध्ययन किया । इन्होंने न्यूयार्क मे एक किताबो की दुकान मे नौकरी कर ली, फिर जल्दी ही आक्सफ़ोर्ड वापस आ गये । अगले दो वर्ष मे इन्हे जो भी नौकरी मिली, यह करते गये—जैसे कि वढई, घर में सफेदी करने वाला और पोस्ट मास्टर ।

इन्होने यूरोप की यात्रा भी करने की सोची और उसके लिए न्यू आरलीन्स (Few Orleans) भी गए, जहाँ यह छ महीने रहे । यहाँ इन्होंने 'डवल डीलर' (Double Dealer) नामक पत्रिका मे अपनी रचनाएँ छपवाई । इन्होने एक उपन्यास 'सोल्जर्स पे' (Soldier's Pay) लिखा, जो स्टोन की सहायता से प्रकाशित भी हुआ । सन् १९२५ ई० मे फाकनर इटली, फ्रांस और जर्मनी के देशाटन के लिये गए ।

विलियम फ़ाकनर ने सन् १९२९ ई० मे एस्टेल आल्डहैम नामक लड़की से शादी कर ली । विलियम फाकनर को इनसे कई साल से प्रेम था, पर कई कारणों से यह शादी नही कर पाते थे, जिनमें एस्टेल का विलियम से उम्र में दो वर्ष वडा होना, विलियम की वेकारी, और भविष्य की चिन्ताएँ विशेष उल्लेखनीय है। एस्टेल ने कर्नल फ्रैंक्लिन (Cornel Franklin) नामक एक वकील

से शादी कर ली थी, और उनके साथ होनोलूलू और शघाई भी गई थी। सन् १९२७ ई० में यह अपने पति को तलाक देकर वापस आकर आक्सफोर्ड मे रहने लगी थी। इनके एक लड़का और एक लड़की भी थी। पर विलियम फाकनर को इनसे इतना प्रेम था कि इन्होंने यह सब होते हुए भी इनसे शादी कर ली। विलियम की दो लड़कियाँ हुई—अलाबामा (Alabama) जो मर गई, और जिल (Jill) जिसे यह बहुत मानते थे।

विलियम फ़ाकनर की सभी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ सन् १९२९ से सन् १९३९ के बीच के समय की देन है। फ्रान्स में इनकी रचनाओ की परख अमरीका के पहले की गई। इन्होंने हॉलीवुड के लिए भी काम किया था। इनकी 'सैन्कचुअरी' (Sanctuary) नामक रचना से इन्हे बहुत ख्याति मिली। ६ जुलाई सन् १९६१ ई० को इनका देहान्त हो गया।

इन्हे पुरस्कार प्रदान करते समय स्वीडिश अकादमी ने कहा था

"समकालीन अमरीकी उपन्यास के क्षेत्र मे इनके शक्तिशाली और कला की दृष्टि से सर्वथा अनूठे व अपूर्व अवदान के लिए"

इन्हें यह पुरस्कार दिया जाता है।

प्रमुख कृतियां

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) द मारबल फान (The Marble Faun)	१९२४
(२) सोल्जर्स पे (Soldier's Pay)	१९२६
(३) मास्क्विटोज (Mosquitoes)	१९२७
(४) द साउण्ड एण्ड फ्यूरी (The Sound and Fury)	१९२९
(५) एज़ आई ले डाइग (As I Lay Dying)	१९३०
(६) सैन्क्चुअरी (Sanctuary)	१९३१
(७) ऐब्सलाम, ऐब्सलाम (Abslaom, Absalom)	१९३६
(८) द अन् वैनूक्विश्ड (The Unvanquished)	१९३२
(९) द हैमलेट (The Hamlet)	१९४०



अर्ल बर्ट्रैण्ड आर्थर विलियम रसल

(१८७२–   )

सन् १९५० का नोबेल पुरस्कार (साहित्य) पाने वाले अर्ल बर्ट्रैण्ड आर्थर रसल उन इने-गिने मनीषियों मे से जो इस उम्र मे (९४ वर्ष) मे भी सक्रिय है।

बर्ट्रैण्ड रसल के दादा विक्टोरिया के समय के राजनीतिज्ञ थे और वह दो बार इग्लैण्ड के प्रधान मन्त्री भी बने थे। उनका नाम था जान रसल। उनके पुत्र का देहान्त तो उन्ही के जीवन-काल मे हो गया था, परन्तु उनके पुत्र के दो पुत्र थे। इन दोनो मे छोटे पुत्र का नाम था बर्ट्रैण्ड आर्थर विलियम। बर्ट्रैण्ड रसल का जन्म १८ मई सन् १८७२ ई० को हुआ था। इनके पिता के देहान्त के कुछ ही समय बाद इनकी माता का भी देहान्त हो गया और तीन वर्ष की अवस्था मे यह माता-पिता के प्यार से वचित हो गए। सन् १९३१ ई० मे, जब इनके बडे भाई का भी देहान्त हो गया, तो यह उनकी पदवी के हकदार हो गए और अर्ल (Earl) कहे जाने लगे। इसीलिए इन्हे लार्ड रसल (Lord Russell) कहा जाता है।

बर्ट्रैण्ड रसल के माता-पिता के देहान्त के बाद इनकी पढाई-लिखाई और देख-भाल का भार इनके दादा-दादी पर पड़ा। यह कभी स्कूल मे भर्ती नही किये गए। घर ही पर शिक्षा पाने के बाद यह कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनिटी कालेज (Trinity College) मे भर्ती हो गए। यहाँ पर इन्होने अपनी ज्ञान-पिपासा को भली-भाँति तृप्त किया। इनका ध्यान गणित और दर्शन इन विषयों की ओर विशेष रूप से आकर्षित हुआ था। परन्तु इनके घर

वाले इनको राजनीति में ले जाना चाहते थे। लेकिन इन्होंने यह कहकर कि मैं गणित और दर्शन का अध्ययन करना चाहता हूँ, राजनीति में भाग लेने से इन्कार कर दिया। इन दोनों विषयों के साथ ही अब यह एक तीसरे विषय समाजशास्त्र (Sociology) में भी रुचि रखने लगे थे और इस विषय का गहन अध्ययन भी करने लगे थे।

इनकी पुस्तक 'प्रिन्सिपिया मैथमेटिका (Principia Mathematica) जो इन्होंने विश्व-प्रसिद्ध वैज्ञानिक ए० एन० व्हाइटहैड (A. N. Whitehead) के साथ मिलकर लिखी थी, आज भी एक महत्त्वपूर्ण रचना मानी जाती है। यह पुस्तक सन् १८१० ई० और सन् १९१३ ई० के बीच मे प्रकाशित हुई थी।

जब प्रथम विश्व-युद्ध छिडा, तो यह फौजी सेवा (Military Service) की आयु पार कर चुके थे, परन्तु फिर भी इन्होंने इसका विरोध किया। इस पर इन्हें ट्रिनिटी कालेज (Trinity College) से निकाल दिया गया और चार मास के कारावास की सजा भी दी गई। इन्होंने जेल मे भी अपना समय 'इण्ट्रोडक्शन टु मैथमेटिकल फिलासफी' (Introduction to Mathematical Philosophy) लिखने में लगाया। लडाई के समय मे इनकी रचनाएँ आम जनता के लिए लिखी गई। यह लडाई के बाद रूस गए, और कुछ समय के बाद पेकिंग विश्वविद्यालय (Peking University) मे फिलासफी के प्रोफेसर के पद पर नियुक्त कर दिये गए। कुछ समय बाद यह स्वदेश लौट आए। यहाँ आकर इन्होंने अपने घर पर बच्चो के लिए एक स्कूल खोल दिया, परन्तु बाद में समयाभाव के कारण वह बन्द कर देना पडा। सन् १९३८ ई० में यह शिकागो विश्वविद्यालय में फिलासफी के प्रोफेसर नियुक्त हुए, परन्तु अपने स्वाधीन विचारों, विशेष रूप से यौन (सैक्स)-सम्बन्धी विचारों, के कारण वहाँ से हटा दिये गए। अक्तूबर, सन् १९४० ई० मे इन्हें बर्न्स फाउण्डेशन, मैरियन (Bernes Foundation, Merion) मे संस्कृति के इतिहास के लैक्चरर की जगह मिली, जो इन्होंने स्वीकार भी कर ली। वहाँ इन्होंने एक फार्म खरीद लिया, और वहीं कुछ समय के लिए बस भी गए। परन्तु फिर यह वहाँ से अपने देश इंग्लैण्ड चले आए। द्वितीय विश्व-युद्ध छिड़ने पर इन्होंने लोकतन्त्रवादियों (Democracies) का साथ दिया और नात्सीवाद (Naziism) की भर्त्सना की।

आजकल यह अणु-बम (Atom Bomb) के परीक्षणों और प्रयोग के विरुद्ध प्रचार कर रहे हैं और अपने देश में ही नहीं, वरन् सारे संसार में सम्मानित हैं।

बर्ट्रेण्ड रसल ने अपने लम्बे जीवन मे चार बार शा

अर्ल बर्ट्रेण्ड अर्थर विलियम र

१८६४ ई० मे, बाईस वर्ष की अवस्था मे इन्होने ऐलिस पिअर्सल स्मिथ (Alys Pearsall Smith) से शादी की जिनसे इनका तलाक सन् १६२१ ई० में हो गया। उसी साल इनकी शादी डोरा विनिफ्रेड ब्लैक (Dora Winifred Black) नामक स्त्री से हुई, परन्तु सन् १६३५ ई० मे इनसे भी तलाक हो गया। इसके बाद इन्होने अपनी सेक्रेटरी पैट्रिसिया हेलेन स्पेन्स (Patricia Helen Spence) से शादी की। उन्होने भी सन् १६४२ ई० में बर्ट्रेण्ड रसल को तलाक दे दिया। उसी वर्ष इन्होने न्यूयार्क की एडिथ फिन्श (Edith Finch) नामक स्त्री से शादी कर ली। इस चौथी शादी के समय इनकी अवस्था ८० वर्ष की थी।

बर्ट्रेण्ड रसल ने अपने लम्बे जीवन में बहुत-सी पुस्तके और लेख लिखे है। इनकी रचनाओ को तीन वर्गो मे रखा जा सकता है—(१) वैज्ञानिक, (२) दार्शनिक और (३) साहित्यिक। इनकी ख्याति अधिकतर इनके 'प्रिंसिपल ऑफ मैथमैटिक्स' (Principles of Mathematics) और 'प्रिन्सिपिया मैथ-मेटिका' (Principia Mathematica) के साथ ही इनकी दार्शनिक रचनाओं पर निर्भर है। इनका विश्लेषण सरल नही है, न ही छोटे से परिचयात्मक लेख मे यह सम्भव ही है। इनकी रचनाओ के विश्व-विख्यात होने के दो कारण बताये गए है—(१) इनका दर्शन-शास्त्र, तथा (२) इनकी शैली। इन्होने स्वय अपनी चुटकी लेते हुए कहा है :

"मेरी बुद्धि, जैसी भी है, का पतन मेरी बीस वर्ष की अवस्था से होने लगा है। जब मै युवा था तब मुझे गणित पसन्द था। जब यह मेरे लिए बहुत कठिन हो गया तब मैने दर्शन का अध्ययन शुरू किया, और जब यह वहुत ही कठिन हो गया तब मैने राजनीति को अपनाया। उसके बाद मैने जासूसी कहानियो पर अपना ध्यान केन्द्रित किया।"

यह ध्यान देने योग्य है कि ८१ वर्ष की अवस्था मे इन्होने पॉच जासूसी कहानियो का 'सैटेन इन द सबर्ब्स' (Satan In The Suburbs) नामक सग्रह प्रकाशित कराया था। इतना ही नही, यह ६४ वर्ष के वृद्ध होते हुए आज भी सक्रिय है।

सन् १६५० ई० मे इन्हे पुरस्कार प्रदान करते समय स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"इनकी विभिन्न और महत्त्वपूर्ण रचनाओ के लिए जिनमे इन्होने मानव हितकारी आदर्शो और विचारो की स्वतन्त्रता का वीरतापूर्वक उल्लेख किया है," इन्हें यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) प्रिन्सिपल्स ऑफ़ मैथमैटिक्स (Principles of Mathematics)	१९०३
(२) प्रिन्सिपिया मैथमेटिका (Principia Mathematica)	१९१०-१३
(३) द ए० बी० सी० ऑफ ऐटम्स (The A. B. C of Atoms)	१९२३
(४) ह्वाट आई बिलीव (What I Believe)	१९२५
(५) ऐन आउटलाइन ऑफ फिलासफी (An Outline of Philosophy)	१९२७
(६) मैरेज एण्ड मारल्स (Marriage And Morals)	१९२९
(७) हिस्ट्री ऑफ वैस्टर्न फिलासफी (History of Western Philosophy)	१९४५
(८) ह्यूमन नालेज : इट्स स्कोप एण्ड लिमिटेशन्स (Human Knowledge : Its Scope and Limitations)	१९४८
(९) अथारिटी एण्ड द इण्डिविजुअल (Authority And The Individual)	१९४९
(१०) सैटेन इन द सबर्ब्स (Satan In The Suburbs)	१९५३
(११) ह्यूमन सोसाइटी इन एथिक्स एण्ड पालिटिक्स (Human Society In Ethics And Politics)	१९५५
(१२) आत्म-कथा—२ भाग (Autobiography, Vol. I, and Vol. II.)	१९६७-६८



पार फ़ेबिअन लागरक्विस्त
(१८९१-　　)

सन् १९५१ ई० में साहित्य का नोबेल पुरस्कार स्वीडन के लेखक पार फ़ेबिअन लागरक्विस्त को प्रदान किया गया।

यद्यपि इस प्रकार का कोई बंधन नहीं है, फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि स्वीडिश अकादमी को अपने ही देश के लेखक को और विशेष रूप से अपने ही सदस्य को सम्मानित करने में संकोच अवश्य होना होगा। यही कारण है कि स्वीडन के लेखकों को इस पुरस्कार के प्राप्त करने में अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है। पार फ़ेबिअन लागरक्विस्त के पहले स्वीडन लेखक को यह पुरस्कार सन् १९३१ ई० में एरिक एक्सेल कार्लफ़ल्ट को उनके देहान्त के उपरान्त प्रदान किया गया था। सन् १९१९ ई० में भी इनका नाम प्रस्तावित किया गया था, परन्तु स्वीडिश अकादमी के सदस्य होने के कारण इन्होंने यह अस्वीकार कर दिया था। अस्तु।

पार फ़ेबिअन लागरक्विस्त का जन्म २३ मई, सन् १८९१ ई० को वाक्सजो (Vaxjo) नामक एक छोटे से शहर में हुआ था। यह स्वीडन के दक्षिणी इलाके में स्मालैण्ड (Smaland) नामक जिले में है। इनके पिता का नाम ऐण्डर्स जोहान लागरक्विस्त और माँ का जोहाना (ब्लाड) लागरक्विस्त था। इनके पूर्वज किसान थे। पार लागरक्विस्त (यह इसी नाम से प्रसिद्ध है) ने सन् १९११-१२ ई० में उपसाला विश्वविद्यालय में शिक्षा पाई थी। प्रथम विश्व-युद्ध

के समय यह अधिकतर डेनमार्क में रहते रहे। यहाँ पर रहकर इन्होने कई नाटक लिखे। इन नाटको पर स्ट्रिण्डवर्ग का प्रभाव प्रत्यक्ष था। सन् १९१९ ई० मे यह स्टाकहोम के अखबार के नाट्य समालोचक (Theatre Critic) हो गये थे, पर बाद में इस काम को छोड़कर यह अपने लेखन कार्य मे जुट गए। सन् १९२० ई० के बाद यह अपना अधिकतर समय फ्रान्स और इटली में व्यतीत करने लगे। अव इनका निराशावादी दृष्टिकोण काल्पनिक प्रेम और रहस्यवाद मे परिवर्तित हो गया। इन्होंने अपने जीवन के विषय में दो पुस्तके, गैस्ट आफ़ रीअलिटी (Guest of Reality) और लाइफ कान्कर्ड (Life Conquered) लिखी है। सन् १९३० ई० में इन्होने जर्मनी और इटली की सरकारो के खिलाफ आवाज उठाई।

सन् १९४० ई० में यह स्वीडिश अकादमी के सदस्य चुने गए। सन् १९२८ ई० में इन्हे एक स्वीडिश साहित्यिक पुरस्कार प्रदान किया गया। सन् १९४१ ई० में गोथेन्वर्ग विश्वविद्यालय ने आनरेरी पी-एच. डी. की उपाधि देकर इन्हें सम्मानित किया।

इनकी पहली शादी सन् १९१८ ई० मे डेनमार्क की कारेन डाग्मार जोहान् सोरेन्सेन (Karen Dagmar Johanne Sorensen) से हुई, परन्तु वाद मे सन् १९२५ में इन दोनों मे तलाक हो गया। उसी वर्ष इन्होंने स्वीडन के प्रसिद्ध चित्रकार गोस्टा सैण्डेल्स (Gosta Sandels) की विधवा इलेन लुयेला हाल्वर्ग (Elaine Luella Hallberg) से शादी कर ली। अव यह स्टाकहोम के पास ही सपरिवार रहते है। यह लोगो से बहुत कम मिलते है।

इनकी कुछ कवितायें सवसे पहले १९१२ ई० में प्रकाशित हुई थी। उसी वर्ष इनका पहला उपन्यास 'पीपुल' (People) भी प्रकाशित हुआ था। प्रथम विश्व युद्ध के समय की इनकी रचना मे फ्रांसीसी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। जब इनका कविता संग्रह 'ऐंग्विश' (Anguish) प्रकाशित हुआ, तो इनकी गणना स्वीडन के वड़े लेखको मे की जाने लगी। सन् १९२० ई० के बाद यह मुख्यत: कविता भी लिखते है, परन्तु कभी-कभी इनके अतिरिक्त इन्होने नाटक भी लिखे थे। 'द मैन विदाउट ए सोल' (The Man Without A Soul) और 'लैट मैन लिव' (Let Man Live) इनके दो उल्लेखनीय नाटक है।

सन् १९५१ ई० में इन्हे पुरस्कार प्रदान करते समय स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"इनकी कलात्मक शक्ति और विचारो की वास्तविक स्वाधीनता के लिए जिससे यह अपनी कविता में उन प्रश्नों का, जो मानव-जाति के सामने सदैव

प्रस्तुत रहते है, उत्तर पाने की चेष्टा करते है," इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
१. बरब्बस (Barabbas)	१९५०
२. द ड्वार्फ (The Dwarf)	१९४५
३ द एटर्नल स्माइल एण्ड अदर स्टोरीज (The Eternal Smile & Other Stories)	१९४५
४. द मैरेज फीस्ट एण्ड अदर स्टोरीज (The Marriage Feast & Other Stories)	१९५५
५. द मैन विदाउट ए सोल (The Man Without A Soul)	१९५३
६ द सिबिल (The Sibyl)	१९५८



फ्रांस्वा मारिआक
(१८८५–   )

सन् १९५२ ई० मे यह पुरस्कार एक बार फिर फ्रान्स के ज़िम्मे मे पडा ।

फ्रांस्वा मारिआक का जन्म ११ अक्तूबर, सन् १८८५ ई० को बोर्डो (Bordeaux) के पास पा-सेन्ट-जार्जेज़ (Pas-Saint-Georges) नामक स्थान पर हुआ था । इनके माता-पिता फ्रान्स के मध्यम वर्ग के लोग थे, और धन का इनके यहाँ न तो अभाव था, न ही आधिक्य। आन्द्रे जीद की तरह फ्रास्वा मारिआक को भी आर्थिक स्वाधीनता थी और अन्य लेखको की भाँति इन्हें अपने श्रम से जीविकोपार्जन नही करना पडा । जब यह अभी बीस महीने के ही थे कि इनके पिता का देहान्त हो गया । इस कारण इनके पालन-पोषण का भार इनकी माँ पर आ पड़ा । फ्रांस्वा मारिआक के तीन बड़े भाई और एक बहिन है। इनके सबसे बड़े भाई वकील, दूसरे पादरी और तीसरे प्रोफेसर थे। यह रोमन कैथोलिक मत के अनुयायी हैं । बीस वर्ष की आयु तक फ्रास्वा मारिआक अपने जन्म-स्थान के ही आस-पास रहते रहे । इस समय तक के अनुभवों ने इनको बहुत प्रभावित किया था। यही कारण है कि इनकी रचनाओ मे उनका वर्णन अकसर आता है। इन्होंने जार्डन ड' इन्फ़ैण्ट्स (Jardin d' Enfants) नामक स्कूल मे और उसके बाद इन्स्टीट्यूट ग्राण्ड-लेब्र (Institute du Grand Lebrou) में शिक्षा पाई थी। बचपन मे यह बहुत दुखी और उदास रहते थे । सन् १९०६ ई० मे जब यह २१ वर्ष के थे तो यह पेरिस गए, जहाँ यह 'इकोल द चार्टेस' (Ecole

de Chartes) मे भर्ती हो गए। यहाँ इनकी मित्रता दूसरे साहित्य-प्रेमी नौजवानो से हो गई। इसी समय इन्होंने कविता लिखना भी शुरू कर दिया था और इनकी कविताओ का पहला संग्रह 'ले मेण्ट्स ज्वाइंट्स' (Les Maints Jointes) सन् १९०९ ई० मे प्रकाशित हुआ था।

इस सग्रह से जब इन्हे काफ़ी ख्याति मिल गई तो इन्हे भी अपनी लेखनी पर विश्वास होने लगा। इन्होने जब उपन्यास भी लिखने शुरू कर दिए। सन् १९१३ ई० मे इन्होने जीने लाफान्त (Jeanne Lafont) से शादी कर ली। वह एक सरकारी अफसर की पुत्री थी। सन् १९१४ ई० मे जब प्रथम विश्व-युद्ध छिडा तो इन्होने भी अपने ऊपर अस्पताल मे काम करने का भार ले लिया, और सलोनिका (Salonika) मे काम किया। परन्तु मलेरिया हो जाने के कारण इन्हे वापस आ जाना पडा। लड़ाई के बाद इन्होने कई उपन्यास लिखे और फलस्वरूप फ्रेन्च अकादमी ने इन्हे सन् १९२५ ई० मे 'ग्रैण्ड प्रिक्स डु रोमन' (Grand Prix du Roman) से सम्मानित किया। इन्होने रेसीन (Racine), मोलियेर (Moliere), रूसो (Rousseau), फ्लाबेयर (Flaubert) और पास्कल (Pascal) की जीवनियाँ भी लिखी थी। सन् १९३२ ई० मे यह 'सोसाइटी डे जेन्स डे लेटर्स' के सभापति (President of the Society des Gens de Letters) और सन् १९३३ ई० मे फ्रेन्च अकादमी के सदस्य चुने गये। द्वितीय विश्व-युद्ध के समय भी फ्रास्वा मारिआक ने आक्रमणकारियो के विरुद्ध सगठन किया और अपने देश को बराबर भरसक दिलासा देते रहे तथा स्वाधीनता के लिए सग्राम करते रहे। आन्द्रे जीद के मरने के बाद यह अपने देश के सर्वश्रेष्ठ लेखक (या कम-से-कम सर्वश्रेष्ठ लेखको मे) गिने जाने लगे। सन् १९५२ ई० मे जब इन्हे नोबेल पुरस्कार मिल गया तब तो इनकी श्रेष्ठता मे कोई शका ही नही रह गई। यह अभी जीवित है और पेरिस मे अपनी पत्नी के साथ रहते है।

इस पुस्तक मे जो कविताएँ थी उनकी प्रशंसा करते हुए फ्रान्स के लेखक मारिस बारे (Maurice Barres) ने इनको एक पत्र लिखा था। इसके उपरान्त मारिस बारे ने इनकी पुस्तक की आलोचना भी की थी। फ्रास्वा मारिआक ने उपन्यास के क्षेत्र मे विशेष उल्लेखनीय कार्य किया है। प्रथम विश्व-युद्ध के बाद ही इनके दो उपन्यास प्रकाशित हुए थे। इन्होंने अभी तक लगभग पच्चीस उपन्यास लिखे है। इनकी रचनाओ को यह आरोप लगाया गया है कि इनका क्षेत्र बहुत सकीर्ण है और इनकी बाद की रचनाओ में पहले की रचनाओं के ही तत्त्व है अर्थात् यह बाद मे स्वय को ही दुहराने लगे है। इनकी रचनाओ

मे 'थेरेस डेस्कीरो' (Theres Desqueyroux) बहुत प्रसिद्ध है। इस उपन्यास मे वोर्डो (Bordeaux) के रहने वालो तथा आसपास के प्राकृतिक दृश्यों का बड़ा ही मार्मिक और सजीव चित्रण है। इन्होने नाटकों की भी रचना की है और इनकी रचना 'अस्मांडी' (Asmondee) इनके जीवन-काल में ही कामेडी फान्से (Comedie Francaise) मे रगमंच पर प्रस्तुत की गई थी। ऐसा अब तक शायद और किसी लेखक के साथ नही हुआ था।

फ्रांस्वा मारिआक और आन्द्रे जीद मे कई समानताएँ हैं। दोनो ही आर्थिक स्वाधीनता का सुख उठाकर अपनी कलात्मक रचनाएँ करते थे। दोनो ही ने अपने वातावरण के विरुद्ध लिखा था, तथा दोनों ही फास के सर्वश्रेष्ठ लेखकों में है।

सन् १९५२ ई० मे इन्हें पुरस्कार प्रदान करते समय स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"इनकी गहरी अन्तर्दृष्टि और कलात्मक प्रखरता के लिए, जिनके माध्यम से इन्होने अपने उपन्यासो मे मानव-जीवन के नाटक के रहस्यों को समझा है," इन्हें यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) ले मेन ज्वाइन्ट्स (Les Mains Jointes)	१९०९
(२) अदिउ अ'ल 'अडोल सेन्स (Adieu al' adollscence)	१९११
(३) आरेन्जिज (Oranges)	१९२५
(४) थेरेसे डेस्किरो (Theres Desqueyroux)	१९२६
(५) अस्माण्डी (Asmondee)	१९२५
(६) रासीन (Racine)	१९२८
(७) वाई डे जीसस (Vie de Jesus)	१९३६
(८) ले सांग द आर्ट्स (Le Song de Arts)	१९४०
(९) द डेज़र्ट लव (The Desert Love)	१९४९



विन्स्टन चर्चिल

(१८७४–१९६५)

सन् १९५३ का नोबेल पुरस्कार सर विन्स्टन चर्चिल को प्रदान किया गया ।

विन्स्टन चर्चिल के विषय मे दो चार पृष्ठ लिखकर भारतीय पाठको से इनका परिचय कराना सूर्य को दिया दिखाना है, क्योकि भारत ही नही विश्व की पढी-लिखी जनता विन्स्टन चर्चिल से भली-भाँति परिचित है । परन्तु शायद यह कह देने मे कोई हानि न होगी कि भारतीय जनता का परिचय इन के राजनीतिक जीवन से अधिक है, साहित्यिक से उतना नही । भारत की जनता इनको स्वाधीनता के विरोधी, गांधी जी को "नैकेड फकीर" (Naked Faqır) कहने वाले और हिटलर के शत्रु के रूप में ही जानती है । इसलिए इनके साहित्यिक और व्यक्तिगत जीवन की एक झाँकी यहाँ प्रस्तुत कर देना असंगत न होगा । इनका पूरा नाम विन्स्टन लियोनार्ड स्पैसर चर्चिल (Winston Leonard Spencer Churchill) है । इनके पिता लार्ड रैण्डाल्फ चर्चिल (Lord Randolph Churchill) और दादा ड्यूक ऑफ मार्लबौरो (Duke of Marlborough) थे । इनकी माँ का नाम जेनी जेरोम (Jennie Jerome) था और न्यूयार्क (अमेरिका) की थी । विन्स्टन चर्चिल का जन्म ३० नवम्बर सन् १८७४ ई० को हुआ था । यह अपने माता-पिता के तीसरे पुत्र थे । बचपन में यह इग्लैंड के प्रसिद्ध स्कूल हैरो (Harrow) में भेजे गए और उसके बाद इन्होने रायल मिलिटिरी कालेज, सैन्डहर्स्ट (Royal Military College,

Sandhurst) मे शिक्षा पाई। इस कॉलिज से यह फ़ौज में भर्ती हो गए और इन्होंने कई लड़ाइयों में भाग भी लिया। दक्षिणी अफ्रीका की लडाई में यह बोयरों (Boers) के हाथ पड़ गए, परन्तु बडी चतुरता और बहादुरी से वहाँ से भाग निकले। यह भारत भी आये थे और इन्होंने सन् १८६६ ई० के फ्रन्टियर वार (Froı tier War) में 'युद्ध सवाददाता' (War Correspondent) के रूप मे भाग भी लिया था

विन्स्टन चर्चिल ने राजनीति मे सन् १६१० ई० से भाग लेना शुरु कर दिया था और तब से सन् १६६० ई० तक यह करीब-करीब लगातार इंग्लैड की संसद के सदस्य बने रहे। प्रथम विश्व-युद्ध के समय यह इग्लैंड के एक मन्त्री थे। इन्होंने सन् १६०८ ई० में मिस क्लेमेण्टाइन होज़ियर (Miss Clementine Hozier) से शादी की, और इन्ही के शब्दों में उसके बाद जीवन सुख से बिताया ("Lived happily e\er after.")।

इन्होंने बीसवी शताब्दी के सबसे बडे नाटक विश्व-युद्ध मे बहुत बड़ा पार्ट अदा किया था और अगर यह न होते, तो शायद विश्व-इतिहास का रूप आज कुछ और ही होता।

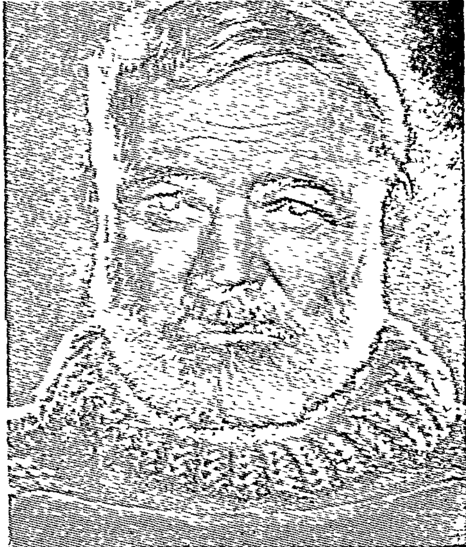
साहित्य में विन्स्टन चर्चिल का स्थान सुरक्षित है, क्योंकि इन्होने साहित्य-सेवा कई प्रकार से की है। इन्होने लेख, जीवनियाँ, उपन्यास और युद्ध का इतिहास (History of the War) का लिखा है। इनमे एक विशेषता यह है जो शायद किसी और लेखक मे नही है—कि यह इतिहास के बनाने वाले और लिखने वाले दोनों हैं। अग्रेजी के गद्य-लेखको में इनका स्थान बहुत ऊंचा है और इनके कुछ वाक्य तो अग्रेजी भाषा के मुहावरे और भिन्न अग बन गये हैं। विन्स्टन चर्चिल पत्रकार भी रहे है। २४ अप्रैल सन् १६५३ ई० को महारानी एलिजाबेथ ने इन्हें मोस्ट नोबल आर्डर ऑफ द गार्टर (Most Noble Order of the Garter) प्रदान किया था और इसी वर्ष १५ अक्तूबर को इनको नोबेल पुरस्कार प्रदान किया जाने की घोषणा की गई। इस समय इनकी आयु ७६ वर्ष थी।

सन् १६५३ ई० में इनको पुरस्कार प्रदान करते समय स्वीडश अकादमी ने कहा था :

"इनकी ऐतिहासिक और आत्मकथात्मक वर्णन की दक्षता तथा इनके साथ-ही-साथ उच्च मानवीय मूल्यों की रक्षा करने मे समर्थ इनकी मेधावी वाग्मिता के लिए", इन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) माई अर्ली लाइफ (My Early Life)	१९३०
(२) लार्ड रैण्डाल्फ़ चर्चिल (Lord Randolph Churchill)	१९०८
(३) द वर्ल्ड क्राइसिस (The World Crisis)	
(४) मार्लबोरो—हिज़ लाइफ़ एण्ड टाइम्स (४ भाग) (Marlborough—His Life and Times)	१९३३-८
(५) द सेकेण्ड वर्ल्ड वार (The Second World War)	१९४८-५४
(६) ए हिस्ट्री ऑफ़ द इंग्लिश स्पीकिंग पीपुल (A History of the English Speaking People)	१९५६



अर्नेस्ट हेमिंग्वे
(१८९८–१९६१)

सन् १९५४ ई० में अमरीका को यह सम्मान अर्नेस्ट मिलर हेमिंग्वे के माध्यम से प्राप्त हुआ। यह भी सिक्लेयर लेविस, पर्ल बक और फाकनर की तरह उपन्यासकार ही थे। इनका जीवन अत्यन्त घटनापूर्ण रहा है। और इन्होंने उन घटनाओं का प्रयोग अपने नायक (hero) के निर्माण में किया है।

अर्नेस्ट मिलर हेमिंग्वे (Ernest Miller Hemingway) का जन्म २१ जुलाई, १८९९ ई० को शिकागो मे हुआ था। इनके पिता डाक्टर थे। उन्हे शिकार और मछली पकडने का बडा शौक था और इनकी माँ को धर्म तथा संगीत मे अधिक रुचि थी। हेमिंग्वे बचपन का अधिकाश भाग मिशिगन (Michigan) में बीता था और वहीं पर इन्होंने वे अनुभव प्राप्त किये थे जो इनके एक उपन्यास में आये निक ऐडेम्स (Nick Adams) नामक बालक-पात्र के जीवन के अंग है।

हेमिंग्वे बचपन मे मुक्केबाजी सीखा करते थे, और इसी में इनकी एक आँख हमेशा के लिए खराब हो गई थी। यों तो यह फुटबाल भी खेलते थे, परन्तु लिखने मे ही इनकी रुचि अधिक थी। स्कूल-पत्रिका में यह लिखा करते थे। उन दिनो इन्होने कुछ कविताएँ और कहानियाँ भी लिखी थी। हेमिंग्वे अमरीका के अन्य उच्च-कोटि के लेखकों की भाँति विश्वविद्यालय मे शिक्षा नहीं पाई थी। यह तो स्कूल से भी कई बार भाग गए थे। १७ वर्ष की

अवस्था में कैन्सिस सिटी (Kansas City) से प्रकाशित होने वाली 'स्टार' (Star) नामक पत्रिका के संवाददाता की हैसियत से इन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में भाग लिया। सन् १६१६ ई० के बसन्त में यह रेडक्रास (Red Cross) की ऐम्बुलेन्स के ड्राइवर हो गये और इटली में लडाई में भाग लिया। इटली की सरकार ने इनकी बहादुरी के लिए पदक आदि देकर इनका सम्मान किया था। सन् १६१६ ई० में यह अमेरिका लौट आये। युद्ध-काल में इन्हे जो अनुभव हुए उनके कारण यह 'शैल-शाक्ड' (Shell-shocked) हो गए। चिकित्सा-शास्त्र की वर्तमान शब्दावली मे कहे तो यह त्रासज (traumatic neurosis) के शिकार हो गए। सन् १६२० ई० में इन्होंने पत्रकारिता फिर शुरू कर दी और सन् १६२६ ई० तक इसी में लगे रहे। शिकागो मे इनकी भेंट शेरवुड एण्डरसन से हुई, जिसका प्रभाव इनके ऊपर बहुत गहरा है फिर यह पेरिस चले गए और वहाँ पत्रकारिता मे लगे रहे। वहाँ गर्ट्रूड स्टाइन (Gertrude Stein), एज़रा पाउण्ड (Ezra Pound), जेम्स जायस (James Joyce) फोर्ड मैडाक्स फोर्ड (Ford Madix Ford) से इनकी भेंट तथा मित्रता हो हो गई। गर्ट्रुड स्टाइन ने इनका परिचय साड-युद्ध (Bull Fighting) से कराया। इनके कथनानुसार सन् १६३२ ई० तक यह १५०० सांडो की हत्या होते देख चुके थे। इनका कहना था कि साड-युद्ध एक सौन्दर्य-पूर्ण (aesthetic) अनुभव है।

सन् १६२८ मे यह अपने देश अमरीका वापस आ गये और आठ साल तक लिखने-पढ़ने और मछली मारने मे व्यस्त रहे। सन् १६३६ ई० मे जब स्पेन का गृह-युद्ध शुरू हो गया, तो यह वहाँ चले गये और वहाँ जाकर इन्होंने रिपब्लिकन पार्टी की मदद की। यह वहाँ से अपने देश के समाचार पत्रों के लिए युद्ध की खबरे भी भेजते रहे। सन् १६४१ ई० मे यह चीन गये। तीन साल बाद यह फिर युद्ध-सम्वाददाता की हैसियत से इंग्लैण्ड के रायल एअर फोर्स (Royal Air Force) के साथ उड़े। सन् १६४४ ई० मे पेरिस के युद्ध में भाग लिया था, और रिट्ज (Ritz) को आजाद किया था।

युद्ध के बाद यह लेखन-कार्य में जुट गए और धन कमाते रहे। इनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक 'द ओल्ड मैन एण्ड द सी (The Old Man And The Sea) सन् १६५२ ई० प्रकाशित हुई थी।

अर्नेस्ट हेमिग्वे ने चार विवाह किये थे। पहली पत्नी का नाम हैडले रिचर्डसन (Hadley Richardson) था और यह हेमिग्वे के प्रथम पुत्र की माँ थी। दूसरी पत्नी का नाम पालीन फ़ाइफ़र (Pauline Pfeiffer) था,

जिससे दो लड़के थे। तीसरी पत्नी का नाम मार्था गॉल्हार्न (Martha Gellhorn) था। वह स्वय भी उपन्यास लिखती थी। इन तीनो पत्नियो से इनका तलाक़ हो गया था। इनकी चौथी पत्नी का नाम मेरी वेल्श (Mary Welsh) है और वह आज भी जीवित है।

२ जुलाई सन् १९६१ ई० को अर्नेस्ट हेमिंग्वे का देहान्त हो गया।

अर्नेस्ट हेमिंग्वे ने अनेक कहानियों तथा उपन्यासो की रचना की है। इनकी रचनाओं मे इनके जीवन के अनुभवो का ही प्रयोग किया गया है। इनकी कुछ रचनाओ पर कुछ फिल्म भी बनी है। यह कहना कठिन होगा कि इनकी कौन-सी रचना सर्वश्रेष्ठ है। कुछ (जिनमे स्वीडिश अकादमी भी गिनी जायेगी) के मतानुसार 'द ओल्ड मैन एण्ड द सी (The Old Man Ard The Sea) इनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है। इसकी कहानी कुछ इस प्रकार है.

सैंटिएगो नाम का एक मछुआ है, जो अपनी छोटी-सी नाव मे गल्फ स्ट्रीम मे मछली मारता है। उसके साथ मैनोर्लो नामक एक लडका भी काम करता है। परन्तु एक बार लगातार ८४ दिन तक सैंटिएगो को कोई मछली नही मिली। इसलिए मैनोर्लो के माँ-बाप ने उसे किसी दूसरे मछुए के साथ लगा दिया। एक दिन सैंटिएगो गल्फ मे अकेले जाकर कटिया डालता है और एक बहुत बड़ी मछली उसके काटे को निगल लेती है। और फिर वह (मछली) लगातार दो दिन और दो रात तक उत्तर-पूरब की तरफ भागती रहती है और सैंटिएगो को भी अपने साथ खीचती रहती है। तीसरे दिन दोपहर को सैंटिएगो उस मछली को खीचकर पानी की सतह पर लाता है और अपनी बर्छी से उसे मार डालता है। मछली इतनी बडी है कि नाव मे नही रखी जा सकती, इसलिए वह उसे नाव की लम्बान से बाध देता है और नाव को घर की तरफ मोडता है। तब पहले एक-एक, फिर दो-दो फिर ढेरो शार्क मछलियाँ आकर उस मछली के माँस को नोच-नोच कर खा जाती है। जब सैंटिएगो अपने बन्दरगाह पर पहुँचता है, तो उस मछली की केवल हड्डियो की ठठरी तथा दुम बची होती है।

इसी पुस्तक के कारण हेमिंग्वे को सन् १९५२ ई० मे पुलिट्ज़र पुरस्कार (Pulitzer Prize) मिला था, और नोबेल पुरस्कार का आधार भी मुख्यत. यही पुस्तक थी।

स्वीडिश अकादमी ने इनके बारे मे कहा था :

"कहानी कहने की कला पर इनके प्रबल अधिकार के लिए जिसने समकालीन शैली को भी प्रभावित किया है और जिसका परिचय हमे उनके

हाल ही में प्रकाशित उपन्यास 'द ओल्डमैन एण्ड द सी' से भली भाँति मिल जाता है,' इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) इन अवर टाइम (In Our Time)	१९२५
(२) द सन ओल्सो राइजिज (The Sun Also Rises)	१९२६
(३) मैन विदाउट वीमैन (Men Without Women)	१९२७
(४) ए फ़ेयरवैल टू आर्म्स (A Farewell To Arms)	१९२९
(५) डैथ इन द आफटरनून (Death In The Afternoon)	१९३२
(६) विनर टेक नथिंग (Winner Take Nothing)	१९३३
(७) ग्रीन हिल्स आफ़ अफ्रिका (Green Hills of Africa)	१९३५
(८) टु हैव एण्ड हैव नाट (To Have And Have Not)	१९३७
(९) फार हूम द वैल टोल्स (For Whom The Bell Tolls)	१९४०
(१०) द ओल्ड मैन एण्ड द सी (The Old Man And The Sea)	१९५२



हाल्डर किल्जन लैक्सनेस
(१९०२–   )

सन् १९५५ का पुरस्कार आइसलैण्ड के लेखक हाल्डर किल्जन लैक्सनैस को प्रदान किया गया। आइसलैण्ड (Iceland) यूरोप के सुदूर उत्तर-पश्चिम मे आयरलैंड से भी दूर अटलाण्टिक महासागर मे स्थित एक द्वीप है। इसका क्षेत्रफल २७,७०९ वर्गमील है, और आबादी १,००,०००। इसकी राजधानी रेकजाविक (Reykjavik) है, जिसकी आबादी ५७,००० है।

आइसलैण्ड को बेल्जियम, चिली, फिनलैण्ड, भारत, आयरलैण्ड और यूगोस्लाविया की तरह साहित्य का पुरस्कार केवल एक ही बार मिला है।

भारतवर्ष मे लैक्सनेस के विषय मे अधिक सामग्री उपलब्ध नही है, इसलिए सामग्री जुटाने के लिए मैंने आइसलैण्ड के प्रधान मन्त्री और स्वय इनको भी पत्र लिखे थे। उत्तर-स्वरूप इन्होने जो सामग्री भेजी, वह नीचे दी जा रही है :

हाल्डर किल्जन लैक्सनेस का जन्म २३ अप्रैल, सन् १९०२ ई० को रेकजाविक के पास एक गाँव मे हुआ था। कुछ दिनो बाद यह लोग लैक्सनेस नामक स्थान पर जाकर रहने लगे और वही पर खेती करने लगे। हाल्डर किल्जन का पैदाइशी नाम गुडजान्सन (Gudjonsson) था, परन्तु इन्होंने वह नाम छोड़कर स्थान के नाम पर अपने को लैक्सनेस कहना शुरू कर दिया। इनकी

पहली रचना 'चाइल्ड आफ़ नेचर' (Child of Nature) नन् १६१६ ई० में, जब यह केवल १७ वर्ष के थे, प्रकाशित हुई थी। यह कुछ समय के लिए लैटिन स्कूल में भी पढ़ने गये थे।

लैक्सनेस को देशाटन का बहुत शौक है, और यह यूरोप-भर मे घूमा करते थे। बहुत थोड़ी ही अवस्था मे यह नार्वे, डेनमार्क, स्वीडन, जर्मनी, आस्ट्रेलिया और फ्रांस मे एक मठ (Monastery) मे भी भर्ती हो गये, और एक वर्ष के ऊपर वहाँ रहे भी। इन्होने पहले रोमन कैथालिक मत स्वीकार कर लिया था, परन्तु बाद मे इसे छोड दिया। इस समय इन्होने अपनी पुस्तक 'एट द होली माउण्टेन' (At The Holy Mountain) लिखी। इसके बाद यह लन्दन और फिर वहाँ से रोम गये। इनका पहला बडा उपन्यास 'द वीवर आफ काश्मीर' (The Weaver of Cashmere) सन् १६२७ मे प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास सिसिली (Sicily) के टाओर्मिना (Taormina) नामक शहर मे लिखा था। इस उपन्यास मे लैक्सनेस की आत्म-कथा का अश बहुत है। सन् १६२६ ई० मे यह कनाडा, सेनफ्रान्सिस्को और हालीवुड गये। यही पर अप्टन सिक्लेयर (Upton Sinclair) से इनकी मित्रता हुई थी।

लैक्सनेस ने कई प्रकार की रचनाये की है—उपन्यास, नाटक, कविता, अनुवाद इत्यादि। इनकी दूसरी पुस्तक 'सम् टेल्स' (Some Tales) सन् १६२३ ई० मे प्रकाशित हुई। 'बिलो द होली माउण्ट' (Below The Holy Mount) भी उसी वर्ष प्रकाशित हुई। इन्होंने रोमन कैथोलिक मत के पक्ष मे 'कैथालिक ऐटिट्यूड्स' (Catholic Attitudes) नामक एक पुस्तक लिखी थी, जो सन् १६२५ ई० मे प्रकाशित हुई थी। सन् १६२७ ई० मे प्रकाशित इनकी पुस्तक 'द वीवर आफ काश्मीर' (The Weaver of Cashmere) से इन्हे बहुत ख्याति मिली। सन् १६३० ई० मे यह अपने देश वापस आ गये और पूरी तरह लेखन-कार्य मे जुट गये। इनकी पहली बडी रचना 'सल्का वल्का' (Salka Valka) है, जो सन् १६३१-३२ ई० मे प्रकाशित हुई थी। 'सल्का-वल्का' और 'इण्डिपेण्डेन्ट पीपुल' (Independent People) (सन् १६३४-३५ ई०) इनके एक बड़े और महत्त्वपूर्ण लेखक होने की साक्षी है। इसके बाद इनकी रचनाये बराबर प्रकाशित होती रही। इनकी अन्तिम रचना 'द ऐनेल्स आफ ब्रेक्कुकोट काटेज' (The Annals of Brekkukot Cottage) नामक उपन्यास है जो सन् १६५६ ई० मे प्रकाशित हुआ था।

लैक्सनेस के विषय मे दो बाते विशेष महत्त्वपूर्ण है—(१) जब लैक्सनेस ने लिखना शुरू किया था तब इनके देश मे लेखन-कला को जीविकोपार्जन का

साधन नहीं समझा जाता था, और इनके देश के कई नवयुवक लेखक नार्वे और डेनमार्क जाकर अपना कार्य कर रहे थे। लैक्सनेस के उदाहरण ने लेखकों को देश छोड़ने से रोका। (२) लैक्सनैस की रचनाओं का अनुवाद दूसरी भाषाओं में होना कठिन है, क्योंकि आइसलैण्ड की भाषा नवी शताब्दी से करीब-करीब वही रही और उसका उपयोग लैक्सनेस ने बहुत कलात्मक ढग से किया है।

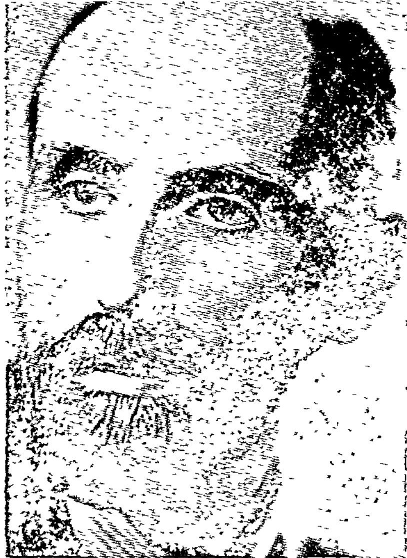
इनकी शादी सन् १९३० ई० में हुई थी। इनके दो लड़कियाँ है। सन् १९५८ ई० मे यह भारत भी आये थे।

सन् १९५५ ई० मे इन्हे पुरस्कार देते हुए स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"इनकी सजीव एपिक शक्ति के लिए, जिसने आइसलैण्ड की महान् आख्यान-कला को पुनर्जीवन प्रदान किया है," इन्हें यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) ए चाइल्ड आफ़ नेचर (A Child cf Nature)	१९१९
(२) द वीवर आफ काश्मीर (The Weaver of Cashmere)	१९२७
(३) सल्का-वल्का (Salka Valka)	१९३१
(४) इण्डिपेण्डेन्ट पीपुल (Independent People)	१९३४
(५) द हैप्पी वारियर्स (The Happy Warriors)	१९५२
(६) द ऐटम स्टेशन (The Atom Station)	१९४८
(७) द ऐनेल्स आफ ब्रेक्कुकोट काटेज (The Annals of Brekkukot Cottage)	१९५६



जुआन रामोन जिमेनेज़

(१८८१-१९५८)

सन् १९५६ का पुरस्कार स्पेन निवासी जुआन रामोन जिमेनेज को प्राप्त हुआ।

जुआन रामोन जिमेनेज का जन्म सन् १८८१ ई० मे रायो टिन्टो (Rio Tiito) नामक शहर के पास स्थित मोगुअर (Moguer) नामक स्थान पर हुआ था। इनकी रचनाओं से यह अण्डुलेशियन (Andulasian) मालूम पडते है, परन्तु वास्तव मे यह अधिकतर मैड्रिड (Madrid) के पास ही रहते थे। अपने जीवन के दस वर्ष इन्होंने सेनेटोरियमों (Sanatoriums) मे विताए थे और इसके बाद यह रेजिडेन्सिया (Residencia) में रहे थे। सन् १९१६ ई० में ३५ वर्ष की अवस्था मे इनकी शादी हो गई थी। यह कलात्मक और सौन्दर्यपूर्ण चीजो को बहुत पसन्द करते थे। सगीत, प्रकृति-सौन्दर्य और चित्र-कला से इन्हे विशेष लगाव था। यह अपने जीवन के अन्त समय मे अमरीका जाकर रहने लगे थे। सन् १९५८ ई० मे इनका देहान्त हो गया।

इन्होने २२ वर्ष की अवस्था मे अपना प्रथम कविता-संग्रह ऐरिअस त्रिस्तेस (Arias Tristes) प्रकाशित कराया था। अगले दो वर्षों मे इनकी दो पुस्तकें और प्रकाशित हुई। इनमे छोटी-छोटी दो कविताएँ है, और इनमे से अधिकाश का वर्ण्य-विषय अण्डुलेशिया ही है। इनमे दुखी मन को हलका करने का प्रयत्न किया गया है। इन पर वरलेन (Verlaine), यामेज (Jammes) और लाफार्ग (Laforgue) का प्रभाव प्रत्यक्ष है। इनकी पाँचवी पुस्तक 'एलेगियस' (Elegies) और छठी 'ला सोलेडाड सोनोरा' (La Solodad

Sonora) सन् १६०८ ई० मे प्रकाशित हुई। इन दोनों पुस्तको पर फ्रान्स के कवि मलार्मे (Mallarme) का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। सन् १६१६ ई० मे इनके जीवन में एक बहुत महत्त्वपूर्ण घटना घटी, और घटना यह थी कि इन्हे एक स्त्री से प्रेम हो गया था, परन्तु वह इनको छोड़कर न्यूयार्क चली गई थी। यह वहाँ गए, और इससे शादी करके उसे वापस लाए। इस घटना का वर्णन इनकी 'डाएरिओ डे अन पोएटा रेसिएन्कासाडो (Diario de un Poeta reciencasado) नामक पुस्तक मे किया गया है। इस घटना का असर इनकी कविता की शैली और रूप पर भी हुआ। अब यह वर्स लिब्रे (verse libre) का प्रयोग करने लगे। जुआन की रचनाओ का प्रभाव अपने समकालीन कवियों पर बहुत गहरा पडा है। यहाँ तक कि उन्होंने इनके 'कथ्य' (Theme) तक का पूरा-पूरा उपयोग किया है। इन कवियो मे गार्सिया लार्का (Garcia Larca) का नाम सर्वप्रथम है।

सन् १६५६ ई० में स्वीडिश अकादमी ने इनको पुरस्कार देते हुए कहा था :

"इनकी गीति-कविता के लिए, जोकि स्पैनिश भाषा मे ओज और कलात्मक पावनता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करती है," इन्हे यह पुरस्कार दिया जाता है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) सेगण्डा अण्टोलोज़िया पोएटिका (Secunda Antologia Poetica)	१६२२
(२) पोज़िया (Poesia)	१६१८-२३
(३) वेलेजा (Belleza)	१६१८-२३
(४) ला एस्टासियों टोटल (La Estacion Total)	
(५) कान लास कान्सियानेस डे ला नुएवा लुज (con las conciones de la nueva luz)	१६२३-३६



अल्बेयर कामू
(१९१३–६०)

फ्रास को नौवी बार साहित्य का नोबेल पुरस्कार सन् १९५७ ई० मे मिला। सम्मानित होने वाले लेखक थे अल्बेयर। इनमे और ग्रेट ब्रिटेन के प्रथम पुरस्कृत लेखक, रुडयार्ड किप्लिग मे दो-एक समानताये है। अभी तक किप्लिग को सबसे कम उम्र मे यह पुरस्कार मिला था। जब सन् १९०७ ई० मे इस पुरस्कार की घोषणा की गई, उस समय उनकी उम्र केवल ४२ वर्ष थी। अल्बेयर कामू की अवस्था किप्लिग से केवल एक ही वर्ष अधिक थी—४३ वर्ष। किप्लिंग कामू का फ्रास के तत्कालीन उपनिवेश अल्जीरिया (Algeria) मे। दोनो ही उपनिवेश अब स्वतन्त्र देश है। किप्लिग के माॅ-बाप ऐग्लो-इण्डियन थे, कामू के फ्रासीसी नही थे।

यहाॅ पर समानताये समाप्त हो जाती है। केवल एक बात और कही जा सकती हे और वह यह कि दोनो ने अपने-अपने जन्म के देशो मे साहित्य के लिए पहले नाम कमाया फिर ग्रेट ब्रिटेन और फ्रास मे सम्मानित हुए, वहाॅ गये।

अल्बेयर कामू का जन्म ७ नवम्बर, सन् १९१३ ई० को माण्डोवी नामक शहर मे हुआ था। यह शहर अल्जीरिया के उत्तर-पूरब मे है। इनके पिता को किसानी का काम करने वाला कहा गया है। यह ऐल्सेशियन (Alsatian) थे। इनकी माँ स्पेनिश थी। इनके पिता मर्ने की पहली लड़ाई (First Battle of Merne) मे काम आये थे। पिता के मरने के बाद ये लोग ऐल्जयर्स (Algeriers) मे, जो अल्जीरिया की राजधानी है, जाकर रहने लगे।

यहाँ कामू की माँ, नानी, चाचा, बड़े और यह खुद दो कमरों के एक मकान में रहने लगे। इनकी माँ को विवश होकर महरी का काम करना पड़ा, क्योंकि जीविकोपार्जन का कोई और साधन नही था।

कामू की प्रारम्भिक शिक्षा ऐल्जियर्स के ही एक स्कूल में हुई। यहाँ इनके एक गुरु ने इनको एक छात्रवृत्ति (scholarship) पाने मे मदद की। इसी समय में इन्होंने जीद (Gide), मालरो (Malraux) और माण्टरलाण्ट (Montherlant) आदि की रचनायें पढ ली थीं, इनको खेल-कूद में विशेष रुचि थी, और इनकी यह रुचि अन्त तक बनी रही। इनको थियेटर में भी दिलचस्पी थी। सन् १९३० ई० मे इनके डाक्टरों ने बताया कि इनको तपेदिक हो गई है। इसलिए यह अपना घर छोडकर अपने एक सम्बन्धी के साथ अलग रहने लगे। इस समय इन्हे अपने जीविकोपार्जन के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के काम करने पड़े। कुछ दिन तक इन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी का भी काम किया था। इसी बीच यह विश्वविद्यालय में पढ़ते भी रहे थे। यहाँ पर इन्होने ग्रीक भाषा का अध्ययन विशेष रूप से किया।

इनकी पहली पुस्तक 'ल'एन्वर्स एट एन्ड्रोये' (L'Envers et Endroit) एल्जिअर्स मे सन् १९३७ ई० मे प्रकाशित हुई थी। सन् १९४८ ई० मे इनकी दूसरी कृति 'नोसेज' (Noces) प्रकाशित हुई और इसी वर्ष यह देशाटन के लिए मध्य यूरोप, इटली और फ्रास चले गये। सन् १९४० ई० मे यह पेरिस गये और वहाँ 'पेरिस सार' (Paris Soir) में काम करने लगे। जून, सन् १९४० ई० में जब फ्रांस ने आत्म-समर्पण कर दिया तो यह अफ़्रीका चले गये और अगले दो वर्ष तक वहाँ के एक स्कूल मे पढाते रहे। सन् १९४२ ई० में यह फिर पेरिस चले गये। इससे इनकी बहादुरी और देश-भक्ति का अच्छा परिचय मिलता है। फ्रांस में रहकर इन्होंने जर्मनी का विरोध किया। अब यह अपना पूरा समय साहित्यिक कामों में ही लगाते थे। सन् १९४६ ई० मे यह अमरीका में लेक्चर देने भी गये थे।

इन्होंने सन् १९४० ई० में शादी की। इनके एक पुत्र और एक पुत्री है। जीवन के अन्त में यह पेरिस में ही रहने लगे थे। ४ जनवरी, सन् १९६० ई० को एक मोटर-दुर्घटना में इनका देहान्त हो गया।

कामू ने अपने ४७ वर्ष के अल्प जीवन मे न केवल अपने देश और यूरोप में, वरन समूचे साहित्य-संसार में बहुत ख्याति अर्जित की थी। इन्होंने लेखों, उपन्यासों, नाटकों और दार्शनिक रचनाओं से विश्व-साहित्य का कोष भरा था। यह भी स्मरणीय है कि कामू का सन् १९१३ ई० मे पैदा होना, प्रथम और

द्वितीय विश्व-युद्ध के प्रभावों को अनुभव करना, अल्जीरिया में शुरू के वर्ष बिताना और फिर पेरिस मे आकर बस जाना कुछ ऐसी बातें है जो इनके जीवन को एक विशेष प्रकार के ढाँचे में ढालती रही थीं।

इनकी रचनाओ मे कई विशेषताये है, परन्तु जो सबसे महत्त्वपूर्ण है वह है मनुष्य का इस लोक में अकेलापन। कामू बार-बार इस बात को अपनी रचनाओ मे दोहराते है। इनके ऊपर ग्रीक दर्शन, क्रिश्चियनिटी, अल्जीरिया और यूरोप की सस्कृति का गहरा प्रभाव था। इन्होने अपनी रचनाओ मे अधर्म, नास्तिकता, मृत्यु और कष्ट का वर्णन अनेक स्थलों पर किया है।

जब यह एक पत्रिका के सम्पादक थे, तो इनके सम्पादकीय, जो फ्रेंच दैनिक 'कम्बैट' (Combat) में सप्ताह मे तीन बार निकलते थे, बड़े चाव से पढे जाते थे, और इनको फ़ांस्वा मारिआक (Francois Mauroic) के लेखों के समकक्ष माना जाता है। कामू के विचारों पर इनके पाठक बहुत ध्यान देते थे। इनकी रचनाओं में इनकी पीढ़ी की कठिनाइयों और साथ ही इच्छा-आकाक्षाओ का वर्णन है।

एक बात यहाँ कह देना शायद अनुपयुक्त नही होगा, और वह यह कि यह अल्जीरिया के निवासी अरबो को उसी घृणा की दृष्टि से देखते थे जिस दृष्टि से किप्लिग भारतवासियो को।

सन् १९५७ ई० मे इन्हे पुरस्कार देते हुए स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"इनकी महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कृतियो के लिए, जो सर्वथा अनाविल दृष्टि और तत्परता के साथ वर्तमान काल की मानवीय चेतना की समस्याओं पर प्रकाश डालती है" यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) ला पेस्ट (La Pest)	१९४४
(२) ला शूट (La Chute)	१९५६
(३) ले जस्टिस (Les Justice)	१९५०
(४) ल'होम रिवोल्टे (L'Homme Revolte)	१९४७
(५) ल'आर्ट (L'Art)	१९५५



बोरिस लिवोनदोविच पास्तरनाक

(१८९०–१९६०)

यूरोप के और संसार के भी, साहित्य में रूस के साहित्य का स्थान अभिमाननीय है। इसके लेखकों से यूरोप के हर देश के लेखक प्रभावित हुए है। परन्तु आज तक रूस को केवल दो बार यह पुरस्कार प्रदान किया गया है—सन् १९३३ ई० में बुनिन को जिन्होंने अपना देश त्याग दिया था, और सन् १९५८ ई० मे पास्तरनाक को जिन्होंने यह पुरस्कार लेने मे इन्कार कर दिया। यह भी उल्लेखनीय है कि सन् १९०१ ई० मे जब यह पुरस्कार फ्रान्स के सुली प्रूधों को दिया गया था, तो स्वीडन में टाल्स्टाय के न चुने जाने पर ४२ लेखकों और कलाकारो ने अपना विरोध प्रकट किया था। परन्तु दो बाते स्मरणीय हैं . (१) टाल्स्टाय का नाम नियमानुसार प्रस्तावित नही हुआ था, और (२) अभी तक नोवेल कमेटी ने अपने-आप नामो को प्रस्तावित सूची मे जोड़ना आरम्भ नही किया था। परन्तु इस विरोध के कारण नोवेल कमेटी को शुरू ही मे एक गहरा धक्का लगा था।

बोरिस पास्तरनाक का जन्म २० फ़रवरी, सन् १८९० ई० को हुआ था। इनके पिता का नाम था लिवोनद (Leorid) और माता का रोज़ा काफ़मान (Rasa Kaufman) था। ये लोग धनी और संगीत के प्रेमी थे। इनके पिता चित्रकार थे। बोरिस पास्तरनाक का संगीत से प्रेम हो जाना स्वाभाविक ही था। इनकी शिक्षा शुरू में मास्को के एक जिम्नीज़ियम में और उसके बाद वहाँ

के विश्वविद्यालय मे हुई। यहाँ पर इन्होने कानून का अध्ययन किया। परन्तु इनको विचारो से इतना प्रेम हो गया कि यह संगीत और कानून का अध्ययन छोड़कर दर्शनशास्त्र के अध्ययन के लिए मर्वर्ग (Marburg) (जर्मनी) चले गये। यहाँ इन्होने हर्मान कोहेन (Hermann Cohen) की देख-रेख मे दर्शन का अध्ययन किया। कुछ समय वाद यह मास्को लौट आये और लेखन-कार्य शुरू कर दिया।

सन् १९०५ ई० में जव जापान ने रूस को हराया था। तव वोरिस पास्तरनाक केवल पन्द्रह वर्ष के थे, लेकिन इस पराजय का इनके मान पर वहुत गहरा असर हुआ था। नौ वर्ष वाद जव प्रथम विश्व-युद्ध छिडा था तो यह २४ वर्ष के थे, और जव यह २७ वर्ष के थे तव रूस में ससार को हिला देने वाली क्रान्ति हुई थी। इन सव वातों का प्रभाव इनके ऊपर होना अनिवार्य था।

सन् १९१५ ई० मे वोरिस पास्तरनाक क्यूवो फ्यूचरिस्ट ग्रुप (Cubo-Futurist Group) मे सम्मिलित हो गये। बचपन में इनका एक पैर टूट चुका था, इस कारण यह युद्ध मे तो काम नही कर सके, परन्तु यह यूराल्स में जाकर एक फैक्टरी मे काम करने लगे। उसके वाद इन्होने लिखना शुरू कर दिया और अपने जीवन के अन्त तक लिखते रहे। इनकी शादी ज्हेनिया (Zhenia) नामक स्त्री से हुई थी, और इनसे इन्हे एक लडका भी था।

३० मई, सन् १९६० ई० को कैन्सर से मास्को मे इनका देहान्त हो गया।

वोरिस पास्तरनाक का साहित्यिक जीवन अत्यन्त रोचक है।

सन् १९१३ ई० मे इटली का भ्रमण करने के वाद इन्होने अपनी पहली पुस्तक 'ट्विन इन द क्लाउड्स' (Twin in The Clouds) लिखी, जो सन् १९१४ ई० मे प्रकाशित हुई। विश्व-युद्ध के समय भी यह कविताएँ लिखते रहे और इनका दूसरा सग्रह 'ओवर द वैरिअर्स' (Over The Barriers) सन् १९१६ ई० मे और 'माई सिस्टर, लाइफ' (My Sister, Life) सन् १९२२ ई० मे प्रकाशित हुई। फरवरी की क्रान्ति के वाद यह मास्को लौट आये और सरकार के शिक्षा विभाग में काम करने लगे। सन् १९२२ ई० और सन् १९३२ ई० के वीच इन्होने कई पुस्तकें प्रकाशित की। इनमे कुछ कविता की थी और कुछ गद्य की थी। इनमे एक 'एरियल वेज' (Aerial Ways) थी, और एक इनकी संक्षिप्त आत्मकथा 'सेफ़ कण्डक्ट' (Safe Conduct)। सन् १९४२ ई० मे इनका एक और सग्रह 'इन अर्ली ट्रेन्स' (In Early Trains) प्रकाशित हुआ।

वोरिस पास्तरनाक ने विदेशी लेखकों की रचनाओं का अनुवाद भी रूसी

भाषा में किया था। इन्होंने गेटे (Goethe), क्लीस्ट (Kleist), हार्वे (Hervegh), बेन जान्सन (Ben Jonson), स्विन्बर्न (Swinburne) और शैली (Shelley) की कविताओं का रूसी में अनुवाद किया था। इन्होंने शेक्स्पीयर की 'हैमलेट', 'आथेलो', 'ऐन्टनी ऐण्ड क्लिओपेट्रा' (Antony and Cleopatra) और रोमियो एण्ड जुलियट (Romeo and Juliet) का भी अनुवाद किया था।

इनके एक प्रसिद्ध उपन्यास 'डाक्टर जिवागो' (Doctor Zhivago) को लेकर सन् १९५७-५८ ई० मे पश्चिम मे एक बहुत बड़ा तूफान खड़ा हो गया था। जैसा कि सभी को पता है यह उपन्यास रूस में नही छपा था। हुआ यह था कि इसकी पाण्डुलिपि किसी तरह रूस से इटली भेज दी गई थी, और वहीं के एक प्रकाशक ने इसे प्रकाशित किया था। बाद मे तो इसका अनुवाद यूरोप की लगभग सभी भाषाओं में हो गया था। यह बहुत महत्त्वपूर्ण पुस्तक है, क्योंकि एक तो इसमें रूसी क्रान्ति के प्रति निराशा प्रकट की गई है, और दूसरे इसमे लेखक के निजी जीवन का भी परिचय मिलता है। इस पुस्तक के प्रकाशन से रूसी सरकार को बहुत धक्का पहुँचा। जब २३ अक्तूबर, सन् १९५८ ई० को पास्तरनाक को नोबेल पुरस्कार देने की घोषणा की गई तो रूसी सरकार ने पास्तरनाक के खिलाफ़ आवाज उठाई। उधर पश्चिमी साहित्यकारो ने इस बात का पूरा-पूरा लाभ उठाया। फौरन ही इस बात का प्रचार किया गया कि इनको 'डाक्टर जिवागो' पर यह पुरस्कार मिला है। यह बात एकदम झूठ थी, लेकिन हाँ, इस झूठे प्रचार के कारण डाक्टर जिवागो की हजारो प्रतियाँ अवश्य बिक गईं।

सन् १९५८ ई० में स्वीडिश अकादमी ने इन्हे पुरस्कार प्रदान करते हुए कहा था : "समकालीन गीति-काव्य और महाकाव्य की महान् रूसी परम्परा दोनो ही क्षेत्रो में इनकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियो के लिए," इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है। पास्तरनाक ने पुरस्कार लेने से इन्कार कर दिया।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) ट्विन इन द क्लाउड्स (Twin In The Clouds)	१९१४
(२) ओवर द बैरिअर्स (Over The Barriers)	१९१६
(३) माई सिस्टर, लाइफ़ (My Sister, Life)	१९२२
(४) सेफ कण्डक्ट (Safe Conduct)	
(५) डाक्टर ज़िवागो (Doctor Zhivago)	१९५८



सल्वातोर क़ाज़ीमोदो

(१६०१–   )

पच्चीस वर्ष के उपरान्त इटली को फिर गर्व अनुभव करने का अवसर मिला। इसके पहले सन् १६०६ ई० में काड्ूची, सन् १६२६ ई० मे ग्रेजिया डेलेड्रा और सन् १६३४ ई० में पिराण्डलो अपने और अपने देश के लिए यश कमा चुके थे। अबकी बार ससार के सब लेखको मे से इटली के कवि सल्वातोर काजीमोदो को सर्वश्रेष्ठ माना गया।

इनके विषय मे पुस्तकों द्वारा ज्ञान प्राप्त करने मे असफल होकर मैंने उन्हें स्वयं पत्र लिखा था और उनके जीवन तथा रचनाओ के विषय मे जिज्ञासा प्रकट की थी। उत्तर मे उन्होंने कृपा करके मुझे जो पत्र लिखा था, उसका अनुवाद नीचे दिया जा रहा है—

मिलानो, ३० जनवरी १६६०
कासो गारिबाल्डी, १६

प्रिय महोदय,

आपके पत्र के लिए धन्यवाद। मुझे पूरी आशा है कि आप विलम्ब (उत्तर मे) का कारण समझकर मुझे क्षमा करेंगे।

अपने जीवन और काम के विषय मे मै आपको कुछ समाचार भेज रहा हूँ, और 'फ़ाइन लेटरिंग' नामक समाचार-पत्र में छपा एक लेख भी, जिसमें जो कुछ सूचनाएँ आप चाहते है, मिल जायेगी ।

—सल्वातोर क़ाजीमोदो

जो लेख इन्होंने भेजा था, उसका अनुवाद नीचे दिया जा रहा है—

सल्वातोर काजीमोदो २० अगस्त, सन् १६०१ ई० को सिराकूमम मे पैदा हुए थे । जव यह युवा ही थे तव इन्होने सिसिली (Sicily) छोड़ दिया और रोम जाकर इन्जीनियरिंग का अध्ययन करने लगे । कुछ वर्ष वाद इन्होने यह कॉलिज भी छोड़ दिया और सन् १६२१ ई० से प्रोफेसर राम्पोला डेल टिण्डारो के साथ ग्रीक और लेटिन भाषा का अध्ययन करने लगे । दस वर्ष तक इन्होने पब्लिक इंजीनियरिंग डिपार्टमेण्ट मे भिन्न-भिन्न शहरो मे काम किया । अन्त में यह मिलान पहुँचे, जहाँ इनका कवि-जीवन आरम्भ हुआ ।

सन् १६३० ई० में इन्होंने अपनी कुछ कविताएँ भिन्न-भिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाईं । सन् १६३८ ई० से सन् १६४० ई० तक यह 'टाइम्स' पत्रिका में आलोचक के रूप मे लिखते रहे । सन् १६४१ ई० मे यह मिलान के जिसेफ कॉलिज (Giuseppe Verdi) मे, जो कि एक सगीत कॉलिज है, इटेलियन साहित्य के प्रोफेसर नियुक्त हुए । इसी समय यह फ़्लारेन्स की नेशनल अकादमी (Accademia nazionale) के सदस्य भी चुने गये ।

सन् १६३३ ई० मे इनको इनकी कविता 'डेल्आन्टिको फस्टोर' (Dell' Antico Fattore) (बूढा किसान) पर एक पुरस्कार भी मिला । सन् १६४३ ई० में इनको इटेलियन एकेडेमी (dell 'Accademia d'Italia) की ओर से भी पुरस्कार मिला । सन् १६५० ई० मे इन्हे मिलान का प्राइमो एस० वाविला (Primo S. Babila) नामक पुरस्कार मिला । सन् १६५३ ई० मे इनको मिलान का प्रेमिओ इन्टरनाजिओनेल इटना-टाओर्मिना (Premio Internazionale Etna-Taormina) नामक पुरस्कार भी डाइलन टामस (Dylon Thomas) के साथ मिला । सन् १६५८ ई० मे विरज्जियों नामक पुरस्कार मिला और सन् १६५६ ई० में नोवेल पुरस्कार सन् १६५६ ई० मे स्वीडिश एकेडेमी ने इन्हे पुरस्कार प्रदान करते हुए कहा था

"इनकी गीति-कविता के लिए, जो क्लैसिकल ओज के साथ हमारे आज के जीवन के करुण व दुःखद अनुभवों को वाणी देती है," इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है ।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) अक्व अ टेर (Acque e terra)	१९३०
(२) ओवोसोमर्सो (.Oboe Sommerso)	१९३२
(३) ओडोर दि इयुकलिप्ट्स एड आल्ट्री वर्सी (Odore di Eucaliptus ed altri versi)	१९३३
(४) ला टेरा इम्पारे जि्जआवाइल (La terra impareggiabile)	१९५८
(५) लिरिका द'अमोर इटालियाना (Lirica d'amor italiana Macbeth)	१९५७
(६) मैक्वेथ (अनुवाद) Macbeth	१९४९



सेण्ट जान पर्स

(१८८७–   )

सन् १९६० का नोबेल पुरस्कार फ्रास के सेण्ट जान पर्स को दिया गया।

सेण्ट जान पर्स का वास्तविक नाम एलेक्सिस सेण्ट लेजर लेजर (Alexix St. Leger Leger) है। इनका जीवन-चरित्र और लेखको मे भिन्न तथा रोचक है। इनका जन्म ३१ मई सन् १८८७ ई० को गुडेल्प (Guadeloupe) के पास स्थित सेण्ट लेजर ले फूले (Saint-Leger les Feuilles) नामक एक टापू पर हुआ था। एक बूढे बिशप (Bishop) इनके शिक्षक थे और शिव की आराधना करने वाली एक हिन्दू महिला इनकी आया थी। यह ग्यारह वर्ष की अवस्था में फ्रांस लाये गए और वहाँ पर साहित्य, चिकित्सा-शास्त्र और कानून का अध्ययन करने लगे।

सन् १९१७ ई० में यह राजनैतिक काम पर चीन भेजे गए। इन्होने वहाँ चीनी दार्शनिकों से मित्रता की और चीन का देशाटन किया। वहाँ इन्होने गोबी मरुस्थल से परिचय प्राप्त किया, और फिजी (Fiji) और न्यु हेब्रिडीज़ (New Hebrides) का भी भ्रमण किया। सन् १९२२ ई० में यह एक नि.शस्त्रीकरण-कांफ्रेन्स मे भाग लेने के लिए वाशिंगटन गए। वहाँ से यह फ्रांस वापस चले आए, और कुछ समय बाद विदेश मत्रालय में स्थायी सचिव हो गए। इन्होंने ब्रूसेल्स, रोम और वाशिंगटन इत्यादि जगहों को राजनीतिक काम पर जाने से इनकार कर दिया। इन्होंने राजनीति मे भी बहुत काम किया है, परन्तु यहाँ

केवल उनके लेखक-जीवन का परिचय देना ही समीचीन होगा।

इनकी पहली कविता 'इमेजिज ए क्रूसो' (Images a Crusoe) सन् १६०६ ई० में, और इनकी कविताओं का पहला संग्रह, 'इलोजिज' (Eloges) सन् १६१० ई० मे प्रकाशित हुआ। यह संग्रह इन्होंने 'सेण्ट लेजर लेजर'(Sairt Leger Leger) के नाम से ही प्रकाशित करवाया था। फिर सन् १६२४ ई० मे इनकी महत्त्वपूर्ण रचना 'अनाबेस' (Anabase) प्रकाशित हुई। इस कविता से इनको बहुत ख्याति मिली। इसका अनुवाद सन् १६३० ई० मे टी० एस० इलियट ने अंग्रेजी मे किया। इसके बाद तो इसका अनुवाद रूमानियन, जर्मन, इटैलियन और रूसी आदि अनेक भाषाओ मे हुआ। मार्च, सन् १६२४ मे 'कविता' नामक पत्रिका मे इनकी रचना 'एक्जाइल' (Exile) फ्रेन्च भाषा मे प्रकाशित हुई। यह पहला अवसर था जब इस पत्रिका मे अंग्रेजी के अलावा अन्य किसी भाषा मे कोई कविता प्रकाशित हुई हो। इनके ऊपर टैसिटस (Tacitus), पर्सिअस (Persius) और रेसीन (Racine) का गहरा प्रभाव है।

सन् १६४० ई० मे जब फ्रांस को नाजियो से हार माननी पडी, तो यह फ्रास छोडकर कनाडा चले गए। पेरिस मे नाजियो ने इनके घर को लूट लिया और इनके पाँच कविता-सग्रहो की पाण्डुलिपियो को जलाकर राख कर दिया। सन् १६४० ई० से यह काग्रेस की लाइब्रेरी मे काम कर रहे है, और आजकल वाशिगटन डी० सी० मे रहते है। परन्तु अभी भी यह फ्रेन्च नागरिक है।

इनकी 'वेन्ट्स' (Vents) नामक कविता सन् १६५३ ई० में प्रकाशित हुई, और अगले ही वर्ष एक नई और लम्बी कविता 'एमर्स' (Amers) भी। यह फासीसी भाषा मे ही रचना करते है। इनके मतानुसार फासीसी ही एक ऐसी भाषा है, जिसके माध्यम से वह अपनी, अपने मन की बात कह सकते है, अपने भावो को वाणी दे सकते है।

इनकी कविता 'अनाबेस' के विषय मे टी० एस० इलियट ने सन् १६३० ई० में लिखा था—'अनाबेस' न केवल फास मे ही वरन् यूरोप के अन्य देशो मे बहुत प्रसिद्ध है। इस कविता के कई परिचय लिखे गए है, परन्तु शायद ह्यूगो वान हाफमान्स्थाल (Hugo von Hofmannsthal) का परिचय, जो कि जर्मन संस्करण मे है, सबसे अच्छा है।…मेरा विश्वास है कि इसका महत्त्व जेम्स जायस (James Joyce) के बाद की रचनाओं से कम नही है, और यह 'अन्ना लिविया प्लूराबेल्म' (Anna Livia Plurabelle) की तरह मूल्यवान है और यह वास्तव मे ऊँचा अनुमान है।"

सेण्ट जान पर्स को सन् १९६० ई० में साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्रदान करते समय स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"इनकी कविता की उड़ान और प्रबोधक कल्पना के लिए, जो अपने स्वप्नमय रूप से आज की परिस्थितियों को अभिव्यक्त करती है,' इन्हें यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) अनाबेस (Anabase)	१९३४
(२) इमेजिज ए क्रूसो (Images a Crusoe)	१९०९
(३) इलोजिज (Elog.s)	१९१०
(४) एक्जाइल (Exile)	१९४९
(५) वेन्ट्स (Vents)	१९५३





आइवो एण्ड्रीक
(१८९२-   )

सन् १९६१ ई० मे नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने का सौभाग्य यूगोस्लेविया को मिला। यूगोस्लेविया यूरोप का एक छोटा-सा देश है। इसके एक ओर ऐड्रियेटिक सागर (Adriatic Sea) और दूसरी ओर यूरोप के अन्य देश हैं। सन् १९२९ ई० के पहले सर्वस्, क्रोएट्स और स्लोवेनीज़ (Serbs, Croats & Sovenes) का देश कहा जाता था। इनकी जनसंख्या १,९९,००,००० है। इसकी राजधानी बेलग्रेड (Belgrade) है, जिसकी जनसंख्या ४७,००,००० है।

यूगोस्लोविया को आज तक यही एक पुरस्कार मिला है और उसे यह सम्मान दिलाने वाले लेखक है आइवो एण्ड्रीक।

आइवो एण्ड्रीक का जन्म १० अक्तूबर, सन् १८९२ को ट्राव्निक नामक शहर मे हुआ था। इन्होंने वास्ग्राड के एक स्कूल मे शिक्षा पाई थी। इस सुन्दर और छोटे से-शहर के जीवन ने इनको बहुत प्रभावित किया था। यही कारण है कि इसकी घटनाओ और यहाँ के रहने वालों का इन्होंने अपनी रचनाओं में बारम्बार जिक्र किया है। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'द ब्रिज आन द ड्रिना' (The Bridge On The Drina) का तो घटनास्थल तक यही छोटा-सा शहर है। इन्होंने हाई स्कूल साराजेवो (Sarajevo) से पास किया, और फिर दर्शनशास्त्र का अध्ययन जैग्रेब (Zagreb), वियेना, क्राकोवो (Krakovo) और ग्राज़

(Graz) में किया। ग्राज में इन्होने सन् १९२३ ई० में डाक्टर की उपाधि भी प्राप्त कर ली थी।

प्रथम विश्व-युद्ध में आस्ट्रियावासियो ने इन्हे यूगोस्लैव राष्ट्रवादी कह कर कारावास मे डाल दिया था। अब सर्वो, क्रोएटों और स्लोवेनीज का एक नया देश बना, तब इन्होने राजनीति में भाग लेना शुरू किया, और कई जगह राजदूत बनकर भी गए। जब यूगोस्लेविया का पतन हुआ तो यह राजनीति और सार्वजनिक जीवन से बिलकुल हट गये। अब यह यूगोस्लाव लोगो और उनकी क्रान्तिकारी लड़ाई में जो कि स्वाधीनता के लिए हो रही थी, सहानुभूति रखने लगे। युद्ध के बाद यह बोस्निया-हर्जेगोविना (Bosnia-Herzegovina) के पीपुल्स ऐसेम्बली (People's Assembly) मे डिप्टी (Deputy) थे, और यह फेडरल पीपुल्स एसेम्बली (Federal People's Assembly) के भी कई वर्ष तक सदस्य रहे थे।

प्रथम विश्व-युद्ध के अन्त तक इनका नाम लेखक के रूप मे काफी चमक चुका था। यों इनकी लघु कविताएँ, राजनीतिक लेख और अनुवाद 'बोसान्स्का विला' (Bosanska Vila), 'विहोर' (Vihor) और अन्य पत्रिकाओ मे सन् १९११ ई० से ही निकलने लगे थे, परन्तु एक साहित्यकार के रूप मे प्रतिष्ठा इन्हे तब मिल पाई, जबकि इनकी 'एक्स पान्टो' (Ex Ponto—सन् १९१८) और 'डिस्टरबेंसिज' (Disturbances—सन् १९२०) नामक पुस्तके प्रकाशित हो गई। निबंधकार (Essayist) के रूप मे भी इनका स्थान काफ़ी ऊँचा माना जाता है। इन्होने ऐतिहासिक महत्त्व के लोगो, कलाकारों तथा लेखकों पर लेख लिखे हैं। इन लेखो के आधार इनके अपने देश के व्यक्ति भी हैं और विदेश के भी। इनमें बालिवार (Bolivar), पेट्रार्क (Petrarch), गोया (Goya), न्येगास (Njegos), वूक (Vuk), माटावूल्ज (Matavulj), कोसिक (Kocic) और गोर्की (Gorki) आदि पर लिखे गए इनके लेख विशेष उल्लेखनीय है। इसके साथ-ही-साथ इन्होने कई आलोचनात्मक ग्रन्थ भी लिखे है। इन्होने स्वेटोजार कोरोविक (Svetozar Corovic), ए० जी० मेटोस (A. G. Matos), ड्रागुटिन डाम्जानिक (Dragutin Domjanic) के विषय में 'विहोर' (Vihor), 'युगोस्लोवेन्स्कान्जीवा' (Yugoslavia Field) 'न्यूजेन्नी जग' (Literary South), 'स्प्रस्की इन्जीजेन्नी ग्लास्निक' (Serbian Literary Recorder) आदि पत्रिकाओं में भी अपने लेख प्रकाशित करवाए है।

इनकी पुस्तको में 'द ब्रिज आन द ड्रिना' (The Bridge On The Drina), 'रायका' (Raika) और 'ट्रैव्निक क्रानिकल्स' (Travnik Chroni-

cles) विशेष महत्त्वपूर्ण है। इन सभी उपन्यासों का कई विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इनकी 'एक्स पान्टो' (Ex Ponto) गद्य-गीत संग्रह (Poems In Prose) है। इनकी कहानियों के भी दो संग्रह प्रकाशित होचुके है।

सन् १९५८ ई० मे 'म्लाडेस्ट' (Mladest) नामक समाचारपत्र में इनका एक इण्टरव्यू छपा था, जिसमें इनसे दो प्रश्न पूछे गये थे। पहला था—'आप जो कुछ आज है वह आप कैसे बने ?" ए प्रश्न के उत्तर मे इन्होंने कहा—"कुछ वर्ष पहले मैंने एक छोटा-सा लेख 'पुस्तक और साहित्य के संसार मे मेरा आगमन' (My Entrance Into The World of Books And Literature) प्रकाशित करवाया था। यह एक प्रश्नावली का उत्तर था। मैंने तब विचार किया था, और अब भी विचार करता हूँ, कि एक लेखक सब प्रश्नों का उत्तर एक कहानी के रूप मे दे सकता है, और दूसरो से बातचीत करने का यह सबसे सुन्दर तरीका है।" इसके बाद यह अपने जीवन पर आधारित एक कहानी कहते है।

आपका दूसरा प्रश्न है : "मै अपना काम क्यों पसन्द करता हूँ ?" मुझे इसका उत्तर एक प्रश्न से ही देने की आज्ञा दीजिये। यह कैसे सम्भव हो सकता है कि जो काम हम लोगो को अच्छा न लगे वह हम करे ? शायद यह कहा जा सकता है कि हम लोगो का पेशा हम लोगो को चुनता है, हम लोग अपने पेशे को नही चुनते। या हम लोग अपने पेशे को चुनते है, परन्तु तभी जब करीब-करीब यह स्पष्ट हो जाता है कि अमुक पेशे ने हम लोगों को चुन लिया है। सन् १९६१ ई० मे इनको पुरस्कार देते हुए स्वीडिश अकादमी ने कहा था—

"एक एपिक शक्ति के लिए, जिससे इन्होने अपने देश के इतिहास पर आधारित प्रकरणो और मनुष्य के भाग्य का चित्रण किया है," इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) द ब्रिज आन द ड्रिना (The Bridge On The Drina)	१९३९
(२) बोस्नियन स्टोरी (Bosnian Story)	१९५८
(३) रायका (Raika)	
(४) ट्रैविनक क्रानिकल्स (Travnik Chronicles)	
(५) मिस एक्स (Miss X)	



जॉन स्टेनबेक
(१६०२-   )

सन् १६६२ ई० में जॉन स्टेनबेक को यह पुरस्कार मिला। यह छठे अमरीकी लेखक है, जिनको यह सम्मान मिला है, और यह पुरस्कार पाने वालों में केवल पर्ल बक और जॉन स्टेनबेक ही इस समय जीवित है।

जॉन स्टेनबेक का जन्म २७ फरवरी, सन् १६०२ को कैलिफोर्निया के सालिनास नामक शहर में हुआ था। इनके पिता का नाम जॉन अर्न्स्ट स्टेनबेक (John Ernst Steinbeck) और माता का आलिव हैमिल्टन स्टेनबेक (Olive Hamilton Steinbeck) था। अपने पिता की ओर से यह जर्मन थे और माता की ओर से उत्तरी आयरिश (Northern Irish)। इन्होने सालिनास हाई स्कूल में शिक्षा पाने के वाद स्टैम्फ़र्ड विश्वविद्यालय में चार वर्ष व्यतीत किए, परन्तु किसी डिग्री के लिए नही। इन्हे विज्ञान ने अपनी ओर सबसे अधिक आकर्षित किया था और उसमें भी समुद्री प्राणीविज्ञान (Marire Biology) ने।

इन्होंने जीवन मे निर्धनता का पूरा और भली प्रकार अनुभव किया है। इसीलिए लेखक बनने के पहले इन्हे कई प्रकार के काम करने पड़े थे। कुछ समय तक यह न्यूयार्क की एक पत्रिका के सम्वाददाता थे, परन्तु चूँकि इनका काम सम्पादक को घटनात्मक कम और साहित्यिक लगा, इसलिए यह इस पद से हटा दिये गए। कुछ दिनों तक इन्होने मजदूरी की, चित्रकारी सीखी, रसायनशास्त्र का काम सीखा और सर्वेयर (Surveyor) भी रहे। इन्हे नाव मे घूमने का बहुत शौक है।

इन्होने सन् १९३० ई० मे कैराल हेनिग (Carol Henning) से शादी कर ली, परन्तु शादी के वारह वर्ष वाद इनका तलाक हो गया। इस शादी से इनको कोई सन्तान न थी। इन्होने फिर मन् १९४३ ई० मे ग्विन कागर (Gwyn Conger) से शादी की, और इनसे इनको दो लड़के भी है। इन्होने तीसरी वार इलेन स्काट (Elaine Scott) मे शादी की।

जव प्रथम विश्व-युद्ध (मन् १९१८ मे) खत्म हुआ तो यह केवल १६ वर्ष के थे, और दूसरे विश्व-युद्ध के आरम्भ मे ३७ वर्ष के, इस कारण यह न तो पहले और न ही दूसरे युद्ध मे लडाई पर जा मके। नाजियो ने इन्हे यहूदी कहा था, जो कि गलत है, क्योकि इनकी रगो मे यहूदी खून नही है।

दूसरे विश्व-युद्ध मे इन्होने अमरीकी वायुसेना की सेवा की थी। यह 'न्यूयार्क हेराल्ड ट्रिव्यून' के सम्वाददाता होकर यूरोप भी गए थे। लड़ाई के वाद यह ससार मे खूब घूमे है, और अपने अनुभवो को समाचारपत्रो मे प्रकाशित करवाते रहे है। सन् १९४८ ई० मे यह रूस गए, और वहाँ से लौटने पर इन्होने 'रशियन-जर्नल' (Russian Journal) नामक पुम्तक प्रकाशित कराई।

अभी तक जॉन स्टेनवेक ने सत्ताइस पुस्तके लिखी है, जिनमे उपन्यास-कथाएँ इत्यादि है। इनकी पहली महत्त्वपूर्ण पुस्तक 'कप ऑफ गोल्ड' (Cup of Gold) है, जो सन् १९२९ ई० मे प्रकाशित हुई थी। उसके वाद तो यह वरावर लिखते रहे और पुस्तके प्रकाशित करते रहे।

इनकी पुस्तक 'द ग्रेप्स ऑफ रैथ' के प्रकाशन पर इन्हे वदनामी और नेकनामी दोनो ही मिली। इस पुस्तक पर इनको अमरीका का प्रसिद्ध पुलिटजर पुरस्कार मिला था और इसका फिलम रूपान्तर भी किया गया था। इनकी पुस्तको मे दो-तीन वाते वहुत स्पष्ट है. एक तो यह मनुष्य के दुखी होने का कारण समझना चाहते है, दूसरा यह कि इन्होने कई प्रकार की रचनाएँ की है। कुछ पुस्तके अति गम्भीर है, जैसे 'द ग्रेप्स ऑफ रैथ' और कुछ इसके एकदम विपरीत अत्यन्त हलकी-फुलकी जैसे—'टार्टिल्ला फ्लैट'। कभी-कभी तो यहाँ तक कह दिया जाता है कि स्टेनवेक दो है—एक गम्भीर, और दूसरा एकदम हँसोड। इनकी रचनाएँ अभी प्रकाशित होती जा रही है, और शायद इनकी सवसे वडी पुस्तक अभी प्रकाशित होनी वाकी है।

सन् १९६२ ई० मे इन्हे पुरस्कार देते हुए स्वीडिश अकादमी ने कहा था : "इनकी उन कृतियो के लिए जो एक ही साथ यथार्थवादी भी है, और काल्पनिक भी और जिनमे सहानुभूतिपूर्ण हास्य और सामाजिक वोध सदैव रहता है," इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) कप ऑफ़ गोल्ड (Cup of Gold)	१९२९
(२) टार्टिल्ला फ्लैट (Tortilla Flat)	१९३५
(३) ऑफ़ माइस एण्ड मैन (Of Mice And Men)	१९३७
(४) द ग्रेप्स ऑफ़ रैथ (The Grapes of Wrath)	१९३९
(५) रशियन जर्नल (Russian Journal)	१९४८
(६) ईस्ट ऑफ ईडन (East of Eden)	१९५२
(७) द विण्टर ऑफ़ डिस्कण्टेण्ट (The Winter of Discontent)	१९६१



जिर्गोस सेफेरी

(१६००–   )

नोबेल पुरस्कार के त्रेसठवे वर्ष मे छप्पनवॉ नम्बर ग्रीस का आया—वही ग्रीस जिसके साहित्य और सस्कृति ने यूरोप और ससार को आज भी चकित कर रखा है। समाचारपत्रो मे कहा गया था कि इस वर्ष चिली के पाब्लो नेरुदा (Pablo Neruda) फ्रान्स के ज्यापाल सार्त्र (Jean-Paul Sartre) और आयरलैण्ड के सैम्युएल बेकेट (Samuel Beckett) नाम स्वीडिश अकादमी के सामने है। परन्तु २५ अक्तूबर, सन् १६६३ ई० को ग्रीस के कवि जिर्गोस सेफेरी (Giorgos Seferi) को यह पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की गई।

जिर्गोस सेफेरी का जन्म सन् १६०० ई० मे हुआ था। यह एथेन्स के पास पांग्रति (Pangrati) नामक स्थान पर रहते है। इनकी शादी हो चुकी है, परन्तु कोई सन्तान नही है। यह हाल ही मे लन्दन से अपने देश लौटे है। लन्दन मे यह ग्रीस के राजदूत थे। यह 'सेफेरिस' के नाम से कविता करते है। सन् १६६० ई० में इन्हे विलियम फायल काव्य-पुरस्कार (William Foyle Poetry Prize) प्रदान किया गया था। इसके पहले यह पुरस्कार किसी विदेशी को नही दिया गया था।

सन् १६६३ ई० मे स्वीडिश अकादमी ने इन्हें पुरस्कार प्रदान करते हुए कहा था :

"इनकी श्रेष्ठ गीतात्मक रचनाओ के लिए, जोकि संस्कृति के हेलेनिक संसार की गहन संवेदनाओ से प्रभावित है," इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।



ज्याँ-पाल सार्त्र

(१९५०-   )

सन् १९६४ ई० मे साहित्य का नोबेल पुरस्कार फ्रांस के लेखक ज्यॉ-पाल सार्त्र को प्रदान किया गया। परन्तु इन्होने इस पुरस्कार को अस्वीकार किया। यह तीसरे लेखक है जिन्होंने इस सम्मान को अस्वीकार किया। पहले दो है वर्नार्ड शॉ और बोरिस पास्तरनाक। अभी तक साहित्य का पुरस्कार ५९ बार प्रदान किया जा चुका है, और सबसे अधिक बार फ्रांस को मिला है।

ज्यॉ-पाल सार्त्र का जन्म २१ जून, सन् १९०५ ई० को पेरिस मे हुआ था। इनके पिता जहाज़ी वेड़े के एक अफसर थे और इनकी माँ नोवेल पुरस्कार-विजेता अल्बर्ट श्वाइट्ज़र (Albert Schweitzer) की भतीजी थी। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पेरिस के 'लाइसी डे लारोशेल' (Lycee de 'la Rochelle) और 'लाइसी लुइस-ले-ग्राण्ड' नामक स्कूलों मे हुई। इसके बाद यह 'इकोल नार्मेल सुपरिओर मे (विशेष रूप से दर्शन-शास्त्र) अध्ययन किया। पच्चीस वर्ष की अवस्था में इनकी शिक्षा समाप्त हुई। इसके बाद इन्होने सेकेण्डरी स्कूलो मे पढाना शुरु किया। इन्होने हावरे (Havre) लेआन (Laon) और निली (Neuilly) में अध्यापन कार्य किया। सन् १९२९ ई० से सन् १९३४ ई० तक इन्होने मिस ग्रीस, इटली और जर्मनी आदि देशों का भ्रमण किया। फिर दो वर्षो तक इन्होंने जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिकों एडमण्ड हुसर्ल (Edmund Husserl) और मार्टिन हैडेगार (Martin Heidegger) से दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया। इसके वाद यह डेनमार्क के दार्शनिक सोरेन किर्कीगार्ड (Soren Kirkigaard)

के प्रभाव मे आये। सन् १९३५ ई० में पेरिस आ गये और 'लाइसी काण्डोर्सेट (Lycee Condorcet) मे पढ़ाने लगे। पेरिस के नव-लेखकों से इनका विशेष रूप से सम्पर्क था। इस समय इन्होने अमरीका के लेखको—फाकनेर (Faulk-ner), और स्टेनबैक (Steinbeck) पर लेख प्रकाशित कराए, और फ्रांसीसी पाठको से उनका परिचय कराया। इन्ही दिनों इन्होंने 'मनोविज्ञान और अस्तित्ववाद' (Psychology and Existentialism) पर भी लेख लिखे।

सन् १९३९ ई० मे जब द्वितीय विश्व-युद्ध आरम्भ हुआ तो इन्होंने एक मामूली सिपाही के रूप से फौज मे नाम लिखा दिया। यह सितम्बर सन् १९३९ ई० मे जर्मनों द्वारा कैद कर लिये गए और फिर नौ महीने वाद छोड दिये गये। इसके वाद यह पेरिस वापस आ गए, और प्रतिरोध आन्दोलन (Resistance Movement) मे शामिल होकर काम करने लगे।

सन् १९४५ ई० और उसके वाद भी यह गए और वहाँ के विश्व-विद्यालयो में इन्होने कई व्याख्यान भी दिए।

अव यह पेरिस मे ही रहते है। यह अविवाहित है। यह वार्तालाप करने मे वहुत कुशल है। इनका पाइप इनका चिरसग है। यह दुवले-पतले व्यक्ति है और कुछ गजे हो चले है।

ज्याँ-पाल सार्त्र की रचनाओ का मुख्य आधार है अस्तित्ववाद। अस्तित्व-वाद के अनुसार 'होना' 'तत्व' के पूर्व है (Existence is prior to essence)। इन्होने अपनी रचना मे इसी का प्रचार किया है, और यह इस सिद्धान्त के मुख्य प्रचारक माने जाते है, परन्तु यह स्मरणीय है किर्कीगार्ड का प्रभाव इनके ऊपर प्रमुख है। सार्त्र को कुछ लोग कम्यूनिस्ट मानते है। आजकल यह एक पत्रिका 'ले टेम्प्स माडर्नेस' (Le Temps Modernes) का सम्पादन कर रहे है।

ज्याँ-पाल सार्त्र ने नोवेल पुरस्कार को अस्वीकार करते हुए कहा था—

"मैं हमेशा से ही सरकार (Official) सम्मान को अस्वीकार करता रहा हूँ। लेखक को स्वतत्र होना चाहिए। सरकारी सम्मान से उसकी कला पर प्रभाव और दवाव पड़ता है, और यह उचित नही है।"

इनको पुरस्कार प्रदान करते हुए स्वीडिश अकादमी ने कहा था :

"इनकी विचारपूर्ण रचनाओ के लिए जिन्होने अपनी स्वाधीनता की लय और सत्य की खोज के कारण हम लोगो के समय पर वहुत प्रभाव डाला है," इन्हे यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) साइकालॉजी एण्ड इमेजिनेशन (Psychology and Imagination)	१९४८
(२) ट्रान्सेण्डेन्स आफ़ द ईगो (Transcendence of the Ego)	१९५७
(३) बीइंग एण्ड नथिंग (Being And Nothing)	१९५६
(४) क्रीटिक डे ला रेसो डाइलेक्टिक (Critique de la raison dialectique)	
(५) नौसिया (Nausea)	१९४९
(६) द वाल एण्ड अदर स्टोरीज (The wall And Other Stories)	१९४८
(७) द एज आफ़ रीजन (The Age of Reason)	१९४७
(८) द रिप्रीव (The Reprieve)	१९४७
(९) ट्रबल्ड स्लीप (Troubled Sleep)	१९५१
(१०) द विक्टर्स (The Victors)	१९४९
(११) नो एक्जिट एण्ड द फ्लाइज (No Exit And The Flies)	१९४७
(१२) इन द मेश (In The Mesh)	१९५४
(१३) ह्वाट इज लिटरेचर ? (What Is Literature)	१९४७
(१४) ल एक्जिस्टेन्शियलिज्म एस्ट अन् ह्यूमैनिज्म (L' Existentialism est un humanism)	१९४७
(१५) बादलेयर	१९४९



मिखाइल अलेक्सैण्ड्रोविच शोलोख़ोव

(१६०५–   )

सन् १६६५ के नोबेल पुरस्कार की घोषणा से साहित्य-जगत् को जितना सतोष हुआ इतना इधर कई वर्षो से नही हुआ था। मिखाइल अलेक्सैण्ड्रोविच शोलोखोव को पुरस्कार प्रदान करके स्वीडिश अकादमी ने न केवल इस लेखक को ही सम्मान प्रदान किया है, वरन् अपने उत्तरदायित्व को भी पूरी तरह निभाने का प्रमाण दिया है।

शोलोख़ोव तीसरे रूसी लेखक है, जिन्हे यह सम्मान मिला है। पहले थे बुनिन (१६३३) और दूसरे पास्त्वरनाक (१६५८)।

मिखाइल अलेक्सैण्ड्रोविच शोलोखोव का जन्म २४ मई, १६०५ को वेशेन्स्काया (Veshenskaya) नामक कज्जाक (Cossack) ग्राम मे हुआ था। इनके पूर्वज मध्यम-वर्ग कज्जाक घराने के थे। इनके पिता लकडी और जानवरो का व्यापार करते थे। इनकी माँ तुर्की थी। जब इनके नाना छः वर्ष के थे, तब उनको और उनकी माँ को कज्जाक लोग कैदी बना कर डान नदी की तराई मे लाये थे।

इनकी प्रारभिक शिक्षा मास्को के एक स्कूल मे हुई थी। उसके बाद यह वोरोनेज्ह (Voronezh) नामक स्थान पर जिम्नेज़ियम (Gymnasium) के अध्ययन के लिए चले गये, परन्तु जर्मनो के आक्रमण के कारण इन्हे वहाँ से भागना पडा, और यह स्नातक न हो सके। सन् १६१७ ई० की रूस की क्रान्ति

के समय यह बालक ही थे, परन्तु उस समय भी यह काम बोल्शेविक (Bolshevik) लोगों के साथ ही करते थे। सन् १९२२ ई० में इन्होंने उन डाकुओं से जो डान (Don) क्षेत्र में उपद्रव मचा रहे थे, लड़ाई भी की थी।

इनकी प्रथम रचना सन् १९२५ ई० में प्रकाशित हुई थी। उस समय इनकी आयु कुल बीस वर्ष थी। इस पुस्तक का नाम था, 'डान की कथाएँ' (Talcs of The Don)। इन कहानियों मे डान के कज्जाकों (Don Cos-ack) के जीवन का चित्रण बहुत ही सजीव और मार्मिक है।

तीन वर्ष बाद, सन् १९२८ ई० में जब इनकी पुस्तक 'एण्ड क्वाइट फ्लोज़ द डान' (And Quiet Flows The Don) प्रकाशित हुई। तो इनकी ख्याति समूचे सोवियत संघ में फैल गई, और इस पुस्तक की लाखो प्रतियाँ बिकी। इस पुस्तक पर बाद में फिल्म भी बनी, और इस पर आधारित आपेरा (Opera) भी प्रदर्शित किया गया। इस पुस्तक के विषय में शोलोखोव ने स्वयं कहा है :

"मैंने यह उपन्यास सन् १९२५ ई० में लिखना शुरु किया था। आरम्भ मे मुझे इसके इतना विस्तृत होने का आभास नहीं था···मैंने क्रान्ति के समय मे कज्जाक लोगों ने जो काम किया था, उसका वर्णन आरम्भ किया था। परन्तु लगभग सौ पृष्ठ लिखने के बाद यह आभास होने लगा कि यह ठीक नहीं है। पाठक यह प्रश्न अवश्य पूछेगा कि कज्जाक लोगो ने क्रान्ति को दबाने में सहायता क्यों दी थी? ये कज्जाक लोग कौन थे, और डान कज्जाक (Don Cossack) का क्षेत्र कौन-सा था? मेरे दिमाग में यह शक पैदा हुआ कि क्या यह क्षेत्र पाठकों के लिए अपरिचित नहीं है?

···मैंने पहला विचार छोड़ दिया, और इसे और अधिक विस्तार से लिखना शुरु किया। कज्जाक-जीवन के ज्ञान ने मुझे बहुत सहायता दी। मैंने 'एण्ड क्वाइट फ्लोज द डान' को इसके वर्तमान रूप में सन् १९२६ ई० के अन्त में फिर से लिखना आरम्भ किया था।"

"एण्ड क्वाइट फ्लोज़ द डान' का प्रथम भाग सन् १९२८ ई० में दूसरा, सन् १९२९ ई० में तीसरा, सन् १९३३ ई० मे चौथा और अन्तिम सन् १९३८ ई० में प्रकाशित हुआ। 'द डान फ्लोज होम टु द सी' (The Don Flows Home To The Sea) जोकि इन्हीं पुस्तकों की अगली कड़ी है, सन् १९४१ ई० में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक के प्रकाशन पर मारिस हिण्डस (Maurice Hindus) ने लिखा था : "छत्तीस वर्ष की अवस्था में ही शोलोखोव यूरोप के प्रथम श्रेणी के लेखकों में आ गया है। समालोचक के लिए यह एक सुखद कार्य होता है कि वह साहित्य में एक क्लैसिक (Classic) के आने की घोषणा करे।'

इनकी तीसरी पुस्तक 'सीड्स आफ टुमारो' (Seeds of Tomorrow) का प्रथम भाग सन् १९३२ ई० और दूसरा भाग सन् १९३३ ई० में प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक का अनुवाद अंग्रेजी में 'वर्जिन साइल अपटर्नड' (Virgin Soil Upturned) नाम से हुआ है।

शोलोखोव का व्यक्तित्व बहुत साधारण है। यह शांति के समय मे वेशेन्स्काया (Veshenskaya) नामक गाँव मे रहते हैं। यह सबसे नजदीक के रेल के स्टेशन से भी सौ मील दूर है। इस गाँव के चारों तरफ की सड़कें प्राय बेकार हो जाती है और ऐसी स्थिति मे इनकी डाक हवाईजहाज द्वारा पहुँचाई जाती हैं। इनको शिकार और मछली मारने का शौक है। इनकी पत्नी का नाम मारिया पैत्रोव्ना (Maria Petrovna) है। यह भी कज्जाक जाति की हैं। इनके चार बच्चे है। इनको कबूतरो के पालने का भी बहुत शौक है। यह अधिकतर रात ही को काम करते है। यह अपने भेंट करने वालो से बराबर मिलते है, और हर पत्र का उत्तर स्वय देते है। इनका पाइप कभी अलग नही होता, और यह खाकी लिबास ही मे रहते है।

जब शोलोखोव ने १६, अक्तूबर, १९६५ को पुरस्कार पाने की सूचना पाई तो कहा, "सोलह अक्तूबर तीन प्रकार से मेरे लिए शुभ है—प्रात मैंने अपनी पुस्तक लिखी, मध्याह्न मे नोबेल पुरस्कार मिला, और शाम को मैंने खाने के लिए दो कलहस बन्दूक से मारे।"

यह उल्लेखनीय है कि जब यह पुरस्कार सन् १९५८ ई० मे पास्तरनाक को प्रदान किया गया था तब शोलोखोव को कुछ असन्तोष हुआ था, क्योकि इनका विचार था कि यह पुरस्कार इनको मिलना चाहिए था।

स्वीडिश अकादमी ने इन्हें पुरस्कार देते हुए कहा था : "उस कलात्मक शक्ति तथा रचना-सगठन के लिए जिसके माध्यम से यह डान के महाकाव्य मे रूसी जनता के इतिहास के एक ऐतिहासिक पहलू को वाणी दे सके है," इन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है।

प्रमुख कृतियाँ

	पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१)	टेल्स आफ़ द डान	१९२५
(२)	एण्ड क्वाइट फ्लोज द डान	१९२६-३८
(३)	द डान फ्लोज होम टु द सी	१९४१
(४)	वर्जिन सायल अप्टर्ण्ड	१९३२-३३
(५)	दे फ़ाट फार द फादरलैण्ड (लिखी जा रही है)	



श्मुयेल योसफ़ एग्नन

(१८८८–   )

सन् १९६६ ई० मे स्वीडिश अकादमी ने साहित्य का नोबेल पुरस्कार दो यहूदी लेखको को प्रदान करके संसार को इस बात का प्रमाण दिया कि यह अकादमी देश तथा धर्म के बन्धनों से मुक्त है, और लेखक की प्रतिभा तथा गुण के ही आधार पर यह पुरस्कार दिया जाता है। इस वर्ष दो यहूदी लेखको को सम्मानित किया गया है—इनमे से एक तो है ७८ वर्षीय श्मुयेल योसेफ एग्नन और दूसरी है नेली शाक्स।

श्मुयेल योसेफ़ एग्नन का जन्म बक्जैक्स (Buczacs) नामक शहर मे हुआ था। यह पूर्वी गलिशिया (Eastern Galicia) में है। इनके पिता का नाम था शलाम मार्डेचाइ जैक्जीज (Shalom Mordechai Czaczkes)। श्मुयेल ने यहूदी स्कूल मे प्रारम्भिक शिक्षा पाई, और साथ-साथ यहूदियो के धार्मिक ग्रन्थ तालमद (Talmud) का भी अपने पिता के साथ अध्ययन किया। इनके पिता जीविकोपार्जन के लिए रोंयेदार चमड़े (Furs) का व्यापार करते थे, परन्तु यह रबी (Rabbi) भी थे, और हसीदी (Hassidi) साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित थे।

श्मुयेल योसफ़ ने बाल अवस्था में ही लिखना शुरू कर दिया था, और इनकी पहली कविता साढे पन्द्रह वर्ष की अवस्था मे ही प्रकाशित हुई थी। इसका शीर्षक था 'एक लघु नायक' (A Little Hero)। इन्होने यहूदी धर्म की

पत्रिकाओ मे भी लिखना आरम्भ कर दिया। १८ वर्ष की अवस्था मे यह ल्वाव (Lvov) नामक शहर चले गये और एक यहूदी पत्रिका में काम करने लगे। परन्तु दो वर्ष बाद सन् १९०८ ई० मे इजरायल (Israel) जाकर बस गये।

कुछ ममय के लिए यह जाफा (Jaffa) नामक शहर मे रहे और अपने धर्म तथा सहधर्मियो के लिए काम करते रहे। इनकी पहली कहानी 'अगुनाट' (Agnunot) को इन्होंने 'एग्नन' (Agnon) के नाम से प्रकाशित करवाया, और फिर बाद मे एग्नन को अपने नाम मे जोड़ लिया। सन् १९१० ई० मे यह यरूसलेम (Jerusalem) चले गये, और वहाँ से अपना साहित्यिक कार्यक्रम चलाते रहे। तीन वर्ष तक वहाँ के राष्ट्रीय पुस्तकालय (National Library) मे काम करने के बाद यह बर्लिन जाकर अध्ययन करने लगे और अनुसन्धान (Research) के लिए भी सामग्री इकट्ठा करने लगे। इसी समय इनकी कहानियो का सग्रह भी प्रकाशित हुआ। इन्होने मार्टिन ब्युबर (Martin Buber) के साथ मिलकर हसीदिम (Hassidim) की कथाओं का सग्रह किया।

सन् १९१९ ई० में इन्होने एस्थर मार्क्स (Esther Marx) से शादी की। इन दोनो की भेट बर्लिन मे ही हुई थी। इनके एक लडकी और एक लड़का है।

सन् १९२४ ई० मे यह यरूसलेम वापस लौट गये, और धीरे-धीरे वही बस गये। अब यह वही रहते है। कुछ समय के लिए यह अपनी पत्नी के साथ जर्मनी और पोलैड का भ्रमण करने भी गये। इन्होने अपने अनुभवो को 'एक रात का अतिथि' (A Guest for The Night) नामक पुस्तक मे अकित किया है। सन् १९५१ ई० मे यह नार्वे और स्वीडन भी गये।

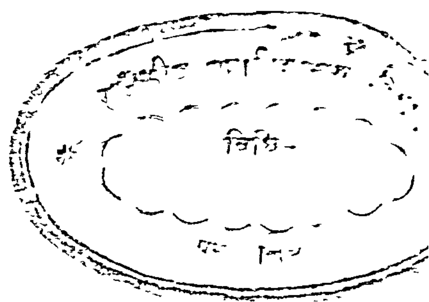
एग्नन ने तीन उपन्यास लिखे है, और अनेक कहानियाँ तथा लेख प्रकाशित किये है। इनकी कहानियो मे गलिशिया (Galicia), पोलैड, लिथुअनिया (Lithuania), जर्मनी और इसराइल के यहूदियो के जीवन की झलक मिलती है। इनको कई साहित्यिक सम्मान मिल चुके है और इनकी रचनाओ का सोलह भाषाओ मे अनुवाद हो चुका है।

इनको पुरस्कृत करते समय स्वीडिश अकादमी ने कहा :

"इनकी गम्भीर, विलक्षण वृत्तान्त-कला, जिसमे यहूदी लोगो का विचार प्रधान है, के लिए," इनको यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) ब्राइडल कैनपी (A Bridal Canopy)	१९३०
(२) ए गेस्ट फार द नाइट (A Guest for the Night)	१९३२
(३) बुक्स, राइटर्स एण्ड स्टोरीज (Books, Writers & Stories)	१९३८
(४) इन द मिडिल आफ़ द सी (In the Middle of the Sea)	१९६५





नेली शाख्त
(१८६१-   )

नेली शाख्त का जन्म १० दिसम्बर सन् १८६१ ई० को बर्लिन मे हुआ था। इनकी प्रथम रचना 'लीजेड्स एण्ड टेल्स' (Legends & Tales) सन् १६२१ ई० मे प्रकाशित हुई थी। हिटलर के उत्थान के पूर्व इनकी रचनाओ को बहुत लोकप्रियता प्राप्त हो चुकी थी। सन् १६४० ई० मे इनको हिटलर की यहूदी-विरोधी नीति के कारण जर्मनी छोडकर भागना पडा, और यह स्वीडन में जाकर वस गई। जर्मनी छोडते समय इनकी बहुत-सी साहित्यिक रचनायें अस्त-व्यस्त हो गई। इनकी रचनाये, जो द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद प्रकाशित हुई है, इस बात की साक्षी है कि इनकी सवेदना सताये हुए लोगो की तरफ है। इन्होने समकालीन स्वीडिश कविता का जर्मन मे अनुवाद किया है। इन्होने स्वय युद्ध के कारण बहुत कष्ट पाया है, परन्तु इनकी रचनाओ मे कटुता या दुख का आभास नहीं मिलता। दुखी तथा असहाय लोगो को सहायता देना यह अपना परम कर्तव्य समझती है।

इनको अनेक अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके है। यह पहली यहूदी महिला है जिन्हे यह पुरस्कार प्रदान किया गया है।

पुरस्कार प्रदान करते समय स्वीडिश अकादमी ने कहा .

"इनकी उच्चकोटि की सगीतमय तथा नाटकीय रचनाओ के लिए, जिनमें इन्होंने इसराइल के भाग्य का शक्तिमय उल्लेख किया है," इनको यह पुरस्कार दिया जाता है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) हैबिटेशन्स आफ डैथ (Habitations of Death)	१६४७
(२) एक्लिप्स आफ द स्टार्स (Eclipse of the Stars)	१६४६
(३) नोबडी नोज़ एनीथिंग (Nobody Knows Anything)	१६५७
(४) फ्लाइट एण्ड मेटामार्फोसिस (Flight and Metamorphosis)	१६५७
(५) नाइट वाच (Night Watch)	
(६) अब्राहम इन साल्ट (Abraham In Salt)	
(७) द मैजिक डान्सर (The Magic Dancer)	



मिगुएल एन्जेल अस्तूरिअस

(१८९९–   )

१९६७ मे साहित्य का नोबेल पुरस्कार मध्य अमेरिका (Central America) के गुआतमाला (Guatemala) देश के लेखक मिगुएल एन्जेल अस्तूरिअस को प्रदान किया गया है। यह अपने देश के सर्वप्रथम व्यक्ति है जिन्हें नोबेल पुरस्कार मिला है। वैसे तो सन् १९४५ ई० में चिली के गेब्रियल मिस्त्राल[1] को, और सन् १९५६ ई० मे पुएर्टोरिको के उआन रैमो इमनेज़[2] को—जो दोनो मध्य अमेरिका के है—साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिल चुका है।

मिगुएल एन्जेल अस्तूरिअस का जन्म १० अक्तूबर १८९९ को गुआतमाला नामक (जो उसी नाम के देश की राजधानी है) शहर में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा उन्होने गुआतमाला मे ही पाई, और वही के विश्वविद्यालय मे अध्ययन करके स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके वाद वह पेरिस के सारबान विश्वविद्यालय (Sorbonne University) मे अध्ययन करने के लिए गये। इनको अपने देश की राजनीति मे भाग लेने की सदैव इच्छा रही है, और इन्होंने अपने देश के निवासियो को—जो कि अधिकतर 'इन्डियन' (Indian) और मुलेटो

1. Chile—Gabriela Mistral.
2. Spain—Born; domicile in Puerto Rico, U. S. A.—Juan Ramon Jimenez.

(Mulatto) है—अपनी रचना का विषय बनाया है। इनकी रचनाओं में 'इन्डियन' (Indian) लोगों के रहन-सहन पर और माया सस्कृति (Maya Culture) पर काफी प्रकाश डाला गया है।

इन्होंने अपने देश की डिक्टेटरशिप (Dictatorship) का कड़ा विरोध किया था, और फलस्वरूप यह देश निर्वासित कर दिये गये थे। इस काल में यह आर्जेन्टिन, इटली और फ्रान्स मे भ्रमण करते रहे, और १९२४ से सन् १९३३ तक यूरोप के विभिन्न देशों में समाचारपत्रों के संवाददाता भी रहे। इसी सम्बन्ध में यह स्पेन भी गये थे। सन् १९३३ ई० मे ही यह अपने देश लौट पाये, और यहाँ के कम्युनिस्ट राज अर्थात् जैकोवो आर्वेन्ज़ गज्मन (Jacobo Arbenz Guzman) का, जिसने १९५० में सत्ता ग्रहण की थी, का समर्थन किया। इसके वाद यह अपने देश के राजदूत होकर एल सल्वदोर (El Salvador) गये। आजकल यह पेरिस, फ्रान्स, में राजदूत हैं।

मिगुएल अस्तूरिअस ने बीस वर्ष की अवस्था से भी पहले अपनी रचनायें साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया था। सन् १९२३-२४ में इन्होंने अपना उपन्यास 'एल सेनोर प्रेसिडेन्ट' (El Senor Presidente) लिखना आरम्भ कर दिया था। इस उपन्यास मे इन्होंने अपने राजनीतिक अनुभवों का उल्लेख किया है। डिक्टेटर प्रेसिडेन्ट काब्रेरा (Dictator President Cabrera) के समय गुआतमालावासियों के साथ दुर्व्यवहार, काब्रेरा के एक दुराचारी मित्र का एक सुन्दर युवती के सम्पर्क में आने से सुधार तथा कई छोटे-बड़े लोगों का चित्रण इसमें बहुत सचाई तथा कला के साथ किया गया है। इस उपन्यास में मिगुएल अस्तूरिअस के देशवासियों के दैनिक जीवन और उनके दुख-सुख का उल्लेख है। यह उपन्यास १९४७ में प्रकाशित हुआ था और इसका अंग्रेजी तथा अन्य १५ भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। मिगुएल अस्तूरिअस की रचनाओ में मनुष्य की स्वाधीनता का सन्देश मिलता है। वह न केवल उपन्यासकार हैं, वल्कि वह कवि भी हैं और उनकी कवितायें काफी प्रसिद्ध हैं।

मिगुएल अस्तूरिअस को एल सेनोर प्रेसिडेन्ट के १९४७ में प्रकाशित होने के तीन वर्ष वाद सन् १९५० ई० मे 'सर्वश्रेष्ठ विदेशी पुस्तक' फ्रांसीसी पुरस्कार मिला। इसी पुस्तक पर इन्हें विलियम फाक्नर फाउन्डेशन लैटिन अमेरिकन अवार्ड (William Faulkner Foundation Latin American Award) तथा पिछले वर्ष लेनिन शान्ति पुरस्कार (Lenin Peace Prize) मिल चुका है। जब इनके इनके ६८वें जन्मदिन पर नोबेल पुरस्कार प्रदान किए

जाने का समाचार मिला तब इन्होंने कहा .

"इस पुरस्कार से मुझे अत्यन्त प्रोत्साहन मिला है। उपन्यासकार को अपने समय का दर्शक (witness) होना चाहिए। मेरी रचनाएँ जनता की पुकार का उल्लेख करती रहेंगी और साथ-ही-साथ लैटिन अमेरिकन समस्याओं की ओर विश्व का ध्यान आकर्षित करती रहेंगी।"

इस वर्ष का पुरस्कार ४,७६,६५५ रुपये (६२,००० डालर) का है। इसको प्रदान करते हुए स्वीडिश अकादमी ने कहा :

"इनकी अत्यन्त रजित रचनाओं के लिए, जिनकी जड़े राष्ट्रीय व्यक्तित्व तथा इंडियन परम्परा मे है," यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक का नाम	प्रकाशन-वर्ष
(१) लीजेन्ड्स आफ गुआतमाला (Legends of Guatemala)	१६३०
(२) एल सेनोर प्रेसिडेन्ट (EL Senor Presidente)	१६४७
(३) पल्स आफ द स्काइलार्क (Pulse of the Skylark)	१६४६
(४) द स्ट्राग विन्ड (Ths Strong Wind)	१६५०
(५) द ग्रीन पोप (The Green Pope)	१६५४
(६) द आइज़ आफ द इन्टर्ड (The Eyes of the Interred)	१६६१

परिशिष्ट : १

Extract from Code of Statutes, The Nobel Foundation, Stockholm

"The whole of my remaining realizable estate shall be dealt with in the following way : The capital shall be invested by my executors in safe securities and shall constitute a fund, the interest on which shall be annually distributed in the form of prizes to those who, during the preceding year, shall have confered the greatest benefit on mankind. The said interest shall be divided into five equal parts, which shall be approtioned as follows : one part to the person who shall have made the most important discovery or invention within the field of physics ; one part to the person who shall have made the most important chemical discovery or improvement ; one part to the person who shall have made the most important discovery within the domain of physiology or medicine ; one part to the person who shall have produced in the field of literature the most outstanding work of an idealistic tendency ; and one part to the person who shall have done the most or the best work for fraternity between nations, for the abolition or reduction of standing armies and for the holding and promotion of peace congresses The prize for physics and chemistry shall be awarded by the Swedish Academy of Science ; that for physiology or medical works by the Caroline Institute in Stockholm ; that for literature by the Academy in Stockholm, and that for champions of peace by a committee of five persons to be elected by the Nor wegian storting It is my express wish that in awarding the prizes no consideration whatever shall be given to the nationality of the candidates, but that the most worthy shall receive the prize, whether he be a Scandinavian or not."

Extract from the Nobel Foundation Calendar, 1963-1964

Prize Proposal : Right to submit proposals for the award of prizes, based on the principles of competence and university shall by enjoyed by :

In Literature

1. Members of the Swedish Academy and of other academies, Institutions and societies similar to it in membership and aims ;
2. Professors of languages or in history of literature at Universities and university colleges ;
3. Previous winners of Nobel Prize for Literature ; and
4. Presidents of authors' organizations which are representative of the literary activities of their respective countries.

परिशिष्ट : २

साहित्य : नोबेल पुरस्कार : देश और वर्ष (१९६७ तक)

(१) फ्रास १९०१, ०४, १५, २१, २७, ३७, ४७, ५७, ६०, ६४—१०
(२) जर्मनी १९०२, ०८, १०, १२, २९—५
(३) नार्वे १९०३, २०, २८—३
(४) स्पेन १९०४, २२, ५६—३
(५) पोलैण्ड १९०५, २४—२
(६) इटली १९०६, २६, ३४, ५९—४
(७) ग्रेटब्रिटेन १९०७, २५, ३२, ४८, ५०, ५३—६
(८) स्वीडन १९०९, १६, ३१, ५१—४
(९) बेल्जियम १९११—१
(१०) भारत १९१३—१
(११) डेनमार्क १९१७ (२), ४४—३
(१२) स्विटजरलैण्ड १९१९, ४६,—२
(१३) अमरीका १९३०, ३६, ३८, ४९, ५४, ६२—६
(१४) फिनलैण्ड १९३९—१
(१५) चिली १९४५—१
(१६) आइस्लैण्ड १९५५—१
(१७) रूस १९३३, ५८, ६४—३
(१८) यूगोस्लेविया १९६१—१
(१९) ग्रीस १९६३—१
(२०) आयरलैण्ड १९२३—१
(२१) इसरायल } १९६६—१
(२२) जर्मन-स्वीडिश } ,,
(२३) गुआतमाला १९६७—१

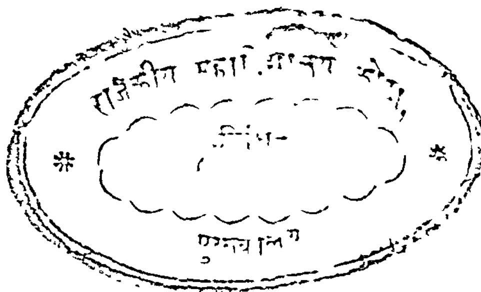
परिशिष्ट : ३

विजेताओं की वर्ष क्रमानुसार सूची

क्रम	नाम	अवस्था	देश	वर्ष	पुरस्कार के बाद कितने वर्ष जीवित रहे
१.	मुली प्रूधों	६२	फ्रास	१९०१	६
२	थ्योडोर मामसन	८५	जर्मनी	१९०२	१२
३.	ब्योर्न्सन	७१	नार्वे	१९०३	७
४	फ्रेडरिक मिस्त्राल	७४	फ्राम	१९०४	०
५.	जोजे एकेगारे	७१	स्पेन	१९०४	१०
६.	हेनरिक सीनकीविच	५९	पोलैंड	१९०५	११
७.	कार्डूची	७१	इटली	१९०६	१
८	रडयार्ड किप्लिग	४२	ब्रिटेन	१९०७	२९
९.	रूडाल्फ क्रिस्टाफ यूकेन	६२	जर्मनी	१९०८	१८
१०.	सेल्मा लागरलोफ	५१	स्वीडन	१९०९	३१
११.	पाल हेस	८०	जर्मनी	१९१०	४
१२.	मारिस मेटरलिंक	४९	बेल्जियम	१९११	३८
१३.	गर्हार्ट हाप्टमैन	५०	जर्मनी	१९१२	३४
१४.	रवीन्द्रनाथ टैगोर	५२	भारत	१९१३	२८
१५.	रोमाँ रोलाँ	५०	फ्रास	१९१६	२८
१६.	कार्ल गस्तफ वर्नर फान हेइदेन्स्ताम	५७	स्वीडन	१९१६	२४
१७.	कार्ल एडाल्फ़ ग्येलेरुप	६०	डेनमार्क	१९१७	२
१८.	हेनरिक पोन्टोपिदान	६०	डेनमार्क	१९१७	२६
१९.	कार्ल फ्रेडरिक जार्ज स्पिटलर	७५	स्विटजरलैण्ड	१९२०	४
२०.	क्नुत पीडरसन हैमसन	६१	नार्वे	१९२०	३२
२१.	अनातोले फ्रास	७७	फ्रास	१९२१	३

२२.	जासिन्तो वेनावेन्ते वाई मार्तिनेज	५६	स्पेन	१६२२	३२
२३.	विलियम वट्लर यीट्स	५८	आयरलैंड	१६२३	१६
२४.	व्लाडिस्ला स्टेनिस्ला रेमाट	५६	पोलैंड	१६२४	१
२५.	जार्ज वर्नार्ड शॉ	७०	ब्रिटेन	१६२५	२४
२६.	ग्रेजिया डेलेडा	५२	इटली	१६२६	६
२७.	हेनरी वर्गसन	६६	फ्रास	१६२७	१३
२८.	सीग्रिद उण्डसेत	४६	नार्वे	१६२८	२१
२६.	टामस मान	५४	जर्मनी	१६२६	२६
३०.	सिन्क्लेयर लेविस	४५	अमरीका	१६३०	२१
३१.	एरिक एक्सेल कार्लफेल्ट	६७	स्वीडन	१६३१	०
३२.	जान गाल्सवर्दी	६५	ब्रिटेन	१६३२	०
३३.	इवान एलेक्स्येविच बुनिन	६३	रूस	१६३३	२०
३४.	लुइजी पिराण्डेलो	६७	इटली	१६३४	२
३५.	यूजीन ग्लैड्स्टन ओ'नील	४८	अमरीका	१६३६	१७
३६.	रोजर मार्ले दु गार	५६	फ्रास	१६३७	२१
३७.	पर्ल बक	४६	अमरीका	१६३८	जीवित
३८.	फ्रांज़ एमिल सिलाप	५१	फ़िनलैंड	१६३६	जीवित
३६.	जोहान्स विल्हेम जेन्सेन	७१	डेनमार्क	१६४४	६
४०.	ग्रेब्रीला मिस्त्राल	५६	चिली	१६४५	१२
४१.	हरमन हेस	६७	स्विटज़रलैंड	१६४६	१६
४२.	आन्द्रे ज़ीद	७८	फ्रांस	१६४७	४
४३.	टी० एस० इलियट	६०	ब्रिटेन	१६४८	१८
४४.	विलियम फ़ाकनर	५३	अमरीका	१६५०	१२
४५.	अर्ल वर्ट्रेंड आर्थर विलियम रसल	७८	ब्रिटेन	१६५०	जीवित
४६.	पार फेवियन लागरक्विस्त	६०	स्वीडन	१६५१	जीवित
४७.	फ्रांस्वा मारिआक	६७	फ्रास	१६५२	जीवित
४८.	विन्स्टन चर्चिल	७६	ब्रिटेन	१६५३	१२
४६.	अर्नेस्ट हेमिंग्वे	५६	अमरीका	१६५४	७
५०.	हाल्डर किल्जन लैक्सनेस	५३	आइसलैंड	१६५५	जीवित
५१.	जुआन रामोन जिमेनेज़	७५	स्पेन	१६५६	२
५२.	अल्बेयर कामू	४४	फ्रांस	१६५७	३

५३. बोरिस लियोनदोविच पास्तरनाक	६८	रूस	१९५८	२
५४. सल्वातोर काजीमोदो	५८	इटली	१९५९	जीवित
५५. सेंट जान पर्स	७२	फ्रांस	१९६०	जीवित
५६. आइवो एड्रीक	६९	यूगोस्लाविया	१९६१	जीवित
५७. जान स्टेनबेक	६०	अमरीका	१९६२	जीवित
५८. जिर्गोस सेफेरी	६३	ग्रीस	१९६३	जीवित
५९. ज्याँ-पाल सार्त्र	५९	फ्रांस	१९६४	जीवित
६०. मिखाइल शोलोखोव	६०	रूस	१९६५	जीवित
६१. श्मुयेल योसफ एग्नन	७८	इसराइल	१९६६	जीवित
६२. नेली शाख्त	५६	स्वीडिश-जर्मन	१९६६	जीवित
६३. मिगुएल ऐन्जेल अस्तूरिअस	६८	गुआतमाला	१९६७	जीवित



परिशिष्ट : ४

देश और पुरस्कार विवरण
(१९६७ तक)

क्रम	देश	पदार्थ-विज्ञान	रसायन-शास्त्र	चिकित्सा-शास्त्र	साहित्य	शांति	कुल
१.	द अर्जेण्टाइना	—	—	१	—	१	२
२.	आस्ट्रेलिया	०	—	२	—	—	२
३.	आस्ट्रिया	३	१	३	—	२	९
४.	वेल्जियम	—	—	२	१	३	६
५.	कनाडा	—	—	२	—	१	३
६.	चिली	—	—	—	१	—	१
७.	चीन	२	—	—	—	—	२
८.	चेकोस्लोवाकिया	—	१	—	—	—	१
९.	डेनमार्क	१	—	४	३	१	९
१०.	फ़िनलैण्ड	—	१	—	१	—	२
११.	फ्रान्स	८[1]	६[1]	६	११[1]	८	३९
१२.	जर्मनी	१५	२२	१०	६[7]	३	५४
१३.	ब्रिटेन	१५	१७	१५	६	७	६०
१४.	ग्रीस	—	—	—	१	—	१
१५	गुआतमाला	—	—	—	१	—	१
१६.	हगरी	—	१	२[2]	—	—	३
१७.	आइसलैण्ड	—	—	—	१	—	१
१८.	भारत	१	—	१	१	—	२
१९.	आयरलैण्ड	१	—	—	१	—	२
२०.	इसरायल	—	—	—	१	—	१
२१.	इटली	२	१	२	४	१	१०

२२. जापान	२	—	—	—	—	२
२३. नीदरलैंड	५	२	२	—	१	१०
२४. नार्वे	—	—	—	३	२	५
२५. पोलैण्ड	—	—	—	२	—	२
२६. पुर्तगाल	—	—	१	—	—	१
२७. रूस	६	१	२	३[3]	—	१२
२८. स्पेन	—	—	१	३	—	४
२९. स्वीडन	२	४	३	४	४	१७
३०. स्विटजरलैण्ड	—	३	४	२	३	१२
३१. यू० आफ स० अफ्रीका	—	—	१[4]	—	१	२
३२. अमरीका	२६	१५	३२	६	१४[5]	९३
३३. यूगोस्लेविया	—	—	—	१	—	१
३४. संस्था	—	—	—	—	९[6]	९
कुल	८९	७४	९५	६२	६१	३७४

१. मेरी क्यूरी का प्रदान दो बार गिना गया, क्योंकि इन्हें १९०३ में आधा, और १९११ में पूरा-पूरा पुरस्कार मिला था ! सार्त्रे ने १९६४ में पुरस्कार नहीं स्वीकार किया था ।

२. इनमें से एक, बारानी, वियना में जन्मे थे, और हंगेरियन कुटुम्ब के थे ।

३. बुनिन, जन्म रूस, स्टेटलेस: पास्तरनाक, पुरस्कार अस्वीकृत ।

४. थेलर, स्विटजरलैंड के नागरिक और द० अफ्रीका के । वैज्ञानिक काम यू० एस० ए० में । इनका कुटुम्ब स्विटजरलैंड का था ।

५. लाइनस पालिंग का प्रदान दो बार गिना गया क्योंकि एक बार १९५४ में रसायन-शास्त्र, और फिर १९६३ में शान्ति के लिए ।

६. इन्टरनेशनल कमेटी आफ द रेड क्रास को एक संस्था गिना गया है । हालांकि इसको पुरस्कार तीन बार मिल चुका है—१९१७, १९४४ और १९६३ में एक भाग ।

७. इनमें से एक नेली शाख्स स्वीडेन की देशवासी बन गई है—जन्म जर्मनी में हुआ और लिखती जर्मन भाषा में है ।

परिशिष्ट : ५

कब किस देश को कौन सा पुरस्कार मिला

वर्ष	पदार्थ-विज्ञान	रसायन-शास्त्र	चिकित्सा-शास्त्र	साहित्य	शान्ति
१९०१	जर्मनी	नीदरलैण्ड	जर्मनी	फ्रांस	फ्रांस-स्विटजरलैण्ड
१९०२	नीदरलैण्ड	जर्मनी	ब्रिटेन	जर्मनी	स्विटजरलैण्ड
१९०३	फ्रांस	स्वीडन	डेनमार्क	नार्वे	ब्रिटेन
१९०४	ब्रिटेन	ब्रिटेन	रूस	फ्रांस-स्पेन	संस्था
१९०५	जर्मनी	जर्मनी	जर्मनी	पोलैण्ड	आस्ट्रिया
१९०६	ब्रिटेन	फ्रांस	इटली-स्पेन	इटली	अमरीका
१९०७	अमरीका	जर्मनी	फ्रांस	ब्रिटेन	इटली-फ्रांस
१९०८	फ्रांस	ब्रिटेन	जर्मनी-रूस	जर्मनी	स्वीडन-डेनमार्क

वर्प	पदार्थ-विज्ञान	रसायन-शास्त्र	चिकित्सा-शास्त्र	साहित्य	शान्ति
१९०९	इटली-जर्मनी	जर्मनी	स्विटजरलैण्ड	स्वीडन	वेल्जियम-फ्रांस
१९१०	नीदरलैण्ड	जर्मनी	जर्मनी	जर्मनी	सस्था
१९११	जर्मनी	फ्रास	स्वीडन	वेल्जियम	आस्ट्रिया-नीदरलैण्ड
१९१२	स्वीडन	फ्रास	अमरीका	जर्मनी	अमरीका
१९१३	नीदरलैण्ड	स्विटजरलैण्ड	फ्रास	भारत	वेल्जियम
१९१४	जर्मनी	अमरीका	हगेरी	—	—
१९१५	ब्रिटेन	जर्मनी	—	फ्रास	—
१९१६	—	—	—	स्वीडन	—
१९१७	ब्रिटेन	—	—	डेनमार्क	संस्था
१९१८	जर्मनी	जर्मनी	—	—	—
१९१९	जर्मनी	—	वेल्जियम	स्विटजरलैण्ड	अमरीका
१९२०	फ्रास	जर्मनी	—	नार्वे	फ्रांस
१९२१	जर्मनी	ब्रिटेन	—	फ्रांस	स्वीडन-नार्वे
१९२२	डेनमार्क	ब्रिटेन	ब्रिटेन-जर्मनी	स्पेन	नार्वे
१९२३	अमरीका	आस्ट्रिया	कनाडा	आयरलैण्ड	—
१९२४	स्वीडन	—	नीदरलैण्ड	पोलैण्ड	—

वर्ष	पदार्थ-विज्ञान	रसायन-शास्त्र	चिकित्सा-शास्त्र	साहित्य	शान्ति
१९२५	जर्मनी	जर्मनी	—	ब्रिटेन	ब्रिटेन-अमरीका
१९२६	फ्रांस	स्वीडन	डेनमार्क	इटली	फ्रांस-जर्मनी
१९२७	अमरीका-ब्रिटेन	जर्मनी	आस्ट्रिया	फ्रांस	फ्रांस-जर्मनी
१९२८	ब्रिटेन	जर्मनी	फ्रांस	नार्वे	—
१९२९	फ्रांस	ब्रिटेन-स्वीडन	नीदरलैण्ड-ब्रिटेन	जर्मनी	अमरीका
१९३०	भारत	जर्मनी	आस्ट्रिया	अमरीका	स्वीडन
१९३१	जर्मनी	अमरीका	ब्रिटेन	ब्रिटेन	—
१९३२	—	जर्मनी	जर्मनी	स्वीडन	अमरीका
१९३३	आस्ट्रिया-ब्रिटेन	—	अमरीका	फ्रांस	ब्रिटेन
१९३४	—	अमरीका	"	इटली	ब्रिटेन
१९३५	ब्रिटेन	फ्रांस	जर्मनी	—	जर्मनी
१९३६	आस्ट्रिया-अमरीका	नीदरलैण्ड	ब्रिटेन-आस्ट्रिया	अमरीका	अर्जेन्टाइना
१९३७	अमरीका-ब्रिटेन	ब्रिटेन	हंगेरी	फ्रांस	ब्रिटेन-जिनेवा
१९३८	इटली	जर्मनी	बेल्जियम	अमरीका	संस्था
१९३९	अमरीका	जर्मनी-स्विटजरलैण्ड	जर्मनी	फिनलैण्ड	—
१९४०	—	—	—	—	—

वर्ष	पदार्थ-विज्ञान	रसायन-शास्त्र	चिकित्सा-शास्त्र	साहित्य	शान्ति
१९४१	—	—	—	—	—
१९४२	—	—	—	—	—
१९४३	अमरीका	हगरी	डेनमार्क-अमरीका	—	—
१९४४	,,	जर्मनी	अमरीका	डेनमार्क	जिनेवा
१९४५	आस्ट्रिया	फिनलैण्ड	ब्रिटेन	चिली	अमरीका
१९४६	अमरीका	अमरीका	अमरीका	स्विटजरलैण्ड	,,
१९४७	ब्रिटेन	ब्रिटेन	अमरीका-अर्जेन्टाइना	फास	संस्था (२)
१९४८	ब्रिटेन	स्वीडन	स्विटजरलैंड	ब्रिटेन	—
१९४९	जापान	अमरीका	स्विटजरलैंड-पोर्चुगल	अमरीका	ब्रिटेन
१९५०	ब्रिटेन	जर्मनी	अमरीका-स्विटजरलैंड	ब्रिटेन	अमरीका
१९५१	ब्रिटेन-आयरलैण्ड	अमरीका	साउथ अफ्रीका	स्वीडन	फास
१९५२	अमरीका	ब्रिटेन	अमरीका	फास	फांस
१९५३	नीदरलैण्ड	जर्मनी	ब्रिटेन-अमरीका	ब्रिटेन	अमरीकन संस्था
१९५४	ब्रिटेन-जर्मनी	अमरीका	अमरीका	अमरीका	जिनेवा
१९५५	अमरीका	अमरीका	स्वीडन	आइसलैण्ड	संस्था
१९५६	,,	ब्रिटेन-अमरीका	अमरीका-जर्मनी	स्पेन	—

वर्ष	पदार्थ-विज्ञान	रसायन-शास्त्र	चिकित्सा-शास्त्र	साहित्य	शान्ति
१९५७	चीन	ब्रिटेन	इटली	फ्रांस	कनाडा
१९५८	रूस	ब्रिटेन	अमरीका	अमरीका	बेल्जियम
१९५९	अमरीका	चेकोस्लोवाकिया	अमरीका	इटली	ब्रिटेन
१९६०	अमरीका	अमरीका	ब्रिटेन	फ्रांस	—
१९६१	—	—	—	—	—
१९६२	रूस	ब्रिटेन	ब्रिटेन	अमरीका	अमरीका
१९६३	अमरीका-जर्मनी	इटली-जर्मनी	ब्रिटेन-आस्ट्रेलिया	ग्रीस	संस्था (२)
१९६४	रूस-अमरीका	ब्रिटेन	अमरीका-जर्मनी	फ्रांस	अमरीका
१९६५	जापान-अमरीका	अमरीका	फ्रांस	रूस	संस्था
१९६६	फ्रांस	अमरीका	अमरीका	इसरायल-जर्मन स्वीडिश	—
१९६७	जर्मनी	जर्मनी-अमरीका	अमरीका	गुआतमाला	—

परिशिष्ट : ६

सन् १९६५ के पुरस्कार

विषय	प्राप्तकर्ता	देश
(१) साहित्य	शोलोखोव (Sholokhov)	रूस U.S.S.R.
(२) रसायन-शास्त्र	रावर्ट बर्न्स वुडवर्ड (Robert Burns Woodward)	यू० एस० ए० U.S.A.
(३) पदार्थ-विज्ञान	१. सिन इटोरो टोमोनागा (Sin-Itiro Tomonaga)	जापान Japan
	२. जुलियन श्विगर (Julian Schwinger)	यू० एस० ए० U.S.A.
	३ रिचर्ड फेन्मान (Richard Feynman)	यू० एस० ए० U.S.A.
(४) चिकित्सा-शास्त्र	१. फान्सोआ जैकब (Francois Jacob)	फ्रान्स France
	२. आन्द्रे ल्वाफ (Andre Lwoff)	do
	३. जेक्स मानाड (Jacques Monod)	do
(५) शान्ति	यूनिसेफ (Unicef)	

परिशिष्ट : ७

सन् १९६६ के पुरस्कार

विषय	प्राप्तकर्ता	देश
(१) साहित्य	१. श्मुयेल योसफ एग्नन (Shmuel Yosef Agnon)	इसरायल Israel
	२. नेली शाक्स (Nelly Sachs)	जर्मनी-स्वीडेन
(२) रसायन-शास्त्र	राबर्ट एस० मुलिकेन (Robert S. Mulliken)	अमरीका
(३) पदार्थ-विज्ञान	ऐल्फ्रेड कास्टलर (Alfred Kastler)	फ्रांस
(४) चिकित्सा-शास्त्र	१. पेटन राउस (Peyton Rous)	अमरीका
	२. चार्ल्स हगिन्स (Charles Huggins)	अमरीका
(५) शान्ति	किसी को भी प्रदान नहीं किया गया	

सन् १९६७ के पुरस्कार

(१) साहित्य	मिगुएल एन्जेल अस्तुरिअस (Miguel Angel Asturias)	गुआतमाला Guatemala
(२) पदार्थ-विज्ञान	हैन्स ऐल्ब्रेस्त बेथे (Hans Albrecht Bethe)	जर्मनी Germany
(३) रसायन-शास्त्र	मैन्फ्रेड एल्जेन (Manfred Elgen)	जर्मनी Germany
	रोनेल्ड जी० डब्ल्यू० नारिश (Ronald G W. Norrish)	यू० एस० ए० U S.A.
	जार्ज पार्टर (George Porter)	यू० के० U K.

विषय	प्राप्तकर्ता	देश
(४) चिकित्सा-शास्त्र	अर्गनार ग्रानिट (Ragner Granit)	स्वीडेन Sweden
	हाल्डन कीफ़र हस्टलाइन (Halden Keffer Harline)	यू० एस० ए० U.S.A.
	जार्ज वाल्ड (George Wald)	यू० एस० ए० U.S A.
(५) शान्ति	पुरस्कार प्रदान नही किया गया	

परिशिष्ट : ८

१. राबर्ट शैप्लेन (Robert Shaplen). ऐल्फ्रेड नोबेल (Alfred Nobel).

Looked up to me, to me alone, for love.
No selfish motive drew the link between us,
No parents whispered of a proper match.
Why then loved she ? Because it was her nature
As fragrance is the nature of the rose......
My life, till then a dreary desert like,
Revived to bliss and hope. I had an aim,
A heavenly aim—to win that lovely girl
And to be worthy of her......
But it was not so ordained; another bridegroom
Had stronger claims—she's wedded to her grave

और आगे कहते है :—

From that hour
I have not shared the pleasure of the crowd
Nor moved in Beauty's eye compassion's tear,
But I have learnt to study Nature's book
And comprehended its pages and extract
From their deep lore a solace for my grief.

